भाग-2

ज्योतिष पितामह

महर्षि पराशर प्रोक्तं

बृहत् पाराशर होरा शास्त्रम्

BRIHAT PARASARA HORA SASTRAM



व्याख्याकार :

डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र

ज्योतिषाचार्य

भारतीय ज्योतिष का सर्वोच्च निर्णायक ग्रन्थ

ग्रन्थ-परिचय

ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों में महर्षि पराशर का सर्वोच्च स्थान है। *पाराशर होराशास्त्र* भारतीय ज्योतिष में सर्वोपरि माना जाता है। वास्तव में पाराशर सिद्धान्तों का विस्तार ही सम्पूर्ण ज्योतिष है। पाराशर नियमों के बिना ज्योतिष की कल्पना मात्र भी सम्भव नहीं है। इन्हीं सब पाराशर सिद्धान्तों का प्रतिपादक ग्रन्थ *बृहत् पाराशर होराशास्त्र* है।

विभिन्न संस्करणों में परस्पर विरोधी बातों का समन्वय करते हुए दाक्षिणात्य व उत्तर भारतीय रूपों व मान्यताओं का समाहार करके विद्वान व्याख्याकार ने विस्तृत व्याख्या भी दी है। दक्षिण भारत की कई प्रकाशित व अप्रकाशित पुस्तकों से भी इस संस्करण में सहयोग लिया गया है। शताध्यायी होरा के रूप में प्रसिद्ध यह ग्रन्थ शास्त्र के संदर्भ में ***सर्वोच्च न्यायालय की तरह अंतिम निर्णय देता है।***

प्रत्येक गुत्थी को सुलझाते हुए यह समालोचनात्मक संस्करण वास्तविक व निःसन्दिग्ध अर्थ से ओत-प्रोत है। भारतीय ज्योतिष की आत्मा ***पाराशर होराशास्त्र में ही बसती है।***

सुविस्तृत, कपोल कल्पना व मिलावट से रहित, सर्वतोभावेन अर्थबोधक व्याख्या से युक्त एक प्रामाणिक संस्करण जो स्वयं एक पुस्तकीय पुस्तकालय भी है।

दो भागों में सम्पूर्ण, 101 अध्याय, 4500 श्लोक

सर्वप्रथम प्रामाणिक संस्करण

महर्षि पराशर की कालजयी रचना

महर्षिपराशरप्रोक्तं

बृहत् पाराशर होराशास्त्रम्

(प्रणवाक्षरव्याख्योपेतम्)

(BRIHAT PARASARA HORA SASTRAM)

(खण्ड – 2)

सम्पादक व्याख्याकार

डा॰ सुरेश चन्द्र मिश्र

ज्योतिषाचार्य, एम॰ए॰ पी॰ एच॰ डी॰

धार्मिक, इण्डस्ट्रीयल, ज्योतिष आदि पुस्तकों के लिए

डी. पी. बी. पब्लिकेशन्स

110, चावड़ी बाजार, चौंक बडशाहबुला, दिल्ली- 6

पोस्ट बाक्स - 2037, फोन 3273220

।। एवमादितः श्लोक संख्या 4464 अध्याय संख्या 101 ।।

इति शम्

।। श्रीः ।।

नमोऽस्तु गणनाथाय सरसीरुहशायिने ।
हस्तिवक्त्राय गुह्याय सर्वसिद्धिप्रदायिने ।। 1 ।।
य आकृष्णेन रजसा ऽऽवर्तमानो निवेशयन् ।
सर्वं पायादपायान्नस्तरणिर्विश्वभावनः ।। 2 ।।
बुधवरगुरुवरशरणो भागं प्रथमं विविच्य मिश्रोऽयम् ।
पाराशरहोरायां मुत्तरभागं नियोजयति ।। 3 ।।

51

। ।अथ कालचक्रदशाफलाध्यायः । ।

दशेश फल –पराशर उवाच–

कथयाम्यथ विप्रेन्द्र !कालचक्रदशाफलम् ।
तत्रादौ राशिनाथानां सूर्यादीनां फलं ब्रुवे । । 1 । ।
रक्तपित्तादितो व्याधि नृणामर्कफलं वदेत् ।
धनकीर्तिप्रजावृद्धि वस्त्राभरणदः शशी । । 2 । ।
ज्वरमाशु दिशेत् पैत्यं ग्रन्थिस्फोटं कुजस्तथा ।
प्रजानां च धनानां च सदा वृद्धिं बुधो दिशेत् । । 3 । ।
धनं कीर्ति प्रजावृद्धिं नानाभोगं वृहस्पतिः ।
विद्यावृद्धिर्विवाहश्च गृहं धान्यं भृगोः फलम् । । 4 । ।
तापाधिक्यं महद्दुःखं बन्धुनाशः शनेः फलम् ।
एवमर्कादियोगेन वदेद्राशिदशाफलम् । ।5 । ।

हे मैत्रेय ! अब मैं काल चक्रदशा का फल कहता हूँ । सर्वप्रथम दशा राशि के स्वामी अर्थात् जिस राशि की दशा हो, उसके स्वामी ग्रह के अनुसार फल कहता हूँ ।

यदि सूर्य की राशि की दशा हो तो रक्तविकार, पित्त दोष से उत्पन्न व्याधि (पेट गैस, खुजली, ब्लडप्रेशर, ज्वरादि) होती हैं । यही फल सूर्य की अधिष्ठित राशि की दशा में भी समझें ।

यदि कर्क राशि या चन्द्रमा की आश्रित राशि की दशा हो तो धन, कीर्ति, सन्तान में वृद्धि, वस्त्राभूषण (भौतिक सुख) की उपलब्धि होगी ।

मंगल की राशि की दशा में तीव्र ज्वर, पित्ताधिक्य, फोड़े (टयूमर), शरीर में गाँठें आदि फल होता है ।

बुध की राशि दशा में धन, सन्तान आदि की वृद्धि होती है । गुरु की राशि दशा में धन, कीर्ति, सन्तान की वृद्धि व अनेक सुख भोग होते हैं ।

शुक्र की राशि दशा में विद्या वृद्धि, विवाहादि शुभ कृत्य, धान्यादि की वृद्धि होती है । शनि की दशा में संताप की अधिकता, बड़ा दुःख, शोक, बन्धुओं का नाशादि होता है ।

उक्त फल जिस राशि में ग्रह स्थित हो, उसकी दशा में भी समझना चाहिए ।

मेषगत नवांश दशा फल :–

मेषे तु रक्तपीड़ा च वृषभे धान्यवर्द्धनम् ।
मिथुने ज्ञान सम्पन्नश्चान्द्रे धनपतिर्भवेत् ।। 6 ।।
सूर्यर्क्षे शत्रुबाधा च कन्यायां दारनाशनम् ।
तौलिके राजमन्त्रित्वं वृश्चिके मरणं भवेत् ।। 7 ।।
अर्थलाभो भवेच्चापे मेषस्य नवभागके ।

प्रत्येक काल चक्र दशा में 9-9 राशियों की दशा पीछे कही है । तदनुसार महादशा में अन्य राशियों की नवांश दशा (9 राशियों की पृथक् अन्तर्दशा या उपदशा) का फल कहते हैं ।

मेष राशि में मेषांश दशा में रक्त पीड़ा, वृषांश में धान्य वृद्धि, मिथुनांश में ज्ञानवृद्धि, कर्कांश में धनाढ्यता, सिंहांश में शत्रु बाधा, कन्यांश में स्त्री कष्ट, तुलांश में राजमन्त्रीपद, वृश्चिकांश में मृत्यु होती है । धनुरंश में धन लाभ होता है ।

वृषगत नवांश राशि दशा फल :–

मकरे पापकर्माणि कुम्भे वाणिज्यमेव च ।। 8 ।।
मीने सर्वार्थसिद्धिश्च वृश्चिकेत्वग्नितो भयम् ।
तौलिके राज्यपूज्यश्च कन्यायां शत्रुवर्धनम् ।। 9 ।।
शशिभे दारसम्बाधा सिंहे च त्वक्षिरोगकृत् ।
मिथुने वृत्तिबाधा स्यात् वृषभस्य नंवाशके ।। 10 ।।

वृष राशि की दशा में मकरांश दशा में पापकार्य, कुम्भांश में व्यापार, मीनांश में सब कार्यों में सफलता, वृश्चिकांश में अग्निभय, तुलांश में राज्य पूज्यता, कन्यांश में शत्रु वृद्धि, कर्कांश में स्त्री सुख में बाधा, सिहांश में नेत्र रोग, मिथुनांश में शत्रु वृद्धि, कर्कांश में स्त्री सुख में बाधा, सिहांश में नेत्र रोग, मिथुनांश में व्यवसाय बाधा होती है ।

यह नवांशानुसार दशाफल कहा जा रहा है । नक्षत्र चरणानुसार जो नवांश आए, उसके सामने चक्र में लिखित राशियों की दशाओं में यह फलं देखना है । हमारे उदाहरण में कुम्भांश अपसव्य चक्र में उदित था । तदनुसार आगे फल का विचार करेंगे ।

मिथुनगत नवांश राशि दशा फल :–

वृषभे त्वर्थलाभश्च मेषे तु ज्वररोगकृत् ।
मीने तु मातुलप्रीतिः कुम्भे शत्रुप्रवर्द्धनम् ।। 11 ।।
मृगे चौरस्य सम्बाधा धनुषि शस्त्रवर्धनम् ।
मेषे तु शस्त्रसंघातो वृषभे कलहो भवेत् ।। 12 ।।
मिथुने सुखमाप्नोति मिथुनस्य नवांशके ।

मिथुनांश में वृषदशा में धन लाभ, मेषांश में ज्वर पीड़ा, मीनांश में मामा का प्रेम व सहयोग, कुम्भांश में शत्रु वृद्धि, मकरांश में चोर बाधा, धनुरंश में शस्त्र वृद्धि, मेषांश में शस्त्र से चोट, वृषांश में कलह, मिथुनांश में सुख होता है ।

इन दशाओं में इस फल को सूत्ररूप में समझकर उसकी देशकालानुसार व्याख्या विद्वान् दैवज्ञ को करनी चाहिए । जैसे शस्त्रघात से तात्पर्य, शत्रु आक्रमण करे, स्वयमेव हथियार से चोट लगे, शल्यचिकित्सा से गुजरना पड़े इत्यादि । ज्वरसामान्य के सैकड़ों भेद होते हैं । रक्त कैंसर, प्लेग आदि भी ज्वर रूप में प्रारम्भ होते हैं । अतः राशि पर पापयोग या बहुपापयोग का भी विचार करना होगा ।

कर्कगत नवांश राशि दशा फल :–

कर्कटे सङ्कटप्राप्तिः सिंहे राजप्रकोपकृत् ।। 13 ।।
कन्यायां भ्रातृपूजा च तौलिके प्रियकृन्नरः ।
वृश्चिके पितृबाधा स्यात् चापे ज्ञानधनोदयः ।। 14 ।।
मकरे जलभीतिः स्यात् कुम्भे धान्यविवर्धनम् ।
मीने च सुखसम्पत्तिः कर्कटस्य नवांशके ।। 15 ।।

(i) कर्कांश में कर्क दशा हो तो संकट का सामना करना पड़ता है ।

(ii) सिंहांश में राजकोप होता है अर्थात् सरकारी विभाग या सीधे सरकार से भय होगा ।

(iii) कन्यादशा में भाइयों द्वारा विशेष सम्मान प्राप्त होता है । तुला दशा में मनुष्य मनोनुकूल व लोकप्रिय कार्यों का साधन करता है ।

(iv) वृश्चिक दशा में पिता को कष्ट, आर्थिक या शारीरिक या सामाजिक कष्ट समझें ।

(v) धनुदशा में ज्ञान वृद्धि व धन वृद्धि अर्थात् विद्या या अनुभव या कार्यकुशलता तथा रुपया बढ़े ।

(vi) मकरदशा में पानी से भय अर्थात् जलज रोग, डूबना आदि, कुम्भ में धान्य वृद्धि, मीन में सुख सम्पत्ति होती है।

सिंहगत नवांश राशि दशा फल :–

वृश्चिके कलहः पीड़ा तौलिके ह्यधिकं फलम्।
कन्यायामतिलाभश्च शशांके मृगबाधिका।। 16।।
सिंहे च पुत्रलाभश्च मिथुने शत्रुवर्धनम्।
वृषे चतुष्पदाल्लाभो मेषांशे पशुतो भयम्।।
मीने तु दीर्घयात्रा स्यात् सिंहस्य नवभागके।। 17।।

सिंहांश में वृश्चिक दशा में कलह, वाद विवाद आदि, तुला में विशेष कलह, कन्या में अति लाभ, कर्कदशा में पशुओं के कष्ट, सिंह दशा में पुत्र प्राप्ति, मिथुन दशा में शत्रु वृद्धि, वृष दशा में पशुओं (वाहनों) से लाभ, मेष दशा में पशुओं से भय, मीन दशा में लम्बी यात्राएँ होती हैं।

कन्यागत नवांश राशि दशा फल :–

कुम्भे तु धनलाभश्च मकरे द्रव्यलाभकृत्।
धनुषि भ्रातृसंसर्गो मेषे मातृविवर्द्धनम्।। 18।।
वृषभे पुत्रवृद्धिः स्यान्मिथुने शत्रुवर्द्धनम्।
शशिभे तु स्त्रियां प्रीतिः सिंहे व्याधि विवर्द्धनम्।। 19।।
कन्यायां पुत्रवृद्धिः स्यात्कन्यायाः नवमांशके।

कन्यांश में कुम्भ दशा हो तो धन लाभ होता है। मकर दशा में भी धन का लाभ होता है। धनु दशा में भाइयों से सहयोग व मित्रता, मेषांश में मातृ पक्ष की वृद्धि, वृष दशा में पुत्र प्राप्ति, मिथुन दशा में शत्रु वृद्धि, कर्क दशा में स्त्रियों से प्रेम, सिंह दशा में रोग वृद्धि, कन्यादशा में पुत्र वृद्धि होती है।

तुलागत नवांश राशि दशा फल :–

तुलायामर्थलाभश्च वृश्चिके भ्रातृवर्द्धनम्।। 20।।
चापे च तातसौख्यं च मृगे मातृविरोधिता।
कुम्भे पुत्रार्थलाभश्च मीने शत्रुविरोधिता।। 21।।
अलौ जायाविरोधश्च तुले च जलबाधता।
कन्यायां धनवृद्धिः स्यात् तुलायां नवभागके।। 22।।

तुलांश का उदय हो तब उसमें तुला की ही दशा में धन लाभ होता है। वृश्चिक दशा में भाइयों की बढ़ोत्तरी, धनु दशा में पिता का सुख, मकर दशा में माता से विरोध , कुम्भ दशा में धन व पुत्र का लाभ, मीन दशा में शत्रुओं से विरोध की वृद्धि, वृश्चिक दशा में स्त्री से विरोध, तुला दशा में जल से भय, कन्या की दशा में धन की वृद्धि होती है।

जाया विरोध से तात्पर्य स्वयं स्त्री से वैर हो अथवा ससुराल पक्ष से शत्रुता या स्त्री से वैचारिक मतभेद घर तक ही सीमित रहें, ऐसा निर्णय ग्रह योग से करना चाहिए।

वृश्चिकगत नवांश राशि दशा फल :–

कर्कटे ह्यर्थनाशश्च सिंहे राजविरोधिता।
मिथुने भूमिलाभश्च वृषभे चार्थलाभकृत्।। 23।।
मेषे सर्पादिभीतिः स्यान्मीने चैव जलाद्भयम्।
कुम्भे व्यापारतो लाभे मकरेऽपि रुजो भयम्।। 24।।
चापे तु धनलाभः स्याद् वृश्चिकस्य नवांशके।

वृश्चिकांश में कर्क दशा हो तो धन का नाश, सिंह दशा में राजपक्ष से विरोध, मिथुन दशा में भूमि–लाभ अर्थात् भूमि के व्यापार से लाभ अथवा भूमि आदि प्राप्त करना, वृष दशा में धन का लाभ, मेष दशा में साँप आदि रेंगने वाले कीटों से भय, मीन दशा से जल से भय, कुम्भ दशा में व्यापार से लाभ, मकर दशा में रोग से भय, धनु दशा में धन–लाभ होता है।

धनुगत नवांश राशि दशा फल :–

मेषे तु धन लाभः स्याद् वृषे भूमिविवर्द्धनम्।। 25।।
मिथुने सर्वसिद्धिः स्यात्कर्कटे सर्वसिद्धिकृत्।
सिंहे तु पूर्ण वृद्धिः स्यात्कन्यायां कलहो भवेत्।। 26।।
तौलिके चार्थलाभः स्यात् वृश्चिके रोगमाप्नुयात्।
चापे तु सुतवृद्धिः स्याच्चापस्य नवमांशके।। 27।।

धनु नवांश में मेष दशा रहने पर धन का लाभ, वृष दशा में जमीन–जायदाद की वृद्धि, मिथुन दशा में सब मनोरथों की सिद्धि, कर्क दशा में सभी कार्यों में सफलता, सिंह दशा में पुरानी प्रतिष्ठा, कीर्ति, धन व मान आदि की वृद्धि, कन्या की दशा में कलह, तुला दशा में धन का

लाभ, वृश्चिक दशा में रोग प्राप्ति, और धनु की दशा में पुत्रों की बढ़ोत्तरी होती है।

सम्भव होने पर सन्तान पैदा होना और बड़ी सन्तानों की सुख समृद्धि विद्या आदि में यथावसर वृद्धि समझनी चाहिए।

मकरगत नवांश राशि दशा फल :–

मकरे पुत्रलाभः स्यात्कुम्भे धान्यविवर्द्धनम्।
मीने कल्याणमाप्नोति वृश्चिके विषबाधिता।। 28।।
तौलिके त्वर्थलाभश्च कन्यायां शत्रुवर्धनम्।
शशिभे श्रियमाप्नोति सिंहे तु मृगबाधिता।। 29।।
मिथुने वृक्ष बाधा च मृगस्य नवभागके।

मकर के नवांश में मकर की ही दशा रहे तो पुत्र सुख, कुम्भ की दशा में धान्यवृद्धि (अधिक अन्न पैदा होना या भोज्य पदार्थों के व्यापार से खूब लाभ) होना, मीन दशा में कल्याण प्राप्ति, वृश्चिक दशा में विष पीड़ा, तुला में धन लाभ, कन्या में शत्रु–वृद्धि, कर्क में धन वृद्धि, सिंह में पशु–भय व और मिथुन में वृक्षादि से पीड़ा होती है, पेड़ टूटकर गिर जाना, पेड़ से वाहन टकरा जाना, पेड़ काटने पर दण्ड मिलना, किसी पौधे को खाने या छूने से शारीरिक कष्ट इत्यादि वृक्ष भय के रूप अपनी बुद्धि से समझें।

कुम्भगत नवांश राशि दशा फल :–

वृषभे त्वर्थलाभश्च मेषभे त्वक्षिरोगकृत्।। 30।।
मीने तु दीर्घयात्रा स्यात्कुम्भे धनविवर्द्धनम्।
मकरे सर्वसिद्धिः स्याच्चापे शत्रु विवर्द्धनम्।। 31।।
मेषे सौख्यविनाशश्च वृषभे मरणं भवेत्।
युग्मे कल्याणमाप्नोति कुम्भस्य नवमांशके।। 32।।

कुम्भ के नवांश की वृष दशा में धन लाभ, मेष दशा में नेत्र रोग, मीन दशा में लम्बी यात्रा, कुम्भ दशा में धन वृद्धि, मकर दशा में सब कार्यों में सफलता, धनु दशा में शत्रु–वृद्धि, मेष दशा में सर्वसुख हानि और दूसरी वृष राशि की दशा में मृत्यु, मिथुन दशा में सुख होता है।

मीनगत नवांश राशि दशा फल :–

कर्कटे धनवृद्धिः स्यात् सिंहे तु राजपूजनम्।
कन्यायामर्थलाभस्तु तुलायां लाभमाप्नुयात्।। 33।।

वृश्चिके ज्वरमाप्नोति चापे शत्रुविवर्द्धनम् ।

मृगे जायाविरोधश्च कुम्भे जलविरोधिता ।। 34 ।।

मीने तु सर्वसौभाग्यं मीनस्य नवभागके ।

मीन नवांश में कर्क दशा होने पर धन में बढ़ोत्तरी, सिंह दशा में राजा से सम्मान, कन्या दशा में धन का लाभ, तुला दशा में शत्रुओं की वृद्धि, मकर दशा में पत्नी से विरोध, कुम्भ दशा में जल भय और मीन दशा में सब प्रकार से भाग्य साथ देता है ।

दशा–अंश क्रमेणैवं ज्ञात्वा सर्वं फलं वदेत् ।। 35 ।।

क्रूर ग्रह दशाकाले शान्तिं कुर्याद्विचक्षण ।

जन्म नक्षत्र के चरणानुसार काल चक्र का नवांश जानकर उसके अन्तर्गत राशियों की दशा से उक्त फल कहना चाहिए, यदि अशुभ दशा हो या दशा राशि पर अधिक पाप ग्रह योग हो तो शान्ति विधान अवश्य करना चाहिए ।

यत्प्रोक्तं राजयोगादौ संज्ञाध्याये च यत्फलम् ।। 36 ।।

तत्सर्वं चक्रकाले हि स्वबुद्ध्या योजयेद् बुधः ।

इति संक्षेपतः प्रोक्तं काल चक्रदशाफलम् ।। 37 ।।

इसी प्रकार पीछे संज्ञाध्याय में जो–जो बातें कही हैं या जिस ग्रह या राशि से राजयोगादि फल प्राप्त होने का निश्चय हो उन सब फलों की प्राप्ति काल चक्र दशा में भी बुद्धिपूर्वक देखनी चाहिए, यह काल चक्र दशा का संक्षिप्त फल कहा है ।

काल चक्र में अन्तर्दशाएँ आगे कही जाएँगी ।

हमारे उदाहरण में आर्द्रा नक्षत्र का दूसरा चरण व कुम्भ नवांश उदित है । पीछे काल चक्र दशा में धनु राशि का भोग्य 8 वर्ष 4 मास 19 दिन था, तदनुसार 1972 से जून 1982 तक मीन दशा थी । यह गुरु की राशि है, अतः शुभ क्षेत्र राशि मात्र होने से और नवम भावगत रहने से पीछे दशाध्याय में बता चुके हैं कि यह दशा शुभ होगी । इस दशा का फल पुत्र–प्राप्ति, स्त्री–प्राप्ति अर्थात् विवाह, धन वृद्धि, घर का सुख, सत्कार्य आदि होते हैं । फलस्वरूप इस दशा में जातक का विवाह, रोजगार प्राप्ति और सन्तान आदि फल हुए । मीन दशा में दीर्घ यात्रा फल भी लिखा है । दशा के प्रारम्भ में ही जन्म स्थान से दूर रहना प्रारम्भ हुआ । तदुपरि 1989 तक मेष दशा पाप–क्षेत्र है, लेकिन यह राशि दशम स्थान में गई है । अतः मिश्रित फल होगा । इसमें स्त्री पुत्र का सुख, धन वृद्धि और सुगम जीवन यापन फल लिखा है तथा नवांशानुसार नेत्र रोग लिखा है, फलस्वरूप इस

दशा में नेत्र रोग को छोड़कर शेष फल मिले। 1989 से 16 वर्ष के लिए वृष दशा हुई। यह शुभ राशि है और लाभ स्थान में स्थित है। नवांशानुसार इसका फल मृत्यु है, लेकिन वृष राशि में केतु लाभ स्थान में होने से उस पर कारकेन्द्र मंगल की दृष्टि रहने से और शुक्र की त्रिपाद दृष्टि रहने से धन वृद्धि और पुत्र की उन्नति, बन्धु–बान्धव सुख, लाभ, भौतिक सुख–वृद्धि लेकिन इस दशा में अनिष्ट फल भी सम्भव है। एतदर्थ जातक को शान्ति विधान हेतु त्र्यम्बक मंत्र का जप, रुद्राभिषेक आदि करना चाहिए, क्योंकि वृष राशि पर मंगल की दृष्टि भी है।

मृत्यु शब्द से तात्पर्य फलित ग्रन्थों में सदैव मृत्यु नहीं होता। शास्त्रों में मृत्यु के आठ प्रकार बताए हैं– बड़ी मुसीबत आना, अत्यधिक धन नाश, प्रतिष्ठा में अत्यन्त कमी, मृत्यु तुल्य शारीरिक कष्ट आदि या वास्तविक मृत्यु, मृत्यु शब्द से समझनी चाहिए।

"व्यथा दुःखं भयं लज्जा रोगः शोकस्तथैव च।
मरणं चापमानं च मृत्युरष्टविधः स्मृतः।।"

पश्चात् मिथुन दशा 2014 सन् तक रहेगी जो सब प्रकार से कल्याणकारी है तथा दूसरी वृष दशा में मृत्यु सम्भव होगी। मिथुन राशि शुभ क्षेत्र एवं शुभ चन्द्रमा से युक्त है, तथापि द्वादशभाव गत रहने से यह शरीर कष्ट और जीवन में किसी बड़े परिवर्तन को द्योतित करती है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां कालचक्रदशा फलाध्याय एकपंचाशत्तमः।। 51।।

52

।। चरादिदशाफलाध्यायः।।

पराशर उवाच–

चर–स्थिरादि–संज्ञा या दशा प्रोक्ता पुरा द्विज!।
शुभाशुभफलं तासां कथयामि तवाग्रतः।। 1।।
लग्नादि–द्वादशान्तानां भावानां फलकीर्तने।
तत्तद्राशीशवीर्येण यथायोग्यं प्रयोजयेत्।।2।।
बलयुक्ते च राशीशे पूर्णं तस्य तदा फलम्।
फलं मध्यबले मध्यं बलहीने विपर्ययः।। 3।।

पराशर बोले–

पहले जो चर–स्थिरादि दशाएं कही हैं उनका शुभाऽशुभ फल कहता हूँ। प्रत्येक राशि की दशा का फल राशिपति के बलाबल व राशि की भाव स्थिति से निश्चित होगा। साथ ही राशि में स्थित ग्रहों से भी भाव में तारतम्य रहेगा। पुनश्च राशि स्वामी के बलाबल से विशेष निश्चय होगा। यदि राशीश पूर्ण बली हो तो पूरा फल, मध्य बली से मध्यम फल और हीन बली से बहुत कम फल होता है।

यो यो दशाप्रदो राशिस्तस्य रन्ध्रत्रिकोणके।
पापखेटयुते विप्र ! तद्दशादुःखदायिका।। 4।।
तृतीय षष्ठगे पापे जयादिः प्रकीर्तितः।
शुभखेटयुते तत्र जायते च पराजयः।। 5।।
लाभस्थः च शुभे पापे लाभो भवति निश्चितः।
यदा दशाप्रदो राशिः शुभखेटयुतो द्विज।। 6।।
शुभक्षेत्रे हि तद्राशेः शुभं ज्ञेयं दशाफलम्।
पापयुक्ते शुभक्षेत्रे पूर्वं शुभमसत्परे।। 7।।
पापर्क्षे शुभसयुंक्ते पूर्वं सौख्यं ततोऽशुभम्।
पापक्षेत्रे पापयुक्ते सा दशा सर्वदुःखदा।। 8।।
शुभक्षेत्रदशाराशौ युक्ते पापशुभैर्द्विज।। 9।।
पूर्वं कष्टं सुखं पश्चान्निर्विशङ्कं प्रजायते।
शुभक्षेत्रे शुभं वाच्यं पापर्क्षे त्वशुभं फलम्।। 10।।

जिस राशि की दशा हो उससे क्रमशः 5.9.8 में पाप ग्रह हों तो वह दशा कष्टकारक होती है।

जिस राशि से 3.6 भाव में पाप ग्रह हों तो उस दशा में विजय और सुख होता है, लेकिन 3.6 में शुभ ग्रह हों तो पराजय होती है, दशा राशि से ग्यारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो अथवा दशा राशि में ही शुभ ग्रह बैठे हों तो उस दशा में निश्चय से सर्वत्र लाभ होता है।

यदि वह राशि शुभ ग्रह की हो तथा उसमें पाप ग्रह नहीं हो तो दशा का फल सर्वत्र शुभ होता है। यदि शुभ ग्रह की राशि में पाप ग्रह हो तो दशा के पूर्वार्ध में शुभ व उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है।

पाप ग्रह की राशि में यदि शुभ ग्रह तो पहले सुख व उत्तराद्र्ध में अशुभ फल होता है, यदि पाप राशि पाप युक्त भी हो तो सारी दशा दुःखदायिनी होती है।

यदि शुभ ग्रह की राशि में पाप और शुभ मिश्रित ग्रह हो तो पहले कष्ट और बाद में निश्चय से सुख कहना चाहिए, लेकिन पाप राशि में शुभाशुभ ग्रह हो तो प्रायः अशुभ फल ही होता है।

1973 से 1980 तक उदाहरण में मेष की चर दशा थी, इससे अष्टम में मंगल–शनि–राहु और पंचम में बृहस्पति है, अतः पाप फल प्रतीत हुआ, इस राशि से तृतीय में शुभ ग्रह चन्द्रमा भी पराजय बताता है। लेकिन लाभ स्थान में शुक्र लाभदायक है, अतः कुल मिलाकर यह समय कष्टकारक एवं बाधाओं वाला होना चाहिए और यही वास्तविकता भी है, वर्तमान धनु दशा शुभ फल देने वाली है।

द्वितीये पंचमे सौम्ये राजप्रीतिर्जयो ध्रुवम्।
पापे तत्र गते ज्ञेयमशुभं तद्दशाफलम्।। 11।।
चतुर्थे तु शुभं, सौख्यमारोग्यं त्वष्टमे शुभे।
धर्मवृद्धिर्गुरुजनात्सौख्यं च नवमे शुभे।। 12।।
विपरीते विपर्यासो मिश्रे मिश्रं प्रकीर्तितम्।
पाके भोगे च पापाढ्ये देहपीडा मनोव्यथा।। 13।।
सप्तमे पापभोगाभ्यां पापे दारार्तिरीरिता।
चतुर्थे स्थानहानिः स्यात्पंच पुत्रपीडनम्।। 14।।
दशमे कीर्तिहानिः स्यान्नवमे पितृ पीडनम्।
पाकाद्द्रुतगते पापे पीड़ा सर्वाप्यबाधिका।। 15।।
उक्तस्थानगते सौम्ये ततः सौख्यं विनिर्दिशेत्।
केन्द्रस्थानगते सौम्ये लाभः शत्रुजयप्रदः।। 16।।
जन्मकाल ग्रहस्थित्या सगोचर ग्रहैरपि।
विचारितैः प्रवक्तव्यं तत्तद्राशिदशाफलम्।।17।।

दशा राशि से द्वितीय पंचम में शुभ ग्रह होने पर बड़े लोगों से प्रेम, राजाओं से सम्बन्ध और विजय होती है। यदि 2-5 में पाप ग्रह हों तो दशा का अशुभ फल ही होता है।

दशा राशि से चतुर्थ में शुभ ग्रह हों तो सुख वृद्धि और अष्टम में शुभ ग्रह हों तो भी शुभ फल नीरोगता आदि समझना चाहिए।

नवम में शुभ ग्रह रहने पर धर्मवृद्धि, गुरुजनों की कृपा व सुख होता है। यदि इन्हीं भावों में पाप ग्रह हों तो विपरीत फल एवं मिश्रित ग्रह होने पर फल भी मिला–जुला होता है।

यदि दशा पाक राशि और भोग राशि दोनों ही पाप युक्त हों तो शारीरिक व मानसिक पीड़ाएँ होती हैं।

यदि एक में पाप ग्रह हों तो सामान्य पीड़ा और दोनों स्थानों पर पाप ग्रह होने पर विशेष पीड़ा समझनी चाहिए।

पाक व भोग से सप्तम में यदि पाप ग्रह हों तो स्त्री–कष्ट होता है। इसी प्रकार चतुर्थ में पाप ग्रह से स्थान हानि, पंचम में होने से सुत पीड़ा, दशम में कीर्ति हानि नवम में पितृ कष्ट होता है।

एकादश स्थान में पाप ग्रह हों तो अबाध पीड़ा होती है। इन्हीं स्थानों में शुभ ग्रह रहने पर उन–उनसे अर्थात् पिता, राजा आदि से सुख होता है। पाक राशि से केन्द्र–त्रिकोणों में शुभ ग्रह हों तो सर्वत्र विजय आदि होती है।

यह फल विचार जन्मकालीन ग्रह स्थिति व गोचर का सम्मिलित विचार करके कहना चाहिए।

हमारे उदाहरण में वर्तमान में धनु राशि की चर दशा है, धनु राशि से द्वितीय में सूर्य बुध मिश्रित ग्रह हैं। षष्ठ में एक पाप ग्रह, सप्तम केन्द्र में शुभ चन्द्रमा, नवम में बृहस्पति है। अतः यह दशा अधिक शुभ फलों वाली और कुछ अनिष्टकारक फल भी देगी। धनु से द्वादश में कई पाप ग्रह रहने से जिस समय धनु राशि में पाप ग्रह हों तो अत्यन्त कष्ट होना चाहिए। फलस्वरूप 1990 में जिस समय धनु में शनि मकर में राहु वृश्चिक में सूर्य और भोग राशि वृष में मंगल गोचर कर रहा था उस समय इस व्यक्ति को रोग के कारण जीवन–मरण का सामना करना पड़ा था, लेकिन शुभ राशि आदि होने से परम अनिष्ट नहीं हुआ। इस प्रकार बुद्धि प्रयोग पूर्वक दशाओं का फल निर्धारित करना चाहिए।

यश्च राशिः शुभाक्रान्ता पूर्वपश्चाच्छुभा ग्रहाः।
तद्दशा शुभदा प्रोक्ता विपरीते विपर्ययः।। 18।।
त्रिकोणरन्ध्ररिष्फस्थैः शुभपापैः शुभाऽशुभम्।
तद्दशायां च वक्तव्यं फलं दैवविदा सदा।। 19।।

जो राशि शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा जिसके आगे–पीछे शुभ ग्रह हों तो उस राशि की दशा शुभ फल देने बाली होती है और अशुभ ग्रह रहने पर विपरीत फल समझना चाहिए।

जिस राशि में 5.8.9.12 में शुभ पाप ग्रह मिश्रित हों तो उस दशा में फल भी मिला–जुला ही कहना चाहिए।

बाधा स्थान से फल निर्णय :–

मेषकर्कतुलानक्रराशीनांचयथाक्रमम् ।

बाधा स्थानानि सम्प्रोक्ता कुम्भगोसिंहवृश्चिकाः ।। 20 ।।

पाकेशाक्रान्तराशौ वा बाधास्थाने शुभेतरे ।

स्थिते सति महाशोको बन्धनव्यसनामयाः ।। 21 ।।

1.4.7.10 राशियों के क्रमशः 11.2.5.8 राशियों बाधा स्थान हैं, अर्थात् सभी चर राशियों से ग्यारहवीं राशि बाधा स्थान होती है ।

दशा राशि के स्वामी ग्रह के साथ या बाधा स्थानों में पाप ग्रह रहने पर उस राशि की दशा में बहुत विपत्ति, महान शोक व बन्धनादि फल होते हैं ।

उच्चस्वर्क्षग्रहे तस्मिंच्छुभं सौख्यं धनागमः ।

तच्छून्यं चेद्सौख्यं स्यात्तद्दशा न फलप्रदा ।। 22 ।।

जिस राशि में उसका स्वामी स्थिति हो या उसी राशि में कोई ग्रह उच्चस्थ हो तो वह दशा धन, सुख, एवं शुभ फल देने वाली होती है । यदि उक्त राशियों में अथवा दशा राशि से पूर्वोक्त भावों में कोई भी ग्रह न हो तो प्रायः फल नहीं होता ।

अन्तर्दशा फल :–

बाधकव्ययषड्रन्ध्रे राहुयुक्ते महद्भयम् ।

प्रस्थाने बन्धनप्राप्ती राजपीडा रिपोर्भयम् ।। 23 ।।

रव्याररराहुशनिभः भुक्तराशिः स्थिरा यदि ।

तद्राशिभुक्तौ पतनं राजकोपान् महद्भयम् ।। 24 ।।

भुक्तिराशित्रिकोणे तु नीचखेटः स्थितो यदि ।

तद्राशौ वा युते नीचे पापे मृत्युभयं वदेत् ।। 25 ।।

जिस राशि से बाधा स्थान या 6.8.12 में राहु हो तो उस राशि की दशा में महान् भय, यात्रा में बन्धन, राज पक्ष से पीड़ा व शत्रुओं से भय होता है ।

सूर्य मंगल राहु शनि जिन राशियों में हों उन राशियों की अन्तर्दशाएँ आने पर राजकोप और भय होता है ।

यदि उसी अन्तर्दशा राशि से त्रिकोण में नीच ग्रह हो या पाप ग्रह हो तो मृत्यु भय होता है । उदाहरण में धनु राशि से द्वादश में राहु है, अतः अशुभ फल सम्भव है, लेकिन पहले शुभ फल भी निश्चित किया गया है ।

अतः साधारण कष्ट सम्भव है, अतः धनु में वृश्चिक की अन्तर्दशा जनवरी 96 तक अशुभ हो सकती है।

भुक्तिराशौ स्वतुङ्गस्थे त्रिकोणे वापि खेचरे ।
यदा भुक्तिदशा प्राप्ता तदा सौख्यं लभेन्नरः ।। 26 ।।
नगरग्रामनाथत्वं पुत्रलाभं धनागमम् ।
कल्याणं भूरि भाग्यं च सेनापत्यं महोन्नतम् ।। 27 ।।
पाकेश्वरो जीवदृष्टः शुभ राशि स्थितो यदि ।
तद्दशायां धनप्राप्तिर्मङ्गलं पुत्रसम्भवम् ।। 28 ।।

अन्तर्दशा राशि या उससे त्रिकोण में उच्चस्थ ग्रह हो तो सब सुख प्राप्त होते हैं। उस दशा में नगर या ग्राम का अधिकार, पुत्र–प्राप्ति, धन–लाभ, सर्व मंगल भाग्योदय, सेनापतित्व और बहुत उन्नति होती है।

यदि दशा का स्वामी ग्रह शुभ राशि में हो और उसे बृहस्पति देखता हो तो धन लाभ, पुत्र लाभ और सर्वविध मंगल होता है।

ग्रहों की शत्रु राशियां :–

सितासितभयुग्माश्च सूर्यस्य रिपुराशयः ।
कौर्पितौलिघटाश्चेन्दोर्भौमस्य रिपुराशयः ।। 29 ।।
घटमीननृयुक्तौलिकन्याज्ञस्य ततः परम् ।
कर्कमीनालिकुम्भाश्च राशयो रिपवः स्मृताः ।। 30 ।।
वृषतौलिनृयुक्कन्या राशयो रिपवो गुरोः ।
सिंहालिकर्कचापाश्च शुक्रस्य रिपुराशयः ।। 31 ।।
मेषसिंहधनुःकौर्पिकर्कटाः शनि शत्रवः ।
एवं ग्रहान्तर्दशां चिन्तयेत् कोविदो द्विज ! ।। 32 ।।

2.7.10.11.3 ये सूर्य की शत्रु राशियाँ हैं। 8.7.11 ये राशियाँ चन्द्रमा की शत्रु हैं, 9.12.3.7.6 मंगल की शत्रु राशियाँ हैं। 4.12.8.11 ये बुध की शत्रु राशियां हैं। 2.7.3.6 ये बृहस्पति की शत्रु राशियाँ हैं। 5.8.4.9 ये शुक्र की शत्रु राशियाँ हैं। तथा 1.5.9.8.4 ये शनि की शत्रु राशियाँ है।

इस प्रकार शत्रु राशियों का विचार करते हुए भी दशा–अन्तर्दशा का फल निश्चय करना चाहिए।

अर्थात् राशि स्वामी ग्रह की शत्रु राशियों की अन्तर्दशाएँ प्रायः शुभ नहीं होंगी, ऐसा समझना चाहिए।

ये राजयोगदा ये च शुभ मध्यगता ग्रहाः ।

यस्माद्वा द्वित्रितुर्यस्थाः ग्रहाः शुभफलप्रद्राः ।। 33 ।।

तद्दशायां शुभं ब्रूयाद्राजयोगादिसम्भवम् ।

शुभद्वयान्तरगतः पापोऽपि शुभदः स्मृतः ।। 34 ।।

जो ग्रह जन्म समय में राजयोग कारक हों अथवा जो ग्रह दो शुभ ग्रहों के बीच में हों अथवा जिनसे 2.3.4 भावों में ग्रह हों, वे ग्रह शुभ फलद या योगकारक होने से अपना फल अपनी दशा में तथा राशियों की दशा के सन्दर्भ में अपनी राशि या अपनी आश्रित राशि की दशा में देंगे। दो शुभ ग्रहों के बीच गया हुआ पाप ग्रह भी शुभ फलद ही समझना चाहिए।

दशा प्रवेश गोचर : फल समन्वय –

गता शुभदशा मध्यं दशा सौम्यस्य शोभना ।

शुभा यस्य त्रिकोणस्थास्तद्दशापि शुभप्रदा ।। 35 ।।

आरम्भान्तौ मित्रशुभराश्योर्यदि फलं शुभम् ।

प्रतिराश्यैवमब्दाद्यं विभज्य तत्फलं वदेत् ।। 36 ।।

(i) दो योगप्रद ग्रहों की दशाओं के बीच में आने वाली साधारण फलप्रद शुभ ग्रह दशा भी शुभ व योग फल ही देती है।

(ii) जिस ग्रह से 1.5.9 में शुभ ग्रह या शुभ फलप्रद योगकारक हों, उसकी दशा भी शुभफलद है।

(iii) दशा के आरम्भ व अन्त में यदि ग्रह मित्र राशि या शुभ राशि में गोचर करे तो दशा फल में शुभता बढ़ जाती है।

(iv) इन नियमों का प्रयोग जन्म व गोचर में करते हुए दशेश के प्रत्येक राशि परिवर्तन के समय दशाफल का विचार करना चाहिए।

आरम्भात्तत्त्रिकोणे तु सौम्ये तु शुभमावहेत् ।

शुभराशौ शुभारम्भे दशा स्यादति शोभना ।। 37 ।।

शुभादिराशौ पापश्चेद्दशारम्भे शुभा स्मृता ।

शुभारम्भे कथा केति प्रारम्भस्य फलं वदेत् ।। 38 ।।

आरम्भे पापराशौ वा यदीशो दुर्बलो द्विज ! ।

नीचादौ तद्दशाद्यन्ते वदेद् भाग्यविपर्ययम् ।। 39 ।।

(i) दशारम्भ में दशेश ग्रह या राशि से 1.5.9 भावों में शुभ ग्रह होने से दशा शुभ होती है।

(ii) शुभ ग्रह की राशि की दशा शुरू हो तथा दशारम्भ में उस राशि में कोई शुभ ग्रह हो तो वह दशा तिशेष शुभ हो जाती है। अथवा शुभ राशि में अन्य शुभ राशि की दशा (अन्तर्दशा) आने पर शुभ फल होता है।

(iii) पाप राशि में शुभ राशि की दशा आने पर अथवा दशा प्रवेश के समय पाप दशा राशि में शुभ ग्रह गोचर करने से जब वह दशा शुभ हो जाती है तब शुभ राशि दशा की तो बात ही क्या ? अर्थात् वह तो निर्विवाद शुभ ही होगी।

इस प्रकार दशारम्भ के आधार पर दशा का फल अवश्य कहना चाहए।

(iv) जिस राशि की दशा प्रारम्भ हो, उस राशि का स्वामी यदि दशारम्भ के समय नीच, परम नीच या अति शत्रु स्थान या अस्त या पराजित हो तो उस राशि की दशा में भाग्य विपरीत हो जाता है। अर्थात् भाग्य रूठ जाता है।

नीच दशापति : भाग्य हानि :–

यत्र स्थितो नीचखेटस्त्रिकोणे वाऽथ नीचगः।
तथा राशीश्वरे नीचे सम्बन्धो नीचखेटकैः।। 40।।
भाग्यस्य विपरीतत्वं करोत्येव द्विजोत्तम !।
धन–धान्यादि हानिश्च देहे रोगभयं तथा।। 41।।

जिस राशि का स्वामी स्वयं नीचगत हो या जिस राशि से 1.5.9 में कोई ग्रह नीचस्थ हो अथवा जिस राशि का स्वामी नीचगत हो या नीचगत ग्रहों से सम्बन्ध करता हो तो उस राशि (या ग्रह) की दशा में भाग्य बिल्कुल प्रतिकूल हो जाता है तथा धन–धान्य की हानि, रोगभय, शरीर–कष्ट होता है।

आशय यह है कि सामान्य नियमों से शुभ दशा भी दशारम्भ की प्रतिकूल परिस्थितियों से अशुभ हो जाती है। इसी तरह सामान्यतः अशुभ दशा भी दशारम्भ गोचर से शुभ हो जाया करती है।

दशाप्रसंगात् राहुकेतु की स्वराशि :–

राहोः केतोश्च कुम्भादि वृश्चिकादि चतुष्टयम्।
स्वयं तत्र समारम्भस्तद्दशायां शुभं भवेत्।। 42।।

वृश्चिकादि चार राशियाँ (8.9.10.11) केतु की तथा कुम्भादि चार (11.12.1.2) राहु की स्वराशियाँ हैं। यदि दशारम्भ में राहु–केतु इन राशियों

में (या पूर्वोक्त उच्चादि राशियों) हों तो इनकी दशाएँ शुभ होती हैं। इनकी अधिष्ठित राशि की दशा में भी इसी तरह विचार करना चाहिए।

यद्दशायां शुभं ब्रूयात्स चेन्मारकसंस्थितः।

यस्मिन् राशौ दशान्तः स्यात्तस्मिन् दृष्टे युतेऽपि वा।। 43।।

शुक्रेण विधुना वा स्याद्राजकोपाद्धनक्षयः।

दशान्तश्चेदरिक्षेत्रे राहुदृष्टयुतेऽपि वा।। 44।।

इदं फलं शनेः पाके न विचिन्त्यं द्विजोत्तम !।

दशाप्रदे नक्रराशौ न विचिन्त्यमिदं फलम्।। 45।।

(i) जिस ग्रह की स्थिति मारक स्थान में हो अथवा दशा राशि मारक स्थानों में हो अथवा दशान्त के समय जो राशीश ग्रह या राशि एक साथ शुक्र व चन्द्र से दृष्टयुत हो तो उस दशा में राजकोप से धनहानि होती है।

(ii) यदि दशान्त में राशीश या दशापति शत्रु क्षेत्री हो या राहु से युक्त दृष्ट हो तो वह दशा भी शुभ नहीं होती।

(iii) उक्त विचार शनि की दशा में या मकर राशि की दशा में नहीं समझना चाहिए।

राहोर्दशान्ते सर्वस्वनाशो मरणबन्धने।

देशान्निर्वासनं वा स्यात्कष्टं वा महदश्नुते।। 46।।

तत्त्रिकोणगते पापे निश्चयाद्दुःखमादिशेत्।

एवं शुभाऽशुभं सर्वं निश्चयेन वदेद् बुधः।। 47।।

(i) राहु की दशा अर्थात् राहु की अधिष्ठित राशि, राहु या स्वराशि की दशा के अन्त में सर्वस्व नाश, मृत्यु या बन्धन, देशत्याग या महान् कष्ट होता है।

(ii) राहु राशि दशा से 1.5.9 में पाप ग्रह हों तो उस दशा में निश्चय से दुःख होता है। इस प्रकार राशियों की दशा (चर स्थिरादि) में शुभाशुभ फल का निश्चय करना चाहिए।

राह्वाश्रित राशिस्तु भवेद्यदि दशाप्रदः।

तत्र कालेऽपि पूर्वोक्तं चिन्तनीयं प्रयत्नतः।। 48।।

दशारम्भो दशान्तो वा मारके चेन्न शोभनम्।

तस्मिन्नेव च राहुश्चेन्निरोधो द्रव्यनाशनः।। 49।।

(i) राहु की आश्रित राशि की दशा में भी उक्त प्रकार से फल विचार करना चाहिए।

(ii) दशारम्भ या दशान्त में यदि मारक राशि या मारकेश ग्रह का योग हो अर्थात् दशेश मारक राशि में गोचर करे या दशा राशि में मारकेश गोचर करे तो या उनमें राहु हो तो धनहानि तथा बन्धन व रुकावटें होती हैं।

राशि दशा : राहु का गोचर :–

यत्र क्वापि च भे राहुः दशारम्भे विनाशनम्।
गृहभ्रंशः समुद्दिष्टो धने राहुधनार्तिकृत्।। 50।।
चन्द्रशुक्रौ द्वादशे चेत् राजकोपो भवेद् ध्रुवम्।
भौमकेतू तत्र यदि वधोऽग्नेर्महती व्यथा।। 51।।
चन्द्रशुक्रौ धने विप्र! यदि राज्यं प्रयच्छतः।
दशारम्भे दशान्ते च द्वितीयस्थमिदं फलम्।। 52।।

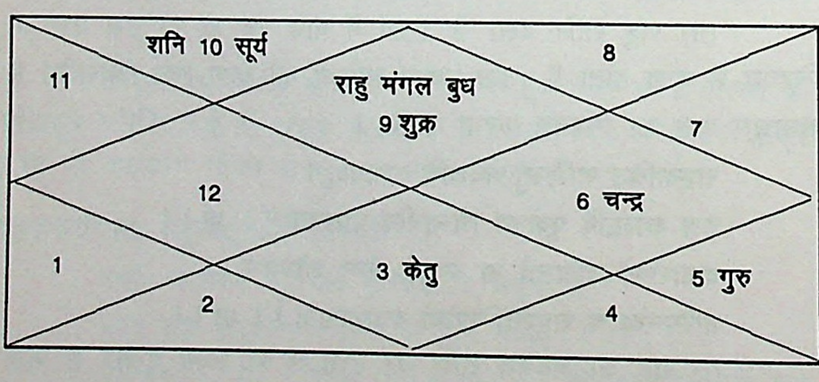
(i) दशारम्भ में जिस राशि भाव में यदि राहु हो, उस भाव का नाश होता है। उदाहरणार्थ दशा राशि से द्वितीय राशि में राहु हो तो धन व कुटुम्ब का नाश होता है। चतुर्थ में हो तो सुख नाश, पंचम में हो विद्यापुत्रादि का नाश समझें।

(ii) दशा राशि से द्वादश में चन्द्र व शुक्र इकट्ठे हों तो निश्चय से राजकोप से धनहानि होती है।

(iii) यदि दशा राशि से द्वादश में मंगल व केतु हों तो वध, अग्निभय तथा व्यथा होती है।

(iv) दशारम्भ में चन्द्र व शुक्र धन भाव में हों तो राज्य लाभ होता है। इस तरह दशा राशि से द्वितीय राशि में पाप ग्रहों (मंगल, राहु, केतु) के होने से अशुभ फल कहना चाहिए।

हमारे उदाहरण में धनु राशि की 8 वर्ष की चर दशा 25.1.92 को शुरू हुई थी। उस दिन की राशि दशा कुण्डली इस प्रकार है।



(i) दशा राशि से 8.5.9 में पाप ग्रह नहीं हैं। धनु राशि शुभ क्षेत्र है। अतः दशा शुभ है।

(ii) दशा राशि में शुभ पाप ग्रह मिश्रित हैं, अतः दशारम्भ में कष्ट सम्भव है। दशारम्भ 8 वर्ष का तिहाई 2 वर्ष 8 मास अर्थात् सितम्बर 94 तक है।

वास्तव में भी दशारम्भ में इस व्यक्ति को शारीरिक कष्ट हुआ। शेष दशा शुभ होगी।

(iii) सप्तमस्थ पाप ग्रह स्त्री पीड़ा बताता है, जो वास्तविकता भी है।

(iv) दशा राशि में राहु शरीर कष्ट द्योतित करता है।

अर्गला भावों से दशा फल :–

एवमर्गलभावानां फलं विज्ञैः प्रदर्शितम्।
यस्य पापः शुभो वापि ग्रहस्तिष्ठेच्छुभार्गले।। 53।।
तेन दृष्टेक्षितं लग्नं प्राबल्यायोपकल्पते।
यदि पश्येद्ग्रहस्तत्र विपरीतार्गलस्थितः।। 54।।
तद्भावस्य दशायास्तु विपरीतं फलं वदेत्।
सद्दृष्टेऽपि शुभं ब्रूयात् निर्विशंकं द्विजोत्तम!।। 55।।

इसी पद्धति से दशा राशि से अर्गलाभावों में फल विचार करना चाहिए। जिस राशि की निर्बाध शुभ या पाप अर्गला हो, वह ग्रह यदि दशा राशि को देखे तो दशा में प्रबल फल मिलता है।

यदि उक्त ग्रह अर्गला कारक होकर दशा राशि को न देखें तथा विपरीत अर्गला हो तो उस राशि की दशा अशुभ होती है।

दशा राशि को कोई भी शुभ ग्रह देखे तो भी दशा शुभ होती है।

पूर्वोदाहरण में 4.5.2.11 अर्गला स्थानों में दो पाप ग्रह हैं, उनमें सूर्य उच्चनवांश गत व शनि स्वक्षेत्री है। बाधास्थान 9.10.12.3 में दो शुभ ग्रह स्थित हैं। राशि पर राशीश गुरु की दृष्टि है। राशि में शुक्र बुध स्थित हैं तथा चन्द्रमा की त्रिपाद दृष्टि है। अतः कुल मिलाकर दशा शुभ रहेगी।

यस्मिन् भावे शुभस्वामिसम्बन्धस्तुंगखेचरः।
स्यात् तद्भावदशायां तु अत्यैश्वर्यमखण्डितम्।। 56।।

यद्भावेशः स्वार्थराशिमधितिष्ठंश्च पश्यति ।
स्यात्तद्भावदशाकाले धनलाभो महत्तरः ।। 57 ।।
यस्माद् व्ययगतो यस्तु यद्दशायां धनक्षयः ।
यस्मात् त्रिकोणगाः पापास्तत्रात्मशुभनाशनम् ।। 58 ।।
पुत्रहानिः पितुः पीडा मनस्तापो महान् भवेत् ।
यस्मात् त्रिकोणगा रिःफरन्ध्रेशार्कारसूर्यजाः ।। 59 ।।

(i) दशा राशि में यदि राशीश, शुभ ग्रह या कोई उच्चगत ग्रह हो या ये ग्रह उससे सम्बन्ध करें तो उस राशि की दशा में बहुत ऐश्वर्य होता है ।

(ii) जिस राशि की दशा में राशि से द्वितीय भाव में ही राशीश हो तो उस दशा में धन लाम अधिक होता है ।

(iii) राशीश यदि दशा राशि से द्वादश में हो तो धन हानि होती है ।

(iv) राशि से 1.5.9 में पाप ग्रह हों तो शुभ फल नष्ट होते हैं तथा जातक को कष्ट होता है ।

(v) जिस राशि में या उससे त्रिकोण में जन्मकालीन अष्टमेश, द्वादशेश, सूर्य, मंगल या शनि हों तो उस दशा में पुत्रहानि, पितृकष्ट, मन–स्ताप होता है ।

पुत्रपीडा द्रव्यहानिस्तत्र केत्वहिसंगते ।
विदेशभ्रमणं क्लेशो भयं चैव पदे पदे ।। 60 ।।
यस्मात् षष्ठाष्टमे क्रूरनीचखेटादयः स्थिताः ।
रोगशत्रुनृपालेभ्यो मुहुः पीड़ा सुदुःसहा ।। 61 ।।
यस्माच्चतुर्थः क्रूरः स्यात् भूगृहक्षेत्रनाशनम् ।
पशुहानिस्तत्र भौमे गृहदाहः प्रमादकृत् ।। 62 ।।
शनौ हृदयशूलं स्यात् सूर्ये राजप्रकोपनम् ।
सर्वस्वहरणं राहौ विषचौरादिजं भयम् ।। 63 ।।

(i) जिस राशि में दशा प्रवेश के समय या जन्म समय राहु केतु हों तो उसकी दशा में क्लेश, भय, विदेश भ्रमण होता है ।

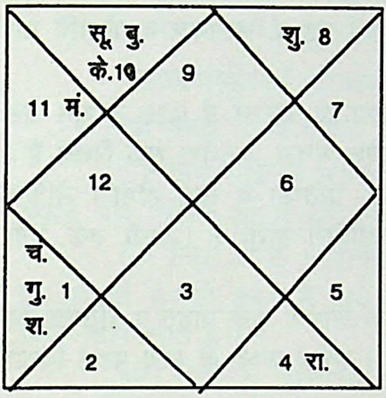
(ii) जिस राशि से 6.8 में क्रूर या नीचगत ग्रह हो तो उसकी दशा में रोग, शत्रु व राजा का भय होता है ।

(iii) जिससे चतुर्थ में पाप ग्रह हो तो भूमि व घर की हानि तथा मंगल हो तो गृहदाह एवं चतुष्पद हानि होती है ।

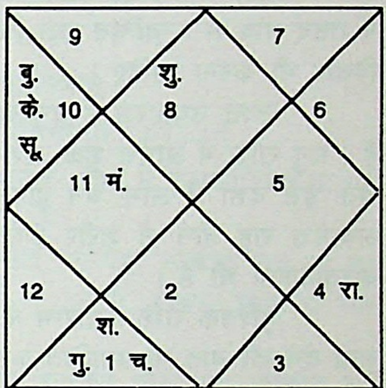
(iv) यदि चतुर्थ में शनि हो तो हृदय शूल, सूर्य हो तो राजभय तथा राहु हो तो सर्वस्वनाश तथा विष चोरादि का भय होता है।

हमारे पूर्वोक्त उदाहरण में धनु राशि की दशा 25.1.2000 को समाप्त होकर तभी वृश्चिक दशा शुरू होगी। तत्कालीन कुण्डली इस प्रकार है।

।। धनु राशि दशान्त कुण्डली ।।



।। वृश्चिकदशारम्भ कुण्डली ।।



(i) धनु दशान्त में त्रिकोण में नीचगत शनि, राशीश भी नीच योगी है, लेकिन द्वादश में शुभ ग्रह तथा पंचम में दो शुभ ग्रह, तृतीय में मंगल है जो शुभ है। पुनश्च अष्टम में राहु शरीर कष्ट को प्रमाणित करता है।

(ii) वृश्चिक चर दशारम्भ में राशि स्वामी मंगल केन्द्र में शुभ है। 8.12 में कोई ग्रह न होना भी शुभ है। षष्ठ में नीचगत शनि रोग शत्रु या राजा से भय तथा त्रिकोण में राहु भी अशुभ है। तृतीय में निराभास अर्गला होने से शुभ की अधिकता तथा साधारण शरीर कष्ट दिखता है। चतुर्थस्थ मंगल अचल सम्पत्ति या वाहन की हानि दिखाता है। इसका समन्वय जन्मकालीन ग्रह स्थिति से भी करना चाहिए।

यस्माद्दशमभे राहौ पुण्यतीर्थाटनं भवेत्।
यस्मात् कर्मायभाग्यर्क्षगताः शोभनखेचराः ।। 64 ।।
विद्यार्थधर्म सत्कर्मख्याति पौरुषसिद्धयः।
यतः पंचम कामारिगताः स्वोच्चशुभाः ग्रहाः ।। 65 ।।
पुत्रदारादि सम्प्राप्तिनृपपूजा महत्तरा।
यस्मिन् पुत्राय कर्माम्बु नव लग्नाधिपाः स्थिताः ।। 66 ।।
तत्तद्भावार्थसिद्धिः स्यात् श्रेयो योगानुसारतः।

(i) जिस राशि से दशम में राहु हो तो उस दशा में पुण्य लाभ व तीर्थ यात्राएँ होती हैं।

(ii) जिससे 9.10.11 राशियों में शुभ ग्रह हों तो उस राशि की दशा में विद्या, धन, धर्म, सत्कार्य, कीर्ति व परिश्रम की सफलता होती है।

(iii) जिससे 5.6.7 में उच्चगत (स्वक्षेत्री, मूल त्रिकोणी भी) ग्रह या शुभ ग्रह हों तो उसकी दशा में पुत्र, स्त्री की वृद्धि, राजसम्मान मिलता है।

(iv) जिसमें 5.11.10.4.9.1. इन भावों के स्वामी हों, उसकी दशा में तत्तद् भाव से सम्बन्धित फल मिलता है। ग्रह के बलाबल व योगादि का विचार भी करना चाहिए।

उक्त उदाहरण में धनु राशि दशा के प्रारम्भ में 9.10 में शुभ ग्रह हैं। धनु राशि में लाभेश शुक्र, दशम पंचमेश मंगल, चतुर्थेश शुक्र स्थित है। अतः इस दशा में लाभ, धन वाहन प्राप्ति, प्रतिष्ठा व सुख होगा। लेकिन अष्टमेश राहु होने से शरीर कष्ट भी द्योतित होता है। अभी तक यही वास्तविकता भी है।

वृश्चिक राशि दशारम्भ में चतुर्थेश लाभेश शुक्र वाहन व प्रतिष्ठा का सुख देने की बात भी प्रमाणित करता है। शरीर कष्ट के योग पहले दिखा चुके हैं।

यस्मिन् गुरुर्वा शुक्रो वा शुभेशोवापि संस्थितः।। 67।।

कल्याणंसर्वसम्पत्तिर्देवब्राह्मणतर्पणम्।

यतश्चतुर्थे स्वोच्चस्थाः शुभस्वामीग्रहाश्च वा।। 68।।

वाहनग्रामलाभश्च पशुवृद्धिश्च भूयसी।

तत्र चन्द्रे च लाभः स्यात् बुध धान्यरसान्वितः।। 69।।

पूर्णे विधौ निधिप्राप्तिर्लभेद् वा मणिसंचयम्।

तत्र शुक्रे मृदंगादिवाद्यगान पुरस्कृतः।। 70।।

(i) जिस राशि में गुरु या शुक्र दशारम्भ (या जन्म समय) में स्थित हों या जिस राशि में 5.9 भावेश स्थित हों या पापी केन्द्रेश स्थित हों तो उसकी दशा में सर्वाविध कल्याण, सम्पत्ति–प्राप्ति, देवताओं व ब्राह्मणों की प्रसन्नता होती है।

(ii) जिस राशि से चतुर्थ में उच्चस्थ ग्रह या शुभ भावेश या शुभ ग्रह हों, उसकी दशा में वाहन लाभ, जायदाद लाभ व पद–प्राप्ति तथा पशुओं की वृद्धि होती है।

(iii) यदि दशा राशि में पूर्ण चन्द्रमा हो तो गड़े धन की प्राप्ति या बहुत सी मणियाँ आदि प्राप्त होती हैं।

(iv) उस राशि में शुक्र हो तो मृदंगादि वाद्य, गायन या (स्वकार्यक्षेत्र) में अग्रगण्य व पुरस्कृत होता है ।

पूर्व उदाहरण में वृश्चिक राशि में शुक्र, चतुर्थ में परम योग कारक मंगल है, अतः इनकी दशा में भूमि, वाहन, घर, पदवी, प्रतिष्ठा में वृद्धि व स्वकार्य क्षेत्र में सम्मान आदि फल होंगे ।

आन्दोलिकाप्तिर्जीवे तु कनकान्दोलिका ध्रुवम् ।

लग्नकर्मेशभाग्येशतुंगस्थशुभयोगतः ।। 71 ।।

सर्वोत्कर्षमहैश्वर्यं साम्राज्यादि महत्फलम् ।

एवं तत्तद् भावदायफलं चापि विचिन्तयेत् ।। 72 ।।

(i) जिस राशि में गुरु हो तो उसकी दशा में सुवर्णमण्डित पालकी अर्थात् बेश कीमती वाहन का लाभ होता है ।

(ii) जिस राशि में लग्नेश, कर्मेश, भाग्येश, उच्चस्थ ग्रह या शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में सब प्रकार से उन्नति, ऐश्वर्य, साम्राज्य लाभ आदि फल होता है ।

इसी विधि से दशारम्भ कुण्डली बनाकर और जन्म कालीन ग्रहों की स्थिति का विचार करके फल कहना चाहिए ।

उक्तोदाहरण में वृश्चिक दशा में अनेक प्रकार से सुख व शुभ फल की प्राप्ति प्रमाणित होती है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां चरादि दशाफलाध्यायो द्विपंचाशत्तमः ।। 52 ।।

53

।। अथ दशाफलगुणाध्यायः ।।

दशेश के 18 गुण :–

एकैकोडुदशास्वीयैर्गुणैरष्टादशात्मभिः ।

भिन्नं फलविपाकं तु कुर्याद्वै चित्रसंकुलम् ।। 1 ।।

परमोच्चे तुंगमात्रे तदर्वाक् तदुपर्यपि ।

मूलत्रिकोणभे स्वर्क्षे स्वाधिमित्रग्रहस्यभे ।। 2 ।।

तत्काल सुहृदो गेहे उदासीनस्य भे तथा ।

शत्रोर्भेधिरिपोभे च नीचान्तादूर्ध्वदेशभे ।। 3 ।।

तस्मादर्वाङ्नीचमात्रे नीचान्ते परमांशके ।

नीचारिवर्गे सखले स्ववर्गे केन्द्रकोणभे ।। 4 ।।

व्यवस्थितस्य खेटस्य समरे पीडितस्य च ।

गाढमूढस्य च दशा पचति स्वैर्गुणैर्फलम् ।। 5 ।।

प्रत्येक दशेश (नक्षत्राधारित विंशोत्तरीदशादि या राशिदशाओं में दशेश ग्रह) अपने 18 गुणों के अनुसार विचित्र फल देता है । ये 18 गुण इस प्रकार हैं–

1. परमोच्चगत 2. उच्चराशिगत 3. उच्चराशि के आगे या पीछे उच्चाभिलाषी या त्वरित उच्च भ्रष्ट 4. मूलत्रिकोणगत 5. स्वक्षेत्री 6. अधिमित्र या मित्रग्रहगत 7. तात्कालिक मित्रक्षेत्री 8. समक्षेत्री 9. शत्रुक्षेत्री या अधिशत्रुक्षेत्री 10. नीच राशि के आसपास, नीचाभिलाषी या अभी अभी नीच राशि से निर्गत 11. नीचराशि 12. परम नीचगत 13. नीच या शत्रु वर्गगत 14. क्रूरग्रह संयुक्त 15. स्ववर्गगत 16. केन्द्र त्रिकोणगत 17. युद्ध में पराजित 18. अस्तंगत ।

उक्त गुणों के अनुसार दशान्तर्दशा में ग्रह फल देता है । इन सब गुणों में क्रमशः प्रभाव कम होता जाता है । परमोच्च में सर्वशुभ व अस्तंगत में सर्व अशुभ क्रमशः समझना चाहिए । इन्हीं गुणों के आधार पर दशा की सम्पूर्णा आदि संज्ञाएँ होती हैं ।

सम्पूर्णा दशा :–

परमोच्चगतो यस्तु योऽतिवीर्यसमन्वितः ।

सम्पूर्णाख्या दशा तस्य राज्यभोग्य शुभप्रदा ।। 6 ।।

लक्ष्मी कटाक्ष चिह्नानां चिदावासफलप्रदा ।

परमोच्चगत या अति बलवान् (षड्बली) ग्रह की दशा 'सम्पूर्णा दशा' कहलाती है । इस दशा में राज्य लाभ, भौतिक सुख–प्राप्ति, शुभ फल, लक्ष्मी की कृपा तथा भरे–पूरे परिवार व मकान आदि का सुख होता है ।

पूर्णा दशा :–

तुंगमात्रगतस्यापि तथा वीर्याधिकस्य च ।। 7 ।।

पूर्णाख्या बहुलैश्वर्यदायिनी च दशा मता ।

रुजप्रदा तथा किंचित् अपरग्रह योगतः ।। 8 ।।

उच्चराशिगत या बलवान् ग्रह की दशा 'पूर्णा' कहलाती है । इस दशा में भी मनुष्य को .बहुत ऐश्वर्य अर्थात् सांसारिक समृद्धि प्राप्त होती है ।

लेकिन उक्त ग्रह यदि पापयुक्त या पापभावेशों से युक्त या अशुभ भावों में स्थित हों तो कुछ रोगप्रद भी होते हैं। तब भी ऐश्वर्यादि फल तो मिलता ही है। मूलत्रिकोणी या स्वक्षेत्री ग्रह की दशा को भी इसी श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

रिक्ता दशा :–

अति नीचगतस्यापि दुर्बलस्य ग्रहस्य तु।
रिक्ता त्वनिष्टफलदा व्याध्यनर्थमृतिप्रदाः ।। 9 ।।

जो ग्रह अति नीच अर्थात् परम नीच में हो या षड्बलों से निर्बल हो, उसकी दशा 'रिक्ता' कहलाती है। इस दशा में अनिष्ट फल, बीमारी, विपत्ति, कष्ट तथा अन्यथा सम्भव हो तो मृत्यु होती है।

अवरोहिणी दशा :–

अत्युच्चादतिनीचस्थमध्यगस्यावरोहिणी।
नामानुरूपफलदा हानिदा राशियोगतः ।। 10 ।।

जो ग्रह परमोच्च से आगे तथा परम नीच के बीच कहीं भी हो तथा स्वराशिगत या मूलत्रिकोण न हो तो उसकी दशा 'अवरोहिणी' कहलाती है। ये दशाएँ नामानुसार फल देती हैं। अर्थात् ग्रह जितना अधिक नीच के निकट होता जाएगा, तदनुसार ही शुभ फलों में अवरोह अर्थात् न्यूनता आती जाएगी।

मध्यमा दशा :–

मित्रोच्चभावप्राप्तस्य मध्यमा ह्यर्थदा दशा।
नामानुरूपफलदा ग्रहवीर्यवशाद् द्विज ! ।। 11 ।।

जो ग्रह अपने मित्र या अधिमित्र की राशि में हो या अपने अधिमित्रादि की उच्चराशि में हो तो उसकी दशा 'मध्यमा' कहलाती है।

यह दशा भी ग्रह के बलाबलानुसार मध्यम फल तथा धन देती है।

आरोहिणी दशा :–

नीचान्तादुच्चभागान्तं भषट्कमध्यगस्य च।
आरोहिणी दशा ज्ञेया नामतुल्यफलप्रदा ।। 12 ।।

नीचराशि से आगे की 6 राशियों में तथा उच्च से पूर्व कहीं पर स्थित ग्रह की दशा 'आरोहिणी' कहलाती है।

इस दशा में नीच ग्रह के बलाबल व अन्यग्रहयोगादि से आरोहणात्मक अर्थात् क्रमशः बढ़ता हुआ फल होता है।

अधमा दशा :-

अधमाख्या दशा विप्र ! नीचारिभांशगस्य च।
भयक्लेशव्याधिदुःखवर्धिनी क्लेशदायिनी।।13।।

जो ग्रह नीचगत, शत्रुक्षेत्री या नीच नवांश गत या शत्रु नवांश गत हो तो उसकी दशा 'अधमा' कहलाती है।

इस दशा में भय, क्लेश, रोग आदि बढ़ते हैं। उक्त सारी दशाएँ नामानुसार ही फल देती हैं।

भाग्येश व गुरु का सम्बन्ध : शुभ दशा :-

भाग्येशगुरुसम्बन्धोयोगदृक्केन्द्रभादिभिः।
परेषामपि दायेषु भाग्योपक्रममुन्नयेत्।।14।।

जिस ग्रह से भाग्येश या बृहस्पति का किसी भी प्रकार से चतुर्विध सम्बन्धों में से कोई सम्बन्ध बने अर्थात् दशेश से केन्द्र त्रिकोण में गुरु या भाग्येश हो या दशेश को भाग्येश या गुरु देखे तो ऐसे ग्रह की दशा में भी भाग्य वृद्धि होती है। अर्थात् सामान्य नियमों से दशेश यदि अशुभ फलदायक हो तो भी गुरु व भाग्येश की दृष्टि उसकी शत्रुता को बढ़ा देगी। यदि दशेश शुभ हुआ तथा उससे गुरु व भाग्येश का कोई सम्बन्ध हुआ तब तो मणि कांचन योग होगा ही अर्थात् शुभ फल होगा।

वक्री ग्रह की दशा :-

जातके यस्तु फलदो भाग्ययोगप्रदोऽथ यः।
सफलो वक्रिमादूर्ध्वमन्यानपि च खेचरान्।।15।।
दुर्बलानसमर्थांश्च फलदानेषु योगतः।
तारतम्यात्सुसम्बन्धा दशा ह्येताः फलप्रदाः।।16।।
स्वकेन्द्रादिजुषां तेषां पूर्णाघ्रिव्यवस्थया।
एवं सर्वग्रहाणां च स्वस्वान्तर्दशास्वपि।।17।।

(i) पाराशरीय नियमों से जन्म कुण्डली के योगकारक ग्रहों (भाग्यवर्धक) का निर्णय करें।

(ii) वक्री भाग्यवर्धक या योगकारक ग्रह अपनी दशान्तर्दशा के दौरान जब मार्गी रहेगा, तब पूर्ण फल देगा, तथा वक्री अवस्था में साधारण योग फल देगा।

(ii) योगकारक ग्रहों का सम्बन्ध होने पर अन्य निर्बल, असमर्थ ग्रह भी अपनी दशान्तर्दशा में योगकारकों के बलाबलानुसर शुभ फल देते हैं ।

(iv) सभी दशाओं में केन्द्रगत ग्रहों की दशा में पूर्ण फल, (शुभ या अशुभ) पणफरगत ग्रह मध्यफलद तथा आपोक्लिमगत चौथाई शुभ फल देता है । इसका भी समन्वय दशा फल में करना चाहिए ।

हमारे उदाहरण में वर्तमान में शनि की विंशोत्तरी चल रही है तथा चरदशा धनुराशि की है । शनि पणफर में स्थित है । योगकारक मंगल के साथ है तथा स्वयं शनि भी सप्तमकेन्द्रेश होने से शुभता भी लिए हुए है । मंगल की दशा जीवन में आने की सम्भावना नहीं है । अतः शनि मारकेश व अष्टमेश होते हुए भी योग फल देने में समर्थ है । लेकिन योगफल आधा तथा मारक फल भी आधा देगा । इस महादशा में जातक की अच्छी उन्नति हुई है । इसमें भी जब मंगल की अन्तर्दशा होगी या गुरु की अन्तर्दशा या शुक्र की अन्तर्दशा होगी तो विशेष शुभ फल मिलेगा । राहु की अन्तर्दशा में सहसा बहुत शुभ फल व अनिष्ट की आशंका भी रहेगी । कई दशा प्रकारों (जो जहाँ लागू हो) से एक साथ शुभ फल आने पर विशेष शुभ फल बताना चाहिए ।

शीर्षोदयभगाः स्वस्वदशादौ स्वफलप्रदाः ।
उभयोदयराशिस्थदशामध्ये फलप्रदा । । 18 । ।
पृष्ठोदयर्क्षगाः खेटाः स्वदशान्ते फलप्रदाः ।
निसर्गतश्च तत्काले सुह्रदां हरणे शुभम् । । 19 । ।
सम्पादयेत्तदाकष्टं तद्विपर्ययगामिनाम् ।

(i) जन्म समय में शीर्षोदय राशिगत ग्रह (5. 6. 7. 8. 11) अपनी दशा के प्रारम्भ में (मध्य से पूर्व) फल देते हैं तथा उभयोदय (मीन) राशिगत ग्रह दशा के मध्य में फल देते हैं । पृष्ठोदय (1. 2. 3. 4. 9. 10) राशिगत ग्रह दशा के अन्त में फलप्रद होते हैं ।

(ii) अपने निसर्गमित्र या तत्कालमित्र की अन्तर्दशा में सभी ग्रह अपना फल देते हैं । यहाँ योगकारक का प्रसंग है, अतः अपना योगफल प्रत्येक ग्रह अपने सम्बन्धी ग्रह या मित्र ग्रह की अन्तर्दशा में देगा ।

(iii) जो ग्रह शत्रु या अति शत्रु होंगे, उनकी अन्तर्दशा में अपना अशुभ फल देंगे।

दशा फल निर्णय : एक नियम :–

दशेशाक्रान्तभावर्क्षादारभ्य द्वादशर्क्षकम्।।20।।
भक्त्वा द्वादशराशीनां दशाभुक्तिं प्रकल्पयेत्।
एकैकराशेर्या तत्र सुहृत्स्वक्षेत्रगामिनी।।21।।
तस्यां राज्यादिसम्पत्तिपूर्वकं शुभमीरयेत्।
दुःस्थानरिपुगेहस्थ नीचक्रूरयुता च या।।22।।
तस्यामनर्थकलहं रोगमृत्युभयादिकम्।
बिन्दुभूयस्त्वशून्यत्ववशात् स्वीयाष्टवर्गके।।23।।
वृद्धिं हानिं च तद्राशिभावस्य स्वगृहात्क्रमात्।
भावयोजनया विद्यात् सुतस्त्र्यादि शुभाशुभम्।।24।।

गणित साधित अन्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा के अतिरिक्त सम्पूर्णदशा का सूक्ष्म फल जानने का यह भी एक प्रकार है।

(i) जिस राशि में जन्म समय ग्रह स्थित हो, उसी राशि से प्रारम्भ करके समान दशा काल 12 के बराबर एक एक राशि की अन्तर्दशा समझें।

(ii) जिस राशि में वलवान् स्वक्षेत्री, उच्चगत, मूलत्रिकोणी, मित्रक्षेत्री ग्रह हो, उसकी अन्तर्दशा में राजयोग व धनसम्पत्ति की वृद्धि होती है।

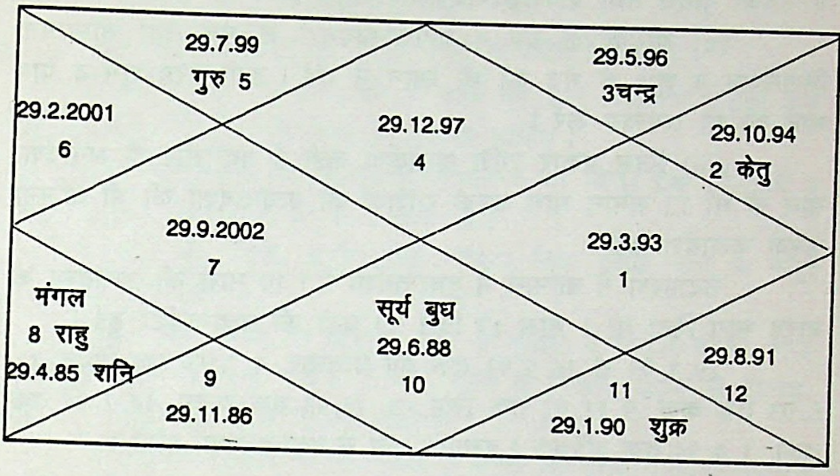
(iii) जो राशि 6. 8.12 भावों में गई हो या जिस राशि में शत्रु क्षेत्री, नीचगत, पापी ग्रह, अस्तंगत ग्रह हो, उसकी अन्तर्दशा में अनर्थ व कलह होता है।

(iv) उस ग्रह के अष्टकवर्ग में जिस राशि में अधिक शुभ रेखाएँ हों, उसकी अन्तर्दशा में बहुत शुभ व कम रेखा वाली राशि की अन्तर्दशा में अनिष्ट फल यथाक्रम होता है।

(v) शुभ राशि जिस भाव में पड़े, उस अन्तर्दशा में उस भाव से सम्बन्धित फल पुत्र, स्त्री, धन, प्रतिष्ठा आदि की वृद्धि होती है।

हमारे उदाहरण में शनि दशा वर्तमान है। इसके विंशोत्तरीमान से 19 वर्ष हैं। 19 ÷ 12 = 1 वर्ष 7 मास एक अन्तर्दशा का मान है। शनि वृश्चिक राशि में है तथा शनि दशा का प्रारम्भ 29. 9. 1983 को हुआ। तदनुसार राशि अन्तर्दशा चक्र इस प्रकार बनेगा।

।। शनि महादशा राश्यन्तर्दशा चक्र ।। (उदा०)



(i) सितम्बर 83 से अप्रैल 85 तक वृश्चिकान्तर्दशा है। इसमें योग कारक स्वक्षेत्री ग्रह है। अतः इस अवधि में विद्या, बुद्धि, मन्त्र शक्ति, पुत्रसन्तानादि की वृद्धि होगी। वास्तव में भी इस अवधि में पुत्रप्राप्ति, विद्या वृद्धि आदि फल हुए थे।

(ii) 29. 11. 1986 तक धनुराशि षष्ठस्थ है। स्वस्वामी से दृष्ट होने से पूर्ण अशुभ नहीं है।

(iii) 29. 1. 90 तक कुम्भदशा में मित्रक्षेत्री वर्गोत्तमी शुक्र पणफरगत होने से भूमि व गृह की प्राप्ति हुई थी।

(iv) मीनान्तर्दशा में पदोन्नति, मेषान्तर्दशा में प्रतिष्ठा वृद्धि, व्यवसाय वृद्धि, वृषान्तर्दशा में धनसम्पत्ति, वाहनादि का लाभ हुआ। वृष में पाप ग्रह केतु से दुर्घटना भी बतानी चाहिए।

इस प्रकार वास्तविक उदाहरणों में इस नियम को घटाकर चमत्कारी फलादेश किया जा सकता है।

धात्वादिराशिभेदाच्च धात्वादिग्रह योगतः।
शुभपापदशाभेदात् शुभपापयुतैरपि ।। 25 ।।
इष्टानिष्टस्थानभेदात् फलभेदात् समुन्नयेत्।
एवं सर्वग्रहाणां च दशास्वन्तर्दशास्वपि ।। 26 ।।
स्वराशितो राशियुक्तिं प्रकल्प्य फलमीरयेत्।
अन्तरन्तर्दशां स्वीयां विभज्यैवं पुनः पुनः ।। 27 ।।

(i) पहले राशियों व ग्रहों के जो धातु आदि बताए गए हैं, शुभान्तर्दशा में उनकी वृद्धि तथा पापराश्यन्तर्दशा में उनसे हानि भी समझें।

(ii) योगकारक ग्रह व पापफलप्रदग्रहों के भेद तथा सामान्यतः निसर्गपाप व शुभ के भेद को भी ध्यान में रखें। इसी तरह शुभ व पाप भाव का भी समन्वय करें।

(iii) जिस प्रकार राशि अन्तर्दशा कही हैं तदनुसार ही अन्तर्दशा मान के भी 12 समान भाग करके राशियों की प्रत्यन्तर्दशा की भी योजना करके फलादेश करें।

उदाहरण में वर्तमान में वृषान्तर्दशा है। 19 मास की अन्तर्दशा के बारह भाग किए तो 1 मास 17 दिन 30 घड़ी की प्रत्यन्तर्दशा हुई।

29.3.93 से 16.5.93 तक वृष प्रत्यन्तर, 4.7.93 तक मिथुन 21.8.93 तक कर्क, 9.11.93 तक सिंह, 26.12.93 तक कन्या, 14.2.94 तक तुला, 1.4.94 तक वृश्चिक। इत्यादि क्रम से प्रत्यन्तर्दशाएँ होंगीं।

इसी विधि से राशियों में भी अन्तर्दशाएँ कल्पित करके फलादेश कर सकते हैं। राशि दशा में ग्रहों की अन्तर्दशाएँ व ग्रहदशा में राशियों की अन्तर्दशाएँ हो सकती हैं। इसमें कुछ भी विचित्र नहीं है।

इष्टानिष्ट भावभेदात् कहकर महर्षि ने बताया है कि महादशेश से अन्तर्दशेश यदि शुभ भावों में पड़े तो उसमें शुभ फल तथा 4.8.12 में पड़े तो अशुभ फल होगा। जो ग्रह जिस फल का बोधक हो, उससे सम्बन्धित फल की हानि वृद्धि होगी। 3.6.10.11 उपचय स्थानों में परिगणित होने से अन्तर्दशेश यदि इन स्थानों में हो तो सामान्यतः अपने फल की वृद्धि करेगा। अन्य स्थानों में अपने शुभाशुभ फल की हानि करेगा।

दशावाहन से फल विचार :–

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि दशावाहनमुत्तमम्।
प्राणिनां च हितार्थाय कथयामि तवाग्रतः।। 28।।
जन्मभाद् दिनभं यावत् गणनीयमनुक्रमात्।
नवभिस्तु हरेद् भागं शेषं वाहनमुच्यते।। 29।।
गर्दभो घोटको हस्ती महिषो जम्बुसिंहकौ।
काको हंसो मयूरश्च वाहनं नवधा मतम्।। 30।।
खरे च कलहं विद्यात् अश्वे बुद्धिर्विदेशके।
गजे लाभं विजानीयान्महिषे व्याधिजं भयम्।। 31।।

जम्बुके च भयं घोरं सिंहे च विजयं स्मृतम् ।
काके चिन्ता मयूरे च सुखसम्पत्तयः सदा ।।
हंसे जयं विजानीयात् यात्रा काले विशेषतः ।। 32 ।।

(i) अब मैं दशा के वाहन से दशा का फल निर्धारण कहता हूँ। इसका प्रयोग दशारम्भ के नक्षत्र से देखना चाहिए ।

(ii) जन्मनक्षत्र से दिननक्षत्र (दशारम्भ का दिन) तक गिनकर 9 का भाग दें । शेष संख्या से वाहन होता है ।

(iii) गधा, घोड़ा, हाथी, भैंसा, गीदड़, सिंह, काक, हंस, व मयूर ये 9 दशावाहन होते हैं ।

(iv) गधा वाहन से कलह, अश्व से बुद्धि व विदेश यात्रा, गज से लाभ, महिष से रोग, गीदड़ से भय, सिंह से विजय, काक से चिन्ता, मयूर से सम्पत्ति व हंस से विजय होती है ।

(v) इसका प्रयोग दैनिक नक्षत्र से करके भी यात्रा, विवाद, मुकदमे आदि में शुभाशुभ फल देखते समय भी विशेषतया करना चाहिए ।

(vi) इसी प्रकार अन्तर्दशा के आरम्भ नक्षत्र से अन्तर्दशा का वाहन भी जान सकते हैं ।

वर्तमान शनि दशा 29. 9. 93 को मृगशिरा नक्षत्र में प्रारम्भ हुई । जन्म नक्षत्र आर्द्रा से गिनने पर 27 ÷ 9 = 0 शेष अर्थात् हंस वाहन है । फलस्वरूप इस दशा में सर्वत्र विजय होगी । वर्तमान में चन्द्रान्तर्दशा 2. 9. 94 को पुनर्वसु नक्षत्र में शुरू हुई । आर्द्रा से पुनर्वसु तक 2 संख्या होने से विदेश यात्रा या यात्रा से धन लाभ होगा ।

इसी विधि से दैनिक फल भी जाना जा सकता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां दशाफल-
गुणाध्यायस्त्रिपंचाशत्तमः ।।53 ।।

54

।। अथ सूर्यान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

सूर्य में सूर्यान्तर्दशाफल :-

स्वोच्चे स्वभे स्थितः सूर्यो लाभे केन्द्रे त्रिकोणके ।
स्वदशायां स्वभुक्तौ च धनधान्यादि लाभकृत् ।। 1 ।।

नीचाद्यशुभराशिस्थो विपरीतं फलं दिशेत् ।
द्वितीयद्यूननाथेऽर्के त्वपमृत्युभयं वदेत् ।। 2 ।।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।
सूर्यप्रीतिकरीं शान्तिं कुर्यादारोग्यलब्धये ।। 3 ।।

(i) सूर्य यदि स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री हो या बलवान्, शुभभावेश होकर 1.4.7.10.5.9.11 भावों में हो तो सूर्यदशा में सूर्यान्तर्दशा होने पर धनधान्य की वृद्धि होती है।

(ii) सूर्य यदि नीचगत या अशुभ भाव या अशुभ राशि (अतिशत्रु, शत्रुक्षेत्री) में हो तो धन–धान्य की हानि होती है।

(iii) यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो इस अन्तर्दशा में अपमृत्यु (दुर्घटना आदि) का भय होता है।

(iv) इसकी शान्ति के लिए मृत्युंजय मन्त्र का जप, सूर्य दान, सूर्योपासना आदि करने से सुरक्षा रहती है।

ग्रह शान्ति के विषय में आगे शान्त्यध्यायों में विस्तार से बताया जाएगा।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गतेचन्द्रेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।
विवाहं शुभकार्यं च धनधान्यसमृद्धिकृत् ।। 4 ।।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिं च पशुवाहनसम्पदाम् ।
तुंगे वा स्वर्क्षगे वापि दारसौख्यं धनागमम् ।। 5 ।।
पुत्रलाभं सुखं चैव सौख्यं राजसभागमम् ।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिं सुखावहाम् ।। 6 ।।

सूर्य में चन्द्रान्तर्दशा रहने पर यदि चन्द्रमा केन्द्र त्रिकोण में हो तो विवाह व अन्य शुभ मांगलिक कार्य, धनधान्य की वृद्धि, गृह मकान आदि की वृद्धि, पशु व वाहनादि की वृद्धि होती है।

यदि चन्द्रमा स्वक्षेत्री या उच्चगत हो तो स्त्रीसुख, धनलाभ, पुत्रलाभ, सुख, राजा से मैत्री, राजा की कृपा से मनोरथ सिद्ध होता है।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते दारपुत्रादिपीडनम् ।
वैषम्यं जनसंवादं मृत्युवर्गविनाशनम् ।। 7 ।।
विरोधं राजकलहं धनधान्यपशुक्षयम् ।
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे जलभीतिं मनोरुजम् ।। 8 ।।

बन्धनं रोगपीड़ां च स्थानविच्युतिकारकम् ।
दुःस्थानं चापि वित्तेन दायादजनविग्रहम् ।। 9 ।।
निर्दिशेत् कुत्सितान्नं च चौरादिनृपपीडनम् ।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च देहपीडा तथा भवेत् ।। 10 ।।

(i) चन्द्रमा क्षीण या पापयुक्त हो तो स्त्रीपुत्रादि को कष्ट, बदनामी, सेवकों की हानि, विरोध, राजकीय पुरुषों से विवाद, धन–धान्य पशु की हानि होती है ।

(iii) 6. 8. 12 में चन्द्रमा हो तो पानी से भय, मनोविकार, बन्धन, रोगपीड़ा, स्थानभ्रंश होता है ।

(iv) खराब जगह पर स्थान परिवर्तन, बँटवारे से सम्बन्धित या उत्तराधिकार सम्बन्धी विवाद, खराब भोजन, चोर व राजा से पीड़ा, मूत्ररोग, शरीर कष्ट होता है ।

दायेशाल्लाभभाग्ये च केन्द्रे वा शत्रुसंयुते ।
भोगभाग्यादिसन्तोष दारपुत्रादिवर्धनम् ।। 11 ।।
राज्यप्राप्तिं महत्सौख्यं स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम् ।
विवाहं यज्ञदीक्षां च सुमाल्याम्बरभूषणम् ।। 12 ।।
वाहनं पुत्रपौत्रादि लभते सुखवर्धनम् ।

महादशेश से यदि 9. 11. 4. 7. 10 में चन्द्रमा हो या शुभयुक्त हो तो भोगवृद्धि, भाग्यवृद्धि, सन्तोष, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि, राज्यलाभ, सुख, पदवी, विवाह, यज्ञादि कार्य, सुन्दर वस्त्रोपभोग, वाहन लाभ, पुत्रपौत्रादि की वृद्धि होती है ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 13 ।।
अकाले भोजनं चैव देशाद्देशं गमिष्यति ।
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।।
श्वेतां गां महिषीं दद्यात् शान्तिं कुर्यात्सुखाप्तये ।। 14 ।।

(i) महादशेश से चन्द्रमा 6. 8. 12 भावों में हीनबली हो तो असमय से भोजन व निरन्तर प्रवास होता है ।

(ii) यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । सुख प्राप्ति के लिए सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करना चाहिए ।

भौमान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते भौमे स्वोच्चे स्वक्षेत्रलाभगे ।
लग्नात्केन्द्र त्रिकोणे वा शुभकार्यं समादिशेत् ।। 15 ।।

भूलाभं कृषिलाभं च धनधान्यविवर्धनम् ।
गृहक्षेत्रादिलाभं च रक्तवस्त्रादि लाभकृत् ।। 16 ।।
लग्नाधिपेन संयुक्ते सौख्यं राजप्रियं वदेत् ।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभश्चैव भविष्यति ।। 17 ।।
बहुसेनाधिपत्यं च शत्रुनाशं मनोदृढ़म् ।
आत्मबन्धुसुखं चैव भ्रातृवर्धनकं तथा ।। 18 ।।

(i) सूर्य महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल स्वोच्च या स्वक्षेत्र या एकादश भाव में हो या लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं ।

(ii) भूमि का लाभ, कृषि वृद्धि, धन–धान्य में वृद्धि, जमीन–जायदाद का लाभ, लाल वस्त्रों की प्राप्ति होती है ।

(iii) लग्नेश व मंगल साथ हों तो सुख व राजप्रीति होती है ।

यदि 9.11 भावेश से युक्त हो तो लाभयोग बनाते हैं ।

(iv) तथा बहुत सी सेना का स्वामित्व, बहुत से सहायकों की प्राप्ति, शत्रु नाश, मन में उत्साह व हिम्मत, अपने बन्धुओं का सुख व भाइयों की बढ़ोत्तरी होती है ।

दायेशाद् व्ययरन्ध्रस्थे पापैर्युक्तेऽथ वीक्षिते ।
आधिपत्य बलैर्हीने क्रूरबुद्धि मनोरुजम् ।। 19 ।।
कारागृहे प्रवेशं च कथयेद् बन्धुनाशनम् ।
भ्रातृवर्गविरोधं च कार्यनाशमथापि वा ।। 20 ।।
नीचे वा दुर्बले भौमे राजमूलाद् धनक्षयः ।
द्वितीय द्यूननाथे तु देहे जाड्यं मनोरुजम् ।। 21 ।।
सुब्रह्मजपदानं च वृषोत्सर्ग तथैव च ।
शान्तिं कुर्वीत विधिवदायुरारोग्यसिद्धये ।। 22 ।।

(i) महादशेश से 8.12 भाव में मंगल हो या मंगल पापदृष्ट या युक्त हो या निर्बल अथवा योग कारक न हो तो क्रूर बुद्धि का उदय, मनोविकार, कारागृहवास, बन्धुओं का नाश, भाइयों से वैर, कार्यहानि होती है ।

(ii) यदि मंगल बलहीन या नीचगत हो तो राजकोप से धनहानि, 2.7 भावेश हो तो शरीर में जड़ता, मनोविकार, शरीरकष्ट होता है ।

(iii) इसकी शान्ति के लिए वेदपाठ, जप, दान, साँड छोड़ना आदि शान्ति कार्य करने चाहिए, इससे आयु व स्वास्थ्य की रक्षा होती है ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
आदौ द्विमासपर्यन्तं धननाशो महद्भयम् ।। 23 ।।
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम् ।
तत्परं सुखमाप्नोति शुभयुक्ते शुभांशके ।। 24 ।।
देहारोग्यं मनस्तुष्टी राजप्रीतिकरं सुखम् ।
लग्नादुपचये राहौ योगकारकसंयुते ।। 25 ।।
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानमादिशेत् ।
भाग्यवृद्धिं यशोलाभं दारपुत्रादिपीडनम् ।। 26 ।।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणशोभनम् ।

(i) सूर्य दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो तो पहले दो मास तक धननाश , महान् भय, चोर, सर्पभय, घाव, स्त्री व पुत्रादि को कष्ट होता है। इसके उपरान्त सुख होता है।

(ii) यदि राहु शुभ ग्रह से युक्त या शुभ नवांश में हो तो अच्छा स्वास्थ्य, मन में सन्तोष, राजा से मित्रता होती है।

(iii) महादशेश से शुभ भावों में राहु हो अथवा 3.6.10.11 भावों में दशापति से गिनने पर हो या योग कारक ग्रह से युक्त हो तो राजसम्मान मिलता है। भाग्यवृद्धि, यशप्राप्ति, स्त्री व पुत्र को कष्ट, पुत्र से सम्बन्धित उत्सव, घर में प्रसन्नता के अवसर होते हैं।

दायेशादथ रिःफस्थे रन्ध्रे वा बलवर्जिते ।। 27 ।।
बन्धनं स्थाननाशश्च कारागृहनिवेशनम् ।
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिवर्धनम् ।। 28 ।।
चतुष्पाज्जीवनाशश्च गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।
गुल्मक्षयादिरोगश्च, ह्यतिसारादिपीडनम् ।। 29 ।।

महादशेश से 8.12 भाव में राहु हो या निर्बल हो तो बन्धन, स्थानहानि, कारावास, चोरभय, सर्पभय, घावभय, स्त्रीपुत्र की वृद्धि, चौपाए धन की हानि, अचल सम्पत्ति की हानि, जिगर तिल्ली, क्षय या पेचिश रोग से पीड़ा होती है।

द्विसप्तस्थे तथा राहौ तत्स्थानाधिपसंयुते ।
अपमृत्युभयं चैव सर्पभीतिश्च जायते ।। 30 ।।
दुर्गापाठं प्रकुर्वीत छागदानं समाचरेत् ।
कृष्णां गां महिषीं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम् ।। 31 ।।

(i) राहु यदि 2.7 भावों में हो या इन भावों के स्वामी ग्रहों (मारकेश) से युक्त हो तो अपमृत्यु व सर्प का भय होता है।

(ii) अनिष्ट शान्ति के लिए दुर्गापाठ, भेड़–बकरी का दान, काली गाय या भैंस का दान करना चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे मित्रस्य वर्गस्थे विवाहं राजदर्शनम्।। 32।।
धनधान्यादि लाभं च पुत्रलाभं महत्सुखम्।
महाराजप्रसादेन इष्टकार्यार्थलाभकृत्।। 33।।
ब्राह्मणप्रियसन्मानंप्रियवस्त्रादिलाभकृत्।
भाग्यकर्माधिपवशाद् राज्यलाभं वदेद् द्विज !।। 34।।
नरवाहनयोगश्च स्थानाधिक्यं महत्सुखम्।

सूर्य महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो, स्वोच्च, स्वक्षेत्री या मित्रवर्गगत हो तो विवाह व राजा के साथ भेंटवार्ता होती है।

इस दशा में धन धान्य का लाभ, पुत्र लाभ, खूब सुख, बड़े लोगों की सहायता से इष्ट सिद्धि, धनलाभ, ब्राह्मणों व सज्जनों द्वारा सम्मान, अभीष्ट वस्त्रादि की प्राप्ति होती है।

यदि गुरु 9.10 भावेश हो या इन भावेशों से सम्बन्ध करे तो राज्यलाभ, प्रतिष्ठित नरवाहन (पालकी) अर्थात् जन समुदाय के हृदय में निवास करने का सुयोग, पद स्थान वृद्धि, अपूर्व सुख होता है।

दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्यवृद्धिः सुखावहा।। 35।।
दानधर्मक्रियायुक्तोदेवताराधनप्रियः।
गुरुभक्तिर्मनः सिद्धिः पुण्यकर्मादिसंग्रहः।। 36।।

महादशेश से शुभ भावों में हो तो इस अन्तर्दशा में भाग्य वृद्धि, सुख लाभ, दानधर्मादि की योग्यता, देवताओं की आराधना, गुरु भक्ति, कार्य सिद्धि व पुण्यों का उदय होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे नीचे वा पापसंयुते।
दारपुत्रादिपीड़ा च देहपीड़ा महद्भयम्।। 37।।
राजकोपं प्रकुरुतेऽभीष्टवस्तुविनाशनम्।
पापमूलाद् द्रव्यनाशं देहभ्रष्टं मनोरुजम्।। 38।।

स्वर्णदानं प्रकुर्वीत स्वेष्टजाप्यं च कारयेत् ।

गवां कपिलवर्णानां दानेनारोग्यमादिशेत् ।। 39 ।।

महादशेश 6.8 भावों में गुरु हो या नीचगत हो या पाप ग्रह युक्त हो तो स्त्री पुत्रादि की ओर से पीड़ा, शरीर कष्ट, भय, राजप्रकोप, इष्ट वस्तु का विनाश, पापी लोगों या दुष्कर्म के कारण धनलाभ, शरीर में भ्रष्टता, मनोविकार होते हैं ।

इसकी शान्ति के लिए सुवर्णदान, अपने इष्ट देवता का जप, कपिला गौ का दान करने से आयु आरोग्य की सुरक्षा होती है ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते मन्दे लाभकेन्द्रत्रिकोणगे ।

शत्रुनाशो महत्सौख्यं स्वल्पधान्यादि लाभकृत् ।। 40 ।।

विवाहादिसुकार्यं च गृहे तस्य शुभावहम् ।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे सुहृदगृहसमन्विते ।। 41 ।।

गृहेकल्याणसम्पत्तिर्विवाहादिषुसत्क्रिया ।

राजसन्मानकीर्तिश्च नानावस्त्रधनागमः ।। 42 ।।

सूर्य महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि लग्न से केन्द्र त्रिकोण या एकादश में हो तो शत्रुओं का नाश, बहुत सुख लेकिन धन धान्य का लाभ कम होता है । इसी दशा में विवाहादि सुकार्य तथा घर में अन्य मांगलिक कार्य होते हैं ।

यदि शनि उच्चगत या स्वक्षेत्री हो या मित्रक्षेत्र में गया हो तो घर में कल्याणकारक, उपयोगी वस्तुओं व सम्पत्ति (भोगसाधन) का संग्रह, विवाहादि सत्कार्य का सम्पादन, राजसम्मान, सज्जनों द्वारा मान तथा अनेक प्रकार से धनागम होता है ।

दायेशादथ रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।

वातशूलमहाव्याधि ज्वरातीसार पीड्नम् ।। 43 ।।

बन्धनं कार्यहानिश्च वित्तनाशो महद्भयम् ।

अकस्मात् कलहश्चैव दायाद् जनविग्रहः ।। 44 ।।

भुक्त्यादौ मित्रहानिः स्यान्मध्ये किंचित्सुखावहम् ।

अन्ते क्लेशकरं चैव नीचे तेषां तथैव च ।। 45 ।।

पितृमातृवियोगश्च गमनागमनं तथा ।

द्वितीयद्यूननाथेतु अपमृत्युभयं भवेत् ।। 46 ।।

कृष्णां गां महिषीं दद्यान्मृत्युंजयजपं चरेत् ।
छागदानं प्रकुर्वीत् सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।। 47 ।।

(i) यदि शनि सूर्य से 8.12 में हो या पापयुक्त हो तो मनुष्य को वातरोग, जोड़ों की बीमारी, बड़ा रोग, बुखार, पेचिश आदि होते हैं । साथ ही बन्धन, कार्यनाश, धननाश व भय का कारण उपस्थित होता है । अचानक कलह, साझेदारों, हिस्सेदारों से विवाद होता है ।

(ii) अन्तर्दशा के प्रारम्भ में मित्रों की हानि, मध्य में साधारण सुख तथा अन्त में क्लेशदायक होता है । इसी तरह नीचगत शनि का भी फल समझें ।

(iii) नीचगत शनि होने पर यह वक्ष्यमाण फल अतिरिक्त होता है । माता पिता का वियोग, अधिक भागदौड़ या यात्राएँ होती हैं ।

(iv) यदि शनि 2-7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय होता है । इसकी शान्ति के लिए काली गाय या भैंस का दान करें । मृत्युंजय मन्त्र का जप करें और भेड़ या बकरी का दान करें तो सब प्रकार से सुख होता है ।

बुधान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते सौम्ये स्वोच्चे वा स्वर्क्षभेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोण लाभस्थे बुधे वर्गबलैर्युते ।। 48 ।।
राज्यलाभो महोत्साहो दारपुत्रादिसौख्यकृत् ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।। 49 ।।
पुण्यतीर्थफलावाप्ति गृहे गोधनसंकुलम् ।
भाग्यलाभाधिपेर्युक्ते लाभवृद्धिकरो भवेत् ।। 50 ।।
भाग्यपंचमकर्मस्थे सन्मानो भवति ध्रुवम् ।
सुकर्मधर्मबुद्धिश्च गुरुदेवद्विजार्चनम् ।। 51 ।।
धनधान्यादि संयुक्तो विवाहः पुत्रसम्भवः ।

(i) यदि बुध स्वोच्च या स्वक्षेत्र में केन्द्र त्रिकोण या लाभस्थान में हो, या वर्गबली अर्थात् अधिक शत्रु वर्गों में गया हो तो इसकी अन्तर्दशा में राज्यप्राप्ति, हृदय में बहुत उत्साह, स्त्री पुत्रादि का सुख, राजा की ओर से सम्मानजनक वस्त्राभूषण (दुशाला) की प्राप्ति, तीर्थाटन, घर में पशुधन की वृद्धि होती है ।

(ii) यदि बुध नवमेश या लाभेश से युक्त हो तो अधिक लाभ होता है । 5.9.10 भावों में स्थित हो तो मान–सम्मान मिलता है । धर्म–कर्म की

वृद्धि, धार्मिक बुद्धि का उदय, गुरुदेवताओं का अर्चन, धनधान्य की वृद्धि, विवाह व पुत्रोत्पत्ति की सम्भावना होती है।

दायेशाच्छुभराशिस्थे सौम्ययुक्ते महत्सुखम् ।। 52 ।।
वैवाहिकं यज्ञकर्मदानधर्मजपादिकम् ।
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा ।। 53 ।।
भोजनाम्बर भूषाप्तिरमरेशो भवेन्नरः ।

दशेश से शुभ भावों में शुभ युक्त होकर बुध स्थित हो तो बहुत सुख, विवाहादि यज्ञकर्म, दानधर्म की वृद्धि, व्यक्ति की प्रशंसा में काव्यादि रचना अर्थात् जातक की प्रशस्ति में कोई अन्य श्लोक कविता लिखे, किसी अन्य नाम या उपनाम से प्रसिद्धि हो, विशिष्ट भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि की प्राप्ति तथा इन्द्र तुल्य स्तर प्राप्त होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे रिःफगे नीचगेऽपि वा ।। 54 ।।
देहपीड़ा मनस्तापो दारपुत्रादि पीडनम् ।
भुक्त्यादौ दुःखमाप्नोति मध्ये किंचित्सुखावहम् ।। 55 ।।
अन्ते तु राजभीतिश्च गमनागमनं तथा ।
द्वितीये द्यूननाथे तु देहजाड्यं ज्वरादिकम् ।। 56 ।।
विष्णुनाम सहस्रं च ह्यन्नदानं च कारयेत् ।
रजतप्रतिमादानं कुर्यादारोग्यसिद्धये ।। 57 ।।

(i) महादशेश सूर्य से 6.8.12 में बुध हो या नीचगत हो तो इसकी अन्तर्दशा में शरीरकष्ट, मन में सन्ताप, स्त्री–पुत्रादि परिवारजनों को पीड़ा, दशारम्भ में दुःख, मध्य में थोड़ा सुख व अन्त में राजभय व वृथा भ्रमण होता है।

(ii) 2.7 भावेश बुध की अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, ज्वरादि रोग होते हैं। तब अनिष्टफल की शान्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का पाठ, अन्नदान व चाँदी की विष्णुप्रतिमा का दान करना चाहिए। इससे स्वास्थ्य व आयु की सुरक्षा होती है।

केतु अन्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते केतौ देहपीड़ा मनोव्यथा ।
अर्थव्ययं राजकोपं स्वजनादेरुपद्रवम् ।। 58 ।।
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमम् ।
मध्ये तत्क्लेशमाप्नोति मृतवार्तागमं वदेत् ।। 59 ।।

(i) सूर्य दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो शरीरकष्ट, मानसिक अशान्ति, धनव्यय, राजकोप, अपने परिवारजनों के कारण उपद्रव, पारिवारिक कलह होती है।

(ii) यदि केतु लग्नेश के साथ हो तो प्रारम्भ में सुख व धनप्राप्ति, मध्य में कष्ट व अन्त में कहीं से मृत्यु का समाचार प्राप्त होता है।

अथाष्टमव्यये चैवं दायेशात्पापसंयुते।
कपोलदन्तरोगश्च मूत्रकृच्छ्रस्य सम्भवः।। 60।।
स्थानविच्युतिरर्थस्य मित्रहानिः पितृमृतिः।
विदेशगमनं चैव शत्रुपीड़ा महद्भयम्।। 61।।

यदि केतु सूर्य से 8.12 में हो और, पापयुक्त भी हो तो गाल या दाँतों में रोग, मूत्र सम्बन्धी रोग, स्थान परिवर्तन, धनहानि, मित्र वियोग पिता की मृत्यु, विदेश पलायन, शत्रु पीड़ा का भय होता है।

लग्नादुपचये केतौ योगकारक संयुते।
शुभांशे शुभवर्गे च शुभकर्मफलोदयः।। 62।।
पुत्रदारादिसौख्यं च सन्तोषं प्रियवर्धनम्।
विचित्रवस्त्रलाभश्च यशोवृद्धिः सुखावहा।। 63।।
द्वितीय द्यूननाथे वा ह्यपमृत्युभयं भवेत्।
दुर्गाजपं प्रकुर्वीत छागदानं सुखाप्तये।। 64।।

(i) यदि लग्न से 3.6.10.11 भावों में हो या योगकारक ग्रह के साथ हो या शुभ नवांश में हो, शुभवर्गों में हो तो, शुभकर्मो का फल मिलता है। अर्थात् जीवनचर्या सुगम व शान्त होती है। पुत्र–स्त्री का सुख, मन में सन्तोष, प्रियजनों व प्रिय वस्तुओं की वृद्धि, विचित्र वस्त्रों की प्राप्ति, यशोलाभ, सुख होता है।

(ii) यदि केतु 2.7 भावेशों के साथ हो या पूर्वोक्त राशि स्वामी प्रकार से 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। शान्ति के लिए दुर्गा जप पाठादि व बकरे का दान करना चाहिए।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

सूर्यस्यान्तर्गते शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
स्वोच्चे स्वर्क्षादिवर्गस्थेऽभीष्टस्त्रीभोग्यसम्पदः।। 65।।
ग्रामान्तरप्रयाणं च ब्राह्मणप्रभुदर्शनम्।
राज्यलाभो महोत्साहोछत्रचामरवैभवम्।। 66।।

गृहे कल्याणसम्पत्तिर्नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।
विद्रुमादिरत्नलाभो मुक्तावस्त्रादिलाभकृत् ।।67।।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् बहुधान्यधनादिकम् ।
उत्साहः कीर्तिसम्पत्तिर्नरवाहनसम्पदः ।।68।।

सूर्यदशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र केन्द्र त्रिकोण में, स्वोच्च में, स्वक्षेत्र में या स्वक्षेत्र, उच्च त्रिकोणादि के वर्ग में स्थित हो तो प्रिय स्त्री से समागम, भोग प्राप्ति, दूसरे स्थान पर निवास, विप्र व राजा का दर्शन, राज्यलाभ, उत्साह, छत्र चँवर का सुख अर्थात् महामान्य होना, घर में सब प्रकार के कल्याण, नित्य मधुर भोजन, मणिमुक्तादि का लाभ, चौपाये धन की प्राप्ति, बहुत धन–धान्य, कीर्ति, सम्पत्ति व पालकी आदि प्रतिष्ठित वाहन की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे दायेशाद् बलवर्जिते ।
राजकोपो मनःक्लेशः पुत्रस्त्रीधननाशनम् ।।69।।
भुक्त्यादौ मध्यमं मध्ये लाभः शुभकरो भवेत् ।
अन्ते यशोनाशनं च स्थानभ्रंशमथापि वा ।।70।।
बन्धुद्वेषं वदेद् वापि स्वकुलाद् भोगनाशनम् ।
भार्गवे द्यूननाथे तु देहे जाड्यं रुजोभयम् ।।71।।
रन्ध्ररिःफसमायुक्तेऽप्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।।72।।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् रुद्रजाप्यं च कारयेत् ।
ततः शान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः ।।73।।

(i) दशेश सूर्य से 6.8.12 में शुक्र हो, बलहीन हो तो राजकोप, मन में क्लेश, पुत्र, स्त्री, धन आदि की हानि होती है।

(ii) अन्तर्दशा के प्रारम्भ में मध्यम, मध्य में लाभकारी व शुभकारी, अन्त में यशो हानि (बदनामी) स्थानभ्रंश, बन्धुओं से द्वेष, अपने परिवार में सुख की कमी होती है।

(iii) यदि शुक्र सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट, रोगादि फल होते हैं।

(iv) यदि शुक्र लग्न से 8.12 भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है तथा इस दोष की शान्ति के लिए मृत्युंजय जप, रुद्र जप या अभिषेक, सफेद गाय या भैंस का दान करना चाहिए। तब शंकरजी की प्रसन्नता से सुख होता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
सूर्यान्तर्दशाफलाध्यायः चतुःपंचाशत्तमः ।।54।।

55

।।अथ चन्द्रान्तर्दशाफलाध्यायः।।

चन्द्रमहादशा में चन्द्रान्तर :–

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चन्द्रे त्रिकोणे लाभेऽपि वा।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते गजाश्वाम्बरसंकुलम्।।1।।
देवता गुरुभक्तिश्च पुण्यश्लोकादिकीर्तनम्।
राज्यलाभो महत्सौख्यं यशो वृद्धिः सुखावहा।।2।।
पूर्णे चन्द्रे बलपूर्ण सेनापत्यं महत्सुखम्।

(i) यदि चन्द्रमा स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो, त्रिकोण या लाभस्थान में हो या 9.10 भावेश से युक्त हो तो हाथी घोड़ों का ऐश्वर्य प्राप्त होता है। देवता व गुरु के प्रति भक्ति, सत्कीर्ति, राज्यलाभ, बहुत सुख होता है।

(ii) यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो सामर्थ्य में वृद्धि, सेनापतित्व व बहुत सुख मिलता है।

पापयुक्तेऽथवा चन्द्रे नीचे वा रिःफष्ठगे।।3।।
तत्काले धननाशः स्यात् स्थानच्युतिरथापि वा।
देहालस्यं मनस्तापो राजमन्त्रिविरोधकृत्।।4।।
मातृक्लेशो मनोदुःखं निगडं बन्धुनाशनम्।
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रारिःफेशसंयुते।।5।।
देहजाड्यं मनोभंगमपमृत्योर्भयं वदेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यात् स्वदशान्तर्गते विधौ।।6।।

(i) यदि चन्द्रमा पापयुक्त, नीच, 6.12 भावगत हो तो तत्काल धन का नाश व स्थान या पद की अवनति, शरीर में आलस्य, राजा के मन्त्री से विरोध, माता को कष्ट, मानसिक सन्ताप, बन्धन, बन्धुओं की हानि होती है।

(ii) 2.7 भावेश चन्द्रमा हो या 8.12 भावेश से युक्त हो तो देह में आलस्य, उत्साह भंग, अपमृत्यु का भय होता है। शान्ति के लिए सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करे।

मंगलान्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेभौमेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
सौभाग्यं राजसम्मानं वस्त्राभरणभूषणम् ।। 7 ।।
यत्नात्कार्यार्थसिद्धिस्तु भविष्यति न संशयः ।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च व्यवहारे जयो भवेत् ।। 8 ।।
कार्यलाभो महत्सौख्यं स्वोच्चेस्वक्षेत्रगे फलम् ।

चन्द्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो सौभाग्य वृद्धि, राजसम्मान, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, परिश्रमपूर्वक सफलता, भवनगृहादि की वृद्धि, वाद–विवाद में विजय, कार्य सिद्धि सुख होता है ।

यदि मंगल उच्चगत या स्वक्षेत्री हो तब भी सर्वत्र सफलता मिलती है ।

तथाष्टमव्यये भौमे पापयुक्तेऽपि वा यदि ।। 9 ।।
दायेशादशुभस्थाने देहार्तिः शत्रुवीक्षिते ।
गृहक्षेत्रादि हानिश्च व्यवहारे तथा क्षतिः ।। 10 ।।
भृत्यवर्गेषु कलहो भूपालस्य निरोधनम् ।
आत्मबन्धुवियोगश्च नित्यं निष्ठुरभाषणम् ।। 11 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रे रन्ध्राधिपो यदा ।
तद्दोषपरिहारार्थं ब्राह्मणस्यार्चनं चरेत् ।। 12 ।।

(i) मंगल यदि लग्न या दशापति से 8.12 में हो, पापयुक्त या शत्रुदृष्ट हो तो शरीरकष्ट होता है। घर की हानि, विवाद में पराजय, सेवकों में कलह, राजा से विरोध, अपने बन्धुओं से वियोग, कठोर वचन बोलने का स्वभाव होता है ।

(ii) यदि मंगल 2.7 भावेश हो या अष्टमेश होकर अष्टम में हो तो विशेष शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए विद्वान् ब्राह्मणों का सत्कार करना चाहिए ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेराहौलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
आदौ स्वल्पफलं ज्ञेयं शत्रुपीड़ा महद्भयम् ।। 13 ।।
चौराहिराजभीतिश्च चतुष्पाज्जीवपीडनम् ।
बन्धुनाशोमित्रहानिर्मानहानिर्मनोव्यथा ।। 14 ।।

चन्द्र महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो दशारम्भ में कुछ शुभ तथा बाद में शत्रु, चोर, सर्प, राजा, चौपाए पशु से भय व पीड़ा, बन्धुओं का नाश, मित्र हानि, मानहानि व मनोव्यथा होती है।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नादुपचयेऽपि वा।
योगकारकसम्बन्धे सर्वकार्यार्थसिद्धिकृत्।। 15।।
नैर्ऋत्ये पश्चिमे भागे क्वचित्प्रभुसमागमः।
वाहनाम्बरलाभश्च स्वेष्टकार्यार्थसिद्धिकृत्।। 16।।

यदि राहु शुभ युक्त, शुभ दृष्ट, लग्न से उपचय भावों में स्थित, योग कारकों से सम्बन्ध रखने वाला हो तो सब कार्यो में सफलता मिलती है। नैर्ऋत्य (दक्षिण पश्चिम) या पश्चिम दिशा में किसी राजा या बड़े व्यक्ति ये भेंट, वाहन, वस्त्रादि का लाभ तथा राजसहयोग से सब वांछित कार्यो की सिद्धि होती है।

दायेशादथरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
स्थानभ्रंशो मनो दुःखं पुत्रक्लेशो महद्भयम्।। 17।।
दारपीडा क्वचिज्ज्ञेया क्वचित् स्वांगे रुजोभयम्।
वृश्चिकादि विषाद् भीतिश्चौरादिनृपपीडनम्।। 18।।

महादशेश से 8.12 में राहु हो या बलहीन हो तो स्थानहानि, मन में दुःख, पुत्र सम्बन्धी कष्ट, महान् भय, कभी स्त्री कष्ट, कभी शरीर कष्ट, बिच्छू आदि जहरीले जन्तुओं से भय, चोर व रेंगने वाले सर्पादि कीटों से भय होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्येलाभगेऽपि वा।
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्देवतादर्शनं महत्।। 19।।
परोपकारधर्मादि पुण्यकर्मादिसंग्रहः।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहबाधा भविष्यति।। 20।।
तद्दोषपरिहारार्थं रुद्रजाप्यं समाचरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत देहारोग्यं प्रजायते।। 21।।

(i) महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 में राहु हो तो तीर्थयात्रा, धार्मिक कार्य, देवताओं का दर्शन (मन्त्र सिद्धि) परोपकार, सत्कार्य होते हैं।

(ii) 2.7 भावों में राहु हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए रुद्रजप तथा छाग (भेड़ या बकरा) का दान करना चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेजीवेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वगेहे लाभगे स्वोच्चे राज्यलाभो महोत्सवः ।। 22 ।।
वस्त्रालंकार भूषाप्ती राजप्रीतिर्धनागमः ।
इष्टदेवप्रसादेन गर्भाधानादिकं फलम् ।। 23 ।।
तथा शोभनकार्याणि गृहलक्ष्मी कटाक्षकृत् ।
राजाश्रयधनं भूमिगजवाजिसमन्वितम् ।। 24 ।।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा ।

चन्द्रमा की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु लग्न से केन्द्र त्रिकोण में, या लाभस्थान में, या स्वोच्च स्वगृहादि में हो तो राज्यलाभ, बहुत प्रसन्नता का वातावरण, वस्त्रालंकार की प्राप्ति, राज्य से मित्रता, धनागम, इष्ट देव की प्रसन्नता, गर्भाधान, शुभ कार्य, घर में लक्ष्मी जी की कृपा, राजाश्रय से धनप्राप्ति, भूमि वाहनादि का लाभ, महाराज की प्रसन्नता से मनोरथ सिद्धि होती है ।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि ।। 25 ।।
पापयुक्तेऽशुभं कर्म गुरुपुत्रादिनाशनम् ।
स्थानभ्रंशो मनोदुःखमकस्मात्कलहो ध्रुवम् ।। 26 ।।
गृहक्षेत्रादिनाशश्च वाहनाम्बरनाशनम् ।

गुरु यदि 6.8.12 में या नीचगत या अस्तंगत हो या पापयुक्त हो तो अशुभ अमंगल कार्य, गुरु, पुत्रादि का नाश, स्थान परिवर्तन, मन में दुःख, सहसा कलह, घर खेत आदि अचल सम्पत्ति का नाश तथा वाहन, वस्त्रादि सुखों की हानि होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।। 27 ।।
भोजनाम्बरपश्वादिलाभं सौख्यं करोति च ।
भ्रात्रादि सुखसम्पत्तिं धैर्य वीर पराक्रमम् ।। 28 ।।
यज्ञव्रतविवाहादि राज्यश्रीधनसम्पदः ।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 29 ।।
करोति कुत्सितान्नं च विदेशगमनं तथा ।
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तमन्ते क्लेशकरं भवेत् ।। 30 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।। 31 ।।

स्वर्णदानमितिप्रोक्तं सर्वकष्टनिवारणम् ।

(i) दशेश से केन्द्र, त्रिकोण में या 3.11 में हो तो भोजन, वस्त्रादि व वाहनों पशुओं का लाभ, सुख, भाइयों के सहयोग से लाभ, धीरता, पराक्रम वृद्धि, यज्ञादि धार्मिक कार्य, विवाहोत्सव, धनसम्पत्ति आदि प्राप्त होती है ।

(ii) यदि दशेश से 8.12 में हो या गुरु निर्बल हो तो कुभोजन, विदेश गमन, अन्तर्दशा के प्रारम्भ में शुभ तथा अन्त में अशुभ फल होते हैं ।

(iii) यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । इसकी शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम का जप करना तथा स्वर्ण दान करना चाहिए । तब सब कष्ट दूर हो जाते हैं ।

शनि अन्तर्दशा फलम् :–

चन्द्रस्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।।32 ।।
स्वक्षेत्रे स्वांशगे वापि मन्दे तुंगांशसंयुते ।
शुभदृष्टयुते वापि लाभे वा बलसंयुते ।। 33 ।।
पुत्रमित्रार्थ सम्पत्तिः शूद्रप्रभुसमागमात् ।
व्यवसायात्फलाधिक्यं गृहे क्षेत्रादिवृद्धिदम् ।। 34 ।।
पुत्रलाभश्च कल्याणं राजानुग्रहवैभवम् ।

चन्द्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो, शनि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में, स्वक्षेत्र में, या स्वनवांश में, उच्चनवांश में या उच्च में हो या शुभ ग्रह से युक्त हो, लाभ स्थान में हो या वहीं हो तो पुत्र, मित्र, धन, सम्पत्ति का लाभ किसी शूद्रराजा की मित्रता से होती है । व्यवसाय वृद्धि, गृह निर्माण, अचल सम्पत्ति की वृद्धि, पुत्रलाभ, कल्याण, राजा की कृपा व वैभव वृद्धि होती है ।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा धनगेऽपि वा ।। 35 ।।
तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थे स्नानं चैव तु दर्शनम् ।
अनेकजनत्रासश्च शत्रुपीड़ा भविष्यति ।। 36 ।।

यदि शनि 6. 8. 12 में या नीच में या द्वितीय स्थान में हो तो अन्तर्दशा के शुरू में पुण्यतीर्थ यात्रा, स्नान लेकिन अनेक लोगों से भय व शस्त्रपीड़ा भी होती है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे बलगेऽपि वा ।
क्वचित्सौख्यं धनाप्तिश्च दारपुत्रविरोधकृत् ।। 37 ।।

द्वितीयद्यूनरन्ध्रस्थे देहबाधा भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।। 38 ।।

कृष्णां गां महिषीं दद्याद् दानेनारोग्यमादिशेत् ।

दशापति से केन्द्र, त्रिकोण में, बली हो तो कभी सुख व धनप्राप्ति लेकिन स्त्री व पुत्र से विरोध होता है ।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है । इस दोष को दूर करने के लिए मृत्युंजय का जप, काली गाय या भैंस का दान करना चाहिए । इससे स्वास्थ्य लाभ होता है ।

बुध अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेसौम्येकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।। 39 ।।

स्वर्क्षे निजांशके सौम्ये तुंगे वा बलसंयुते ।

धनागमो राजमानप्रियवस्त्रादिलाभकृत् ।। 40 ।।

विद्याविनोदसद्गोष्ठी ज्ञानवृद्धिः सुखावहा ।

सन्तानप्राप्तिः सन्तोषो वाणिज्याद् धनलाभकृत् ।।

वाहनच्छत्रसंयुक्तनानालंकारलाभकृत् ।। 41 ।।

चन्द्रमा में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध केन्द्र, त्रिकोण, 11 भाव में या स्वक्षेत्र स्वनवांश में, उच्चगत या अन्यथा बलवान् हो तो धनलाभ, राजसम्मान, प्रिय वस्त्रादि भोगों की प्राप्ति, विद्याप्राप्ति, सज्जनसंगति, ज्ञानवृद्धि, सन्तान की प्राप्ति का सन्तोष, व्यापार से धनलाभ, वाहन व छत्र से युक्त (अधिकार) विशिष्ट पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ।

विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मशुभादिकम् ।। 42 ।।

राजप्रीतिकरश्चैव विद्वज्जनसमागमः ।

मुक्तामणिप्रवालानि वाहनाम्बरभूषणम् ।। 43 ।।

आरोग्य प्रीतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम् ।

यदि बुध चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धन स्थान में हो तो विवाह, यज्ञ दीक्षा, दानधर्म के अवसर, राजा से प्रीति, विद्वानों का समागम, मुक्ता मणि के अलंकार, आरोग्य लाभ, स्नेह वृद्धि, सुख तथा सोमरस (सुन्दर पेय) पीने के सुयोग होते हैं ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा नीचगेऽपि वा ।। 44 ।।

तद्भुक्तौ देहबाधा च कृषिगोभूमिनाशनम् ।
कारागृहप्रवेशश्च दारपुत्रादिपीडनम् ।। 45 ।।
द्वितीय द्यूननाथे तु ज्वरपीड़ा महद्भयम् ।
छागदानं प्रकुर्वीत विष्णु साहस्रकं जपेत् ।। 46 ।।

दशेश से 6.8.12 में या नीच में बुध हो तो बुधान्तर्दशा में शरीर कष्ट, खेती–बाड़ी या व्यवसाय की हानि, भूमिहानि, कारावास, स्त्रीपुत्र को पीड़ा होती है ।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो ज्वरपीड़ा व बहुत भय होता है । इसकी शान्ति के लिए मेषदान व विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए ।

केतु अन्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गतेकेतौकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते धनलाभं महात्सुखम् ।। 47 ।।
पुत्रदारादि सौख्यं च विविधकर्म करोति च ।
भुक्त्यादौ धनहानिश्च मध्यगे सुखमाप्नुयात् ।। 48 ।।

चन्द्रमा में केतु का अन्तर हो तथा केतु केन्द्र, त्रिकोण या 3.11 स्थानों में हो, बली हो तो धनलाभ, सुख, स्त्रीपुत्रादि का सुख, नीति सम्मत कार्य करने की प्रवृत्ति, अन्तर्दशारम्भ में धन हानि व तत्पश्चात् सुख होता है ।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा त्रिकोणे बलसंयुते ।
क्वचित्फलं दशादौ तु दद्यात् सौख्यं धनागमम् ।। 49 ।।
गोमहिष्यादि लाभं च भुक्त्यन्ते चार्थनाशनम् ।

दशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण लाभ स्थान में केतु हो या बली हो तो दशारम्भ में कुछ अच्छे फल तथा सुख, धन लाभ, पशु धन की वृद्धि होती है, लेकिन अन्तर्दशान्त में धन का नाश हो जाता है ।

पापयुक्तेऽथवा दृष्टे दायेशाद्रन्ध्ररिःफगे ।। 50 ।।
शत्रुतः कार्यहानिः स्यादकस्मात्कलहो ध्रुवम् ।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहकष्टं महद्भयम् ।। 51 ।।
मृत्यंजयजपं कुर्यात् सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।
ततः शान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः ।। 52 ।।

यदि अन्य पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, दशेश से 8.12 में हो तो शत्रु के द्वारा कार्यबाधा, अकस्मात् कलहागम होता है ।

यदि केतु 2.7 भावगत हो तो देह कष्ट व भय होता है। एतदर्थ मृत्युंजय जप करना चाहिए। तब सब प्रकार से लाभ व शान्ति होती है।

शुक्रान्तर्दशा फल:–

चन्द्रस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्र लाभ त्रिकोणगे।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वऽपि राज्यलाभं करोति च।। 53।।

महाराज प्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्दारपुत्रादिवर्धनम्।। 54।।

नूतनागारनिर्माणं नित्यं मिष्ठान्न भोजनम्।

सुगन्धपुष्पमाल्यादिरम्यस्त्र्यारोग्यसम्पदम्।। 55।।

चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में हो, या स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो तो राज्यप्राप्ति होती है। महाराज (बड़े राजा या महान् व्यक्ति) की प्रसन्नता से वाहन, वस्त्राभूषण आदि की प्राप्ति होती है। चौपाए पशुओं से लाभ होता है, स्त्रीपुत्रादि की वृद्धि होती है।

नए स्थान आवासादि का निर्माण होता है, सदैव मधुर भोजन, विषयभोगादि विलासों का अवसर, सुन्दर स्त्री की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य व सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

दशाधिपेन संयुक्ते देहसौख्यं महत्सुखम्।

सत्कीर्तिसुखसम्पत्तिं गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्।। 56।।

यदि चन्द्रमा व शुक्र साथ हों तो शरीर सुख, महल, सुख साधनों की प्राप्ति, सत्यकीर्ति, सुख, सम्पत्ति, घर, जमीन, आदि की वृद्धि होती है।

नीचे वास्तंगते शुक्रे पापग्रहयुतेक्षिते।

भूनाशः पुत्रमित्रादिनाशनं पत्निनाशनम्।। 57।।

चतुष्पाज्जीवहानिः स्याद् राजद्वारे विरोधकृत्।

धनस्थानगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।। 58।।

निधिलाभं महत्सौख्यं भूलाभं पुत्रसम्भवम्।

भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिं करोत्यसौ।। 59।।

महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा।

देव ब्राह्मणभक्तिश्च मुक्ताविद्रुम लाभकृत्।। 60।।

(i) यदि शुक्र नीचगत या अस्तंगत या पापयुक्त या पापदृष्ट हो तो भूमिनाश, पुत्रमित्रादि की हानि, स्त्रीहानि, चौपाए धन की हानि, राजद्वार (कचहरी, थाना) आदि में विरोध होता है।

(ii) यदि शुक्र द्वितीय स्थान में या स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री हो तो धनलाभ, सुख, पुत्रप्राप्ति, भूमि का लाभ होता है।

(iii) यदि शुक्र 9.11 भावेश से युक्त हो तो भाग्य वृद्धि कारक होता है। बडे लोगों की सहायता या प्रसन्नता से इष्ट सिद्धि, देवब्राह्मणों की भक्ति, मुक्ता मोती मणि आदि का लाभ होता है।

दायेशाल्लाभगे शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि या।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च वित्तलाभो महत्सुखम्।। 61।।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
विदेशवासं दुःखार्ति मृत्युचौरादिपीड़नम्।। 62।।

(i) महादशेश से 11 भाव में शुक्र हो या केन्द्र त्रिकोण में गया हो तो घर जायदाद की वृद्धि, धन लाभ व खूब सुख होता है।

(ii) महादशेश से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो विदेश वास, दुःख, पीड़ा, मृत्यु, चौरभयादि होता है।

द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत्।
तद्दोषनिवृत्त्यर्थं रुद्रपाठं च कारयेत्।। 63।।
श्वेतां गां रजतं दद्यात् शान्तिमाप्नोत्यसंशयम्।
शंकरस्य प्रसादेन नात्र कार्या विचारणा।। 64।।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष को शान्त करने के लिए रुद्रजप (रुद्रीय पाठ या तत्कृत अभिषेक) श्वेत गौदान, चाँदी का दान करना चाहिए, तब सब दोषों की शान्ति होती है।

चन्द्रमहादशा सूर्यान्तर्दशा फल :–

चन्द्रस्यान्तर्गते भानौ स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा धने वा सोदरालये।। 65।।
नष्टराज्यधनप्राप्तिर्गृहे कल्याणशोभनम्।
मित्रराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादि लाभकृत्।। 66।।
गर्भधानफलप्राप्तिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
भुक्त्यन्ते देह आलस्यं ज्वरपीड़ा भविष्यति।। 67।।

चन्द्रमा की महादशा में सूर्यान्तर्दशा हो तथा सूर्य स्वोच्च राशि में या सिंह राशि में, केतु त्रिकोण में या 2.3.11 भावों में कहीं हो तो नष्ट राज्य या पद की प्राप्ति, घर में कल्याण कार्यों की सम्पन्नता, मित्रों व राजा या अधिकारियों की कृपा से ग्राम व भूमि का लाभ अर्थात् सामाजिक मान्यता

प्रतिष्ठा व सम्पत्ति का लाभ, सन्तानोत्पत्ति, घर में लक्ष्मी की कृपा, अन्तर्दशा के अन्त में शरीर में शिथिलता, आलस्य, ज्वरादि कष्ट होता है।

दशाफल में ज़्वर शब्द से तात्पर्य साधारणतया ठीक हो जाने वाले रोगों से लेना चाहिए, अर्थात् ज्वर शब्द यहाँ साध्य रोग का उपलक्षण है।

दायेशादपि रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।

नृपचौराहिभीतिश्च ज्वररोगादिसम्भवः।। 68।।

विदेशगमने चार्तिं लभते फलवैभवम्।

महादशेश चन्द्रमा से भी 8.12 भाव में सूर्य हो या सूर्य पापयुक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में ज्वरादिपीड़ा, राजभय, चोरभय, विषैले जन्तुओं से भय, विदेश यात्रा के दौरान कष्ट होता है।

द्वितीय द्यूननाथेतु ज्वरपीड़ा भविष्यति।। 69।।

तद्दोषपरिहारार्थ शिवपूजां च कारयेत्।।

ततः शान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः।। 70।।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो मनुष्य को ज्वर पीड़ा होती है। इसकी शान्ति के लिए देवपूजा करानी चाहिए। तब भगवान् की कृपा से शान्ति होती है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
चन्द्रान्तर्दशाफलाध्यायः पंचपंचाशत्तमः।।55।।

56

।। अथ मंगलान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

मंगलदशा में मंगल अन्तर्दशा :–

कुजे स्वान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।

लाभे वा शत्रुसंयुक्ते दुश्चिक्ये धनसंयुते।। 1।।

लग्नाधिपेन संयुक्ते राजानुग्रहवैभवम्।

लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत्।।2।।

पुत्रोत्सवादि सन्तोषो गृहे गोक्षीरसंकुलम्।

मंगल महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र त्रिकोण, लाभस्थान में हो या शुभयुक्त हो या 2.3 भाव में हो या लग्नेश

से युक्त हो तो राजा की कृपा से वैभव मिलता है ।, लक्ष्मी जी की कृपा, नष्ट राज्य की प्राप्ति, पुत्रोत्सव (पुत्रोत्पत्ति, पुत्रविवाहादि, यज्ञोपवीतादि यथासम्भव) तथा घर में दूध की बहुतायत होती है ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे स्वांशे वा बलसंयुते ।। 3 ।।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गोमहिष्यादि लाभकृत् ।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा ।। 4 ।।

यदि मंगल उच्चगत, स्वक्षेत्री, स्वोच्चादि नवांश में या अन्यथा बली हो तो अचल सम्पत्ति की वृद्धि, गाय भैंस दुधारू पशुओं का लाभ बड़े लोगों के सहयोग से मनोरथ सिद्धि होती है ।

अथाष्टम व्यये भौमे पापदृग्योगसंयुते ।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च कष्टाधिक्यं व्रणाद्भयम् ।। 5 ।।
चौराहिराजपीड़ा च धनधान्य पशुक्षयः ।

यदि मंगल 8.12 भाव में हो या पापग्रह से युक्त दृष्ट हो तो मूत्र रोग, घाव होने का भय, शरीर कष्ट की अधिकता, चोर, सर्प या राजा से भय तथा धन धान्यादि की हानि होती है ।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहकष्टं भविष्यति ।। 6 ।।
अनड्वाहं प्रदद्याच्च रुद्रजाप्यं च कारयेत् ।।
आरोग्यं जायते तस्य सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।। 7 ।।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में शरीर कष्ट होता हे । एतदर्थ साँड या बछड़े का दान, साँड छोड़ना (वृषोत्सर्ग), रुद्रीयपाठ कराना चाहिए, उससे आरोग्य व सम्पत्ति की वृद्धि होती है ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे मूल त्रिकोणगे ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।। 8 ।।
तत्काले राजसम्मानं गृहभून्यादि लाभकृत् ।
कलत्र पुत्रलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम् ।। 9 ।।
गंगास्नानफलावाप्तिं विदेशगमनं तथा ।

मंगलदशा में राहु की अन्तर्दशा हो या राहु स्वोच्चगत, मूल त्रिकोणी, शुभफलप्रद ग्रह से युक्त या शुभदृष्ट, केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में स्थित हो तो राजसम्मान मिलता है । इस समय में व्यवसाय से अधिक लाभ, गंगादि तीर्थों में स्नान तथा विदेशयात्रा के सुयोग होते हैं ।

तथाष्टमव्यये राहौ पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ।। 10 ।।
चौराहिव्रणपीड़ा च चतुष्पाज्जीवनाशनम् ।
वातपित्तरुजो भीतिः कारागृहनिवेशनम् ।। 11 ।।

यदि राहु 8.12 भाव में हो तथा पापयुक्त एवं पाप दृष्ट हो तो चोर, सर्प, चोट का भय, चौपाए पशुओं की हानि, वात–पित्तादि विकारों का भय तथा कारागृह में निवासादि करना पड़ता है।

धनस्थानं गते राहौ धननाशं महद्भयम् ।
सप्तमस्थानगे वापि ह्यपमृत्युर्भयं वदेत् ।। 12 ।।
नागपूजां प्रकुर्वीत देवब्राह्मण भोजनम् ।
मृत्युंजयजपं कुर्यादायुरारोग्य लब्धये ।। 13 ।।

यदि दूसरे स्थान में राहु हो तो धन का नाश तथा भय का कारण उपस्थित होता है। यदि राहु सप्तमस्थ हो तो अपमृत्यु का भय होता है।

ऐसी स्थिति में नागपूजा, देवताओं की पूजा तथा ब्रह्मणभोजन एवं मृत्युंजय जप करने से स्वास्थ्य रक्षा होती है।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते जीवे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।
लाभे वा धनसंयुक्ते तुंगांशे स्वांशकेऽपि वा ।। 14 ।।
सत्कीर्ति राजसम्मानं धनधान्यादि वृद्धिकृत् ।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादि लाभकृत् ।। 15 ।।

मंगल दशा में गुरु का अन्तर हो तथा बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण या 2.11 भावों में, या उच्चादि नवांश में हो तो सत्कीर्ति, राजसम्मान, धन धान्य की वृद्धि, घर में कल्याणकारी कार्यो के अवसर, सम्पत्ति वृद्धि एवं स्त्री पुत्रादि का यथासम्भव लाभ होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते वाहनाधिपसंयुते ।। 16 ।।
लग्नाधिपसमायुक्ते शुभांशे शुभवर्गगे ।
गृहक्षेत्रादिवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्पदः ।। 17 ।।
देहारोग्यं महत्कीर्तिर्गृहे गोकुलसंग्रहः ।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम् ।। 18 ।।

कलत्रपुत्रसौख्यं च राजसम्मानवैभवम् ।

यदि महादशेश से गुरु या त्रिकोण या लाभ में हो अथवा गुरु 4.9.10 भावेश से युक्त हो या लग्नेश से युक्त हो अथवा शुभ नवांश शुभवर्गो में गया हो तो जमीन जायदाद की वृद्धि, घर में उपयोगी सम्पत्ति की वृद्धि तथा सुख शान्ति, शरीर में सुख कीर्ति वृद्धि, पशु धन में वृद्धि,चौपाए धन से लाभ, व्यवसाय से अधिक लाभ, स्त्रीपुत्रादि का लाभ तथा राजसम्मान का वैभव प्राप्त होता है ।

षष्ठाष्टम व्यये जीवे नीचे वास्तंगते सति ।। 19 ।।
पापग्रहेण संयुक्ते दृष्टे वा दुर्बले सति ।
चौराहिनृपभीतिश्च पित्तरोगादि सम्भवम् ।। 20 ।।
प्रेतबाधा भृत्यनाशः सोदराणां विनाशनम् ।
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्ज्वरादिकम् ।।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।। 21 ।।

यदि बृहस्पति 6.8.12 में या नीचगत या अस्तंगत या पापयुक्त दृष्ट या निर्बल हो तो चोरभय, राजभय, सर्पादिभय, पित्तजन्य रोगों की वृद्धि, प्रेतादि बाधा, सेवकों, कर्मचारियों की हानि, भाइयों को कष्ट होता है ।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु व ज्वरादि रोगों से पीड़ा होती है । इसकी शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते मन्दे स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणके ।
मूलत्रिकोणकेन्द्रे वा तुंगांशे स्वांशगे सति ।। 22 ।।
लग्नाधिपतिना वापि शुभदृष्टि युतेक्षिते ।
राज्यसौख्यं यशोवृद्धि स्वग्रामे धान्यवृद्धिकृत् ।। 23 ।।
पुत्रपौत्रसमायुक्तो गृहे गोधन संग्रहः ।
स्ववारे राजसम्मानं स्वमासे पुत्रवृद्धिकृत् ।। 24 ।।

मंगल दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि स्वराशि (स्वोच्च), केन्द्रत्रिकोण में या मूलत्रिकोण में अथवा अपनी मूल त्रिकोण राशि से केन्द्र (2. 5. 8) राशि में हो या उच्च या स्वनवांश में हो या लग्नेश से युक्त हो या किसी शुभयोगप्रद ग्रह से दृष्ट युक्त हो तो राज्य प्राप्ति (पद, पदवी, प्रतिष्ठा या सिंहासन) यशोवृद्धि, अपने स्थान पर धान्य वृद्धि, पुत्रपौत्रों का सुख, घर में पशुधन की वृद्धि, शनिवार व शनि मास में विशेषतया राजसम्मान व पुत्रादि की वृद्धि होती है ।

जिस मास में पहली तिथि को शनिवार हो, उस सारे मास को शनि मास समझें अथवा शनि की ऋतु शिशिर के दो मासों (मकर कुम्भगत सूर्य) को भी शनि मास मानें।

यहाँ एक नई बात, भी कही है कि अपनी मूलत्रिकोण राशि से केन्द्रराशियों में स्थित होने पर भी ग्रह साधारणतया बली होता है।

नीचादि क्षेत्रगे मन्दे तथाष्टव्ययराशिगे।

म्लेच्छवर्गप्रभुभयं धनधान्यादिनाशनम्।। 25।।

निगडे बन्धनव्याधिरन्ते क्षेत्रनिवासकृत्।

यदि शनि नीचगत, शत्रुक्षेत्री, अस्तंगत या 8.12 राशि में हो तो म्लेच्छ वर्ग के राजा या मुखिया से भय, धन, धान्य का नाश, हथकड़ी आदि से बन्धन, दशा के अन्त में क्षेत्रादि में अर्थात् जन बस्ती आदि से दूर खेत जंगल आदि में रहना पड़ता है।

द्वितीय द्यूननाथे तु पापयुक्ते महद्भयम्।। 26।।

धननाशश्च संचारे राजद्वेषो मनोव्यथा।

चौराग्निनृपपीड़ा च सहोदर विनाशनम्।। 27।।

बन्धुद्वेषः प्रमादैश्च जीवहानिश्च जायते।

अकस्मान्मृतेर्भीतिं पुत्रदारादि पीडनम्।। 28।।

कारागृहादिभीतिश्च राजदण्डो महद्भयम्।।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तथा पापयुक्त भी हो तो भय, धननाश, राजद्वेष, मानसिक कष्ट आदि, चोरभय, अग्निभय, नृपभय, भाइयों को कष्ट, भाइयों से विवाद, प्राणिहानि, अचानक शरीर कष्ट, मृत्युभय, पुत्रादि को पीड़ा, कारावास के अवसर, राजदण्ड आदि होते हैं।

उक्त अशुभ फल प्राप्त होने में शनि का प्रतिकूल गोचर (संचारे) भी यदि अन्तर्दशा के बीच में आए और साथ ही गुरु, लग्नेश, चतुर्थेश या योगकारक ग्रह भी गोचर में अनिष्ट स्थानों में या पीड़ित हों तो अशुभता बढ़ जाती है। यह सार्वत्रिक विचार की पद्धति है। सभी दशाओं–अन्तर्दशाओं में गोचर का समन्वय भी करना चाहिए।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे लाभस्थे वा त्रिकोणके।। 29।।

विदेशयानं लभते दुष्कीर्तिर्विविधा तथा।

पापकर्मरतो नित्यं बहुजीवादिहिंसकः।। 30।।

विक्रयः क्षेत्रहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोव्यथा।

रणे पराजयश्चैव मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्।। 31।।

यदि शनि महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभ में हो तो विदेशवास या यात्रा, अपयश, पापकर्म में रति, अनेक जीवों की हिंसा, सम्पत्ति को बेचने के योग, सम्पत्ति हानि, स्थान भ्रंश, मनोव्यथा, युद्ध में पराजय, मूत्रकृच्छ्र आदि मूत्ररोगों से बहुत कष्ट होता है।

दायेशादथ रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुक्ते।
तद्भुक्तौ मरणं ज्ञेयं नृपचौरादिपीडनम्।। 32।।
वातपीडा च शूलादि ज्ञातिशत्रुभयं भवेत्।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जय जपं चरेत्।। 33।।

यदि शनि महादशेश से 8.12 में हो व पापयुक्त भी हो तो इस अन्तर्दशा में मृत्यु, राजा, चौरादि से कष्ट, शरीर में वात विकार (जोड़ों आदि की वायु) अपने वर्ग या जाति के लोगों से विरोध होता है।

इसकी शान्ति के लिए मृत्युंजय का जप करना चाहिए।

बुधान्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते सौम्ये लग्नात्केन्द्रत्रिकोणके।
सत्कथाश्च जपोदानं धर्मबुद्धिर्महद्यशः।। 34।।
नीतिमार्गप्रसंगश्च नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।
वाहनाम्बरपश्वादि राजकर्मसुखानि च।। 35।।
कृषिकर्मफले सिद्धिर्वारणाम्बरभूषणम्।

मंगल की महादशा में बुधान्तर्दशा हो तथा बुध लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो अच्छे मनोहारी प्रसंग, जपदान, धर्मबुद्धि, यश, नीति मार्ग पर चलने के अवसर (चरित्र की परीक्षा) सदैव मधुर भोजन, वस्त्रादि, पशु आदि सम्पत्तियों का सुख, परिश्रम का पूरा फल, कृषि का पूरा फल, विशिष्ट बड़े वाहनों आदि का सुख होता है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययगेऽपि वा।। 36।।
हृद्रोगमानहानिश्च निगडं बन्धुनाशनम्।
दारपुत्रार्थनाशश्च चतुष्पाज्जीवनाशनम्।। 37।।

यदि बुध नीचगत, अस्तंगत या 6.8.12 भाव गत हो तो हृदयरोग, मान–हानि, बन्धन, बन्धुओं को कष्ट, स्त्री पुत्र व धनादि की हानि तथा चौपाए जीव, वाहनादि का नाश होता है।

दशाधिपेन संयुक्ते शत्रुवृद्धिर्महद्भयम्।
विदेशगमनं चैव नानारोगास्तथैव च।। 38।।

राजद्वारे विरोधश्च कलहः स्वजनैरपि ।

यदि मंगल व बुध एक साथ ही बैठे हों तो शत्रुओं की वृद्धि, भय की प्राप्ति, विदेश गमन, अनेक रोगों की उत्पत्ति, न्यायालय में मुकदमेबाजी, अपने लोगों से कलह होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा स्वोच्चे युक्तार्थलाभकृत् ।। 39 ।।
अनेक धननाथत्वं राजसम्मानमेव च ।
भूपालयोगं कुरुते धनाम्बरविभूषणम् ।। 40 ।।
भूरिवाद्यमृदंगादि सेनापत्यं महत्सुखम् ।
विद्याविनोदविमला वस्त्रवाहनभूषणम् ।। 41 ।।
दारपुत्रादिविभवं गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत् ।
दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते ।। 42 ।।
तद्दाये मानहानिः स्यात् क्रूरबुद्धिस्तु क्रूरवाक् ।
चौराग्निनृपपीडा च मार्गे दस्युभयादिकम् ।। 43 ।।
अकस्मात्कलहश्चैव बुधभुक्तौ न संशयः ।

(i) यदि बुध दशापति से केन्द्र त्रिकोण में, स्वोच्चादि राशि में हो तो धन लाभ, अनेक प्रकार से आर्थिक स्तर में वृद्धि, राज सम्मान, राजयोग, धन वस्त्रादि का विशेष लाभ, अनेक संगीत साधनों का सुख (विलासवृद्धि) सेनापतित्व, खूब सुख, विद्या का भरपूर उपयोग, वाहनादि सम्पत्ति, स्त्री पुत्रादि की वृद्धि या उन्नति, घर में लक्ष्मी जी की कृपा होती है ।

(ii) महादशेश से बुध यदि 6.12.8 में हो या पाप ग्रह से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में मानहानि, क्रूरतापूर्ण बुद्धि, कठोर भाषण, चौरभय, नृपभय, रास्ते में लूटपाट का डर, अचानक कलह होती है ।

द्वितीय द्यूननाथे तु महाव्याधिभयंकरः ।। 44 ।।
अश्वदानं प्रकुर्वीत विष्णोर्नामसहस्रकम् ।
सर्वसम्पत्प्रदं विप्र ! सर्वारिष्टप्रशान्तये ।। 45 ।।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में बड़ा रोग उत्पन्न होता है । इसकी शान्ति के लिए अश्वदान (वाहनदान) और विष्णुसहस्र नाम के पाठ करवाने चाहिए । तब हे मैत्रेय ! सब अरिष्ट शान्त हो जाते हैं ।

केतु अन्तर्दशा फल –

कुजस्यान्तर्गते केतौ त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।
दुश्चिक्ये लाभगे वापि शुभयुक्ते शुभेक्षिते ।। 46 ।।

राजानुग्रहशान्तिश्च बहुसौख्यं धनागमः ।
किंचित्फलं दशादौ तु भूलाभः पुत्रलाभकृत् ।। 47 ।।
राजसंलाभ कार्याणि चतुष्पाज्जीव लाभकृत् ।

मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा आने पर, केतु यदि केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 भाव में हो या शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजा की कृपा, शान्ति बहुत सुख, धनलाभ होता है।

दशा के प्रारम्भ में थोड़ा फल तथा आगे विशेष भूमि लाभ, पुत्र लाभ, राज्य से लाभ तथा चौपाए धन से लाभ होता है।

योग कारक संस्थाने बलवीर्यसमन्विते ।। 48 ।।
पुत्रलाभे यशोवृद्धिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।
भृत्यवर्गधनप्राप्तिः सेनापत्यं महत्सुखम् ।। 49 ।।
भूपालमित्रं कुरुते यानाम्बरविभूषणम् ।

यदि केतु योगकारक ग्रह के साथ हो, बलवान् हो तो पुत्र लाभ, यशोलाभ, घर में धन की वृद्धि, सेवकों के सहयोग से धनलाभ, सेनापतित्व अर्थात् बहुत से लोगों द्वारा साध्य कार्य करने के अवसर, सुख, राजा से मित्रता व सांसारिक सुखों में वृद्धि होती है।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते ।। 50 ।।
कलहो दन्तरोगश्च चौरव्याघ्रादिपीडनम् ।
ज्वरातिसार कुष्ठादि दारपुत्रादिपीडनम् ।। 51 ।।
द्वितीयसप्तमस्थाने देहे व्याधिर्भविष्यति ।
अपमानमनस्तापौ धनधान्यादि प्रच्युतिम् ।। 52 ।।

यदि मंगलमहादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र महादशेश से 6.8.12 भाव में हो, पापयुक्त हो तो कलह, दाँतों में रोग, चोर व जंगली जन्तुओं का भय, ज्वर, पेचिश, त्वचा विकार का भय, स्त्रीपुत्रादि को कष्ट होता है। यदि शुक्र 2.7 भाव में हो तो शरीर में रोग होता है। अपमान, मन में सन्ताप, धनहानि भी होती है।

कुजस्यान्तर्गतेशुक्रेकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि शुभस्थानाधिपेऽथवा ।। 53 ।।

राज्यलाभो महत्सौख्यं गजाश्वाम्बरभूषणम् ।

लग्नाधिपेन सम्बन्धे पुत्रदारादिवर्धनम् ।। 54 ।।

आयुषो वृद्धिरैश्वर्यभाग्यवृद्धिसुखं भवेत् ।

यदि शुक्र केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान, स्वोच्च राशि, स्वराशि में हो या शुभ त्रिकोणादि भावों का अधिपति हो तो राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, अनेक वाहन व भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

यदि शुक्र व लग्नेश का सम्बन्ध हो तो स्त्री पुत्रादि की वृद्धि, आयु में वृद्धि, ऐश्वर्य, भाग्योदयादि होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा ।। 55 ।।

तत्काले श्रियमाप्नोति पुत्रलाभं महत्सुखम् ।

मनोमोदो भवेन्नूनं धनवस्त्रादिलाभकृत् ।। 56 ।।

महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।

भुक्त्यन्ते फलमाप्नोति गीतनृत्यादिलाभकृत् ।। 57 ।।

पुण्यतीर्थस्थानलाभं कर्माधिपसमन्विते ।

पुण्यधर्मदयाकूपतडागं कारयिष्यति ।। 58 ।।

महादशेश मंगल से अन्तर्दशेश शुक्र यदि केन्द्र त्रिकोण, 2,11 भावों मे कहीं हो तो तुरन्त धन व मान की प्राप्ति, पुत्र लाभ, बहुत सुख, मन में प्रसन्नता, ग्राम व भूमि का लाभ अर्थात् ग्राम में प्रतिष्ठा होती है। अन्तर्दशा के अन्त में विशेष उक्त फल होता है।

साथ ही गीतादि मनोरंजन के अवसर भी प्राप्त होते हैं। यदि शुक्र दशमेश से युक्त हो तो पुण्य तीर्थ में स्नान, पुण्य कार्यों की सम्पन्नता, कूपतडागादि सार्वजनिक हितसाधक स्थानों का निर्माण होता है।

दायेशाद्रन्ध्ररिःफस्थे षष्ठे वा पापसंयुते ।

करोति दुःखबाहुल्यं देहपीडा धनक्षयम् ।। 59 ।।

राजचौरादिभीतिश्च गृहे कलहमेव च ।

दारपुत्रादिपीड़ा च गोमहिष्यादिनाशकृत् ।। 60 ।।

द्वितीय द्यूननाथे तु देहपीड़ा भविष्यति ।

श्वेतां गां महिषीं दद्यात् आयुरारोग्यवृद्धये ।। 61 ।।

यदि शुक्र दशेश से 6.8.12 भाव में हो या पापयुक्त हो तो बहुत दुःख होते हैं। शरीर कष्ट, धनहानि, राजा व चोरों से भय, घर में कलह स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, गोधन का नाश होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो शरीरकष्ट होता है। दोष निवारण के लिए सफेद गाय या दूध देने वाली भैंस का दान करना चाहिए।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
मूल त्रिकोणे लाभे वा भाग्यकर्मेशसंयुते।। 62।।
तद्भुक्तौ वाहनं कीर्तिं पुत्रलाभश्च विन्दति।
धनधान्यसमृद्धिः स्यात् गृहे कल्याणसम्पदः ।। 63।।
क्षेमारोग्यं महद्धैर्यं राजपूज्यं महत्सुखम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विदेशे राजदर्शनम्।। 64।।

मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तथा सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र या मूल त्रिकोण केन्द्र या लाभ में हो अथवा 9.10 भावेश से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में वाहन लाभ, कीर्ति वृद्धि, पुत्रप्राप्ति, धनधान्य में वृद्धि, राजा से सम्मान, सुख, व्यवसाय से अधिक लाभ, विदेश में राजादि बड़े लोगों से भेंट होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा व्यये वा पापसंयुते।
देहपीडा मनस्तापः कार्यहानिर्महद्भयम्।। 65।।
शिरोरोगोज्वरादिश्च अतिसारमथापि वा।
द्वितीयद्यूननाथे तु सर्पज्वरविषाद्भयम्।। 66।।
सुतपीड़ाभयं चैव शान्तिं कुर्याद् यथाविधि।
देहारोग्यं प्रकुरुते धनधान्यचयं तथा।। 67।।

यदि सूर्य महादशेश मंगल से 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो शरीर व मन में कष्ट, कार्य में हानि, भय, सिर के रोग, ज्वरादि भय, अतिसार भय होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो पुत्र पीड़ा, सर्पभय, रोगभय, विषभय, होता है। इसकी विधिवत् शान्ति करनी चाहिए। शान्त्यर्थ सूर्य की उपासना, विष्णु या राम की अर्चना आदि करनी चाहिए, तब स्वास्थ्य रक्षा व धन–धान्य की सुरक्षा होती है।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

कुजस्यान्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
भाग्यवाहनकर्मेशलग्नाधिसमन्विते।। 68।।

करोति विपुलं गन्धमाल्याम्बरविभूषणम् ।
तडागं गोपुरादीनां पुण्यधर्मादिसंग्रहम् ।। 69 ।।
विवाहोत्सवकर्माणि दारपुत्रादिसौख्यकृत् ।
पितृमातृसुखावाप्तिं गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।। 70 ।।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखादिकम् ।
पूर्णे चन्द्रे फलं पूर्णं क्षीणे स्वल्पफलं वदेत् ।। 71 ।।

मंगल की महादशा में चन्द्रान्तर्दशा हो तथा चन्द्रमा वृष या कर्क राशि में या केन्द्रगत, 1.4.7.10 भावेशों से युक्त हो तो बहुत सांसारिक सुख, तडागादि का निर्माण, किसी सार्वजनिक स्थान पर द्वारादि का निर्माण, पुण्य व धर्म की वृद्धि, विवाहादि उत्सव, स्त्री पुत्रादि का सुख, माता पिता का सुख तथा घर में लक्ष्मी वृद्धि, बड़े लोगों के सहयोग से कार्यसिद्धि व सुख होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो पूर्णफल तथा क्षीण हो तो मामूली फल तथा मध्यम हो तो मध्यम फल होता है।

नीचारिस्थेऽष्टमे षष्ठे दायेशाद् रिपुरन्ध्रके ।
मरणं दारपुत्राणां कष्टं भूमिविनाशनम् ।। 72 ।।
पशुधान्यक्षयश्चैव चौरादिरणभीतिकृत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 73 ।।
देहजाड्यं मनोदुःखं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दायादायुरारोग्यवृद्धये ।। 74 ।।

यदि चन्द्रमा नीचगत, शत्रुक्षेत्री 6.8 में या दशेश से 6.8 में हो तो स्त्री पुत्रादि की मृत्यु, भूमि की हानि, पशुधन की हानि, चोरभय, मरणभय होता है। यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। देह में शिथिलता, मानसिक कष्ट भी होता है।

शान्ति के लिए दुर्गा व लक्ष्मी जी का पाठादि करना चाहिए।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
मंगलान्तर्दशाफलाध्यायः षट्पंचाशत्तमः ।। **56** ।।

57

।। अथ राहु-अन्तर्दशाफलाध्यायः ।।

राहु दशा : राहु अन्तर्दशा :–

कुलीरे वृश्चिके राहौ कन्यायां चापगेऽपि वा ।
तद्भुक्तौ राजसम्मानं वस्त्रवाहनभूषणम् ।। 1 ।।
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत् ।। 2 ।।
लग्नादुपचये राहौ शुभग्रहयुतेक्षिते ।
मित्रांशे तुंगभागांशे योगकारकसंयुते ।। 3 ।।
राज्यलाभं महोत्साहं राजप्रीतिं शुभावहम् ।
करोति सुखसम्पत्तिं दारपुत्रादिवर्धनम् ।। 4 ।।

(i) राहु महादशा में राहु अन्तर्दशा में, राहु 4.6.8.9 राशियों में हो तो इसकी दशा में राज सम्मान, वस्त्रादि वाहनादि की प्राप्ति, व्यवसाय में अधिक सफलता, चौपाए जीवों के द्वारा लाभ, पश्चिमी भू भागों की यात्रा, यात्रा में वहाँ भी सुखभोग होता है ।

(ii) लग्न से 3.6.10.11 भावगत राहु हो तो अथवा शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट, मित्रनवांश में, उच्चादि शुभ राशि नवांश में या योगकारक से युक्त हो तो राज्य लाभ, अधिक उत्साह, राजा से मित्रता, सुख–सम्पत्ति, स्त्री पुत्रादि की वृद्धि होती है ।

लग्नाष्टमे व्यये राहौ पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ।
चौरादिव्रणपीड़ा च सर्वत्रैवं भवेद् द्विज ! ।। 5 ।।
राजद्वारे जनद्वेषं इष्टबन्धुविनाशनम् ।
दारपुत्रादि पीड़ा च भवत्येव न संशयः ।। 6 ।।

लग्न से 8.12 में राहु हो, पापयुक्त या दृष्ट हो तो चोरादि से पीड़ा, चोट लगने का भय, सरकारी आदमियों से द्वेष या झड़प या विरोध, अपने प्रिय जनों की हानि, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा होती है ।

द्वितीयद्यूननाथे वा सप्तमस्थानमाश्रिते ।
सदा रोगो महाकष्टं शान्तिं कुर्याद् यथाविधि ।। 7 ।।

आरोग्यं सम्पदश्चैव भविष्यन्ति तदा द्विज ! ।

यदि राहु 2.7 भावेश (कुम्भराशीश) हो या सप्तम में स्थित हो (या 2.7 भावेशों के साथ 2-7 में ही हो तो अपमृत्यु, रोग, कष्ट आदि होते हैं। इसकी यथाविधि शान्ति करनी चाहिए। एतदर्थ रुद्रीयजप, अघोर मन्त्र से आराधना जपादि करना व दानादि करना चाहिए, तब स्वास्थ्य, सम्पत्ति आदि होती है।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।। 8 ।।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि तुंगस्वक्षांशगेऽपि वा ।।
स्थानलाभं मनोधैर्यं शत्रुनाशं महत्सुखम् ।। 9 ।।
राजप्रीतिकरं सौख्यं जनोऽतीव समश्नुते ।
दिने दिने वृद्धिरपि सिते पक्षे शशी यथा ।। 10 ।।
वाहनादि धनं भूरि गृहे गोधनसंकुलम् ।
नैर्ऋत्ये पश्चिमे भागे प्रयाणं राजदर्शनम् ।। 11 ।।
युक्तकार्यार्थसिद्धिः स्यात् स्वदेशे पुनरेष्यति ।
उपकारो ब्राह्मणानां तीर्थयात्रादि कर्मणाम् ।। 12 ।।
वाहनग्रामलाभश्च देवब्राह्मणपूजनम् ।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषो नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।। 13 ।।

राहु में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु केन्द्र, त्रिकोण, स्वोच्च, स्वक्षेत्र, उच्च नवांश, स्वनवांश में हो तो पद पदवी स्थान की प्राप्ति, मन में धैर्य, शत्रुओं का नाश, सुख, राजा से प्रेम, सुख की अधिकता, प्रतिदिन शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ोत्तरी, वाहन लाभ, खूब धन लाभ, घर में पशु धन की वृद्धि, नैऋत्य या पश्चिम दिशा की यात्रा, वहाँ के राजा या महान् पुरुषों से भेंट, सफल यात्रा करके स्वदेश वापसी, ब्राह्मणों का उपकार, तीर्थयात्रादि, वाहन प्राप्ति, ग्रामादि जागीर प्राप्ति, पुत्रोत्सव व नित्य मधुर भोजन होता है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।
शत्रुक्षेत्रे पापयुक्ते धनहानिर्भविष्यति ।। 14 ।।
कर्मविघ्नो भवेत्तस्य मानहानिश्च जायते ।
कलत्रपुत्रपीड़ा च हृद्रोगो राजकार्यकृत् ।। 15 ।।

यदि गुरु नीचगत, अस्तंगत, 6.8.12 भावगत, शत्रुक्षेत्री, पापयुक्त हो तो धनहानि, कार्यसिद्धि में विघ्न, मानहानि अर्थात्, पराजय, नीचा

देखना, कदम पीछे हटाना आदि, स्त्री, पुत्रादि परिवारजनों को पीड़ा, हृदयरोग लेकिन राजकीय कार्य करने का अधिकार (जिम्मा या ठेका या पद) मिलता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा।
दुश्चिक्ये बलसम्पूर्णे गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्।। 16।।
भोजनाम्बरपश्वादि दानधर्मजपादिकम्।
भुक्त्यन्ते राजकोपाच्च द्विमासं देहपीड़नम्।। 17।।
ज्येष्ठभ्रातुर्विनाशश्च मातृपित्रादि पीडनम्।

दशापति राहु से यदि गुरु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धन या तृतीय में हो अथवा बलवान् हो तो घर, जमीन, जायदाद आदि की वृद्धि करता है। भोजन, वस्त्र, पशुधन, दान व धर्म में वृद्धि, अन्तर्दशा के अन्त में दो मास तक शरीर कष्ट, ज्येष्ठ भाई का शोक तथा माता पिता को कष्ट होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा रिःफे वा पापसंयुते।। 18।।
तद्भुक्तौ धनहानिः स्यात् देहपीड़ा भविष्यति।
द्वितीय द्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।। 19।।
स्वर्णस्य प्रतिमा दानं शिवपूजां च कारयेत्।
श्री शम्भोश्च प्रसादेन ग्रहस्तुष्टो द्विजोत्तम !।। 20।।
देहारोग्यं प्रकुरुते शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः।।

महादशेश से 6.8.12 में यदि गुरु हो या पापयुक्त हो तो गुरु की अन्तर्दशा में धनहानि, शरीरकष्ट होता है।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु या दुर्घटना का भय होता हे। शान्ति के लिए सोने की शिवप्रतिमा का दान, शिवपूजा करानी चाहिए। तब श्री शंकर जी की प्रसन्नता से ग्रह संतुष्ट होकर आरोग्य व शरीर रक्षा करता है।

शनि अन्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।। 21।।
स्वोच्चे मूल त्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभराशिगे।
तद्भुक्तौ नृपतेः सेवा राजप्रीतिकरा शुभा।। 22।।
विवाहोत्सवकार्याणि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः।
आरामकरणे युक्तो तडागं कारयिष्यति।। 23।।

शूद्रप्रभुवशादिष्टलाभो गोधनसंग्रहः ।
प्रयाणं पश्चिमे भागे प्रभुमूलाद् धनक्षयः ।। 24 ।।
देहालस्यं फलाल्पत्वं स्वदेशे पुनरेष्यति ।

राहु में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, स्वोच्चराशि, मूल त्रिकोण, 9.11 भाव में कहीं हो तो मनुष्य को राज सेवा, राज कार्य, राजा का प्रियकार्य करने का अवसर, विवाहोत्सव, पुण्यकार्य, बगीचा निर्माण, तड़ाग निर्माण, शूद्र राजादि के सहयोग से इष्टसिद्धि, गोधन का संग्रह, पश्चिम दिशा में यात्रा, पश्चिम दिशा के राजा के कारण धन हानि, देह में आलस्य, कम शुभ फल पश्चात् स्वदेश में वापसी से सुख होता है।

नीचारिक्षेत्रगे मन्दे रन्ध्रे वा व्ययगेऽपि वा ।। 25 ।।
नीचारिराजभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम् ।
आत्मबन्धुमनस्तापं दायादजनविग्रहम् ।। 26 ।।
व्यवहारे च कलहमकस्माद् भूषणं लभेत् ।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते ।। 27 ।।
हृदयरोगो मानहानिश्च विवादः शत्रुपीड्नम् ।
अन्यदेशादिसंचारो गुल्मवद्व्याधिभाग् भवेत् ।। 28 ।।
कुभोजनं कोद्रवादि जातिदुःखाद्भयं भवेत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 29 ।।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत् ।

यदि शनि नीचगत, शत्रुक्षेत्री, 8.12 भाव में स्थित हो तो नीच लोगों से डर, राजभय, शत्रुओं से भय, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा, अपने बन्धुओं की ओर से मन में सन्ताप, दायादजन (हिस्सेदारों) से विवाद, मुकदमेबाजी, अचानक भूषण (आभूषण, पदवी, खिताब, उपनाम) प्राप्ति होती है।

दशेश से 6.8.12 में शनि हो या पापग्रह से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में हृदयरोग, मानहानि, विवाद, शत्रुओं की ओर से कष्ट, अन्य देशों या प्रदेशों में संचार अर्थात् वृथा भ्रमण या नियमित भ्रमण करना पड़े, अपनी जाति पर आने वाले किसी कष्ट या विपदा का शिकार होने से कष्ट, गुल्म रोग (तिल्ली जिगर बढ़ना) अन्य किसी रोग से पीड़ा, कुभोजन कोदों ज्वार आदि साधारण अनाज का भोजन होता है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु हो जाती है। इसकी शान्ति के लिए काली गाय या भैंस का दान करें, तब आरोग्य लाभ होता है।

बुधान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते सौम्ये भाग्ये वा स्वर्क्षगेऽपि वा ।। 30 ।।
तुंगे वा केन्द्रराशिस्थे पुत्रो वा बलगेऽपि वा ।
राजयोगं प्रकुरुते गृहे कल्याणवर्धनम् ।। 31 ।।

व्यापारेण धनप्राप्तिर्विद्यावाहनमुत्तमम् ।
विवाहोत्सवकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।। 32 ।।
सौम्यमासे महत्सौख्यं स्ववारे राजदर्शनम् ।
सुगन्ध पुष्पशय्यादि स्त्रीसौख्यं चाति शोभनम् ।। 33 ।।
महाराजप्रसादेन धनलाभो महद्यशः ।

राहु में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध नवम में, स्वराशि में, स्वोच्च में, केन्द्र में, पंचम में अथवा कहीं भी बली होकर स्थित हो तो राजयोग होता है । घर में कल्याणकार्य के अवसर, व्यापार से धनलाभ, विद्या व वाहन का लाभ, विवाहोत्सव, चौपाए जीवों से लाभ, बुध के मास (मिथुन कन्यागत सूर्य मास) में सुख, बुधवार को राजदर्शन का सुयोग, सुगन्ध पुष्प शय्या पर शयन (विलासपूर्ण जीवन) स्त्री का सुख, महाराज (राजा या बड़ा आदमी) की सहायता से धनलाभ व खूब यश मिलता है ।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा दुश्चिक्ये भाग्यकर्मगे ।। 34 ।।
देहारोग्यं हृदुत्साह इष्टसिद्धिः सुखावहा ।
पुण्यश्लोकादि कीर्तिश्च पुराणश्रवणादिकम् ।। 35 ।।
विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मदयादिकम् ।

महादशेश से केन्द्रगत, 3.9.11 भावगत, दशमगत हो तो शरीर में आरोग्य, नीरोगता, हृदय में उत्साह, मनोरथसिद्धि, सुखदायक सफलता, पुण्य पवित्र यश (सुनाम), पुराणकथादि श्रवण के अवसर, विवाह, यज्ञ में दीक्षा लेकर अर्थात् यजमान बनकर रहना, दान धर्म व दया से पूर्ण करने के योग होते हैं ।

षष्ठाष्टम व्यये सौम्ये मन्देनापि युतेक्षिते ।। 36 ।।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते ।
देवब्राह्मण निन्दा च भोगभाग्यविवर्जितः ।। 37 ।।
सत्यहीनश्च दुर्बुद्धिश्चौराहिनृपपीडनम् ।
अकस्मात्कलहश्चैव गुरुपुत्रादिनाशनम् ।
अर्थव्ययो राजकोपो दारपुत्रादिपीडनम् ।। 38 ।।

यदि बुध 6.8.12 में हो या शनि से युक्त दृष्ट हो या दशेश से 6.8.12 में हो, पापयुक्त हो तो देव ब्राह्मणों की निन्दा, भाग्यहीनता, सुख में कमी, सत्यरहित व्यवहार, दुर्बुद्धि का उदय, चोरभय, सर्पभय, राजभय, अकस्मात्, कलह के अवसर, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा के योग होते हैं ।

द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं वदेत् ।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।। 39 ।।

यदि बुध 2.7 मावेश हो तो अपमृत्यु को दूर करने के लिए विष्णु–सहस्रनाम का जप करना चाहिए ।

केतु अन्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते केतौ भ्रमणं राजतोभयम् ।

वातज्वरादिरोगश्च चतुष्पाज्जीवहानिकृत् ।। 40 ।।

अष्टमाधिपसंयुक्ते देहजाड्यं मनोव्यथा ।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे देहसौख्यं धनागमः ।। 41 ।।

राज सम्मान भूषाप्तिर्गृहे शुभकरो भवेत् ।

राहु में केतु की अन्तर्दशा हो तो भ्रमण, राजा से भय, वात ज्वर भय, चौपाए से हानि हो ।

यदि केतु अष्टमेश से युक्त हो तो शरीर कष्ट, मानसिक व्यथा, शुभयुक्त या शुभ दृष्ट हो तो शरीर सुख, धन लाभ, राज सम्मान, भूषणादि की प्राप्ति, घर में शुभता, कुशलता रहती है ।

लग्नाधिपेन सम्बन्धे इष्टसिद्धिः सुखावहा ।। 42 ।।

लग्नाधिपसमायुक्ते लाभो वा भवति ध्रुवम् ।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात्केन्द्रे कोणेऽपिसंस्थिते ।। 43 ।।

यदि केतु लग्नेश से सम्बन्ध करे तो इष्ट सिद्धि तथा लग्नेश के साथ ही हो तो निश्चय से लाभ होता है । चौपाए जीव से लाभ होता है । यही शुभ फल केतु की केन्द्र त्रिकोण स्थिति से भी समझना चाहिए ।

रन्ध्रस्थानगते केतौ व्यये वा बलवर्जिते ।

तद्भुक्तौ बहुरोगः स्याच्चौराहिव्रणपीडनम् ।। 44 ।।

पितृमातृवियोगश्च भ्रातृद्वेषो मनोरुजा ।

द्वितीयद्यूननाथेतुं देहबाधा भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं च कारयेत् ।। 45 ।।

यदि केतु अष्टम स्थान में, द्वादश में हो या बलहीन हो तो इसकी अन्तर्दशा में अनेक रोग, चोरभय, सर्पभय, चोटभय, माता पिता से वियोग, भाइयों से द्वेष, मनोविकार होते हैं ।

यदि केतु का सम्बन्ध किसी भी प्रकार से 2.7 भाव से हो तो शरीर कष्ट होता है । इस दोष की निवृत्ति के लिए बकरे आदि का दान करना चाहिए ।

शुक्र अन्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गतेशुक्रेलग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत् ।। 46 ।।
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गोमहिष्यादि लाभकृत् ।
पुत्रोत्सवादि सन्तोषो गृहे कल्याणसम्भवः ।। 47 ।।
सम्मानं राजसम्मानं राज्यलाभो महत्सुखम् ।

राहु दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो,या बलवान् हो तो बहुत अच्छे योगफल मिलते हैं । ब्राह्मण की सहायता से धनप्राप्ति, गाय भैंस आदि पशुओं का लाभ, पुत्रोत्सव, घर में मांगलिक कार्य, सम्मान या राजसम्मान, राजलाभ, बहुत सुख आदि शुभ फल होते हैं ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा ।। 48 ।।
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।
कलत्रपुत्र विभवं मित्रसंगः सुभोजनम् ।। 49 ।।
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहः ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।। 50 ।।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विवाहो मौंजीबन्धनम् ।

यदि शुक्र 12.2.7 राशियों में या इन्हीं राशियों के नवांश में हो तो इस अन्तर्दशा में नए घर का निर्माण, सदैव मधुर भोजन, स्त्री–पुत्रों की वृद्धि, मित्रों की संगति या सहायता, सुन्दर भोजन, अन्नदान की सामर्थ्य, प्रियकार्य, दानधर्म में प्रवृत्ति, बड़े लोगों की सहायता से वाहनवस्त्रादि का लाभ, व्यवसाय से अधिक प्राप्ति, विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार होते हैं ।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे शत्रुगृहे स्थिते ।। 51 ।।
मन्दारफणिसंयुक्ते तद्भुक्तौ रोगमादिशेत् ।
अकस्मात्कलहं चैव पितृपुत्रवियोगकृत् ।। 52 ।।
स्वबन्धुजनहानिश्च सर्वत्र जनपीडनम् ।
दायादकलहश्चैव स्वप्रभोः स्वस्य मृत्युकृत् ।। 53 ।।
कलत्रपुत्रपीड़ा च शूलरोगादिसम्भवः ।

यदि शुक्र 6.8.12 में या नीच राशि में या शत्रुराशि में हो या शनि, मंगल, राहु से युक्त हो तो इसकी अन्तर्दशा में रोगभय, अचानक कलह, पिता या पुत्र का वियोग, स्वजनों की हानि, सर्वत्र अपने लोगों को कष्ट,

भाई–बन्धुओं (सम्पत्ति के हिस्सेदारों) से कलह, अपनी या अपने स्वामी की मृत्यु, स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, शूलरोग (शिरःशूल, हृदयशूल, उदरशूल आदि) अर्थात् तीव्र दर्द से प्रारम्भ होकर घातकता तक जाने वाला कोई रोग होता है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे वा समन्विते ।। 54 ।।
लाभे वा कर्मराशिस्थे क्षेत्रपालमहत्सुखम् ।।
सुगन्ध वस्त्रशय्यादि गानवाद्यसुखं भवेत् ।। 55 ।।
छत्रचामरभूषाप्तिः प्रियवस्तुसमन्विता ।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 56 ।।
विप्राहिनृपचौरादि मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम् ।
प्रमेहाद्रौधिरो रोगः कुत्सितान्नं शिरोव्यथा ।। 57 ।।
कारागृहप्रवेशश्च राजदण्डाद्धनक्षयः ।

यदि महादशेश राहु से शुक्र केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या दशम में हो तो स्थान या घर आदि का सुख खूब मिलता है । सुगन्धित वस्त्र शय्यादि का उपभोग, गानवाद्य का सुख अर्थात् आमोद–प्रमोदपूर्ण जीवन, छत्र चँवर की प्राप्ति, प्रिय वस्तु का लाभ होता है ।

दशापति से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो प्रमेह रोग के कारण रुधिर विकार (मधुमेह, शक्कर की बीमारी, गुप्त रोग, धातुक्षयादि) होते हैं । विप्र, सर्प, नृप व चोर से पीड़ा, मूत्र कृच्छ्र रोग (मूत्र रोग), कुत्सित अन्न का भोजन, सिर में अधिक पीड़ा, कारागृह में वास, राजदण्ड व धन–हानि होती है ।

द्वितीयद्यूननाथे वा दारपुत्रादिनाशनम् ।। 58 ।।
आत्मपीड़ा भयं चैव ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।
दुर्गालक्ष्मीजपं कुर्यात् ततः सौख्यमवाप्नुयात् ।। 59 ।।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो स्त्री पुत्रादि का नाश, निज को कष्ट, दुर्घटना का भय होता है ।

शान्ति के लिए दुर्गा व लक्ष्मी का जप करना चाहिए ।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
त्रिकोणे लाभगे वापि तुंगांशे स्वांशकेऽथवा ।। 60 ।।

शुभग्रहेण संदृष्टे राजप्रीतिकरं शुभम् ।
धनधान्य समृद्धिश्च ह्यल्पमानं सुखावहम् ।। 61 ।।
अल्पग्रामाधिपत्यं च स्वल्पलाभो भविष्यति ।

राहु में सूर्यान्तर्दशा हो और सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र गत, त्रिकोणगत, लाभगत, उच्च या स्वनवांश में या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो राजा से सम्बन्ध बनते हैं। धन–धान्य की समृद्धि लेकिन कम सम्मान पुनश्च सुख, छोटे स्थानग्रामादि में पूज्यस्थान पाना, कम लाभ होता है।

भाग्यलग्नेशसंयुक्ते कर्मेशेन निरीक्षिते ।। 62 ।।
राजाश्रयो महत्कीर्तिर्विदेशगमनं तथा ।
देशाधिपत्ययोगश्च गजाश्वाम्बरभूषणम् ।। 63 ।।
मनोऽभीष्टप्रदानं च पुत्रकल्याणसम्भवम् ।
दायेशाद् रिःफरन्ध्रस्थे षष्ठे वा नीचगेऽपि वा ।। 64 ।।
ज्वरातिसार रोगश्च कलहो राजविग्रहः ।
प्रयाणं शत्रु वृद्धिश्च नृपचोराग्निपीडनम् ।। 65 ।।

यदि सूर्य 1.9 भावों से युक्त हो या दशमेश से दृष्ट हो तो राजा का आश्रय, बहुत कीर्ति, विदेश यात्रा, देशभर में प्रसिद्धि, राजयोग, हाथी घोड़े आदि कीमती वाहनों की प्राप्ति, मनोरथों की पूर्ति, पुत्र की समृद्धि होती है।

यदि दशेश राहु से 6.8.12 में हो या नीचगत हो तो ज्वरादि रोग, पेट के रोग, कलह, राजा से विरोध, जगह छोड़ने के अवसर, शत्रुओं की वृद्धि, राजा, अग्नि, चोरादि से पीड़ा होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।
विदेशे राजसम्ममानं कल्याणं तु शुभावहम् ।। 66 ।।
द्वितीय द्यूननाथे तु महारोगो भविष्यति ।
सूर्यप्रणामं शान्तिं च कुर्यादारोग्यसम्भवाम् ।। 67 ।।

यदि सूर्य दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय, लाभ में स्थित हो तो विदेश में उत्तम सम्मान, कल्याण की प्राप्ति होती है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो किसी बड़े रोग का शिकार होना पड़ता है। एतदर्थ सूर्य प्रणाम, सूर्य नमस्कारादि से सूर्यशान्ति करनी चाहिए।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते चन्द्रे स्वक्षेत्रे स्वोच्चगेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा मित्रर्क्षे शुभसंयुते ।। 68 ।।
राजत्वं राजपूज्यत्वं धनार्थं धनलाभकृत् ।
आरोग्यं भूषणं चैव मित्रस्त्रीपुत्र सम्पदः ।। 69 ।।
पूर्णे चन्द्रे फलं पूर्णं राजप्रीत्या सुखावहम् ।
अश्ववाहनलाभः स्याद् गुरुक्षेत्रादि वृद्धिकृत् ।। 70 ।।

राहु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तथा चन्द्रमा स्वक्षेत्र या स्वोच्च या केन्द्र या त्रिकोण या लाभ स्थान में या मित्रराशि में या शुभयुक्त हो तो मनुष्य को राज पदवी, राजमान्यता, धनलाभ, आरोग्य, भूषण, मित्र स्त्री, पुत्र व सम्पत्ति की वृद्धि आदि फल मिलते हैं ।

यदि चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो तो पूरा फल तथा राजप्रीति से सब कार्य सरलता से सिद्ध होते हैं । घोड़े आदि तीव्रगति वाहन की प्राप्ति तथा सम्पत्ति आदि की वृद्धि होती है ।

दायेशात्सुखभाग्यस्थे केन्द्रे वा लाभगेऽपि वा ।
लक्ष्मी कटाक्षचिह्नानि गृहे कल्याणसम्भवः ।। 71 ।।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याद् धनधान्य सुखावहा ।
सत्कीर्तिलाभसम्मानं देव्याराधनमाचरेत् ।। 72 ।।

दशेश राहु से यदि चन्द्रमा 4.9 भावों में या केन्द्र में लाभ में हो तो लक्ष्मी की कृपा विशेष होती है । घर में कल्याणकारी कार्य सम्पन्न होते हैं । सब कामों की सिद्धि, धनधान्य की वृद्धि, सत्कीर्ति, लाभ, सम्मान. व देवी की आराधना के अवसर होते हैं ।

दायेशात् षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।
पिशाचक्षुद्रव्याघ्राद्यैर्गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।।73 ।।
मार्गे चौरभयं चैव व्रणाधिक्यं महोदरम् ।
द्वितीय द्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।। 74 ।।
श्वेतां गां महिषीं दद्यात् विप्रायारोग्यसिद्धये ।
ततः सौख्यमवाप्नोति चन्द्रग्रहप्रसादतः ।। 75 ।।

दशापति से 6.8.12 में चन्द्रमा बलहीन हो तो पिशाचादि, छोटे वन–जन्तु आदि के भय से घर व खेत आदि की हानि, रास्ते में चोरी का भय, अधिक चोट, अधिक भूख, पेट की विषमता होती है ।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए सफेद गाय या भैंस का दान ब्राह्मण को करें। तब चन्द्रमा की प्रसन्नता से मनुष्य को सुख होता है।

मंगलान्तर्दशा फल :–

राहोरन्तर्गते भौमे लग्नाल्लाभत्रिकोणगे।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।। 76।।
नष्टराज्यधनप्राप्तिर्गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।।
इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभाग्भवेत्।। 77।।
क्षिप्रभोज्यान्महत्सौख्यं भूषणाश्वाम्बरादिकृत्।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।। 78।।
रक्त वस्त्रादिलाभः स्यात् प्रयाणं राजदर्शनम्।
पुत्रवर्गेषु कल्याणं स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।। 79।।
सेनापत्यं महोत्साहो भ्रातृवर्गधनागमः।

(i) राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से त्रिकोण, लाभस्थान, केन्द्र स्थान में या शुभयुक्त या स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो तो खोई हुई सम्पत्ति या राज्य या पदवी की प्राप्ति, अचल चल सम्पत्ति का सुख, इष्ट देव की कृपा से सन्तान सुख, यथासमय भोजन, बहुत सुख, भूषण, वाहनादि की प्राप्ति होती है।

(ii) यदि मंगल, महादशेश से केन्द्र कोण, तृतीय या लाभ में हो तो लाल वस्त्रों आदि की प्राप्ति, प्रवास, राजदर्शन, पुत्रों व उनके परिवारों या पुत्र तुल्यों की समृद्धि, अपने स्वामी की समृद्धि, बहुत सुख होता है। इस अन्तर्दशा में यथा सम्भव सेनापतित्व या बहुत से लोगों की सहायता व समर्थन, भाइयों या ज्ञातिजनों से धनलाभ होता है।

दायेशाद् रन्ध्ररिःफे वा षष्ठे पापसमन्विते।। 80।।
पुत्रदारादिहानिश्च सोदराणां च पीडनम्।
स्थानभ्रंशे बन्धुवर्गदारपुत्रविरोधनम्।। 81।।
चौराहिव्रणभीतिश्च स्वदेहस्य च पीडनम्।
आदौक्ले श्करं चैव मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्।। 82।।

महादशेश राहु से यदि मंगल 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो पुत्र, स्त्री आदि को पीड़ा, भाइयों को कष्ट, स्थान परिवर्तन, बन्धु वर्गों का विरोध, स्त्री व पुत्र द्वारा विरोध, चोरभय, सर्पभय, चोटभय, शरीर कष्ट होता है। प्रायः दशा के आरम्भ में कष्ट व तत्पश्चात् शान्ति रहती है।

द्वितीय द्यूननाथे तु देहालस्यं महद्भयम् ।

अनड्वाहं च गां दद्यात् आरोग्यसुखलब्धये ।। 83 ।।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में शरीर में आलस्य भय, आदि होता है । शान्ति के लिए गाय व साँड का दान करना चाहिए । तब स्वास्थ्य लाभ व सुख होता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां राहवन्तर्दशाफलाध्यायः सप्तपंचाशत्तमः ।। 57 ।।

58

।। अथ गुर्वन्तर्दशाफलाध्यायः ।।

गुरुदशा में गुरु अन्तर्दशा :–

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणके ।

अनेकराजाधीशो वा सम्पन्नो राजपूजितः ।। 1 ।।

गोमहिष्यादि लाभश्च वस्त्रवाहनभूषणम् ।

नूतनस्थाननिर्माणं हर्म्यप्राकारसंयुतम् ।। 2 ।।

गजान्तैश्वर्यसम्पतिर्भाग्यकर्मफलोदयः ।

ब्राह्मणप्रभुसम्मानं समानं प्रभुदर्शनम् ।। 3 ।।

स्वप्रभो–स्वफलाधिक्यं दारपुत्रादिलाभकृत् ।

गुरु की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो स्वक्षेत्री, स्वोच्चगत, लग्न से केन्द्र या त्रिकोण स्थानों में स्थित बृहस्पति होने से अनेक राजाओं द्वारा प्रणम्य, अर्थात् बहुत से राजा जिसकी बात मानें अथवा राजाओं का राजा या सम्पन्न व राजपूज्य होता है । इस अन्तर्दशा में गाय भैंस जैसे दुधारू पशुओं या पशु धन का लाभ, वस्त्र वाहन व आभूषणादि की प्राप्ति, नया घर या नए स्थान का निर्माण, बड़े कीमती बँगले आदि का निर्माण, खूब सम्पत्ति, धन वाहन की खूब प्राप्ति, भाग्य व परिश्रम का पूरा फल, ब्राह्मणों के मुखिया द्वारा सम्मान, राजदर्शन, अपना या अपने स्वामी का अधिक कल्याण, स्त्री व पुत्रादि का लाभ होता है ।

नीचांशे नीचराशिस्थे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 4 ।।

नीचसंगो महादुःखं दायादजनविग्रहः ।।

कलहो न विचारोऽस्य स्वप्रभुष्वपमृत्युकृत् ।। 5 ।।

पुत्रदारवियोगश्च धनधान्यार्थहानिकृत् ।
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति ।। 6 ।।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।
रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यात् स्वाभीष्टलब्धये ।। 7 ।।

यदि गुरु नीच नवांश, नीच राशि में, 6.8.12 भाव राशि में हो तो इस अन्तर्दशा में नीच लोगों की संगति, बहुत दुःख, उत्तराधिकार का विवाद, अपने मालिकों से टकराव व मतभेद, अपमृत्यु का भय, स्त्री व पुत्रों का वियोग, धन–धान्य की हानि होती है ।

यदि गुरु सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए शिव सहस्रनाम या सहस्ररुद्राभिषेक एवं गोदान कराने से सफलता मिलती है ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रभे ।
लग्नात्केन्द्रत्रिकोणस्थे लाभे वा बलसंयुते ।। 8 ।।
राज्यलाभे महत्सौख्यं वस्त्राभरण संयुतम् ।
धनधान्यादि लाभश्च स्त्रीलाभो बहुसौख्यकृत् ।। 9 ।।
वाहनाम्बर पश्वादि भूलाभः स्थानलाभकृत् ।
पुत्रमित्रादिसौख्यं च नरवाहनयोगकृत् ।। 10 ।।
नीलवस्त्रादिलाभश्च नीलाश्वं लभते च सः ।
पश्चिमां दिशमाश्रित्य प्रयाणं राजदर्शनम् ।। 11 ।।
अनेकयानलाभं च निर्दिशेन्मन्दभुक्तिषु ।।

गुरु दशा में शनि का अन्तर हो और शनि स्वोच्चराशि, स्वक्षेत्र या मित्र क्षेत्र में लग्न से केन्द्र त्रिकोण में या लाभस्थान में या बलवान् हो तो राज्य लाभ, महान् सुख, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, धन धान्य का लाभ, स्त्री लाभ, बहुत सुख, वाहन, वस्त्र, पशु, भूमि का लाभ, स्थान (पदवी या सम्पत्ति) का लाभ, पुत्रों व मित्रों का सुख, पालकी आदि नरवाहन की प्राप्ति, नीले वस्त्रों के प्रति आकर्षण, नील वस्त्र लाभ, काला या गहरे रंग का घोड़ा, पश्चिम दिशा की यात्रा, वहाँ के राजा से भेंट, अनेक वाहनों का लाभ होता है ।

लग्नात् षष्ठाष्टमे मन्दे व्यये नीचेऽस्तगेऽप्यरौ ।। 12 ।।

धनधान्यादिनाशश्च ज्वरपीडा मनोरुजः ।

स्त्रीपुत्रादिषु पीड़ा वा व्रणार्त्यादिकमुद्वहेत् ।। 13 ।।

गृहे त्वशुभकार्याणि भृत्यवर्गादिपीडनम् ।

गोमहिष्यादि हानिश्च बन्धुद्वेषी भविष्यति ।। 14 ।।

यदि शनि 6.8.12 भाव में, नीचगत, अस्तंगत या शत्रुक्षेत्री हो तो धन धान्य का नाश, ज्वरादि पीड़ा, मनोविकार, स्त्री व पुत्रों को कष्ट, घाव आदि की पीड़ा, घर में अमंगल के अवसर, सेवक कर्मचारी वर्ग को पीड़ा, गाय भैंस आदि की हानि एवं अपने लोगों से द्वेष होता है ।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा ।

भूलाभश्चार्थलाभश्च पुत्रलाभसुखं भवेत् ।। 15 ।।

गोमहिष्यादि लाभश्च शूद्रमूलाद्धनं तथा ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 16 ।।

धनधान्यादि नाशश्च बन्धुमित्रविरोधकृत् ।

उद्योगभंगो देहार्ति स्वजनानां महद्भयम् ।। 17 ।।

(i) यदि बृहस्पति की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि दशापति गुरु से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान, धन स्थान में हो तो भूमि का लाभ, धन लाभ, पुत्र प्राप्ति, पुत्र सुख, पशु धन का लाभ, शूद्र से धन लाभ होता है ।

(ii) दशापति से 6.8.12 में शनि हो या पाप संयुक्त शनि हो तो धन–धान्य का नाश, बन्धुओं व मित्रों से विरोध, प्रयत्नों की असफलता, शरीर कष्ट तथा अपने लोगों से विशेष भय होता है ।

द्विसप्तमाधिपे मन्दे ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थ विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।। 18 ।।

कष्णां गां महिषी दद्यात् तेनारोग्यमादिशेत् ।

मन्दग्रहप्रसादेन सत्यं सत्यं द्विजोत्तम ।। 19 ।।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो इस अन्तर्दशा में अपमृत्यु होती है । इस दोष की निवृत्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ, काली गाय या भैंस का दान करें । इससे स्वास्थ्य को सुरक्षा मिलती है ।

बुधान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्र लाभत्रिकोणगे ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि दशाधिपसमन्विते ।। 20 ।।

अर्थलाभो देहसौख्यं राज्यलाभो महत्सुखम् ।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा ।। 21 ।।
वाहनाम्बरपश्वादिगोधनैः संकुलं गृहम् ।
महीसुतेन संदृष्टे शत्रुवृद्धिः सुखक्षयः ।। 22 ।।
व्यवसायात्फलं नेष्टं ज्वरातिसारपीडनम् ।

(i) गुरु दशा में बुधान्तर्दशा हो तथा बुध 1.4.5.7.9.10.11 भावों में कहीं भी स्वक्षेत्री या उच्चगत या बृहस्पति के साथ ही स्थित हो तो धन लाभ, शरीर का सुख, राज्यप्राप्ति, बहु सुख, बड़े लोगों की सहायता से इष्टसिद्धि, सुख, वाहन, पशु, वस्त्र, गोधन आदि की बहुतायत होती है।

(ii) यदि बुध पर मंगल की दृष्टि हो तो शत्रुओं की वृद्धि, सुख में कमी, व्यवसाय में हानि, ज्वर या अतिसारादि से पीड़ा होती है।

दायेशात्भाग्यकोणे वा केन्द्रे वा तुङ्गराशिगे ।। 23 ।।
स्वदेशे धनलाभश्च पितृमातृसुखावहः ।
गजवाजिसमायुक्तो राजमित्रप्रसादतः ।। 24 ।।

यदि महादशेश से 5.9 या केन्द्र में या उच्चगत हो तो स्वदेश में ही धन लाभ, माता–पिता का पूरा सुख, हाथी घोड़े आदि कीमती वाहनों की प्राप्ति तथा राजा या राजतुल्य या राज्याधिकारी के सहयोग से बहुत कार्य सम्पन्न होते हैं।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते ।
शुभदृष्टिविहीने च धनधान्यपरिच्युतिः ।। 25 ।।
विदेशगमनं चैव मार्गे चौरभयं तथा ।
व्रणदाहाक्षिरोगश्च नानादेशपरिभ्रमः ।। 26 ।।

यदि महादशेश गुरु से अन्तर्दशेश बुध 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट भी न हो तो धन धान्य आदि की हानि होती है। विदेश में गमन, यात्रा के समय चोर भय, घाव, शरीर में जलन, नेत्र रोग तथा अनेक स्थानों प्रदेशों में खूब भ्रमण करने के अवसर आते हैं–

विलग्नादपि दुःस्थे च पापग्रहसमन्विते ।
अकस्मात्कलहश्चैव गृहे निष्ठुरभाषणम् ।। 27 ।।
चतुष्पाज्जीवहानिश्च व्यवहारे तथैव च ।
अपमृत्युभयं चैव शत्रूणां कलहो भवेत् ।। 28 ।।

यदि बुध इसी तरह लग्न से 6.8.12 में या पापयुक्त हो तो अचानक कलह, घर में कठोर शब्दों का प्रयोग, चौपाए पशुओं से हानि, मुकदमे आदि में पराजय, दुर्घटना का भय, शत्रुओं से कलह होती है।

शुभदृष्टे शुभैर्युक्ते दारसौख्यं धनागमः।
आदौ शुभं देहसौख्यं वाहनाम्बर लाभकृत्।। 29।।
अन्ते तु धनहानिः स्यात्स्वात्मसौख्यं न जायते।
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।। 30।।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
आयुर्वृद्धिकरं चैव सर्वसौभाग्यदायकम्।। 31।।

यदि बुध शुभयुक्त या दृष्ट हो तो अन्तर्दशा के प्रारम्भ में शुभ फल वाहन वस्त्रादि का लाभ और अन्त में हानि होती है। तथा कुछ भी सुख नहीं होता है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का विशेष भय होता है। दोष की शान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम के पाठ करने से आयु, आरोग्य व सौभाग्यदायक हो जाती है।

केतु अन्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते केतौ शुभग्रहसमन्विते।
अल्पसौख्यधनावाप्तिः कुत्सितान्नस्य भोजनम्।। 32।।
परान्नं चैव श्राद्धान्नं पापमूलाद् धनानि च।

बृहस्पति की महा दशा में शुभ ग्रह से युक्त केतु की अन्तर्दशा हो तो कम सुख, कम लाभ, निंदित भोजन, पराया अन्न या श्राद्ध भोजन का दुर्योग, पापपूर्ण कार्यो से धन लाभ होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।। 33।।
राजकोपो धनच्छेदो बन्धनरोगपीडनम्।
बलहानिः पितृद्वेषी भ्रातृद्वेषो मनोरुजः।। 34।।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त केतु हो तो राजकोप, धन की हानि, बन्धन, रोगपीड़ा, शक्ति की कमी, पिता से द्वेषभाव, भाइयों से मनमुटाव व मनोविकार होते हैं।

दायेशात्सुतभाग्यस्थे वाहने कर्मगेऽथवा।
नरवाहन योगश्च, गजाश्वाम्बरसंकुलम्।। 35।।
महाराजप्रसादेन स्वेष्टकार्यार्थलाभकृत्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं गोमहिष्यादिलाभकृत्।। 36।।

यवनप्रभुमूलाद् वा धनवस्त्रादिलाभकृत् ।

महादशेश से 5.9.4.10 भाव में केतु हो तो पालकी आदि की सवारी, हाथी घोड़ों, वस्त्रादि की बहुतायत, महाराजाओं की प्रसन्नता से स्व अभीष्ट सिद्धि, व्यवसाय में खूब लाभ, पशुधन की वृद्धि, यवन राज की सहायता से धन वस्त्रादि का लाभ होता है ।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।। 37 ।।
छागदानं प्रकुर्वीत मृत्युंजयजपं चरेत् ।
सर्वदोषोपशमनीं शान्तिं कुर्याद् यथाविधि ।। 38 ।।

यदि केतु 2.7 भावेश या इन मारकेशों के साथ स्थित हो तो शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए मेषदान, मृत्युंजय का जप, यथाविधि कराना चाहिए ।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गतेशुक्रेभाग्यकेन्द्रेशसंयुते ।
लाभे वा सुतराशिस्थे स्वक्षेत्रे शुभसंयुते ।। 39 ।।
नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंयुतः ।
महाराजप्रसादेन लाभाधिक्यं महत्सुखम् ।। 40 ।।
पूर्वस्यां दिशि विप्रेन्द्र ! प्रयाणं धनलाभदम् ।
कल्याणं च महाप्रीतिः पितृमातृसुखावहा ।। 41 ।।
देवतागुरुभक्तिश्च अन्नदानं महत्तथा ।
तडागगोपुरादीनि दिशेत् पुण्यानि भूरिशः ।। 42 ।।

गुरु दशा में शुक्रान्तर आने पर यदि शुक्र जन्म कुण्डली में 1.4.7.5.9.10.11 राशियों में या स्वक्षेत्रादि में शुभ ग्रह से युक्त हो तो नर वाहन (पालकी आदि) विलासिता की सामग्री में वृद्धि, राजादि की सहायता से बहुत लाभ व सुख, पूर्वदिशा की यात्रा में बहुत धन का लाभ होता है ।

इसी दशान्तर्दशा में कल्याण, उदार स्नेहिल मन, माता–पिता को सुख, देव गुरु में भक्ति, अन्नदान, तडाग (प्याऊ) स्मृतिद्वारादि का निर्माण करवाने से पुण्य प्राप्त होता है ।

षष्ठाष्टमव्यये नीचे दायेशाद्वा तथैव च ।
कलहो बन्धुवैषम्यं दारपुत्रादिपीडनम् ।। 43 ।।
मन्दारराहुसंयुक्तो कलहो राजतो भयम् ।
स्त्रीमूलात्कलहश्चैव श्वसुरात्कलहस्तथा ।। 44 ।।

सोदरेण विवादः स्याद्धनधान्यपरिच्युतिः ।

यदि लग्न या दशेश से 6.8.12 में या नीचगत शुक्र हो तो कलह, बन्धुओं से असन्तुलित सम्बन्ध, स्त्री पुत्रादि की पीड़ा होती है ।

यदि शुक्र शनि, मंगल, राहु से युक्त हो तो सरकार आदि की ओर से कलहागम, विवाद, स्त्री के कारण कलह, ससुर से विवाद, भाइयों से विवाद तथा धन धान्य सम्पत्ति आदि की हानि होती है ।

दायेशात्केन्द्रगे शुक्रे धने वा भाग्यगेऽपि वा ।। 45 ।।
धनधान्यादिलाभश्च श्रीलाभो राजदर्शनम् ।।
वाहनं पुत्रलाभश्च पशुवृद्धिर्महत्सुखम् ।। 46 ।।
गीतवाद्यप्रसंगादिर्विद्वज्जनसमागमः ।
दिव्यान्नभोजनं सौख्यं स्वबन्धुजनपोषकम् ।। 47 ।।

दशेश से केन्द्र, धन स्थान या भाग्य भाव में शुक्र हो तो धन धान्य का लाभ, शोभा या हैसियत की वृद्धि, राजा से भेंट, वाहन व पुत्र का लाभ, पशुधन में वृद्धि, गीतादि मनोरंजक कार्यों के अवसर, विद्वानों से मिलाप, उत्तम भोजन, सुख तथा अपने बन्धु–बान्धवों के उपकारादि कार्य होते हैं ।

द्विसप्तमाधिपे शुक्रे तद्दशायां धनक्षतिः ।
अपमृत्युभयं तस्य स्त्रीमूलादौषधादितः ।। 48 ।।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थ शान्तिकर्मसमाचरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् आयुरारोग्यवृद्धये ।। 49 ।।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो इसकी अन्तर्दशा में धनहानि, अपमृत्यु का भय, स्त्री के कारण कोई शरीर कष्ट, रोगादि या हवा के प्रतिकूल प्रभाव से रोगोत्पत्ति होती है ।

इसकी शान्ति के लिए शान्तिकर्म, सफेद गाय या भैंस का दान करना चाहिए ।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।
केन्द्रे वाथ त्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।। 50 ।।
धने वा बलसंयुक्ते दायेद्वा तथैव च ।
तत्काले धनलाभः स्याद् राजसम्मानवैभवम् ।। 51 ।।
वाहनाम्बरपश्वादि भूषणं पुत्रसम्भवः ।
मित्रप्रभुवशाद् इष्टं सर्वकार्ये शुभावहम् ।। 52 ।।

बृहस्पति दशा में सूर्य का अन्तर हो तथा सूर्य उच्चगत, सिंहस्थ, लग्न या दशेश से केन्द्र में, त्रिकोण में या 3.2.11 भाव में हो या बलवान् हो तो तुरन्त धन व्यय, राज सम्मान, वाहन पशु आदि का लाभ, पुत्र जन्म, किसी मित्र राजा की सहायता सब कार्यो में सफलता मिलती है ।

लग्नाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च ।
शिरोरोगादि पीडा च ज्वरपीडा तथैव च ।। 53 ।।
सत्कर्मसु तदा हीनः पापकर्मचयस्तथा ।
सर्वत्र जनविद्वेषो निजबन्धुवियोगकृत् ।। 54 ।।
अकस्मात्कलहश्चैव जीवस्यान्तर्गते रवौ ।
द्वितीयधूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।। 55 ।।
तद्दोषपरिहारार्थम् आदित्यहृदयं जपेत् ।
सर्वपीडोपशमनं दिनेशस्य प्रसादतः ।। 56 ।।

यदि सूर्य लग्न या दशेश से 6.8.12 में हो तो सिर में पीड़ा, ज्वरपीड़ा, अच्छे कार्यो में हानि, पाप में वृद्धि, सब लोगों से मनमुटाव, अपने बन्धुओं से वियोग, अचानक कलह आदि फल होते हैं ।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । इसकी शन्ति के लिए 'आदित्यहृदय स्तोत्र' का पाठ करने से श्री सूर्यदेव प्रसन्न होते हैं ।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रे लाभत्रिकोणके ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे पूर्णे बलयुक्तेऽथवा पुनः ।। 57 ।।
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानवैभवम् ।
दारपुत्रादि सौख्यं च क्षीराणां भोजनं तथा ।। 58 ।।
सत्कर्म तथा कीर्तिः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदा ।
महाराजप्रसादेन सर्वसौख्यं धनागमः ।। 59 ।।
अनेक जनसौख्यं च दानधर्मादि संग्रहः ।

गुरु दशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तथा केन्द्र, त्रिकोण, एकादश में, स्वोच्चगत, स्वराशिगत, पूर्ण अथवा बलवान् चन्द्रमा हो या दशापति से पूर्वोक्त शुभ स्थानों में ही पड़े तब भी राज–सम्मान, वैभव, स्त्री–पुत्रादि का सुख, दूध के पदार्थो का भोजन, सत्कार्य, कीर्ति, सब सुख, धन–लाभ, बड़े लोगों

की सहायता, अनेक लोगों से अच्छे सम्बन्ध व दानधर्मादि का संग्रह होता है।

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे स्थिते वा पापसंयुते।। 60।।
दायेशाद् वा तथाभूते निर्बले रजनीकरे।
मानार्थबन्धुहानिश्च विदेशपरिविच्युतिः।। 61।।
नृपचौरादिपीडा च दायादजनविग्रहः।
मातुलादिवियोगश्च मातृपीडा तथैव च।। 62।।
द्वितीय षष्ठयोरीशे देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषोपशमनार्थं दुर्गापाठं च कारयेत्।। 63।।

यदि चन्द्रमा लग्न या दशापति से 6.8.12 में, या पापयुक्त, क्षीण, निर्बल हो तो मान हानि, बन्धु हानि, धन हानि, विदेश से वापस पलायन, राजा या चोर आदि की पीड़ा, अपने लोगों या उत्तराधिकारियों से विवाद, मामा आदि का वियोग, माता को पीड़ा होती है।

यदि चन्द्रमा 2.6 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है तथा इसकी निवृत्ति के लिए दुर्गापाठ कराना चाहिए।

मंगलान्तर्दशा फल :—

जीवस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा।। 64।।
विद्याविवाहकार्याणि ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
जनसामर्थ्यमाप्नोति सर्वकार्यार्थसिद्धिदम्।। 65।।

गुरु दशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र, त्रिकोण (या लाभ) में हो या स्वोच्चगत, स्वराशिगत, या नवांश में उच्चादि गत हो तो विद्याप्राप्ति, विवाह, ग्रामादि में प्रतिष्ठा, भूमि का लाभ, जन समर्थन व सर्वत्र सफलता मिलती है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे धनधान्यादि सम्पदः।। 66।।
मिष्टान्नदानविभवं राजप्रीतिकरं शुभम्।
स्त्रीसौख्यं च सुतावाप्तिः पुण्यतीर्थफलं भवेत्।। 67।।

यदि दशापति से केन्द्र, त्रिकोण, 2.11 भावों में मंगल हो या मंगल शुभ युक्त दृष्ट हो तो धन—धान्य की वृद्धि, मिष्टान्न दान की सामर्थ्य,

राजा से प्रीति, स्त्रीसुख, पुत्र लाभ, पुण्यतीर्थों में स्नान आदि कार्य होते हैं।

दायेशाद् रन्ध्रभावे वा व्यये वा नीचगेऽपि वा।
पापयुक्तेक्षिते वापि धान्यार्थगृहनाशनम्।। 68।।
नानारोगभयं दुःखं नेत्ररोगादि सम्भवः।
पूर्वार्धे कष्टमधिकमपरार्धे महत्सुखम्।। 69।।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजः।
वृषभस्य प्रदानं तु सर्वसम्पत्प्रदायकम्।। 70।।

यदि दशापति से मंगल 8.12 भाव में, या नीचगत या पापदृष्टयुत हो तो धन, धान्य व भवनादि का नाश, अनेक रोग, भय, दुःख तथा नेत्र कष्ट होता है।

अन्तर्दशा के पूर्वार्ध में बहुत दुःख तथा उत्तरार्ध में सुख होता है। यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो मनोविकार शरीर में शिथिलता होती है। शान्ति के लिए साँड या बछड़े का दान करना चाहिए।

राहु अन्तर्दशा फल :–

जीवस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे वा केन्द्रगेऽपि वा।
मूलत्रिकोणे भाग्ये च केन्द्राधिपसमन्विते।। 71।।
शुभयुक्तेक्षिते वापि योगप्रीतिं समादिशेत्।
भुक्त्यादौ पंचमासांश्च धनधान्यादिकं लभेत्।। 72।।
देशग्रामाधिकारं च यवनप्रभुदर्शनम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्बहुसेनाधिपत्यकम्।। 73।।
दूरयात्राधिगमनं पुण्मधर्मादिसंग्रहः।
सेतुस्नानफलावाप्तिरिष्टसिद्धिः सुखावहा।। 74।।

बृहस्पति में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु केन्द्रगत, उच्चगत, मूलत्रिकोणगत, नवमस्थ या केन्द्रेश त्रिकोणेशादि से युक्त हो या शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो खूब शुभ फल, धन धान्य का लाभ, देश या ग्रामादि का अधिकार, यवन सम्राट् से भेंट, घर में कल्याण, सम्पत्ति वृद्धि तथा सेनापतित्व प्राप्त होता है। इसमें भी पहले पाँच मासों में विशेष धन वृद्धि होती है।

दूर देशों की यात्रा, पुण्य संग्रह, सेतु स्नान (रामेश्वर यात्रा) का फल व कार्य सिद्ध होते हैं।

दायेशाद् रन्ध्रभावे वा व्यये वा पापसंयुते ।
चौरादिव्रणभीतिश्च राजवैषम्यमेव च ।। 75 ।।
गृहे कर्मकलापेन व्याकुलो भवति ध्रुवम् ।
सोदरेण विरोधः स्यात् दायादजनविग्रहः ।। 76 ।।
गृहे त्वशुभकार्याणि दुःस्वप्नादि भयं ध्रुवम् ।
अकस्मात्कलहश्चैव क्षुद्रशून्यादिरोगकृत् ।। 77 ।।
द्विसप्तमस्थिते राहौ देहबाधां विनिर्दिशेत् ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजय जपं चरेत् ।। 78 ।।
छागदानं प्रकुर्वीत देवपूजां च कारयेत् ।
राहुतुष्ट्या तदा विप्र ! सर्वसौख्यमवाप्नुयात् ।। 79 ।।

यदि महादशेश से 8.12 में राहु हो, पाप युक्त हो तो चोर, चोट, सर्पादि का भय, राजा से प्रतिकूलता, घरेलू समस्याएँ, भाइयों व उत्तराधिकारियों से विवाद, लोगों का विरोध, घर में अमंगलकार्य, छोटे या काल्पनिक रोगों से पीड़ा होती है ।

यदि राहु 2.7 भाव में स्थित हो तो शरीर कष्ट होता है । इनकी शान्ति के लिए, मृत्युंजय जप, बकरे का दान, देवताओं की पूजा करनी चाहिए । तब जातक राहु की प्रसन्नता से सब सुख पाता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां गुर्वन्तर्दशा फलाध्यायोष्टपंचाशत्तमः ।।58 ।।

59

।। अथ शनिदशान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

शनि में शनि अन्तर्दशा फल :–

मूलत्रिकोणे स्वर्क्षे वा तुलायामुच्चगेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा राजयोगादिसंयुते ।। 1 ।।
राज्यलाभो महत्सौख्यं दारपुत्रादि वर्धनम् ।
वाहन त्रयसंयुक्तं गजाश्वाम्बर संकुलम् ।। 2 ।।
महाराजप्रसादेन सेनापत्यादि लाभकृत् ।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।। 3 ।।

शनि की अन्तर्दशा आने पर यदि शनि जन्म समय में मूलत्रिकोणी, स्वक्षेत्री, उच्चगत, केन्द्र, त्रिकोणगत या लाभगत या राजयोग कारक ग्रह से युक्त हो तो राज्य लाभ, खूब सुख, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि, कई वाहनों का सुख, भौतिक समृद्धि, महाराज की प्रसन्नता से सेनापतित्व या अधिकार प्राप्ति, चौपाए पशुओं से लाभ, ग्राम या भूमि का अधिकार मिलता है।

तथाष्टमे व्यये मन्दे नीचे वा पापसंयुते।
तद्भुक्त्यादौ राजभीतिर्विषशस्त्रादिपीडनम्।।4।।
रक्तस्रावो गुल्मरोगो ह्यतिसारादिपीडनम्।
मध्ये चौरादि भीतिश्च देशत्यागो मनोरुजः।।5।।
अन्ते शुभकरी चैव शनेरन्तर्दशा द्विज !।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।।6।।
दोषस्य परिहारार्थं मृत्युंजयमनुं जपेत्।
तस्माच्छान्तिमवाप्नोति शंकरस्य प्रसादतः।।7।।

यदि शनि 8.12 में या नीचगत या पापयुक्त हो तो अन्तर्दशारम्भ में राज भय, विषशस्त्रादि पीड़ा, रक्त बहना, गुल्म (पथरी, अन्दरुनी फोड़ा या जिगर बढ़ना, दस्त आदि होते हैं।

दशा मध्य में चोर भय, स्थान या देश का त्याग, मनोविकार होते हैं। अन्त में शनि में शनि की अन्तर्दशा शुभ फल देती है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु से बचने के लिए मृत्युंजय मन्त्र का जप करने से अनिष्ट निवारण होता है।

बुधान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते सौम्ये त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
सम्मानं च यशः कीर्तिं विद्यालाभं धनागमम्।।8।।
स्वदेशे सुखमाप्नोति वाहनादि फलैर्युतम्।
यज्ञादिकर्मसिद्धिश्च राजयोगादि सम्भवम्।।9।।
देहसौख्यं हृदुत्साहं गृहे कल्याणसम्भवम्।
सेतुस्नान फलावाप्तिस्तीर्थयात्रादिकर्मणा।।10।।
वाणिज्याद् धनलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
अन्नदानं फलं चैव नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।।11।।

शनि महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध केन्द्र, त्रिकोण में हो तो सम्मान, यश, कीर्ति, विद्यालाभ, धनलाभ, स्वदेश में ही सुख, वाहनादि

का सुख, यज्ञादि की सम्पन्नता, राजयोग, शरीर सुख, हृदय में उत्साह, घर में कल्याणकारी कार्य, सेतुस्नान का अवसर, तीर्थयात्राएँ, वाणिज्य (व्यापार या व्यापारियों से) लाभ, पुराण कथा श्रवण, अन्नदान तथा मिष्ठान्न भोजन आदि फल मिलते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये नीचे वास्तंगते सति।
रव्यारफणिसंयुक्ते दायेशाद्वा तथैव च।। 12।।
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यकम्।
फलमीदृशमादौ तु मध्यान्ते रोगपीडनम्।। 13।।
नष्टानि सर्वकार्याणि व्याकुलत्वं महद्भयम्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति।। 14।।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
अन्नदानं प्रकुर्वीत ततः सौख्यमवाप्नुयात्।। 15।।

यदि बुध 6.8.12 भाव में, या नीचगत या अस्तंगत या सूर्य, मंगल, राहु के साथ हो अथवा दशेश शनि से 6.8.12 में हो तो दशारम्भ में पद प्राप्ति, धन लाभ, स्थानीय अधिकार, मध्यभाग में रोग पीड़ा, सब कार्यों का नाश, मन में व्याकुलता, भय होता है।

यदि बुध 2-7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। दोष शान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ व अन्न दान करना चाहिए, तब सुख होता है।

केतु अन्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते केतौ शुभदृष्टियुतेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभ राशिस्थे योगकारक संयुते।। 16।।
केन्द्रकोणगते वापि स्थानभ्रंशो महद्भयम्।
दरिद्रबन्धनभीतिः पुत्रदारादिनाशनम्।। 17।।
स्वप्रभोश्च महाकष्टं विदेशगमनं तथा।
लग्नाधिपेन संयुक्ते पूर्वं सौख्यं धनागमः।। 18।।

शनि में केतु की अन्तर्दशा हो तथा केतु शुभ फलद या शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो, स्वोच्चगत या अन्य शुभ राशियों में हो, या योगकारक ग्रह से युक्त हो, केन्द्र में या त्रिकोण में हो तो स्थान परिवर्तन, दरिद्रता की पीड़ा, भय, पुत्र–स्त्री को कष्ट, अपने स्वामी को कष्ट, विदेशगमन होता है।

यदि केतु लग्नेश से युक्त हो तो पूर्वार्ध में सुख व धन का लाभ होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा तृतीयभव राशिगे।
समर्थो धर्मबुद्धिश्च सौख्यं नृपसमागमः।। 19।।

यदि दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय या एकादश में केतु हो तो सामर्थ्य वृद्धि, धर्म बुद्धि व राजा से समागम होता है।

तथाष्टमे व्यये केतौ दायेशद्वा तथैव च।
अपमृत्युभयं चैव कुत्सितान्नस्य भोजनम्।। 20।।
शीतज्वरातिसारश्च व्रणचौरादि पीडनम्।
दारपुत्र वियोगश्च जनानां भवति ध्रुवम्।। 21।।
द्वितीय द्यूनराशिस्थे देहपीडा भविष्यति।
छागदानं प्रकुर्वीत ह्यपमृत्युनिवारणम्।। 22।।

इसी तरह लग्न या दशापति से 8.12 में केतु हो तो अपमृत्यु का भय, खराब भोजन, शीत ज्वरादि से पीड़ा, व्रणादि योग, स्त्री–पुत्रादि का वियोग होता है। यदि केतु 2.7 में हो तो शरीर कष्ट होता है। एतदर्थ मेष दान करना चाहिए।

शुक्रान्तर्दशा फल:–

मन्दस्यान्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।। 23।।
दारपुत्रधनप्राप्तिर्देहारोग्यं महोत्सवः।
गृहे कल्याणसम्पत्ती राज्यलाभो महत्सुखम्।। 24।।
महाराजप्रसादेन हीष्टसिद्धि सुखावहा।
सम्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रादि लाभकृत्।। 25।।
द्वीपान्तराद् वस्त्रलाभः श्वेताश्वो महिषी तथा।
गुरुचारवशाद्भाग्यं सौख्यं च धनसम्पदः।। 26।।
शनि चारान्मनुष्योऽसौ योगमाप्नोत्यसंशयम्।

शनि महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र उच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, या शुभयुक्त, त्रिकोणगत या लाभगत हो तो स्त्री, पुत्र, धन, आरोग्य घर में महान् उत्सव, घर में कल्याणकारी कार्य, राज्य लाभ, महान् सुख, बड़े लोगों के सहयोग से इष्टसिद्धि, सम्मान, राजमान्यता, अभीष्ट योगों

की प्राप्ति, दूसरे द्वीप (विदेशों) से वस्त्रादि लाभ, सफेद घोड़े, की सवारी, दूध देने वाले पशुओं की प्राप्ति होती है।

इस अन्तर्दशा के समय यदि मनुष्य को गोचर से बृहस्पति शुभ हो तो सुख व धन सम्पत्ति एवं शनि शुभ स्थानों में गोचर करे तो योगफल अर्थात् बहुत सुख मिलते हैं। यदि दोनों ही शुभ स्थान में हों तो विशिष्ट उल्लेखनीय शुभ फल मिलते हैं।

शत्रुनीचास्तगे शुक्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 27 ।।

दारनाशो मनःक्लेशः स्थाननाशो मनोरुजः ।

दाराणां स्वजनक्लेशः सन्तापो जनविग्रहः ।। 28 ।।

यदि शुक्र नीचगत, अस्तंगत, 6.8.12 में स्थित हो तो स्त्री कष्ट, मन में क्लेश, स्थान नाश, मनोविकार, स्त्री या स्वजनों से क्लेश, सन्ताप व लोगों का विरोध सहना पड़ता है।

दायेशाद् भाग्यगे चैव केन्द्रे वा लाभसंयुते ।

राजप्रीतिकरं चैव मनोऽभीष्टप्रदायकम् ।। 29 ।।

दानधर्मदयायुक्तं तीर्थयात्रादिकं फलम् ।

शास्त्रार्थकाव्यरचनां वेदान्त श्रवणादिकम् ।। 30 ।।

दारपुत्रार्थ सौख्यं च लभते नात्र संशयः ।

यदि दशेश शनि से केन्द्र, लाभस्थान या त्रिकोण में शुक्र हो तो राजा से प्रीति, मन में अभीष्ट वस्तु लाभ का सन्तोष, दान, धर्म दया की वृद्धि, तीर्थयात्रादि फल, शास्त्रों के अर्थ व्याख्या टीकादि करने का सुयोग, वेदान्त विद्या या ब्रह्मविद्या का श्रवण, स्त्री, पुत्र व धनादि का सुख होता है।

दायेशाद व्ययगे शुक्रे षष्ठे वा ह्यष्टमेऽपि वा ।। 31 ।।

नेत्रपीड़ा ज्वरभयं स्वकुलाचारवर्जितः ।

कपोले दन्तशूलादि ह्रदिगुह्ये च पीडनम् ।। 32 ।।

जलभीतिर्मनस्तापो वृक्षात्पतन सम्भवः ।

राजद्वारे मनद्वेषः सोदरेण निरोधनम् ।। 33 ।।

द्वितीयसप्तमाधीशे आत्मक्लेशो भविष्यति ।

तद्दोष परिहारार्थं दुर्गादेवीजपं चरेत् ।। 34 ।।

श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये ।

जगदम्बा प्रसादेन ततः सुखमवाप्नुयात् ।। 35 ।।

यदि दशापति से 6.8.12 में शुक्र हो तो पीड़ा, ज्वरादि रोग, अपने कुलाचार से हीन अर्थात् कुल के प्रतिकूल कार्य, कपोल या दाँत में दर्द,

हृदय या गुप्तांगों में पीड़ा, जल से भय, मन में सन्ताप, वृक्ष से पतन, राजद्वार में मन में मलिनता, भाइयों से विरोध होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो स्वयं को कष्ट होता है। इस दोष की शान्ति के लिए, दुर्गा पाठ, सफेद गौ या भैंस का दान करें। तब भगवती की कृपा से सुख, आयु व स्वास्थ्य की वृद्धि होती है।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
भाग्याधिपेन संयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे।। 36।।
शुभदृष्टियुते वापि स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रादिसुखवर्धनम्।। 37।।
वाहनाम्बर पश्वादि गोक्षीरैः संकुलंगृहम्।

शनि दशा में सूर्य का अन्तर हो तथा सूर्य उच्च स्वक्षेत्र में हो या केन्द्रत्रिकोण में या नवमेश से युक्त या शुभ ग्रह से दृष्ट युत हो तो अपने स्वामी की वृद्धि, अपने अधिकारी की ओर से सुख, घर में बढ़ोत्तरी, पुत्रादि का सुख, वाहन, पशु आदि का लाभ, गाय के दूध की अधिकता होती है।

लग्नाष्टमव्यये सूर्ये दायेशद्वा तथैव च।। 38।।
हृद्रोगो मानहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजा।
इष्टबन्धुवियोगश्च परिश्रमविनाशनम्।। 39।।
तापज्वरादिपीडा च व्याकुलत्वं भयं तथा।
आत्मसम्बन्धिमरणम् इष्टवस्तु वियोगकृत्।। 40।।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थ सूर्यपूजां च कारयेत्।। 41।।

यदि लग्न या दशेश से 8.12 में सूर्य हो तो हृदयरोग, मानहानि, मानसिक व्यथा के कारण पद या स्थान की हानि, इष्टजनों का वियोग, परिश्रम की असफलता, ताप ज्वर पीड़ा, व्याकुलता, भय, अपने निजी व्यक्ति का शोक होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। इस दोष की शान्ति के लिए सूर्य पूजा करानी चाहिए।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते चन्द्रे जीवदृष्टिसमन्विते।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।। 42।।

पूर्णे शुभग्रहयुक्तै राजप्रीतिसमागमः ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।। 43 ।।
सौभाग्यं सुखवृद्धि च भृत्यानां परिपालनम् ।
पितृमातृकुले सौख्यं पशुवृद्धिः सुखावहा ।। 44 ।।

शनि महादशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तथा चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो या चन्द्रमा उच्चगत, स्वक्षेत्री, त्रिकोणगत, लाभगत या पूर्ण हो या शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजाओं से मित्रता व मिलन, बड़े लोगों के सहयोग से वाहनादि सुखों की प्राप्ति, सौभाग्यवृद्धि, सुखवृद्धि, नौकरों को पालने का स्तर, मातृकुल व पितृकुल में सुख एवं पशुवृद्धि होती है ।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते पापदृष्टे च नीचगे ।
क्रूरांशकगते वापि क्रूरक्षेत्रगतेऽपि वा ।।45 ।।
जातकस्य महत्कष्टं राजकोपो धनक्षयः ।
पितृमातृवियोगश्च पुत्रीपुत्रादिरोगकृत् ।। 46 ।।
व्यवसायात्फलं नेष्टं नानामार्गे धनव्ययः ।
अकाले भोजनं चैवमौषधस्य च भक्षणम् ।। 47 ।।
फलमेतद्विजानीयादादौ सौख्यं धनागमः ।

यदि चन्द्रमा क्षीण, पापयुक्त, पापदृष्ट या नीचगत, क्रूर नवांशगत या क्रूरराशिगत हो तो व्यक्ति को महान् कष्ट, राजा का कोप, धन हानि, माता पिता का वियोग, सन्तान को कष्ट, व्यवसाय से कम लाभ, नाना तरह से धन हानि, असमय में भोजन, दवा खाने के योग होते हैं लेकिन इस अन्तर्दशा के प्रारम्भ में कुछ सुख व धन लाभ भी होता है ।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।। 48 ।।
वाहनाम्बर पश्वादि भ्रातृवृद्धिः सुखावहा ।
पितृमातृसुखावाप्तिः स्त्रीसौख्यं च धनागमः ।। 49 ।।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वसौख्यं शुभावहम् ।
दायेशाद् द्वादशे भावे रन्ध्रे वा बलवर्जिते ।। 50 ।।
शयनं रोगमालस्यं स्थानभ्रष्टं सुखावहम् ।
शत्रुवृद्धि विरोधश्च बन्धुद्वेषमवाप्नुयात् ।। 51 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहालस्यं भविष्यति ।
तद्दोषशमनार्थं च तिल होमं समाचरेत् ।। 52 ।।
गुडं घृतं च दध्नाक्तं तण्डुलं च यथाविधि ।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये ।। 53 ।।

(i) महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में चन्द्रमा हो तो वाहन, पशु, वस्त्रादि की प्राप्ति, भाइयों की वृद्धि, माता–पिता को सुख, स्त्री का सुख, धन लाभ, मित्र या राजा के सहयोग से सब सुख मिलते हैं ।

(ii) महादशेश से 8.12 में यदि चन्द्रमा हो या निर्बल चन्द्रमा हो तो आलस्य, अधिक शयन, रोग, स्थान नाश होता है। शत्रुओं की वृद्धि, शत्रु विरोध, भाई–बन्धुओं से द्वेष होता है।

(iii) यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर में शिथिलता होती है। दोष शान्ति के लिए तिल से हवन करें। गुड़ घी व दही चावल का दान करें तथा सफेद गाय या भैंस का दान करें।

मंगलान्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते भौमे केन्द्रलाभ त्रिकोणगे।
तुंगे स्वक्षेत्रे वापि दशाधिपसमन्विते।। 54।।
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमः।
रत्नप्रीतिकरं सौख्यं वाहनाम्बरभूषणम्।। 55।।
सेनापत्यं नृपप्रीतिः कृषिगोधान्यसम्पदः।
नूतन स्थाननिर्माणं भ्रातृवर्गेष्ट सौख्यकृत्।। 56।।

यदि शनि दशा में मंगल का अन्तर हो तथा मंगल केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में या दशेश शनि के साथ स्थित हो या लग्नेश के साथ मंगल हो तो दशारम्भ में सुख, धनलाभ, राजा से प्रीति, वाहनादि की प्राप्ति, सेनापतित्व, कृषि व पशु धन की वृद्धि, नए स्थान का निर्माण, भाईयों को सुख होता है।

नीचे चास्तंगते भौमे लग्नादष्टव्ययस्थिते।
पाप दृष्टयुते चापि धनहानिर्भविष्यति।। 57।।
चौरादिव्रणशस्त्रादिग्रन्थिरोगादिपीढनम्।
भ्रातृपित्रादिपीडा च दायादजनविग्रहः।। 58।।
चतुष्पाज्जीवहानिश्च कुत्सितान्नस्य भोजनम्।
विदेशगमनं चैव नानामार्गे धनव्ययः।। 59।।
अष्टमद्यूननाथे तु द्वितीयस्थेऽथवा यदि।
अपमृत्युभयं चैव नानाकष्टं पराभवः।। 60।।
तद्दोषपरिहारार्थं शान्ति होमं च कारयेत्।
वृषदानं प्रकुर्वीत सर्वारिष्टनिवारणम्।। 61।।

यदि मंगल नीचगत, अस्तंगत या अष्टमस्थ, पापदृष्टयुक्त हो तो धनहानि होती है। चोर भय, सर्पभय, व्रण (घाव) भय, शस्त्रादि भय, शरीर गाँठ, ट्यूमर आदि से पीड़ा, भाइयों व मित्रों को कष्ट, सम्पत्ति के दावेदारों से विवाद, चौपाया पशु से कष्ट या हानि, कुभोजन, विदेशगमन, अनेक प्रकार से धन का व्यय होता है।

यदि 7.8 भावेश मंगल हो या मंगल द्वितीयस्थ हो तो अपमृत्युभय, नाना प्रकार से कष्ट, पराजय होती है। इस दोष की शान्ति के लिए शान्तिकार्य, हवन, साँड़ दान करना चाहिए, तब कष्ट दूर होता है।

राहु अन्तर्दशाफल :–

मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा ।
देहपीडा मनस्तापः पुत्रद्वेषो रुजोभयम् ।। 62 ।।
अर्थव्ययो राजभयं स्वजनादिविरोधिता ।
विदेशगमनं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।। 63 ।।

शनि दशा में राहु का अन्तर हो तो कलह, मानसिक कष्ट, शरीर कष्ट, मन में सन्ताप, पुत्र से द्वेष, रोगभय, धन का व्यय, राजभय, अपने लोगों से विरोध, विदेश गमन पर जाना पड़े, घर व खेत, स्थान आदि की हानि होती है ।

लग्नाधिपेन संयुक्ते योगकारकसंयुते ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे केन्द्रे दायेशाल्लाभराशिगे ।। 64 ।।
आदौ सौख्यं धनावाप्तिं गृहक्षेत्रादि सम्भवम् ।
देवब्राहम्णभक्तिं च तीर्थयात्रादिकं लभेत् ।। 65 ।।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् गृहे कल्याणवर्धनम् ।
मध्ये तु राजभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम् ।। 66 ।।

यदि लग्नेश के साथ मंगल योगकारक ग्रह से युक्त हो, स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री, केन्द्रगत हो या दशापति से एकादश में हो तो पहले सुख, धन लाभ, घर, जमीन जायदाद का लाभ, देव ब्राह्मणों की भक्ति, तीर्थयात्रादि, चौपाए जीवों से लाभ, घर में कल्याणकारी कार्य होते हैं ।

लेकिन दशामध्य में राजभय, पुत्रों व मित्रों से विरोध होता है ।

मेषे कन्यागते वापि कुलीरे वृषभे तथा ।
मीनकोदण्डसिंहेषु गजान्तैश्वर्यमादिशेत् ।। 67 ।।
राजसम्मानभूषाप्तिं मृदुलाम्बरभूषणम् ।
द्विसप्तमाधिपैर्युक्ते देहबाधा भविष्यति ।। 68 ।।
मृत्युंजयं प्रकुर्वीत छागदानं च कारयेत् ।
वृषदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्सुखावहम् ।। 69 ।।

मेष, कन्या, कर्क, वृष, मीन, धनु या सिंह में राहु हो तो अपूर्व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है । इसकी अन्तर्दशा में राजसम्मान, भूषणों की प्राप्ति, मृदुल वस्त्रों की प्राप्ति होती है ।

यदि राहु 2.7 भावेशों के साथ हो तो शरीर कष्ट होता है । दोष निवारण के लिए मृत्युंजय जप, मेषदान, वृषभदान करने से सब सुख होते हैं ।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

मन्दस्यान्तर्गते जीवे केन्द्रे लाभत्रिकोणगे ।
लग्नाधिपेन संयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।। 70 ।।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याच्छोभनं भवति ध्रुवम् ।
महाराजप्रसादेन धनवाहनभूषणम् ।। 71 ।।
सम्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रार्थलाभकृत् ।
देवतागुरुभक्तिश्च विद्वज्जन समागमः ।। 72 ।।
दारपुत्रादि लाभश्च पुत्रकल्याणवैभवम् ।

शनि दशा में गुरु का अन्तर हो तथा गुरु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो या शुभ भावों में लग्नेश से युक्त हो तो सब कार्यो में सफलता, शुभफल, बड़े लोगों के सहयोग से धन व वाहन की प्राप्ति, सम्मान, अधिकारी या राजा से प्रशंसा, प्रिय भोग्य वस्तुओं की प्राप्ति, देवताओं व गुरु के प्रति भक्ति, विद्वानों के साथ समागम, स्त्री व पुत्रादि का लाभ, पुत्र की उन्नति व वैभव होता है ।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वा पापसंयुते ।। 73 ।।
निजसम्बन्धिमरणं धनधान्यविनाशनम् ।
राज्यस्थाने जनद्वेषः कार्यहानिर्भविष्यति ।। 74 ।।
विदेशगमनं चैव कुष्ठरोगादिसम्भवः ।।

यदि गुरु 6.8.12 में नीचगत या पापयुक्त हो तो अपने किसी निजी व्यक्ति की मृत्यु, धनधान्य का विनाश, सरकारी स्थानों पर लोगों से विरोध, कार्यहानि, विदेश गमन, त्वचा रोगादि की उत्पत्ति होती है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा धने वा लाभगेऽपि वा ।। 75 ।।
विभवं दारसौभाग्यं राजश्रीधनसम्पदः ।
भोजनाम्बरसौख्यं च दानधर्मादिकं भवेत् ।। 76 ।।
ब्रह्मप्रतिष्ठासिद्धिश्चक्रतुकर्मफलंतथा ।
अन्नदानं महाकीर्तिर्वेदान्तश्रवणादिकम् ।। 77 ।।

यदि शनि दशेश से बृहस्पति 1.2.4.5.7.9.10.11 में हो तो वैभव, स्त्री का सुख, राज्यलक्ष्मी या राजमान की प्राप्ति, भोजन वस्त्रादि का पूर्ण सुख दया धर्म में बुद्धि, वेदांगों का ज्ञान, यज्ञादि कार्यो का सफल सम्पादन, अन्नदान, महान् कीर्ति, वेदान्तविद्या से सम्बन्धित बातों को सुनने के अवसर होते हैं ।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ।
बन्धुद्वेषो मनो दुःखं कलहः पदविच्युतिः ।। 78 ।।
कुभोजनं कर्महानी राजदण्डाद्धनव्ययः ।
कारागृहप्रवेशश्च पुत्रदारादिपीडनम् ।। 79 ।।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा मनोरुजः ।

आत्मसम्बन्धिमरणं भविष्यति न संशयः ।। 80 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।

स्वर्णदानं प्रकुर्वीत ह्यारोग्यं भवति ध्रुवम् ।। 81 ।।

यदि दशापति से 6.8.12 में गुरु हो या निर्बल हो तो बन्धुओं से द्वेष, मन में दुःख, कलह, पदहानि, कुभोजन, कार्य में असफलता, राजदण्ड से धनहानि, कारावास, पुत्र, स्त्री को पीड़ा होती है ।

यदि बृहस्पति 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट, मानसिक कष्ट, अपने किसी व्यक्ति की हानि होती है । इस दोष को दूर करने के लिए शिव सहस्र नाम का जप व स्वर्ण दान करना चाहिए, तब आरोग्य होता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां शन्यन्तर्दशाफलाध्यायः एकोनषष्टितमः ।। 59 ।।

60

।। अथ बुधान्तर्दशाफलाध्यायः ।।

बुध दशा में बुधान्तर्दशा फल :–

मुक्ताविद्रुमलाभश्चज्ञानकर्मसुखादिकम् ।

विद्या महत्त्वं कीर्तिश्च नूतनप्रभुदर्शनम् ।। 1 ।।

विभवं दारपुत्रादि पितृमातृसुखावहम् ।

स्वोच्चादिस्थेऽथ नीचस्थे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 2 ।।

पापयुक्तेऽथवा दृष्टे धनधान्यपशुक्षयः ।

आत्मबन्धुविरोधश्च शूलरोगादि सम्भवः ।। 3 ।।

राजकार्यकलापेन व्याकुलो भवति ध्रुवम् ।

द्वितीयद्यूननाथे तु दारक्लेशो भविष्यति ।। 4 ।।

आत्मसम्बन्धिमरणं वातशूलादिसम्भवः ।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।। 5 ।।

यदि बुध स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मूलत्रिकोण, शुभयुक्त, शुभदृष्ट, केन्द्रत्रिकोणगत हो तो मुक्ताविद्रुम आदि मणियों व रत्नों की प्राप्ति, ज्ञान वृद्धि, कार्य वृद्धि, विद्या लाभ, महत्त्व वृद्धि, नए राजा या अधिकारी से मिलन, वैभव, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि, माता–पिता का सुख होता है ।

यदि बुध नीच, अस्तंगत, पापयुक्त, अशुभ भावगत हो तो धन–धान्य की हानि, अपने लोगों से विरोध, शूल रोग की उत्पत्ति, राजकीय कार्यों में अति व्यस्त रहने से व्याकुलता होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो स्त्री को कष्ट, अपने निजी जन की हानि, वातशूल रोग की सम्भावना होती है।

इस दोष की शान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम के पाठ करने चाहिए।

केतु अन्तर्दशा फल :–

बुधस्यान्तर्गते केतौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नाधिपसमन्विते।। 6।।
योगकारकसम्बन्धेदायेशात्केन्द्रलाभगे।
देहसौख्यं धनाल्पत्वं बन्धुस्नेहमथादिशेत्।। 7।।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् संचारेण धनागमः।
विद्याकीर्तिप्रसंगश्च सम्मानप्रभुदर्शनम्।। 8।।
भोजनाम्बर सौख्यं च ह्यादौ मध्ये सुखावहम्।

बुध की महादशा में केतु का अन्तर हो तथा केतु 1.4.5.7.9.10 भावों में, शुभ युक्त दृष्ट लग्नेश से युक्त, योग कारक से सम्बन्ध करने वाला, दशेश से केन्द्र या लाभगत हो तो शरीर सुख, धन का थोड़ा लाभ, भाइयों का स्नेह, चौपाए धन का लाभ होता है।

दायेशाद्यदि रन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।। 9।।
वाहनात्पतनं चैव पुत्रक्लेशादिसम्भवः।
चौरादि राजभीतिश्च पापकर्मरतः सदा।। 10।।
वृश्चिकादि विषाद् भीतिर्नीचैः कलहसम्भवः।
शोकरोगादि दुःखं च नीचसंगादिकं भवेत्।। 11।।
द्वितीय द्यूननाथेन सम्बन्धे देहबाधनम्।
दोषस्यपरिहारार्थं छागदानं तु कारयेत्।। 12।।

यदि महादशेश बुध से 8.12 भाव में, पापयुक्त, केतु हो तो वाहन से पतन, पुत्र क्लेश, चोरभय, राजभय, पापकर्म का उदय, बिच्छू आदि जीवों का भय, किसी भी प्रकार का विषैला संक्रमण, नीच लोगों से कलह, शोक, रोग, दुःख, नीच संगादि, फल होते हैं।

यदि केतु 2.7 भाव या भावेशों से सम्बन्ध करे तो शरीर कष्ट होता है। इस दोष की शान्ति के लिए बकरे का दान करना चाहिए।

शुक्रान्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रे लाभे त्रिकोणगे ।
सत्कथापुण्यधर्मादिसंग्रहः पुण्यकर्मकृत् ।। 13 ।।
मित्रप्रभुवशादिष्टं क्षेत्रलाभः सुखं भवेत् ।
दायाधिपात्केन्द्रगते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।। 14 ।।
तत्काले श्रियमाप्नोति राजश्रीधनसम्पदः ।
वापीकूपतडागादि दानधर्मादिसंग्रहः ।। 15 ।।
व्यवसायात्फलाधिक्यं धनधान्यसमृद्धिकृत् ।

बुध दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र, केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो तो अच्छे समाचार वार्ता आदि, पुण्य व धार्मिक कार्यों के अवसर, मित्रराजा के सहयोग से इष्टलाभ, स्थान व सम्पत्ति आदि का लाभ व सुख होता है। दशेश से यदि केन्द्रादि में शुक्र हो तो तब तुरन्त ही लक्ष्मी, राजमान, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति, बावड़ी कूप तड़ागादि का निर्माण, दान धर्मादि कार्य, व्यवसाय से अधिक लाभ व धन–धान्य की समृद्धि होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 16 ।।
हृदरोगो मानहानिश्च ज्वरातिसारपीडनम् ।
आत्मबन्धुवियोगश्च संसारे भवति ध्रुवम् ।। 17 ।।
आत्मकष्टमनस्तापदायकं द्विजसत्तम ! ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 18 ।।
दोषस्योपशमनार्थं दुर्गापाठं समाचरेत् ।
जगदम्बाप्रसादेन सर्वसौख्यमवाप्नुयात् ।। 19 ।।

यदि शुक्र दशेश बुध से 6.8.12 में या निर्बल हो तो हृदय रोग, मान हानि, ज्वरातिसार (रोग) से पीड़ा, अपने लोगों से विछोह, स्वयं को कष्ट एवं मानसिक सन्ताप होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होती है। दोष निवारणार्थ दुर्गा पाठ करने चाहिए। तब जगदम्बिका की कृपा से सब सुख होते हैं।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
त्रिकोणे धनलाभे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा ।। 20 ।।

राजप्रासादसौभाग्यं मित्रप्रभुवशात्सुखम् ।

भूम्यात्मजेनसंदृष्टे आदौ भूलामभादिशेत् ।। 21 ।।

लग्नाधिपेन संदृष्टे बहुसौख्यं धनागमम् ।

ग्रामभूम्यादिलाभश्च भोजनाम्बरसौख्यकृत् ।। 22 ।।

बुध दशा में सूर्यान्तर्दशा हो तथा सूर्य स्वोच्चादि राशियों में या 2.5.9.11 भावों में या केन्द्रगत, या उच्च स्वनवांश में हो तो राजा के महल में जाने का अवसर, सौभाग्य, मित्र अर्थात् अनुकूल समर्थपुरुष के सहयोग से सुख होता है। यदि सूर्य को मंगल देखे तो प्रारम्भ में भूमि लाभ व लग्नेश देखे तो बहुत सुख, धनलाभ, गाँव जमीन जागीर आदि की प्राप्ति व भौतिक सुख की प्राप्ति होती है।

लग्नाष्टमव्यये वापि शन्यारफणिसंयुते ।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ।। 23 ।।

चौराग्निशस्त्रपीड़ा च पित्ताधिक्यं भविष्यति ।

शिरोरुङ् मनस्ताप इष्टबन्धु वियोगकृत् ।। 24 ।।

द्वितीयसप्तमाधीशेह्यपमृत्युर्भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिं कुर्याद्यथाविधि ।। 25 ।।

लग्न या दशेश से 6.8.12 में सूर्य हो या सूर्य शनि, मंगल, राहु से युक्त हो या निर्बल हो तो चोरपीड़ा, शस्त्रपीड़ा, अग्निपीड़ा, पित्तवृद्धि, शिरोरोग, मनस्ताप, अपने प्रिय व्यक्ति का वियोग होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होती है। इसकी शान्ति के लिए यथाविधि उपाय (सूर्य पूजा, आदित्य हृदय आदि) करना चाहिए।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्र त्रिकोणगे ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि गुरुदृष्टिसमन्विते ।। 26 ।।

योगस्थानाधिपत्येन योग प्राबल्यमादिशेत् ।

स्त्रीलाभं पुत्रलाभं च वस्त्रवाहनभूषणम् ।। 27 ।।

नूतनालयलाभं च नित्यं मिष्टान्न भोजनम् ।

गीतवाद्यप्रसंगे च शस्त्रविद्यापरिश्रमम् ।। 28 ।।

दक्षिणां दिशमाश्रित्य प्रयाणं च भविष्यति ।

द्वीपान्तराच्चवस्त्राणां लाभश्चैव भविष्यति ।। 29 ।।

मुक्ताविद्रुमरत्नानि धौतवस्त्रादिकं लभेत् ।

बुध में चन्द्र का अन्तर हो तथा चन्द्र, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, उच्च स्वक्षेत्रगत, गुरु दृष्टयुत, योग कारक हो तो विशेष उत्तम फल, स्त्री लाभ,

पुत्र लाभ, वस्त्र वाहनादि का लाभ, नया घर, सुन्दर मधुर भोजन, गानवाद्यादि आमोद–प्रमोद, शास्त्रों में परिश्रम, दक्षिण दिशा की सफल यात्रा, विदेशी वस्त्रों की प्राप्ति, मोती माणिक्यादि का लाभ, साफ धुले हुए वस्त्रों का प्रयोगादि फल होता है।

नीचारिक्षेत्रसंयुक्ते देहबाधा भविष्यति ।। 30 ।।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।

तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थ स्थान दैवत दर्शनम् ।। 31 ।।

मनोधैर्य ह्रदुत्साहो विदेशाद् धनलाभकृत् ।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते ।। 32 ।।

चौराग्निनृपभीतिश्च स्त्रीसमागमतो भवेत् ।

दुष्कृतिर्धनहानिश्च कृषिगोऽश्वादिनाशकृत् ।। 33 ।।

यदि नीच, शत्रु क्षेत्र में हो तो शरीर कष्ट, दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 में भी हो तब भी अन्तर्दशा के आरम्भ में पुण्यतीर्थों की यात्रा, देवस्थानों के दर्शन, मन में धैर्य, हृदय में उत्साह, विदेश से धन लाभ होता है।

यदि दशेश से 6.8.12 में या पापयुक्त हो तो चोरभय, राजभय, अग्निभय, स्त्री समागम से कष्ट, पाप कार्य, धनहानि, कृषि, पशु, वाहनादि की हानि होती है।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवीजपं चरेत् ।। 34 ।।

वस्त्रदानं प्रकुर्वीत सुखायुर्वृद्धिकृत् पुमान् ।

ततः सौख्यं भवेत्तस्य जगदम्बाप्रसादतः ।। 35 ।।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। इस दोष को शान्त करने के लिए दुर्गापाठ कराने चाहिए तथा वस्त्र दान करें। इससे सुख, आयु आदि की वृद्धि जगदम्बा की कृपा से होती है।

मंगल अन्तर्दशा फल :–

सौम्यस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लग्नाधिपसमन्विते ।। 36 ।।

राजानुग्रहशान्तिं च गृहे कल्याणसम्भवम् ।

लक्ष्मी कटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थमाप्नुयात् ।। 37 ।।

पुत्रोत्सवादि सन्तोषं गृहं गोधनसंकुलम् ।

गृहक्षेत्रादि लाभं च गजवाजि समन्वितम् ।। 38 ।।

राजप्रीतिकरं चैव स्त्रीसौख्यं चातिशोभनम् ।

बुध दशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल केन्द्रत्रिकोणगत, उच्चगत, स्वक्षेत्री, लग्नेश से युक्त हो तो राजा की कृपा या सहायता से विपत्ति–निवारण, घर में सुख, लक्ष्मी की वृद्धि, खोया राज्य या सम्पत्ति आदि का पुनः लाभ, पुत्र जन्म आदि से मन में सन्तोष, घर में गोधन की वृद्धि, घर आदि की प्राप्ति, हाथी घोड़े आदि वाहनों की प्राप्ति, राजा से प्रीतिभाव, स्त्री का उत्तम सुख आदि शुभ फल होते हैं ।

नीचक्षेत्र समायुक्ते ह्यष्टमे वा व्ययेऽपि वा ।। 39 ।।

पापदृष्टियुते वापि देहपीड़ा मनोव्यथा ।

उद्योगभंगो देशादौ स्वग्रामे धान्यनाशनम् ।। 40 ।।

ग्रन्थिशस्त्रव्रणादीनां भयं तापज्वरादिकम् ।

यदि मंगल नीचगत 8.12 भावगत, पापदृष्ट, पापयुत हो तो शरीर कष्ट, मानसिक पीड़ा, देश में परिश्रम की असफलता, अपने स्थान पर धान्यादि का नाश अर्थात् दूरस्थ प्रदेशों में सफलता, गाँठ या हथियार की चोट से घाव आदि से पीड़ा, साध्य रोगों से पीड़ा होती है ।

दायेशात्केन्द्रगे भौमे त्रिकोणे लाभगेऽथवा ।। 41 ।।

शुभदृष्टे धनप्राप्तिर्देहसौख्यं भवेन्नृणाम् ।

पुत्रलाभो यशोवृद्धिर्भ्रातृवर्गो महाप्रियः ।। 42 ।।

यदि दशेश से केन्द्र, त्रिकोण , एकादश में, या शुभ दृष्ट मंगल हो तो धन लाभ, शरीर सुख, पुत्र प्राप्ति, यशो वृद्धि, अपने भाई–बन्धुओं में लोकप्रियता आदि फल मिलते हैं ।

दायेशादथरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।

तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशो भ्रातृवर्गे महद्भयम् ।। 43 ।।

नृपाग्निचौरभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम् ।

स्थानभ्रंशो भवेदादौ मध्ये सौख्यं धनागमः ।। 44 ।।

अन्ते तु राजभीतिः स्यात्स्थानभ्रंशो ह्यथापि वा ।

द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।। 45 ।।

गोदानं प्रकुर्वीत मृत्युंजयजपं चरेत् ।

शंकरस्यप्रसादेन ततः सौख्यमवाप्नुयात् ।। 46 ।।

दशेश बुध से 8.12 में या पापयुक्त मंगल हो तो अन्तर्दशा के आरम्भ में महान् क्लेश, भ्रातृ वर्ग में भय, राजा आदि से पीड़ा, अग्नि चोर

भय, पुत्रों व मित्रों से विरोध, स्थान परिवर्तन, दशामध्य में सुख व धन लाभ, दशा के अन्त में राजभय, स्थानहानि होती है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोष निवारण हेतु गोदान करें व मृत्युंजय जप कराएँ। तब शंकर जी की कृपा से सुख होता है।

राहु अन्तर्दशा फल :–

बुधस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणके।
कुलीरे कुम्भगे वापि कन्यायां वृषभे तथा।। 47।।
राजसम्मानकीर्ती च धनं च प्रभविष्यति।
पुण्यतीर्थ स्नान लाभो देवतादर्शनं तथा।। 48।।
इष्टापूर्ते च महतो मानश्चाम्बर लाभकृत्।
भुक्त्यादौ देहपीड़ा च त्वन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत्।। 49।।

बुध दशा में राहु का अन्तर हो तथा राहु लग्न से 1.4.7.10.5.9.11 में हो या 2.4.6.11 राशियों में हो तो राज–सम्मान, कीर्ति, धन का लाभ, पुण्यतीर्थो में स्नान, देव दर्शन अर्थात्, देवस्थान दर्शन या किसी मन्त्र की सिद्धि, यज्ञ की सम्पन्नता, अधिक सम्मान, वस्त्र का लाभ होता है। अन्तर्दशा के आरम्भ में शरीर कष्ट तथा अन्त में सुख होता है।

लग्नाष्टव्ययराशिस्थे तद्भुक्तौ धननाशनम्।
भुक्त्यादौ देहनाशश्च वातज्वरमजीर्णकृत्।। 50।।
लग्नादुपचये राहौ शुभग्रहसमन्विते।
राजसंल्लापसन्तोषो नूतनप्रभुदर्शनम्।। 51।।

यदि राहु 8.12 में हो तो इस दशा में धननाश, आरम्भ में शरीर कष्ट के प्रबल योग, वात विकार, ज्वर, अजीर्ण आदि होते हैं।

लग्न से 3.6.10.11 भावों में राहु शुभ ग्रह के साथ हो तो राजा से वार्तालाप, सन्तोष व नए अधिकारी या राजा की प्राप्ति होती है।

दायेशाद् द्वादशे वापि ह्यष्टमे पापसंयुते।
निष्ठुरं राजकार्याणि स्थानभ्रंशो महद्भयम्।। 52।।
बन्धनं रोगपीड़ा च निजबन्धुमनोव्यथा।
हृद्रोगो मानहानिश्च धनहानिर्भविष्यति।। 53।।

दशापति से 8.12 भाव में पापयुक्त राहु हो तो कठोर राजकीय कार्य, स्थान का नाश या परिवर्तन, बहुत भय, बन्धन, रोग से पीड़ा, अपने लोगों के कारण मन में व्यथा, हृदय रोग, मानहानि व धनहानि होती है।

द्वितीयसप्तमस्थे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत्।। 54।।
श्वेतां गांम हिषीं दद्यात् ततः सौख्यमवाप्नुपात्।। 55।।

यदि राहु 2.7 भावों में हो तो अपमृत्यु होने का भय होता है। इस दोष को दूर करने के लिए दुर्गा व लक्ष्मी का पाठ जप अथवा महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी रूप दुर्गा का पाठ (सप्तशती मध्यम चरित्र का नित्य पाठ) करना चाहिए। साथ ही दूधारू गाय भैंस का दान करने से सुख मिलता है।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

बुधस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लाभे वा धनराशिगे।। 56।।
देहसौख्यं धनावाप्ती राजप्रीतिस्तथैव च।
विवाहोत्सव कार्याणि नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।। 57।।
गोमहिष्यादि लाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
देवतागुरुभक्तिश्च दानधर्ममखादिकम्।। 58।।
यज्ञकर्मप्रवृद्धिश्च शिवपूजा फलं तथा।

यदि बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तथा गुरु लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में या उच्चगत या स्वक्षेत्री या 2.11 भाव में हो तो शरीर का सुख, धनलाभ, राजा से प्रेम, विवाह आदि उत्सव कार्य, सदैव मधुर भोजन, गाय भैंस आदि का लाभ, पुराण श्रवण के योग, देवता व गुरु की भक्ति, दानधर्म व यज्ञादि कार्य, शिव पूजा प्रतिष्ठा के अवसर प्राप्त होते हैं।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे।। 59।।
शन्यारदृष्टसंयुक्ते कलहो राजविग्रहः।
चौरादि देहपीड़ा च पितृमातृविनाशनम्।। 60।।
मानहानी राजदण्डो धनहानिर्भविष्यति।
विषाहिज्वरपीडा च कृषिभूमिविनाशनम्।। 61।।

बुध महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा गुरु नीचगत, अस्तंगत, 6.8.12 भावगत, शनि मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो कलह एवं सरकारी पक्ष से टकराव होता है। चोर आदि से शरीर कष्ट, मातापिता की हानि, मान हानि, राजदण्ड, धन की हानि, विष या सर्पादि से व ज्वर से पीड़ा, खेती बाड़ी की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा बलसंयुते।
बन्धुपुत्रसुहृदुत्साहो शुभं च धनसंयुतम्।। 62।।
पशुवृद्धिर्यशोवृद्धिरन्नदानादिकं फलम्।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।। 63।।
अंगतापश्च वैकल्यं देह बाधा भविष्यति।
कलत्रबन्धुवैषम्यं राजकोपोधनक्षयः।। 64।।
अकस्मात्कलहात्भीतिः प्रमादो द्विजतो भयम्।
द्वितीय सप्तमस्थे वा देहबाधा भविष्यति।। 65।।

दोषस्य परिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।

गोभूहिरण्यदानेन सर्वारिष्टं व्यपोहति ।। 66 ।।

यदि दशापति से गुरु केन्द्रगत, त्रिकोणगत लाभगत, बलवान् हो तो भाई को पुत्रोत्पत्ति या भाइयों, पुत्रों के कारण मन में ऊँचा हौसला, शुभ फल, धन का संचय, पशुओं की वृद्धि, यशोलाभ, अन्नदान करने की सामर्थ्य होती है ।

दशेश से 6.8.12 में बलहीन गुरु हो तो शरीर में कष्ट, विकलता (बेहाल या अंगहीन) स्त्री व भाइयों से विषमता, राजा का क्रोध, धनहानि, अचानक कलह के अवसर, भय, असावधानी, पक्षी या ब्राह्मण से भय होता है ।

यदि गुरु 2.7 भावेश होकर या अन्य भावेश होकर भी 2.7 में ही स्थित हो तो देहबाधा अर्थात् शरीरकष्ट होता है ।

इसकी शान्ति के लिए शिव सहस्रनाम या सहस्ररुद्रीयाभिषेक, गाय, भूमि व सुवर्ण (रुपया) का दान करने से सब अनिष्ट शान्त हो जाते हैं ।

शनि अन्तर्दशा फल :-

सौम्यस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्र केन्द्रगे ।

त्रिकोणे लाभगे वापि गृहे कल्याणवर्धनम् ।। 67 ।।

राज्यलाभं महोत्साहं गृहे गोधनसंकुलम् ।

शुभस्थानफलावाप्तिं तीर्थवासं तथादिशेत् ।। 68 ।।

बुध में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, लाभगत हो तो घर में कल्याण–कार्यों की वृद्धि, राज्य या अधिकार–प्राप्ति, मन में बहुत उमंग, घर में पशुधन की वृद्धि, अच्छे स्थान पर रहने का सुख, तीर्थस्थानों पर रहने के सुयोग बनते हैं ।

अष्टमे वा व्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च ।

अरातिदुःखबाहुल्यं दारपुत्रादिपीडनम् ।। 69 ।।

बुद्धिभ्रंशो बन्धुनाशः कर्मनाशो मनोरुजः ।

विदेशगमनं चैव दुःस्वप्नादिविलोकनम् ।। 70 ।।

यदि शनि 8.12 भावों में लग्न या दशापति से हो तो शत्रुओं के द्वारा अनेक कष्ट, स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, बुद्धि की भ्रष्टता, बन्धुओं–सहयोगियों की हानि, कार्यहानि, मनोविकार, विदेश गमन, दुःस्वप्नादि देखने को मिलते हैं ।

द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।। 71 ।।

कृष्णां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये ।। 72 ।।

यदि शनि, कुण्डली में 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होने का योग होता है। इस दोष की शान्ति के लिए मृत्युंजयमन्त्र का जप, काली गाय या भैंस का दान करने से आयु व आरोग्य की वृद्धि होती है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां बुधान्तर्दशा-फलाध्यायः षष्टितमः ।। 60 ।।

61

।। अथ केतु–अन्तर्दशाफलाध्यायः ।।

केतुदशा केतु अन्तर्दशा :–

केन्द्रे त्रिकोणलाभे वा केतौ लग्नेशसंयुते ।
भाग्यकर्मपसम्बन्धे वाहनेशसमन्विते ।। 1 ।।
तद्भुक्तौ धनधान्यादि चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
पुत्रदारादि सौख्यं च राजप्रीतिमनोरुजः ।। 2 ।।
ग्रामभूम्यादिलाभश्च गृहं गोधनसंकुलम् ।

यदि केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तथा केतु लग्नेश के साथ, या 9.10 भावेश के साथ सम्बन्ध करे या चतुर्थेश के साथ हो तो इस अन्तर्दशा में धन धान्यादि की वृद्धि, चौपाए जीव से लाभ, स्त्री–पुत्रों का सुख, राजा की प्रसन्नता, मन में विकार, जायदाद वृद्धि या स्थानीय अधिकार–प्राप्ति, घर में गोधन की वृद्धि होती है।

नीचास्तखेटसंयुक्ते ह्यष्टमे व्ययगेऽपि वा ।। 3 ।।
हृद्रोगो मानहानिश्च धनधान्यपशुक्षयः ।
दारपुत्रादिपीडा च मनश्चांचल्यमेव च ।। 4 ।।

यदि केतु नीचगत या अस्तंगत ग्रह के साथ हो या 8.12 भाव में हो तो हृदय रोग, मानहानि, धनधान्य की हानि, पशुधन की हानि, स्त्री व पुत्रादि को पीड़ा, मन में चंचलता होती है।

द्वितीयद्यूननाथेन सम्बन्धे तत्र संस्थिते ।
अनारोग्यं महत्कष्टमात्मबन्धुवियोगकृत् ।। 5 ।।
दुर्गादेवी जपं कुर्यात् मृत्युंजयजपं चरेत् ।। 6 ।।

यदि केतु 2.7 भावेशों से सम्बन्ध करे या 2.7 भावों में ही स्थित हो, तो शरीर में अस्वस्थता, बहुत कष्ट, अपने लोगों से वियोग होता है। शान्ति के लिए दुर्गा पाठ व मृत्युंजय जप करना चाहिए।

शुक्रान्तर्दशा फल:–

केतोरन्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।
केन्द्रत्रिकोण लाभे वा राज्यनाथेन संयुते।। 7।।
राजप्रीतिं च सौभाग्यं दिशेत्स्वाम्बरसंकुलम्।
तत्कालेश्रियमाप्नोति भाग्यकर्मेशसंयुते।। 8।।
नष्टराज्यधनप्राप्तिः सुखवाहनमुत्तमम्।
सेतुस्नानादिकं चैव ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।। 9।।

यदि केतु में शुक्रान्तर्दशा हो तथा शुक्र स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, लाभगत या दशमेश के साथ हो तो राजा की प्रसन्नता, सौभाग्य वृद्धि, अनेक वस्त्रों का उपभोग, अचानक धन आदि की प्राप्ति, सुख व वाहन की प्राप्ति, रामेश्वरम् आदि दूरस्थ तीर्थ प्रदेशों की यात्रा, ग्राम व भूमि (जागीर) की प्राप्ति अर्थात् ग्राम या बस्ती का अधिकार अथवा जायदाद का लाभ होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
देहारोग्यं सुखं चैव गृहे कल्याणवर्धनम्।। 10।।
भोजनाम्बरभूषाप्तिरथदोलादिलाभकृत्।

दशापति से केन्द्रगत या त्रिकोणगत, 3.11 में शुक्र हो तो शरीर सुख, घर में वृद्धि, खान–पान व उपभोग सामग्री की प्राप्ति, रथादि अधिक प्रतिष्ठित वाहनों की प्राप्ति होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।। 11।।
अकस्मात्कलहं चैव पशुधान्यादिपीडनम्।
नीचस्थखेट संयुक्ते लग्नात्षष्ठाष्टराशिगे।। 12।।
स्वबन्धुजनवैषम्यं शिरोक्षिव्रणपीडनम्।
हृद्रोगं मानहानिश्च धनधान्यपशुक्षयम्।। 13।।
कलत्रपुत्रपीडाथ मारकेशे मनोरुजम्।
देहपीडा ततो दुर्गादेवीजपं समाचरेत्।।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये।। 14।।

यदि दशेश से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त शुक्र हो तो अचानक कलहागम, पशु व धान्यादि में कमी होती है।

यदि शुक्र के साथ कोई नीचगत ग्रह हो, लग्न से 6.8 राशि में शुक्र हो तो अपने लोगों से मनमुटाव, सिर व आँखों में पीड़ा हृदय रोग, मानहानि, धनधान्य व पशुओं की हानि, स्त्री–पुत्रादि को पीडा होती है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो मनोविकार, शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए दुर्गा देवी का पाठ, सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करना चाहिए, तब आयु व आरोग्य की सुरक्षा होती है।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

केतोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा शुभयुक्त निरीक्षिते।। 15।।
धनधान्यादि लाभश्च राजानुग्रह वैभवम्।
अनेकशुभकार्याणि चेष्टसिद्धः सुखावहा।। 16।।

केतु में सूर्यान्तर्दशा हो तथा सूर्य उच्च में, स्वक्षेत्री, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, लाभगत या शुभग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य को धन–धान्य का लाभ, राजा की कृपा से वैभव वृद्धि, अनेक शुभ कार्यो की सम्पूर्णता, मनवांछित कार्य की सिद्धि व सर्वत्र सुख होता है।

अष्टमव्ययराशिस्थे पापग्रहसमन्विते।
तदभुक्तौ राजभीतिश्च पितृमातृवियोगकृत्।। 17।।
विदेशगमनं चैव चौराहिविषपीडनम्।
राजमित्रविरोधश्च राजदण्डाद् धनक्षयः।। 18।।
शोकरोगभयं चैव तापाधिक्यं ज्वरो भवेत्।

यदि सूर्य जन्मलग्न से 8.12 राशि भाव में हो अथवा पापग्रह से युक्त हो तो इस अन्तर्दशा में राजा से भय, माता–पिता का वियोग, विदेशगमन, चोर, सर्प व विष से पीड़ा, राजा व मित्रों से विरोध, राजा द्वारा निर्धारित दण्ड को भोगने के निमित्त धन व्यय, धन हानि (आर्थिक दण्ड), शोक के अवसर, रोगभय, अधिक मनःसंताप, ज्वरादि रोगों से पीड़ा आदि अशुभ फल होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनसंस्थिते।। 19।।
देहसौख्यं चार्थलाभः पुत्रलाभो मनोदृढम्।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वल्पग्रामाधिपत्ययुक्।। 20।।

यदि सूर्य दशापति केतु से केन्द्र, कोण, लाभ या धन स्थान में स्थित हो तो शरीर में सुख, धन का लाभ, पुत्र–प्राप्ति, मन में साहस व दृढ़ता, सब कार्यों में सफलता, स्थानीय बस्ती, ग्राम, ब्लाक या कॉलोनी आदि में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त होता है ।

दायेशात्रन्ध्ररिःफे वा स्थिते वा पापसंयुते ।
अन्नविघ्नो मनोभीतिर्धनधान्यपशुक्षयः ।। 21 ।।
आदौ मध्ये महाक्लेशानन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत् ।
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 22 ।।
तस्य शान्तिं प्रकुर्वीत स्वर्णधेनुं प्रदापयेत् ।
भास्करस्य प्रसादेन ततः सौख्यमवाप्नुयात् ।। 23 ।।

यदि दशेश से 8.12 में सूर्य हो या पापयुक्त हो तो घर में अनाज की कमी, मन में भय, धन–धान्य की हानि, पशुक्षय, प्रारम्भ व मध्य में महान् क्लेश तथा अन्त में कुछ सुख मिलता है ।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होती है । इसकी शान्ति के लिए स्वर्णनिर्मित गाय की प्रतिमा अथवा सुवर्णयुक्त गाय का दान करना चाहिए । तब सूर्य देव की कृपा से सब सुख प्राप्त होता है ।

चन्द्रमा की अन्तर्दशा :–

केतोरन्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा धने शुभसमन्विते ।। 24 ।।
राजप्रीतिर्महोत्साहः कल्याणं च महत्सुखम् ।
महाराजप्रसादेन गहभून्यादि लाभकृत् ।। 25 ।।
भोजनाम्बरपश्वादि व्यवसायेऽधिकं फलम् ।
अश्ववाहनलाभश्च वस्त्राभरणभूषणम् ।। 26 ।।
देवालयतडागादि पुण्यधर्मादि संग्रहम् ।
पुत्रदारादि सौख्यं च पूर्ण चन्द्रः प्रयच्छति ।। 27 ।।

केतु में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तथा चन्द्रमा पूर्ण हो, स्वक्षेत्री, उच्चगत, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, लाभगत, धनभावगत, शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजा से सम्बन्ध, मन में बहुत उत्साह, कल्याण, बहुत सुख, बड़े लोगों की सहायता से घर व भूमि आदि का लाभ, खान–पान के साधनों व भोग सामग्री की अधिकता, व्यवसाय में खूब लाभ, देवालय या तड़ागादि का निर्माण, अनेक पुण्य कार्यों का साधन, स्त्री–पुत्रादि का सुख होता है ।

क्षीणे वा नीचगे चन्द्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।
आत्मसौख्यं मनस्तापः कार्यविघ्नं महद्भयम् ।। 28 ।।
पितृमातृवियोगं च देहजाड्यं मनोव्यथाम् ।
व्यवसायात्फलं नेष्टं पशुनाशं च यच्छति ।। 29 ।।

यदि चन्द्रमा क्षीण, नीचगत, 6.8.12 भावगत हो तो अपने निजी सुख व आराम में कमी, तज्जन्य मनस्ताप, कार्य में विघ्न, महान् भय, माता–पिता का वियोग, देह में शिथिलता, मन में व्यथा, व्यवसाय में कम लाभ, पशु नाश होता है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा बलसंयुते ।
कृषिगोभूमिलाभं च स्वेष्टबन्धुसमागमम् ।। 30 ।।
तस्मात्स्वकार्यसिद्धिं च गृहे गोक्षीरमेव च ।
भुक्त्यादौ शुभमारोग्यं मध्ये राजप्रियं शुभम् ।। 31 ।।
अन्ते च राजभीतिं च विदेशगमनं तथा ।
दूरयात्रादि संचारसम्बन्धिजनपूजनम् ।। 32 ।।

यदि दशेश से केन्द्र में, त्रिकोण में, लाभ में चन्द्रमा हो या बली हो तो कृषि, पशु लाभ, भूमिलाभ, अपने प्रियजनों से मिलन, बन्धुओं के सहयोग से अपने कार्य की सिद्धि, घर में दूध घी की बहुतायत अर्थात् भोज्य पदार्थों की सुलभता होती है ।

अन्तर्दशा के प्रारम्भ में स्वास्थ्य लाभ व शुभ फल, मध्य में राजा से प्रीति, अन्त में राजभय, विदेश गमन, दूरयात्रा तथा निकटस्थ लोगों से सम्मान होता है ।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा बलवर्जिते ।
धनधान्यादिहानिश्च मनोव्याकुलमेव च ।। 33 ।।
स्वबन्धुजनवैरं च आंत्रपीड़ा तथैव च ।
निधनाधिपदोषेण मारकेशेन संयुते ।। 34 ।।
अपमृत्युभयं तस्य शान्तिं कुर्याद्यथाविधि ।
चन्द्रप्रीतिकरं चैव ह्यायुरारोग्यसिद्धये ।।35 ।।

दशेश से 6.8.12 में चन्द्रमा हो, या बलहीन हो तो धन–धान्यादि की हानि, मन में व्याकुलता, अपने बन्धुओं से वैर, भाइयों को पीड़ा होती है ।

यदि चन्द्रमा अष्टमेश या 2.7 भावेश से युक्त हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इसकी विधि के अनुसार शान्ति करनी चाहिए। शान्त्यर्थ चन्द्रमा का दान, जप आदि करें और देवी जप या पाठ आदि भी करें।

मंगल अन्तर्दशा फल :–

केतोरन्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि शुभग्रहयुतेक्षिते।। 36।।
आदौ शुभफलं चैव ग्रामभूम्यादि लाभकृत्।
धनधान्यादि लाभश्च चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।। 37।।
गृहारामक्षेत्रलाभो राजानुग्रहवैभवम्।
भाग्ये कर्मेशसम्बन्धे भूलाभः सौख्यमेव च।। 38।।

केतु में मंगल की अन्तर्दशा हो और मंगल स्वक्षेत्री, स्वोच्चगत, लग्न से केन्द्र त्रिकोणादि शुभ भावगत, शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो प्रारम्भ में शुभ फल, ग्रामाधिकार–प्राप्ति या जायदाद लाभ, धनधान्यादि का लाभ, चौपाए पशु से लाभ, घर खेत आदि का लाभ, राजा की कृपा व सहायता से वैभव–प्राप्ति होती है।

यदि मंगल नवम भाव में दशमेश के साथ हो या दशमेश से सम्बन्ध करे तो भूमि का लाभ व सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
राजप्रीतियशोलाभः पुत्रमित्रादि सौख्यकृत्।। 39।।
तथाष्टमे व्यये भौमे दायेशाद्धनगेऽपि वा।
द्रुतं करोति मरणं विदेशे चापदं भ्रमम्।। 40।।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रादि चौरादिनृपपीडनम्।
कलहादिव्यथायुक्तं किंचित्सुखविवर्धनम्।। 41।।
द्वितीयद्यूननाथे तु तापज्वरविषाद्भयम्।
दारपीड़ा मनःक्लेशमपमृत्युभयं भवेत्।। 42।।
अनड्वाहं प्रदद्यात् तु सर्वसम्पत्सुखावहम्।
ततः शान्तिमवाप्नोति भौमदेव प्रसादतः।। 43।।

दशापति से केन्द्रगत, त्रिकोणगत, 3.11 भाव में मंगल हो तो राजा से प्रीति, यश, पुत्रों व मित्रों का सुख होता है।

यदि दशेश से 8.12 में मंगल हो या दशेश से द्वितीय में मंगल हो तो मृत्यु का अचानक सामना करना पड़ता है, विदेश में कहीं बड़ी

मुसीबत में फँसना, वृथा भ्रमण, प्रमेह व मूत्रादि रोगों से पीड़ा, राजा या चोर आदि की ओर से भय, कलह के कारण मानसिक क्लेश, साधारण सुख होता है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो ताप ज्वर, विषैला संक्रमण, स्त्री को कष्ट, मन में क्लेश, अपमृत्यु का भय होता है।

शान्ति के लिए बैल या बछड़े का दान करना चाहिए, तब मंगल की कृपा से सब मंगल ही होता है।

राहु अन्तर्दशा फल :–

केतोरन्तर्गते राहौ स्वोच्चे मित्रस्वराशिगे।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा दुश्चिक्ये धनसंगते।। 44।।
तत्काले धनलाभः स्यात् ग्राम भूम्यादि लाभकृत्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात्संचारो भवति ध्रुवम्।। 45।।
म्लेच्छप्रभुवशात्सौख्यं धनधान्यफलादिकम्।
भुक्त्यादौ क्लेशमाप्नोति मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्।। 46।।

केतु महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु शुभ उच्चादि राशि में या मित्र गृह में या स्वगृह में अथवा केन्द्र त्रिकोण में या 2.3.11 भाव में हो तो तुरन्त धन लाभ, ग्राम या भूमि का अधिकार या प्रधानता, चौपाए पशुओं से लाभ, भ्रमण, म्लेच्छ राजा से सहयोग करने से सुख, धनधान्यवृद्धि, प्रारम्भ में कष्ट व बाद में सब शुभ होता है।

रन्ध्रे वा व्ययगे राहौ पापसंदृष्टसंयुते।
बहुमूत्रं कृशं देहं शीतज्वर विषादभयम्।। 47।।
चातुर्थिक ज्वरं चैव क्षुद्रोपद्रवपीडनम्।
अकस्मात्कलहं चैव प्रमेहं शूलमादिशेत्।। 48।।
द्वितीय सप्तमस्थे वा तदा क्लेशं महद्भयम्।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गापाठं समाचरेत्।। 49।।

यदि राहु 8.12 में हो या पापग्रह से युक्त दृष्ट हो तो अधिक मूत्र त्याग, शरीर में कमजोरी, सर्दी का बुखार, रोग संक्रमण, ज्वर, शरीर में छोटे–छोटे उपद्रव (फोड़े फुंसी आदि) अचानक कलह, प्रमेह रोग, शूल रोग होता है। यदि राहु 2.7 भाव में हो तो महान् भय व क्लेश होता है। इसकी शान्ति के लिए दुर्गापाठ कराना चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

केतोरन्तर्गते जीवे केन्द्रे लाभे त्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि लग्नाधिपसमन्विते ।। 50 ।।
कर्मभाग्याधिपैर्युक्ते धनधान्यार्थसम्पदम् ।
राजप्रीतिं तथोत्साहमश्वान्दोल्यादिकं वदेत् ।। 51 ।।
गृहे कल्याणसम्पत्तिं पुत्रलाभमहत्सुखम् ।
पुण्यतीर्थमहोत्साहं सत्कर्म च महोत्सवम् ।। 52 ।।
इष्टदेवप्रसादेन विजयं कार्यलाभकृत् ।
राजसंलापकार्याणि नूतनप्रभुदर्शनम् ।। 53 ।।

यदि केतु में गुरु की अन्तर्दशा हो तथा बृहस्पति केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान, स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री, या लग्नेश के साथ हो या 9.10 भावेश से युक्त हो तो इस दशा में धन–धान्य की वृद्धि, सम्पत्ति–प्राप्ति, राजा से मित्रभाव, मन में उत्साह, घोड़े पालकी आदि की सवारी (वाहन लाभ), घर में कल्याण कार्य, पुत्र लाभ, बहुत सुख, पुण्यतीर्थ में स्नान, सत्कार्य, महान् उत्सव, इष्टदेव की कृपा से विजय व कार्य में सर्वत्र लाभ, राजा से भेंटवार्ता, नए अधिकारी या नए राजा से भेंट होती है ।

षष्ठाष्टम व्यये जीवे दायेशान्नीचगेऽपि वा ।
चौराहिव्रणभीतिं च धनधान्यादिनाशनम् ।। 54 ।।
पुत्रदारावियोगं च त्वतीव क्लेशसम्भवम् ।
आदौ शुभफलं चैव विरामे क्लेशकारणम् ।। 55 ।।

यदि गुरु लग्न या दशापति से 6.8.12 में या नीचगत हो तो चोर, सर्प व चोट का भय, धनधान्य की हानि, पुत्र स्त्री का वियोग, अधिक क्लेश तथा प्रारम्भ में थोड़ा शुभ फल लेकिन अन्त में बड़ा कष्ट या क्लेश होता है ।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।
शुभयुक्ते नृपप्रीतिर्विचित्राम्बरभूषणम् ।। 56 ।।
दूरदेशप्रयाणं च स्वबन्धुजनपोषणम् ।
भोजनाम्बर पश्वादि भुक्त्यादौ देहपीडनम् ।। 57 ।।
अन्तेतु स्थान चलनमकस्मात्कलहो भवेत् ।
द्वितीयं द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 58 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।

महामृत्युंजयं जाप्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ।। 59 ।।

यदि दशापति से केन्द्रगत, त्रिकोणगत 3.11 भावगत या शुभयुक्त गुरु हो तो राजा से मित्रता, सुन्दर आकर्षक वस्त्र पहनने का सुख, दूरस्थान पर जाना, अपने बन्धुओं आदि का पोषण, सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है ।

लेकिन अन्तर्दशा के आरम्भ में शरीर कष्ट तथा अन्त में स्थान परिवर्तन अचानक कलह होती है ।

यदि बृहस्पति 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । एतदर्थ शिव सहस्रनाम का पाठ महामृत्युंजयमन्त्र का जप करना चाहिए तब सब उपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

शनि अन्तर्दशा फल :–

केतोरन्तर्गते मन्दे स्वदशायां तु पीडनम् ।

बन्धो क्लेशो मनस्तापश्चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।। 60 ।।

राजकार्यकलापेन धननाशो महद्भयम् ।

स्थानच्युतिः प्रवासश्च मार्गे चौरभयं भवेत् ।। 61 ।।

आलस्यं मनसो हानिश्चाष्टमे व्ययराशिगे ।

केतु दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि 8.12 भाव में या पाप फलप्रद हो तो पीड़ा, बन्धन, क्लेश, मन में सन्ताप, चौपाए, धन का लाभ, राजा के कार्य अथवा सरकारी काम में धनहानि, भय का अवसर, स्थान परिवर्तन या स्थान हानि, परदेश वास, रास्ते में चोर आदि का भय, आलस्य, मन में उदासी निर्बलता होती है ।

मीन त्रिकोणगे मन्दे तुलायां स्वर्क्षगेऽपि वा ।। 62 ।।

केन्द्रत्रिकोणलाभे वा दुश्चिक्ये वा शुभांशके ।।

शुभदृष्टयुते चैव सर्वकार्यार्थसाधनम् ।। 63 ।।

स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं भ्रमणं च सुखावहम् ।

स्वग्रामे सुखसम्पत्तिः स्ववर्गेराजदर्शनम् ।। 64 ।।

यदि 7.9.12,4.8 राशियों में शनि हो या स्वक्षेत्री हो या केन्द्र, त्रिकोण या 3.11 भाव में, शुभ नवांश में, शुभ दृष्ट भुक्त हो तो सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं । अपने अधिकारी या प्रधान व्यक्ति का सहयोग या अनुकूलता, भ्रमण, अपने ही स्थान (ग्राम) पर सुख प्राप्ति, अपने जाति बन्धुओं या परिजनों को सुख तथा राजा से भेंट होती है ।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा ह्यष्टमे पापसंयुते ।
देहतापो मनस्तापः कार्ये विघ्नो महद्भयम् ।। 65 ।।
आलस्यं मानहानिश्च पितृमात्रोर्विनाशनम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत् ।। 66 ।।
तद्दोषपरिहारार्थं तिलहोमं च कारयेत् ।
कृष्णां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये ।। 67 ।।

यदि महादशेश से शनि 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो शरीर में सन्ताप (कष्ट) मानसिक कष्ट, काम में रुकावटें, अधिक भय, आलस्य, मानहानि, माता–पिता का वियोग होता है ।

यदिं शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है । इसकी शान्ति के लिए काली गाय या भैंस का दान करें व काले तिलों से (घी मिलाकर) हवन करें ।

बुधान्तर्दशा फल :–

केतोरन्ततर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते राज्यलाभो महासुखम् ।। 68 ।।
सत्कथाश्रवणं दानं धर्मसिद्धिः सुखावहा ।
भूलाभः पुत्रलाभश्च शुभगोष्ठीधनागमः ।। 69 ।।
अयत्नाद्धर्मलब्धिश्च विवाहश्च भविष्यति ।
गृहे शुभकरं कर्म वस्त्राभरणभूषणम् ।। 70 ।।

केतु महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध केन्द्रगत, त्रिकोणगत, लाभगत, स्वोच्चादि गत हो तो राज्यलाभ (अधिकार, पद प्रतिष्ठा), अधिक सुख, अच्छी बातें (समाचार) सुनने के योग, पुत्र प्राप्ति, अच्छी सभाओं में सम्मिलित होने से धन लाभ, कम परिश्रम से ही धर्मार्जन, विवाह, घर में शुभ कार्य, वस्त्राभरणों की प्राप्ति होती है ।

भाग्य कर्माधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिः सुखावहा ।
विद्वद्गोष्ठी कथाभिश्च कालक्षेपो भविष्यति ।। 71 ।।

यदि बुध 9.10 भावेश के साथ हो तो उत्तम भाग्य वृद्धि, विद्वानों से समागम, उत्तम बौद्धिक कार्य–कलापों में समय व्यतीत होता है ।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये मन्दाराहियुतेक्षिते ।
विरोधो राजवर्गैश्च परगेहनिवासनम् ।। 72 ।।

वाहनाम्बर पश्वादिधनधान्यादिनाशकृत् ।

भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये सौख्यं धनागमः ।। 73 ।।

अन्ते क्लेशकरं चैव दारपुत्रादिपीडनम् ।

यदि बुध 6.8.12 भावों में शनि, मंगल, राहु से युक्त दृष्ट हो तो राजकीय लोगों के साथ विरोध, दूसरे के घर में रहने का अवसर, वाहन, पशु, वस्त्र, धन धान्यादि का नाश, अन्तर्दशारम्भ में शुभ, मध्य में सुख व धन लाभ तथा अन्त में क्लेश कष्ट, स्त्री पुत्रादि की ओर से पीड़ा होती है ।

दायेशात्केन्द्रगे सौम्ये त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।। 74 ।।

देहारोग्यं महालाभः पुत्रकल्याणवैभवम् ।

भोजनाम्बर पश्वादि व्यवसायेऽधिकं फलम् ।। 75 ।।

महादशेश से यदि बुध केन्द्र में हो, त्रिकोण या लाभ में हो तो शरीर स्वस्थ, बड़ा लाभ, पुत्र के सम्बन्ध में अच्छी बातें, अर्थात् पुत्र की उन्नति, भोजनादि भौतिक सुखों की प्राप्ति व व्यवसाय में अधिक लाभ होता है ।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ।

तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशो दारपुत्रादिपीडनम् ।। 76 ।।

राजभीतिकरश्चैव मध्ये तीर्थकरो भवेत् ।

द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।। 77 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।

ततः सुखमवाप्नोति श्रीहरेश्च प्रसादतः ।। 78 ।।

यदि महादशेश से अन्तर्दशेश बुध 6.8.12 में हो या निर्बल हो तो उसकी अन्तर्दशा के प्रारम्भ में बहुत कष्ट व स्त्री पुत्र को कष्ट या उनकी ओर से कष्ट होता है । राजा से भय, मध्य में तीर्थकरत्व अर्थात् बड़ा धार्मिक कार्य या बड़ा शास्त्रकार होता है ।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु होती है । इस दोष को दूर करने के लिए विष्णुसहस्रनाम का जप करना चाहिए । तब श्री हरि विष्णु जी की प्रसन्नता से सब सुख होता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां केत्वन्तर्दशाफलाध्याय एकषष्टितमः ।। 61 ।।

।।अथ शुक्रान्तर्दशाफलाध्यायः।।

शुक्रदशा में शुक्रान्तर :–

अथ स्वान्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा बलसंयुक्ते तद्भुक्तौ च शुभं फलम्।।1।।
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गोमहिष्यादि लाभकृत्।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषो गृहे कल्याणसम्भवः।।2।।
सम्मानं राजसम्मानं राज्यलाभो महत्सुखम्।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशकेऽपि वा।।3।।
नूतनालय निर्माणं नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।
कलत्रपुत्रविभवं मित्रसंयुक्तभोजनम्।।4।।
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहः।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्।।5।।

शुक्र महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तथा शुक्र लग्न से 1.4.5.7.9.10.11 में हो या बली हो तो उसकी अन्तर्दशा में शुभ फल होते हैं। ब्राह्मणों की कृपा या सहयोग से धन लाभ, पशुधन का लाभ, पुत्र से सम्बन्धित कोई उत्सव, घर में कल्याण कार्य (उत्सव) सज्जनों से सम्मान, राजसम्मान, राज्यलाभ, सुख होता है।

यदि शुक्र उच्च, स्वक्षेत्री, उच्च नवांश या स्वनवांश में हो तो नए घर का निर्माण, सदैव मधुर भोजन, स्त्री–पुत्रादि का सुख, मित्रों के साथ प्रीतिभोज, अन्नदान, सदैव मन में सन्तोष, दान धर्म के अवसर, बड़े लोगों की सहायता से भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

लग्नादुपचये शुक्रे शुभग्रहयुतेक्षिते।
मित्रांशे तुंगलाभेशयोगकारकसंयुते।।6।।
राज्यलाभो महोत्साहो राजप्रीतिः सुखावहा।
गृहे कल्यांणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिवर्धनम्।।7।।

लग्न से 3.6.10.11 भाव में शुक्र, शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट या मित्र नवांशगत, उच्च नवांशगत या लाभेश युक्त या योगकारक ग्रह से युक्त हो

तो मनुष्य को राज्यलाभ, मन में उत्साह, राजा से प्रेमभाव, सुख, घर में सम्पत्ति, खुशहाली की वृद्धि, स्त्री–पुत्रादि की वृद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे पापयुक्तेऽथवीक्षिते ।
चौरादि व्रणभीतिश्च सर्वत्रजनपीडनम् ।। 8 ।।
राजद्वारे जनद्वेषः इष्टबन्धुविनाशनम् ।
दारपुत्रादि पीडा च जायते द्विजसत्तम ! ।। 9 ।।
द्वितीयद्यूननाथे तु स्थिते चेन्मरणं भवेत् ।
तत्र दुर्गाजपं कुर्याद् धेनुदानं च कारयेत् ।। 10 ।।

यदि शुक्र 6.8.12 में हो या पापयुक्त या दृष्ट हो तो चोर, ठग आदि से भय, घाव का भय, सर्वत्र पीड़ा या कष्ट, राजस्थान पर लोगों से द्वेष, इष्ट लोगों का वियोग, स्त्री–पुत्रादि को पीड़ा होती है।

यदि शुक्र 2-7 भावेश हो तो मृत्यु होती है। इसके निवारणार्थ दुर्गापाठ एवं गोदान कराना चाहिए।

सूर्यान्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गते सूर्ये सन्तापो राजविग्रहः ।
दायादकलहश्चैव स्वोच्चनीचविवर्जिते ।। 11 ।।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे सूर्ये मित्रर्क्षे केन्द्रकोणगे ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ।। 12 ।।
तद्भुक्तौ धनलाभः स्याद् राज्यस्त्रीधनसम्पदः ।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यमिष्टबन्धोः समागमः ।। 13 ।।
पितृमात्रोः सुखप्राप्तिः भ्रातृलाभं सुखावहम् ।
सत्कीर्तिं सुखसौभाग्यं पुत्रलाभं च विन्दति ।। 14 ।।

शुक्र दशा में सूर्यान्तर्दशा आने पर यदि सूर्य उच्च या नीच में न हो तो मानसिक क्षोभ, राजकीय पुरुषों से विरोध, दायाद (सम्पत्ति आदि उत्तराधिकार में बँटवारेदार) से कलह होती है।

यदि सूर्य उच्च, स्वक्षेत्र, मित्र राशि में, केन्द्र त्रिकोण में या दशेश से केन्द्र त्रिकोण में या दशेश या लग्न से 2.11 भाव में हो तो धन लाभ, राज्य लाभ, स्त्री प्राप्ति, धन सम्पत्ति की वृद्धि, अधिकारी आदि की अनुकूलता, इष्टमित्रों से समागम, माता–पिता का सुख, भाई से लाभ या भाई की प्राप्ति, सत्यकीर्ति, सुख, सौभाग्य, पुत्रलाभ आदि अच्छे फल होते हैं।

तथाष्टमे व्यये सूर्ये रिपुराशिस्थितेऽथवा ।
नीचे वा पापवर्गस्थे देहतापो मनोरुजः ।। 15 ।।

स्वजनोपरिसंक्लेशं नित्यं निष्ठुरभाषणम् ।

पितृपीडा बन्धुहानिः राजद्वारे विरोधकृत् ।। 16 ।।

व्रणपीडाहिबाधा च स्वगृहे च भयं तथा ।

नानारोगभयं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।। 17 ।।

यदि सूर्य 8.12 में या शत्रुक्षेत्री, नीचगत या पापवर्गगत हो तो शरीर में सन्ताप, मानसिक कष्ट, अपने लोगों को कष्ट, सदैव कठोर भाषण के अवसर, पिता को कष्ट, बन्धु की हानि, राजद्वार में विरोध, चोरभय, सर्पभय, अपने घर में ही अनेक रोगों का भय, घर या सम्पत्ति आदि का विनाश होता है ।

सप्तमाधिपतौ सूर्ये ग्रहबाधा भविष्यति ।

दोषस्योपशमनार्थं सूर्यप्रीतिं च कारयेत् ।। 18 ।।

यदि सूर्य सप्तमेश हो तो बाधाएँ होती हैं । दोषोपशमनार्थ सूर्यदान, सूर्य का जप पाठ आदि कराना चाहिए ।

चन्द्रान्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गतेचन्द्रेकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव भाग्यनाथेन संयुते ।। 19 ।।

शुभयुक्ते पूर्णचन्द्रे राज्यनाथेन संयुते ।

तद्भुक्तौ वाहनादीनां लाभो गेहे महत्सुखम् ।। 20 ।।

महाराजप्रसादेन गजान्तैश्वर्यमादिशेत् ।

महानदीस्नानपुण्यं देवब्राह्मणपूजनम् ।। 21 ।।

गीतवाद्यप्रसंगादि, विद्वज्जनविभूषणम् ।

गोमहिष्यादिवृद्धिश्च व्यवसायेऽधिकं फलम् ।। 22 ।।

भोजनाम्बरसौख्यं च बन्धुसंयुक्तभोजनम् ।

शुक्र दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो और चन्द्रमा, लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ, उच्च, स्वक्षेत्र, नवमेश युक्त, शुभयुक्त, दशमेश युक्त, पूर्ण बिम्ब हो तो वाहन आदि का लाभ, घर में अधिक सुख, बड़े लोगों के सहयोग से बहुत ऐश्वर्य की प्राप्ति, बड़ी पवित्र गंगादि नदी में स्नान का पुण्य, देवता व ब्राह्मणों की पूजा, आमोद–प्रमोद गीत–वाद्यादि, व्यवसाय में अधिक लाभ, भौतिक सुखों की प्राप्ति तथा संयुक्त परिवार का सुख होता है ।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।। 23 ।।
दायेशात्षष्ठगे वापि रन्ध्रे वा व्ययराशिगे ।
तत्काले धननाशः स्यात् संचरेच्च महद्भयम् ।। 24 ।।
देहायासो मनस्तापो राजद्वारे विरोधकृत् ।
विदेशगमनं चैव तीर्थयात्रादिकं फलम् ।। 25 ।।
दारपुत्रादि पीडा च निजबन्धुवियोगकृत् ।

यदि चन्द्रमा नीचगत, अस्तंगत, 6.8.12 भावगत, दशेश से 6.8.12 भाव में हो तो तत्काल धन का नाश, महान् भय, शरीर व मन में कष्ट, मुकदमेबाजी या थाना कचहरी में गमन, विदेश गमन, तीर्थ यात्रा, स्त्री–पुत्रादि को पीड़ा, अपने लोगों का वियोग होता है ।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे त्रिकोणे सहजेऽथवा ।। 26 ।।
राजप्रीतिकरं चैव देशग्रामाधिपत्यकम् ।
धैर्ययशः सुखं कीर्तिर्वाहनाम्बरभूषणम् ।। 27 ।।
कूपारामतडागादि निर्माणं धनसंग्रहः ।
भुक्त्यादौ देहसौख्यं स्यादन्ते क्लेशस्तथा भवेत् ।। 28 ।।

यदि दशेश से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या तृतीय स्थान में चन्द्रमा हो तो राजा की अनुकूलता, देश ग्राम का अधिकार, धैर्य वृद्धि, यश, सुख, कीर्ति, वाहनादि का लाभ, कूप, बाग आदि का निर्माण, अर्थात् सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण, धनसंग्रह, दशारम्भ में शरीर सुख, अन्त में क्लेश होता है ।

मंगल अन्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्र त्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे लाभे वा बलसंयुते ।। 29 ।।
लग्नाधिपेन संयुक्ते भाग्यकर्मेशसंयुते ।
तद्भुक्तौ राजयोगादि सम्पदं शोभनां वदेत् ।। 30 ।।
वस्त्राभरणभूम्यादेरिष्टसिद्धिः सुखावहा ।

शुक्र दशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तथा मंगल लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, स्वोच्च, स्वराशि, लाभगत, बलवान् हो या 1.9.10 भावेश से युक्त हो तो इस दशा में राजयोग, सम्पत्ति वृद्धि, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति व इष्ट कार्यो की सिद्धि होती है ।

तथाष्टमे व्यये वापि दायेशाद् वा तथैव च ।। 31 ।।

शीतज्वरादि पीड़ा च पितृमातृ भयावहा ।
ज्वराद्यधिकरोगाश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजा ।। 32 ।।
स्वबन्धुजनहानिश्च कलहो राजविग्रहः ।
राजद्वारजनद्वेषी धनधान्यव्ययोऽधिकः ।। 33 ।।
व्यवसायात्फलं नेष्टं ग्रामभूम्यादिहानिकृत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।। 34 ।।
दोषस्य परिहारार्थं भौमशान्तिं चरेद् बुधः ।
अनड्वाहं प्रदद्यात्तु भैरवस्यार्चनं चरेत् ।। 35 ।।

यदि मंगल लग्न या दशापति से 8.12 भाव में हो तो शीत ज्वर पीड़ा, माता–पिता को कष्ट, अधिक रोग, मनोविकार के कारण स्थान हानि (उच्चाटन) अपने लोगों की हानि, कलह, सरकारी आदमियों से विरोध, राजद्वार में विरोध, धन का अधिक व्यय, व्यवसाय से कम लाभ, ग्राम या भूमि आदि की हानि होती है ।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है । शान्ति के लिए मंगल दान, पूजन, भैरव पूजन या हनुमान् पूजन तथा वृषदान करना चाहिए ।

राहु अन्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गतेराहौकेन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा शुभसंदृष्टे योगकारकसंयुते ।। 36 ।।
तद्भुक्तौबहुसौख्यं च धनधान्यादिलाभकृत् ।
इष्टबन्धुसमाकीर्णं भवनं च समादिशेत् ।। 37 ।।
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्पशुक्षेत्रादिसम्भवः ।
लग्नाद्युपचये राहौ तद्भुक्तिः सुखदा भवेत् ।। 38 ।।
शत्रुनाशो महोत्साहो राजप्रीतिकरा शुभा ।
भुक्त्यादौ पंचमासांश्च विरामे ज्वरपित्तकृत् ।। 39 ।।
कार्यविघ्नमवाप्नोति संचरे च मनोव्यथा ।
परं सुखं च सौभाग्यं महाराज इवाश्नुते ।। 40 ।।
नैऋतीं दिशमाश्रित्य प्रयाणं प्रभुदर्शनम् ।
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात् स्वदेशे पुनरेष्यति ।। 41 ।।

उपकारो ब्राह्मणानां तीर्थयात्राफलं भवेत् ।

शुक्र में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान, उच्च, शुभ ग्रह से दृष्ट या योगकारक ग्रह से युक्त हो तो बहुत सुख, धन–धान्य का लाभ, घर में इष्ट मित्रों का समागम, यात्रा में सफलता, पशुधन व अचल सम्पत्ति की वृद्धि होती है । यदि राहु लग्न से उपचय (3.6.10.11) भावों में हो तो अन्तर्दशा सुखदायक होती है । इस अन्तर्दशा में शत्रुओं का नाश, अधिक उत्साह, राजा से प्रीति या अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता, आदि फल पहले पाँच मासों में होते हैं । लेकिन अन्तर्दशा के अन्त में ज्वर, अपच, अम्लपित्तता, कार्यों में विघ्न, यात्रा में मानसिक कष्ट होते हैं । शेष सब शुभ फल (धन सम्पत्ति) महाराजाओं की तरह प्राप्त होते हैं । नैऋत्य दिशा (दक्षिण पश्चिम) में यात्रा, वहाँ के बड़े लोगों से सम्मान, यात्रा में सफलता, पुनः स्वदेश में आगमन, ब्राह्मणों का उपकार, तीर्थ यात्राओं का फल होता है ।

दायेशाद्रन्ध्रभावस्थे व्यये वा पापसंयुते ।। 42 ।।
अशुभं लभते कर्मपितृमातृजनावधि ।
सर्वत्रजनविद्वेषं नानारूपं द्विजोत्तम ।।43 ।।
द्वितीये सप्तमे वापि देहालस्यं विनिर्दिशेत् ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयमनुं जपेत् ।। 44 ।।

यदि दशेश से 8.12 में राहु हो या पापयुक्त हो तो अशुभ कार्यों में लिप्त रहने के अवसर आते हैं । माता–पिता व स्वयं का भी अशुभ होता है । सर्वत्र लोगों से द्वेष होता है ।

यदि राहु 2.7 भाव में हो तो देह में शिथिलता होती है । इसके परिहार के लिए मृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए ।

गुरु अन्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गते जीवे स्वोच्चे स्वक्षेत्र केन्द्रगे ।
दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्ये वा पुत्रराशिगे ।। 45 ।।
नष्टराज्यधनप्राप्तिमिष्टार्थाम्बरसम्पदम् ।
मित्रप्रभोश्च सम्मानं धनधान्यं लभेन्नरः ।। 46 ।।
राजसम्मानकीर्तिं च ह्यश्वान्दोलादिलाभकृत् ।
विद्वत्प्रभुसमाकीर्णं शास्त्राधिकपरिश्रमम् ।। 47 ।।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषमिष्टबन्धुसमागमम् ।
पितृमातृसुखावाप्तिं पुत्रादि सौख्यमादिशेत् ।। 48 ।।

शुक्र दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तथा गुरु अपने उच्च में या अपनी राशि में केन्द्र में, दशापति से शुभ भाव राशि में या 9.5 भावों में हो तो नष्ट राज्य व धन की प्राप्ति, अभीष्ट भोगों की प्राप्ति, मित्र राजा का सहयोग, धनधान्य का लाभ, राजसम्मान, कीर्ति, सवारी की प्राप्ति, बड़े लोगों व विद्वानों से समागम, शास्त्रों में अधिक परिश्रम, पुत्रोत्सव, इष्टजनों से समागम, मातापिता का सुख, पुत्रादि सन्तान का सुख होता है।

दायेशात्षष्ठराशिस्थे व्यये वा पापसंयुते।
राजचौरादिपीड़ा च देहपीडा भविष्यति।। 49।।
आत्मरुग्बन्धुकष्टं स्यात्कलहेन मनोव्यथा।
स्थानच्युतिं प्रवासं च नानारोगं समाप्नुयात्।। 50।।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं महामृत्युंजयं जपेत्।। 51।।

यदि बृहस्पति, दशेश शुक्र से 6.12 भाव में हो, पापयुक्त हो तो राजा व चोर आदि से पीड़ा, शरीर कष्ट होता है। स्वयं को रोग, बन्धु बन्धवों को कष्ट, कलह के कारण मनोव्यथा, स्थान परिवर्तन, प्रवास, नाना प्रकार के रोग होते हैं।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। इसके निवारण के लिए महामृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए।

शनि अन्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे तु परमोच्चगे।
स्वर्क्षकेन्द्रत्रिकोणस्थे तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा।। 52।।
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं स्यादिष्टबन्धुसमागमः।
राजद्वारे च सम्मानं पुत्रिकाजन्मसम्भवः।। 53।।
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्दानधर्मादिपुण्यकृत्।
स्वप्रभोश्च फलावाप्तिः नीचस्थे क्लेशभाग्भवेत्।। 54।।
देहालस्यमवाप्नोति तथायादधिकव्ययम्।
तथाष्टमे व्यये मन्दे दायेशाद् वा तथैव च।। 55।।

शुक्र दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तथा शनि उच्च, परमोच्च, स्वराशि, केन्द्रगत त्रिकोणगत, उच्च या स्व नवांशगत हो तो इस दशा में बहुत सुख, इष्ट जनों से समागम, राजद्वार पर सम्मान, पुत्री का जन्म, पुण्यतीर्थों की यात्रा होती है।

यदि शनि नीचगत हो तो अनेक क्लेश, शरीर में आलस्य, आय से अधिक व्यय होता है।

यदि लग्न या दशापति से 8.12 में शनि हो तो भी अशुभ फल होता है।

भुक्त्यादौ विविधा पीड़ा पितृमातृजनावधि।
दारपुत्रादिपीड़ा च परदेशादिविभ्रमः।। 56।।
व्यवसायात् फलं नेष्टं गोमहिष्यादिहानिकृत्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति।। 57।।
तद्दोषपरिहारार्थं तिलहोमं चरेद् बुधः।
मृत्युंजयजपं कुर्याच्चण्डीपाठमथापि वा।। 58।।

दशेश या लग्न से 8.12 भावगत शनि या नीचादिगत शनि की अन्तर्दशा में प्रारम्भ में अनेक प्रकार की पीड़ा, माता–पिता समेत सबको कष्ट, परदेश में भ्रमण, व्यवसाय में अवनति, दुधारू पशुओं की हानि होती है। यदि शनि 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। दोष निराकरण के लिए, तिल का हवन, मृत्युंजय जप एवं चण्डीपाठ करना चाहिए।

बुधान्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रे लाभे त्रिकोणके।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि राजप्रीतिकरं शुभम्।। 59।।
सौभाग्यं पुत्रलाभश्च सन्मार्गेण धनागमः।
पुराणधर्मश्रवणं श्रृंगारिजनसंगमः।। 60।।
इष्टबन्धुजनाकीर्णं शोभितं तस्य मन्दिरम्।
स्वप्रभोश्च महासौख्यं नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।। 61।।

शुक्र में बुध की अन्तर्दशा हो तथा बुध लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, एकादश, उच्च, स्वराशि में हो तो राजा की ओर से विशेष अनुकूलता, सौभाग्य, पुत्रप्राप्ति, सन्मार्ग से धनागम, पुराण कथादि श्रवण, श्रृंगारप्रिय लोगों का साथ, अच्छे व प्रिय जनों का सान्निध्य, अपने अधिकारी या राजादि से सुख व मधुर सुस्वादु भोजन प्रतिदिन प्राप्त होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
पापदृष्टे पापयुक्ते चतुष्पाज्जीवहानिकृत्।। 62।।
परगेहनिवासश्च मनोवैकल्यसम्भवः।
व्यापारेषु च सर्वेषु हानिरेव न संशयः।। 63।।

यदि दशेश से 6.8.12 में बुध हो व बलहीन हो या पाप दृष्ट युक्त हो तो चौपाए धन (गाय, भैंस, बैल, घोड़ा, कार वाहनादि) की हानि, दूसरों के घर में निवास, मन में विकलता, व्यापार में सर्वत्र हानि ही होती है।

भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये मध्यफलं दिशेत्।
अन्ते क्लेशकरं चैव शीतवातज्वरादिकम्।। 64।।
सप्तमाधीशदोषेण देहपीडा भविष्यति।
तद्दोष परिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।। 65।।

पुनश्च अन्तर्दशा के आरम्भ में कुछ शुभ, मध्य में मिले–जुले शुभाशुभ फल तथा दशान्त में बहुत कष्ट व पूर्वोक्त अशुभ फल होते हैं। शीत व वायु का बुखार होता है।

यदि बुध सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होता है। इसके निवारणार्थ विष्णु सहस्रनाम का जप करना चाहिए।

केतु अन्तर्दशा फल :–

शुक्रस्यान्तर्गते केतौ स्वोच्चे वा स्वर्क्षगेऽथवा।
योगकारक सम्बन्धे स्थानवीर्यसमन्विते।। 66।।
भुक्त्यादौ शुभमाधिक्यान्नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
व्यसायात्फलाधिक्यं गोमहिष्यादि लाभकृत्।। 67।।
धनधान्यसमृद्धिश्च संग्रामे विजयी भवेत्।
भुक्त्यन्ते हि सुखं चैव भुक्त्यादौ मध्यमं फलम्।। 68।।
मध्ये मध्ये महत्कष्टं पश्चादारोग्यमादिशेत्।

शुक्र दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तथा केतु उच्च स्वक्षेत्री, योग कारक ग्रह से युक्त, या योग कारक से सम्बन्ध करने वाला या केन्द्र त्रिकोण में या उपचय भावों में इन्हीं भावेशों से युक्त दृष्ट हो तो प्रारम्भ में बहुत शुभफल, गाय भैंस का लाभ, उत्तम भोजन, व्यवसाय में लाभ, धनधान्य वृद्धि, युद्ध में विजय होती है। अन्त में सुख अधिक होता है। मध्य में बीच–बीच में कष्ट भी होता रहता है। अतः आदि व अन्त में उत्तरोत्तर अधिक शुभ फल होते हैं।

दायेशाद्रन्ध्रभावस्थे व्यये वा पापसंयुते।। 69।।
चौराहिव्रणपीडा च बुद्धिनाशो महद्भयम्।।
शिरोरुजं मनस्तापम कर्मकलहं वदेत्।। 70।।
प्रमेहरोगपीड़ा च नानामार्गे धनव्ययः।
भार्यापुत्रविरोधश्च गमनं कार्यनाशनम्।। 71।।

दशेश से 8.12 में पापयुक्त केतु हो तो चोर भय, चोट भय, बुद्धि की हानि, सिर के रोग, अकारण कलह, प्रमेहादि रोग, अनेक प्रकार से धनव्यय, स्त्री व पुत्रों से विरोध, यात्रा व कार्यहानि होती है।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।। 72।।
छागदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्।
शुक्रप्रीतिकरीं शान्तिं ततः सुखमवाप्नुयात्।। 73।।

यदि केतु 2.7 भावेश के साथ सम्बन्ध करे तो शरीर कष्ट होता है। दोषदूरीकरणार्थ, मृत्युंजय जप, मेषदान तथा शुक्र की शान्ति (दुर्गापाठ आदि) भी करने से सुख–सम्पत्ति मिलती है।

निष्कर्ष :–

(i) स्वक्षेत्री, स्वोच्चगत, मूलत्रिकोणी, केन्द्रगत, त्रिकोणगत ग्रहों की दशान्तर्दशा सर्वत्र शुभ होती है। इसी तरह दशेश से भी देखें।

(ii) यदि नवांश में भी ग्रह इसी तरह हो तो विशेष शुभ तथा राशि कुण्डली में हीन होता हुआ भी नवांश में शुभ बली भाव राशि गत हो तो मध्यम शुभ होता है।

(iii) 2.7 मारक भावेशों की अन्तर्दशा सभी दशाओं में बलाबलानुसार कष्टप्रद या मृत्युप्रद होती है।

(iv) पापयोग, पापदृष्ट होना, 6.8.12 भाव में रहना, अस्तंगत, नीचगत, शत्रुक्षेत्री होना, ग्रह की शुभता को घटाने वाले तत्त्व हैं। अधिक शुभ तत्त्व होने पर आनुपातिक रूप से अधिक शुभ तथा अधिक पाप तत्त्व रहने पर अधिक अनिष्ट फल होगा।

माना पूर्वोक्त उदाहरण में विंशोत्तरी मतानुसार शनि दशा वर्तमान है। शनि सप्तमेश होने से मारक, अष्टमेश होने से भी शुभाशुभ है, लेकिन त्रिकोणगत, योग कारक से युक्त, अपनी मूलत्रिकोण राशि से केन्द्रगत, शुभ नवांशगत, गुरु से केन्द्र में, शुक्र से केन्द्र में हैं, अतः अधिकता शुभ फल की रहेगी। यही वास्तविकता भी है।

शुक्र लग्न से अशुभ भावगत होने से भाव हानिकारक है, लेकिन दशेश से शुक्र केन्द्र में, वर्गोत्तम नवांश में अति मित्रक्षेत्र में, गुरु से दृष्ट होने से भाव वृद्धिकारक है। अतः सुख, लाभ, वाहन व भवनादि (4.11 भावेश) का सुख अपनी अन्तर्दशा में अवश्य देता है, यही वास्तविकता भी है।

(v) राहु केतु केन्द्र त्रिकोण में केन्द्र व त्रिकोणेश के साथ ही बैठे हों, शुभ योग कारक ग्रहों के साथ सम्बन्ध करें, 3.6.10.11 भावगत हों तो शुभ होते हैं । उदाहरण में राहु शुभ फलद है ।

(vi) धन स्थानेश की दशान्तर्दशा भी पूर्वोक्त नियमों के परिप्रेक्ष्य में शुभ होती है ।

उदाहरण में धनेश सूर्य उच्च नवांशगत, केन्द्रगत, वेशि योग युक्त, शुभयुक्त, योग कारक सम्बन्धी शनि से पूर्ण दृष्ट, उत्तरायणगत है, ये शुभ तत्त्व हैं । मारकेश होने से अशुभ है । अतः मृत्यु न होकर दुर्घटनाप्रद, कष्ट प्रद लेकिन धनप्रद होगा । यही वास्तविकता भी है । इस तरह विचारपूर्वक फल निश्चय करना चाहिए ।

फलित सूत्र :–

(1) फलादेश में पीछे जहाँ राजा शब्द आया है, वहाँ उससे तात्पर्य यह है– बस्ती, गाँव, कालोनी, क्षेत्र का प्रतिष्ठित व्यक्ति, बड़ा धनी मानी व्यक्ति या यथावसर सचमुच का राजा । पुराने जमाने में राजे–रजवाडों के युग में जमींदार, दो–चार गाँवों का लगान वसूलने वाला भी राजा ही कहलाता था । अब वह युग नहीं है । अतः समयानुरूप ही अर्थ समझें ।

(2) ग्रामाधिपत्य– गाँव का अधिपति, प्रधान पुरुष, सारे गाँव में मान्य, गाँव में पूजनीय, आदरणीय, अग्रगण्य होना सब बातें गाँव के आधिपत्य में शामिल हैं ।

(3) प्रभु– समर्थ पुरुष, अपना अधिकारी, रोजगारदाता, राजा या क्षेत्राधिकारी ।

(4) विनाश– मृत्यु, नष्ट होना, लुप्त हो जाना, हाथ से निकल जाना । वि णश् अदर्शने धातु से बना शब्द । अतः होते हुए भी सुख न मिलना ।

(5) राजद्वार– कोर्ट, कचहरी, थाना, सरकारी दफ्तर सभी राजद्वार हैं ।

(6) चतुष्पाद– चौपाया, चार पैर वाला, चार पहियों का वाहन, गाय भैंस कुत्ता आदि पालतू व कीमती जानवर, रेस का घोड़ा, ताँगे या सवारी का घोड़ा, रोजगार का साधन जानवर आदि ।

(7) ज्वरादि रोग – केवल बुखार नहीं । अपितु इलाज करवाने से ठीक होने योग्य, साध्य व सामान्यतः होने वाले रोग, जिनमें मृत्यु प्रायः नहीं होती है । ज्वर सामान्य रोग का वाचक है ।

(8) विषाहिभय– साक्षात् जहरीला जानवर डँस ले। किसी भी तरह शरीर में विष फैले, सेप्टिक, मवाद होना, गोली, काँटे, कुत्ते आदि का जहर फैलना अपूर्ण गर्भ नष्ट होने का जहर, भोज्य पदार्थ से उत्पन्न विष (फूड पॉयजनिंग) आदि।

(9) स्थानभ्रंश– स्थान, घर, जायदाद, ऑफिस, दुकान आदि। पद पदवी (Post) आदि में परिवर्तन, अवनति आदि। अथवा प्रतिष्ठा में कमी।

(10) गजाश्वनरवाहन– सवारी का साधन। उत्तम, सम्मानजनक, कीमती, बड़ा वाहन्। समयानुरूप अर्थ लें। नर वाहन पालकी है। आजकल ड्राइवर सहित गाड़ी मिल जाना भी नर वाहन है। हाथी से बड़े बेश-कीमती वाहन की प्राप्ति, अश्व से तीव्रगामी आकार में लघु (sleek) वाहन की प्राप्ति समझें।

(11) ग्रामभूमिलाभ– राजा–महाराजाओं के युग में जागीर इनाम में दी जाती थी। जागीरदार अब न होने से यथासम्भव गाँव या जन सामान्य के प्रदेश में, या जन्म भूमि में सचमुच सम्पत्ति मिलना, या सारे जन पद में प्रतिष्ठा पाना।

(12) वस्त्राभरण– गहने कपड़े आदि। स्त्री के प्रसंग में शब्दार्थ, पुरुष प्रसंग में भौतिक सुख साधन सामग्री समझें।

(13) सेनापतित्व– सेना अर्थात् जन–समूह। अनुशासित कार्यकर्त्ताओं का अधिकार। प्रबल जन समर्थन आदि। सबके हृदयों पर राज्य करने का योग।

(14) सेतुस्नान– रामेश्वरम् यात्रा को लाक्षणिक, सांकेतिक अर्थ समझें। दुर्गम, अतिदूरस्थ तीर्थस्थानों की यात्रा का आशय है।

(15) प्रमेह रोग– मधुमेह, वीर्यरोग, धातुक्षय, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, बहुमूत्र, शरीर में कमजोरी, धातु क्षीण होने से होने वाले सभी रोग। सामान्यतः स्वप्नदोष से लेकर हड्डी के कैंसर तक यथावसर बलाबलानुसार बुद्धिपूर्वक समझें।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
शुक्रान्तर्दशाफलाध्यायो द्विषष्टितमः ।। 62 ।।

63

।। अथ प्रत्यन्तर्दशाफलाध्यायः ।।

प्रत्यन्तर्दशा साधन :–

पृथक् स्वस्वदशामानैर्हन्यादन्तर्दशावधिम् ।
भजेत्सर्वदशायोगैः लब्धिः प्रत्यन्तरं क्रमात् ।।1।।

जिस अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा जाननी हो, उस अन्तर्दशा के मान को, प्रत्येक ग्रह की दशावधि (वर्ष) से अलग–अलग गुणाकर, सम्पूर्ण दशा मान से भाग देने से लब्धि प्रत्यन्तर्दशा होती है ।

उदाहरणार्थ सूर्य महादशा विंशोत्तरी में सूर्यान्तर्दशा 0.3.18 वर्षादि में सब ग्रहों का प्रत्यन्तर जानना है । एतदर्थ (0.3.18× सूर्य की दशावधि 6 वर्ष) ÷ 120 वर्ष (सम्पूर्ण विंशोत्तरी मान) = सूर्यान्तर्दशा में सूर्य का प्रत्यन्तर होगा ।

0.3.18 वर्षादि या 108 दिन×6=648÷120=5 दिन हैं । शेष 48 को 60 से गुणा किया तो 2880÷120 = 24 घड़ी मिली । अतः 5 दिन, 24 घड़ी सूर्यान्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर हुआ । अथवा 5 दिन 9 घंटे 36 मिनिट भी कह सकते हैं । इसी तरह शुक्र दशा वर्ष 20× सूर्य में शुक्रान्तर्दशा मान 1 वर्ष = 20 वर्ष ही है । 20 वर्ष ÷ 120 वर्ष = 0 वर्ष 2 मास सूर्य अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा होगी ।

जिस ग्रह की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर जानना हो, उसी अन्तर्दशेश से प्रत्यन्तर शुरू होंगे ।

सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तरफल :–

विवादो वित्तहानिश्च दारार्तिः शिरसि व्यथा ।
रव्यन्तरे बुधैर्ज्ञेयं तस्य प्रत्यन्तरे फलम् ।।2।।
उद्वेगः कलहश्चैव वित्तहानिर्मनोव्यथा ।
रव्यन्तरे विजानीयात् चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम् ।।3।।
राजभीतिः शस्त्रभीतिर्बन्धनं बहुसंकटम् ।
शत्रुवह्निकृतापीड़ा कुजप्रत्यन्तरे फलम् ।।4।।
श्लेष्मव्याधिः शस्त्रभीतिर्धनहानिर्महद्भयम् ।
राजभंगस्तथा त्रासो राहुप्रत्यन्तरे फलम् ।।5।।

(i) सूर्यान्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर हो तो विवाद, धन हानि, स्त्रीकष्ट, पीड़ा होती है।

(ii) चन्द्र प्रत्यन्तर्दशा में बेचैनी, कलह, धनहानि, मनोव्यथा होती है।

(iii) मंगल प्रत्यन्तर में राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, बहुत से संकट, शत्रु व अग्नि से पीड़ा होती है।

(iv) राहु प्रत्यन्तर में कफ विकार, शस्त्र भय, धनहानि, महान् भय, राज्यहानि, डर होता है।

इन सब फलादेशों में अन्तर्दशा प्रकरण में प्रोक्त नियमों का ध्यान रखना चाहिए। शुभ फलद, शुभ भावगत, उच्चादि गत अन्तर्दशेश से प्रत्यन्तर्दशेश का सम्बन्धादि अवश्य देखें।

शत्रुनाशो जयो वृद्धिर्वस्त्रहेमादिभूषणम्।
अश्वयानादि लाभश्च गुरुप्रत्यन्तरे फलम्।। 6।।
धनहानिः पशोः पीडा महोद्वेगो महारुजः।
अशुभं सर्वमाप्नोति शनिप्रत्यन्तरे जनः।। 7।।
विद्यालाभो बन्धुसंगो भोज्यप्राप्तिर्धनागमः।
धर्मलाभो नृपात्पूजा बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। 8।।
प्राणभीतिर्महाहानी राजभीतिश्च विग्रहः।
शत्रूणां च महावादो केतोः प्रत्यन्तरे फलम्।। 9।।
दिनानि समरूपाणि लाभोऽप्यल्पो भवेदिह।
स्वल्पा च सुखसम्पत्तिः शुक्रप्रत्यन्तरे भवेत्।। 10।।

गुरु प्रत्यन्तर में शत्रु नाश, विजय, उन्नति, वस्त्राभूषणों का लाभ, वाहन–प्राप्ति। शनि के प्रत्यन्तर में धनहानि, पशु पीड़ा, अधिक मनस्ताप, बड़ा रोग आदि अशुभ फल। बुध प्रत्यन्तर में विद्यालाभ, बन्धुओं का सहयोग, उत्तम भोजन, धन प्राप्ति, धर्म लाभ व राजा की ओर से मान होता है।

केतु प्रत्यन्तर में प्राणों का भय, बड़ी हानि, राजपक्ष से भय, टकराव, शत्रुओं से लम्बा विवाद। शुक्र प्रत्यन्तर में मध्यम शुभाशुभ फल, कम व्यय, थोड़ा सुख होता है।

चन्द्रान्तर में प्रत्यन्तर फल :–

भूभोज्यधनसम्प्राप्ती राजपूजा महत्सुखम्।
लाभश्चन्द्रान्तरे ज्ञेयं चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्।।11।।

मातृवृद्धिः महापूज्यसुखं बन्धुजनैः सह ।
धनागमः शत्रुभयं कुजप्रत्यन्तरे फलम् ।। 12 ।।
भवेत्कल्याणसम्पत्तीराजवित्तसमागमः ।
अशुभैरल्पमृत्युश्च राहुप्रत्यन्तरे द्विज ! ।। 13 ।।
वस्त्रलाभो महातेजो ब्रह्मज्ञानं च सद्गुरोः ।
राज्यालंकरणावाप्ति गुरुप्रत्यन्तरे फलम् ।। 14 ।।

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रप्रत्यन्तर हो तो भूमि, उत्तम भोजन, धन का लाभ, राजा द्वारा सत्कार, खूब सुख व लाभ होता है ।

मंगल प्रत्यन्तर में मातृपक्ष की वृद्धि, अधिक सत्कार, बन्धुओं के साथ खूब सुख, धनलाभ, शत्रुओं से भय होता है ।

राहुप्रत्यन्तर में कल्याणवृद्धि, सरकारी खजाने से धनागम होता है । यदि राहु पापयुक्त अर्थात् अशुभ फलदायक ग्रहों से युक्त हो तो अल्पमृत्यु का भय होता है ।

गुरु प्रत्यन्तर में वस्त्र लाभ, अधिक तेजस्विता, उत्तम गुरु से ब्रह्म ज्ञान वेदान्तादि ज्ञान, राजा की ओर से उपाधि आदि की प्राप्ति होती है ।

दुर्दिने लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः ।
धनधान्ययशोहानिः शनिप्रत्यन्तरे विधोः ।। 15 ।।
पुत्रजन्महयप्राप्तिर्विद्या लाभो महोन्नतिः ।
शुक्लवस्त्रान्नलाभश्च बुधप्रत्यन्तरे विधोः ।। 16 ।।
ब्राह्मणेन समं युद्धमपमृत्युः सुखक्षयः ।
सर्वत्र जायते क्लेशः केतोः प्रत्यन्तरे विधोः ।। 17 ।।
धनलाभो महत्सौख्यं कन्याजन्मसुभोजनम् ।
प्रीतिश्च सर्वलोकेभ्यो भृगुप्रत्यन्तरे विधोः ।। 18 ।।
अन्नागमो वस्त्रलाभः शत्रुहानिः सुखागमः ।
सर्वत्र विजयप्राप्तिः सूर्यप्रत्यन्तरे विधोः ।। 19 ।।

चन्द्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर हो तो ऋतुपरिवर्तन के समय, वर्षा ऋतु आदि में वातपित्त से कष्ट, अर्थात् शरीर में विशेषतया जोड़ों व नसों में दर्द, पेट की खराबी, फुंसी आदि, धनधान्य व यश की हानि होती है ।

बुध प्रत्यन्तर में पुत्र जन्म, वाहन प्राप्ति, विद्यालाभ, अधिक उन्नति, सफेद या उजले चमकीले वस्त्रों की प्राप्ति, अन्न लाभ होता है ।

केतु प्रत्यन्तर में ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों या यज्ञादि कर्त्ताओं से युद्ध, अपमृत्यु, सुख में कमी, सब जगह क्लेश होता है ।

शुक्र प्रत्यन्तर में धन लाभ, खूब सुख, कन्या जन्म, उत्तम भोजन, सब लोगों से प्रेम। सूर्य प्रत्यन्तर में अन्न की बहुतायत, वस्त्रों का लाभ, शत्रुओं का क्षय, सुख, सर्वत्र सफलता होती है।

मंगल अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर :–

शत्रुभीतिं कलिं घोरं रक्तस्रावं मृतेर्भयम्।
कुजस्यान्तर्दशायां च कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।। 20।।
बन्धनं राजभंगश्च धनहानिः कुभोजनम्।
कलहः शत्रुभीर्नित्यं राहुप्रत्यन्तरे भवेत्।। 21।।
मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं गुरोः प्रत्यन्तरे वदेत्।। 22।।
स्वामिनाशस्तथा पीड़ा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 23।।
सर्वथा बुद्धिनाशश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुह्रदां नाशो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। 24।।

मंगल अन्तर्दशा में मंगल प्रत्यन्तर हो तो शत्रुभय, घोर कलह, खून बहना, मृत्यु का भय होता है। राहु प्रत्यन्तर में बन्धन, पद या राज्य की हानि, धनहानि, कुभोजन, कलह, शत्रुओं से भय होता है।

बृहस्पति के प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, दुःख, सन्ताप, कलह, सारी योजनाओं की विफलता होती है।

शनि प्रत्यन्तर में अपने स्वामी (मालिक, अधिकारी या मुखिया) की मृत्यु, पीड़ा, धनहानि, भय का अवसर, बेहाली, विकलता, कलह, मन में अज्ञात डर होता है।

बुध प्रत्यन्तर में बुद्धि का बिल्कुल नाश, धनहानि, शरीर में ज्वरादि रोग, भोग्य व भोज्य पदार्थों तथा साथियों सहयोगियों की हानि होती है।

आलस्यं च शिरः पीडां पापरोगोऽपमृत्युकृत्।
राजभीतिः शस्त्रघातो केतोः प्रत्यन्तरे वदेत्।। 25।।
चाण्डालात्संकटस्त्रासो राजशस्त्र भयं भवेत्।
अतिसारोऽथवमनं भृगोः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 26।।
भूमिलाभोऽर्थसम्पत्तिः सन्तोषो मित्रसंगतिः।
सर्वत्रसुखमाप्नोति रवेः प्रत्यन्तरे जनः।। 27।।
याम्यां दिशि भवेल्लाभः सितवस्त्रविभूषणम्।
संसिद्धिः सर्वकार्याणां विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 28।।

केतु प्रत्यन्तर में आलस्य, सिर में कष्ट, खराब अर्थात् घृणित रोग, अपमृत्यु, राजपक्ष से भय, शस्त्र की चोट आदि फल होते हैं।

शुक्र प्रत्यन्तर में चाण्डालादि बर्बर जाति से भय, राजदण्ड या दुर्घटनावशात् राजकीय शस्त्र का शिकार होना, पेचिश व उल्टी आदि की पीड़ा होती है।

सूर्य प्रत्यन्तर में भूमि का लाभ, धन–सम्पत्ति का लाभ, सन्तोष, मित्रों का सहयोग, सर्वत्र सुख होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में दक्षिण दिशा में लाभ, उजले वस्त्रादि का लाभ या प्रयोग, सब कार्यों में सफलता होती है।

राहु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा :–

बन्धनं बहुधा रोगो बहुघातः सुहृद्भयम्।
राह्वन्तर्दशायां च राहोः प्रत्यन्तरे फलम्।। 29।।
सर्वत्र लभते मानं गजाश्वं च धनागमम्।
राहोरन्तर्दशायां च ज्ञेयमेतद्गुरोः फलम्।। 30।।
बन्धनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 31।।
सर्वत्र बहुधा लाभः स्त्रीसंगाच्च विशेषतः।
परदेशभवासिद्धिर्बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। 32।।
बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगो केतोः प्रत्यन्तरे फलम्।। 33।।
योगिनीभ्यो भयं भूयादश्वहानिः कुभोजनम्।
स्त्रीनाशः कुलजं शोकं शुक्रप्रत्यन्तरे फलम्।। 34।।

राहु अन्तर्दशा में राहु प्रत्यन्तर में बन्धन, अनेक प्रकार के रोग, अनेक प्रकार की भीतरी–बाहरी शारीरिक मानसिक चोट या ठेस, मित्रों से भी भय होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में सर्वत्र मान–सम्मान, हाथी–घोड़े जैसे वाहनों का लाभ, धनप्राप्ति होती है। शनि प्रत्यन्तर में घोर बन्धन, सुख में खूब कमी, बड़ा भय कारण, प्रतिदिन वात रोग की पीड़ा रहती है।

बुध प्रत्यन्तर में सर्वत्र लाभ, विशेषतया स्त्री की सहायता से लाभ, परदेश में सफलता। केतु प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, भय, विघ्न, धन–हानि, भय का वातावरण, सर्वत्र कलह व उद्वेग होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में योगिनी अर्थात् जादू–टोने करने की शक्ति रखने वाली या तत्सदृश दिखने वाली स्त्रियों से भय, वाहन की हानि, खराब भोजन, स्त्री की हानि, परिवार में शोक आदि होता है ।

ज्वररोगो महाभीतिः पुत्रपौत्रादिपीडनम् ।

अल्पमृत्युः प्रमादश्च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 35 ।।

उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम् ।

पितुर्विकलता देहे विधोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 36 ।।

भगन्दरकृता पीड़ा रक्तपित्तप्रपीडनम् ।

अर्थहानिर्महोद्वेगः कुजप्रत्यन्तरे भवेत् ।। 37 ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में ज्वर, बड़ा भय कारण, पुत्र पौत्रादि को पीड़ा, अल्पमृत्यु, असावधानी । चन्द्र प्रत्यन्तर में उद्वेग, बेचैनी, कलह, चिन्ता, मान हानि, भय, पिता को कष्ट, शरीर कष्ट होता है ।

मंगल प्रत्यन्तर में भगन्दर आदि गुदा रोग, रक्तपित्त विकार, धन हानि, अधिक उद्वेग होता है ।

गुरु अन्तर में प्रत्यन्तर :–

हेमलाभो धान्यवृद्धिः कल्याणं सुफलोदयः ।

गुरोरन्तर्दशायां च भवेद्गुर्वन्तरे फलम् ।। 38 ।।

गोभूमिहयलाभः स्यात्सर्वत्रसुखसाधनम् ।

संग्रहोह्यन्नपानादेः शनेः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 39 ।।

विद्यालाभो वस्त्र लाभो ज्ञानलाभः समौक्तिकः ।

सुहृदां संगमस्नेहो बुध प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 40 ।।

जलभीतिस्तथा चौर्यं बन्धनं कलहो भवेत् ।

अपमृत्युर्भयं घोरं केतोः प्रत्यन्तरे द्विज ! ।। 41 ।।

नानाविद्यार्थसम्प्राप्तिर्हेमवस्त्रादिभूषणम् ।

लभते क्षेमसन्तोषं भृगोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 42 ।।

गुरु की अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यन्तर में सुवर्णलाभ, धान्यवृद्धि, कल्याण, अच्छे पुण्यों का फल, शनि दशा में गोधन, भूमि, वाहन अश्वादि का लाभ, सुखोपभोग साधनों की वृद्धि, घर में खूब अन्नादि का संग्रह होता है ।

बुध प्रत्यन्तर में विद्यालाभ, वस्त्रलाभ, ज्ञानलाभ, मोती आदि का लाभ, मित्रों का साथ व स्नेह होता है ।

केतु प्रत्यन्तर में जलभय, चोरी का भय, बन्धन, कलह घोर अपमृत्यु का भय होता है। शुक्र प्रत्यन्तर में अनेक प्रकार की विद्याओं की प्राप्ति, धन लाभ, सुवर्ण वस्त्रादि की प्राप्ति, कुशलता, सन्तोष होता है।

नृपाल्लाभस्तथा मित्रात् पितृतोमातृतोऽपि च।
सर्वत्र लभते पूजां रवेः प्रत्यन्तरे जनः।। 43।।
सर्वदुःखविमोक्षश्च मुक्तालाभो हयस्य च।
सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि विधोः प्रत्यन्तरे द्विज !।। 44।।
शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वह्निमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूरिर्भौमप्रत्यन्तरे फलम्।। 45।।
चाण्डालेन विरोधः स्यात् भयं तेभ्यो धनक्षतिः।
कष्टं जीवान्तरे ज्ञेयं राहोः प्रत्यन्तरे ध्रुवम्।। 46।।

सूर्य के प्रत्यन्तर में राजा से, मित्रों से, माता–पिता से लाभ एवं सर्वत्र सम्मान मिलता है। चन्द्र प्रत्यन्तर में सब दुःखों की निवृत्ति, मोती आदि संग्रहणीय पदार्थों की प्राप्ति, वाहन की प्राप्ति, सब कामों में सफलता होती है।

मंगल के प्रत्यन्तर में शस्त्रभय, गुदा द्वार के रोग, अपच, भूख कम लगना, शत्रुओं द्वारा पीड़ा आदि होती है।

राहु प्रत्यन्तर में चाण्डालादि से विरोध, उन्हीं लोगों से भय, धन हानि व कष्ट होता है।

शनि अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर फल :–

देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः।
दुःखं शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 47।।
बुद्धिनाशः कलेर्भीतिरन्नपानादि हानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः शनौ प्रत्यन्तरे बुधे।। 48।।
बन्धः शत्रोर्गृहे जातो वर्णहानिर्बहुक्षुधा।
चित्ते चिन्ता भयं त्रासः केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 49।।
चिन्तितं फलितं वस्तु कल्याणं स्वजने सदा।
मनुष्यकृतितो लाभः भृगोः प्रत्यन्तरे द्विज !।। 50।।
राजतेजोऽधिकारित्वं स्वगृहे जायते कलिः।
ज्वरप्रभृति पीडा च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। 51।।

शनि अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर हो तो निम्न श्रेणी के लोगों से पीड़ा, दुःख की अनेकता, बुध प्रत्यन्तर में बुद्धि की कमजोरी, कलह का डर, खाने पीने में कमी, धन हानि, शत्रु से भय होता है।

केतु प्रत्यन्तर में शत्रुओं द्वारा बन्धन, शरीर में कान्तिहीनता या अपने ब्राह्मणक्षत्रियादि वर्ण से नीचे स्तर पर जाना, अधिक भूख, मन में चिन्ता, भय आदि होते हैं।

शुक्र प्रत्यन्तर में सब योजनाओं में सफलता, कल्याण, अपने लोगों की बढ़ोत्तरी, मनुष्यों के उपकार करने वाले कार्यों से लाभ होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर में राजसी तेज, अधिकार, अपने घर में कलह, ज्वरादि पीड़ा होती है।

स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजाबहुव्ययः।
बहुस्त्रीभिः समं योगो विधोः प्रत्यन्तरे शनौ।। 52।।
तेजोहानिः पुत्रघातो वह्नि भीन्ती रिपोर्मयम्।
वातपिन्तकृता पीड़ा कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।। 53।।
धननाशोवस्त्रहानिर्भूमिनाशो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युः राहोः प्रत्यन्तरे शनौ।। 54।।
गृहेषु स्त्रीकृतं छिद्रं ह्यसमर्थो निरीक्षणे।
अथवा कलिमुद्वेगं गुरोः प्रत्यन्तरे वदेत्।। 55।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में बुद्धि की तीव्रता, बड़े–बड़े कार्यों का आरम्भ, पराक्रम या इकबाल में कमी, अनेक स्त्रियों के साथ भोग होता है।

मंगल प्रत्यन्तर में तेज में कमी, पुत्र को कष्ट, अग्नि भय, शत्रु से भय, वातपित्त से कष्ट होता है।

राहु प्रत्यन्तर में धन की हानि, वस्त्रादि भोग्य वस्तुओं की हानि, भूमि का नाश, भय, विदेश गमन, मृत्यु आदि फल होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में अपने घर में स्त्रियों के दोष या चुगली आदि के कारण कलह, विघटन आदि होता है और व्यक्ति देखते हुए भी कुछ नहीं कर पाता, कलह, उद्वेग आदि होते हैं।

बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा :–

बुद्धिविद्यार्थलाभो वा वस्त्रलाभो महत्सुखम्।
बुधस्यान्तर्दशायां च बुधप्रत्यन्तरे फलम्।। 56।।
कठिनान्नस्य सम्प्राप्तिरुदरे रोग सम्भवः।
कामलं रक्त पित्तं च केतोः प्रत्यन्तरे वदेत्।। 57।।
उत्तरस्यां भवेल्लाभो हानिः स्यात्तु चतुष्पदात्।
अधिकारो नृपागारे भृगोः प्रत्यन्तरे द्विज !।। 58।।
तेजो हानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा यदा कदा।
जायते चित्तवैकल्यं रवेः प्रत्यन्तरे बुधे।। 59।।

बुधान्तर्दशा में बुधप्रत्यन्तर हो तो बुद्धि–विद्या का उदय, धन लाभ, वस्त्र लाभ प्रभूत सुख । केतु प्रत्यन्तर में कठोर मोटे अनाज को खाने के अवसर, पेट में रोग, रक्त पित्त का विकार, कामला रोग ।

शुक्र प्रत्यन्तर में उत्तर दिशा से लाभ, चौपायों से हानि, राजस्थान में अधिकार प्राप्ति होती है । सूर्य प्रत्यन्तर में तेज में कमी, रोग, कमी–कमी शरीर कष्ट, मन में शिथिलता, अनुत्साह सा होता है ।

स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो महद्धनम् ।

लभते सर्वतः सौख्यं विधोः प्रत्यन्तरे जनः ।। 60 ।।

धर्मधीधनसम्प्राप्तिश्चौराग्न्यादिप्रपीडनम् ।

रक्तवस्त्रं शस्त्रघातः भौमप्रत्यन्तरे भवेत् ।। 61 ।।

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद् भयसम्भवः ।

राजशस्त्रकृताभीतिः राहोः प्रत्यन्तरे द्विज ! ।। 62 ।।

राज्यं राज्याधिकारो वा पूजा राजसमुद्भवा ।

विद्याबुद्धिसमृद्धिश्च गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 63 ।।

वातपित्तमहापीडा देहघातसमुद्भवा ।

धननाशमवाप्नोति शनेः प्रत्यन्तरे जनः ।। 64 ।।

बुध महादशा में चन्द्र प्रत्यन्तर हो तो स्त्री–प्राप्ति, धन–सम्पत्ति का लाभ, कन्या जन्म, खूब धन, सर्वत्र सुख मिलता है ।

मंगल प्रत्यन्तर में धर्म, बुद्धि, धन की प्राप्ति, चोर व अग्नि आदि से पीड़ा, लाल वस्त्रों से प्रेम व शस्त्र की चोट लगती है ।

राहु प्रत्यन्तर हो तो स्त्रियों से कलह, अचानक भय कारण की उपस्थिति, राजा व शत्रु से भय होता है ।

गुरु प्रत्यन्तर में राज्यलाभ, राज्य का अधिकार, राजा द्वारा सत्कार, विघ्न व बुद्धि की वृद्धि होती है ।

शनि प्रत्यन्तर में वातपित्त की पीड़ा, शरीर पर चोट, धन का नाश होता है ।

केतु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर :–

आपत्समुद्भवोऽकस्मात् देशान्तरसमागमः ।

केत्वन्तरेऽर्थहानिश्च केतोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 65 ।।

म्लेच्छभीरर्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा ।

हानिश्चतुष्पदानां च भृगोः प्रत्यन्तरे फलम् ।। 66 ।।

मित्रैः सह विरोधश्च स्वल्पमृत्युः पराजयः ।

मतिभ्रंशो विवादश्च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 67 ।।

अन्ननाशो यशो हानिर्देहपीड़ा मतिभ्रमः ।
आमवातादि वृद्धिश्च विधोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 68 ।।
शस्त्रघातेन पातेन पीडितो वह्निपीडया ।
नीचाद् भीती रिपोः शंका कुजप्रत्यन्तरे द्विज ! ।। 69 ।।
कामिनीभ्यो भयं भूयात् तथा वैरिसमुद्भवः ।
क्षुद्रादपि भवेद् भीती राहोः प्रत्यन्तरे फलम् ।। 70 ।।
धनहानिर्महोत्पातो शस्त्रमित्रविनाशनम् ।
सर्वत्र लभते क्लेशं गुरोः प्रत्यन्तरे फलम् ।। 71 ।।
गोमहिष्यादिमरणं देहपीडा सुहृद्वधः ।
स्वल्पाल्पलाभकरणं शनेः प्रत्यन्तरे फलम् ।। 72 ।।
बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महद्भयम् ।
कार्यसिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम् ।। 73 ।।

केतु अन्तर्दशा में केतु का प्रत्यन्तर हो तो अचानक विदेशगमन, मुसीबत, धनहानि होती है ।

शुक्र प्रत्यन्तर में म्लेच्छों से भय, धननाश, नेत्र रोग, सिर में पीड़ा, चौपायों की हानि होती है ।

सूर्य प्रत्यन्तर में मित्रों से विरोध, अल्पमृत्यु, पराजय, बुद्धि की भ्रष्टता, विवाद होते हैं ।

चन्द्र प्रत्यन्तर में अन्न का नाश, यशोहानि, देहकष्ट, मतिविभ्रम, वायु का दर्द होता है ।

मंगल प्रत्यन्तर में शस्त्र की चोट, ऊँचे स्थान से गिरना, अग्नि पीड़ा, नीच लोगों से भय, शत्रु भय की आशंका होती है ।

राहु प्रत्यन्तर में स्त्रियों से भय, शत्रु भय, नीचभय होता है । गुरु प्रत्यन्तर में धनहानि, महान् उपद्रव, शस्त्रों व मित्रों का नाश, सर्वत्र क्लेश होता है । शनि प्रत्यन्तर में कम लाभ, गाय-भैंस की हानि, शरीर कष्ट, मित्रों की मृत्यु होती है । बुध प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, महान् उद्वेग, विद्या हानि, भय, कार्य में असफलता होती है ।

शुक्रान्तर में प्रत्यन्तर फल :–

श्वेताश्ववस्त्रमुक्ताद्यं दिव्यस्त्रीसंगजं सुखम् ।
लभते शुक्रान्तरे प्राप्ते शुक्रप्रत्यन्तरे जनः ।। 74 ।।
वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि ।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यन्तरे फलम् ।। 75 ।।

कन्याजन्म नृपाल्लाभो वस्त्राभरणसंयुतः ।
राज्याधिकारसम्प्राप्तिः चन्द्रप्रत्यन्तरे भवेत् ।। 76 ।।

शुक्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर हो तो सफेद घोड़ा, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति, उत्तम स्त्री से समागम होता है ।

सूर्य प्रत्यन्तर में वातज्वर, सिर में पीड़ा, राजा व शत्रु से पीड़ा, थोड़ा लाभ होता है । चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में कन्या का जन्म, राजा से लाभ, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, राज्य में किसी अधिकार की प्राप्ति भी होती है ।

रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत् ।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज ! ।। 77 ।।
कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद् भयसम्भवः ।
राजतः शत्रुतः पीडा राहोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 78 ।।
महद्द्रव्यं महद् राज्यं वस्त्रमुक्तादि भूषणम् ।
गजाश्वादिपदप्राप्तिः गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 79 ।।

मंगल प्रत्यन्तर में रक्त व पित्त का विकार, कलह, अपमान, तिरस्कार, अधिक क्लेश होता है ।

राहु प्रत्यन्तर में स्त्रियों से कलह, अचानक भय का कारण, राजा व शत्रु से कष्ट होता है ।

गुरु प्रत्यन्तर में खूब धन, बड़ा अधिकार, वस्त्रादि भूषणादि की प्राप्ति, हाथी–घोड़े आदि वाहनादि से युक्त पदवी की प्राप्ति होती है ।

खरोष्ट्रछागसम्प्राप्तिर्लोहमाषतिलादिकम् ।
लभते स्वल्पपीडादि शनेः प्रत्यन्तरे जनः ।। 80 ।।
धनज्ञानमहल्लाभो राजराज्याधिकारिता ।
निक्षेपाद्धनलाभोऽपि ज्ञस्य प्रत्यन्तरे भवेत् ।। 81 ।।
अपमृत्युभयं ज्ञेयं देशाद्देशान्तरागमः ।
लाभोऽपि जायते मध्ये केतोः प्रत्यन्तरे द्विज ! ।। 82 ।।

शनि प्रत्यन्तर में गधा, खच्चर, ऊँट, बकरी आदि की प्राप्ति, लोहा, काले उड़द व तिल आदि से लाभ तथा साधारण पीड़ा होती है ।

बुध प्रत्यन्तर में धन व ज्ञान का अधिक लाभ, राज्य या राज्याधिकार की प्राप्ति, ठीक तरह से निवेश (Invest) करने से धन का लाभ होता है।

केतु प्रत्यन्तर में अपमृत्यु का भय, स्थान-स्थान पर भटकना, दशामध्य में थोड़ा लाभ भी होता है।

सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर :-

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घड़ी	24	0	18	12	24	6	18	18	00

सू० द० चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	1	0	मा०
15	10	27	24	28	25	10	0	9	दि०
0	30	0	0	30	30	30	0	0	घ०

सू० द० मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
7	18	16	19	17	7	21	6	10	दि०
21	54	48	57	51	21	0	18	30	घ०

सू० द० राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	र०	चं०	मं०	ग्र०
1	1	1	1	0	1	0	0	0	मा०
18	13	21	15	18	24	16	24	18	दि०
36	12	18	54	54	0	12	0	54	घ०

सू० द० गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
1	1	1	0	1	0	0	0	1	मा०
8	15	10	16	18	14	24	16	13	दि०
24	36	48	48	0	24	0	48	12	घ०

सू० द० शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
1	1	0	1	0	0	0	1	1	मा०
24	18	19	27	17	28	19	21	15	दि०
9	27	57	0	6	30	57	28	36	घ०

सू० द० बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
1	0	1	0	0	0	1.	1	1	मा०
13	17	21	15	25	17	15	10	18	दि०
21	51	0	18	30	51	54	45	27	घ०

सू० द० केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
7	21	6	10	7	18	16	19	17	दि०
21	0	18	30	21	54	48	57	51	घ०

सू० द० शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
2	0	1	0	1	1	1	1	0	मा०
0	18	0	21	24	18	27	21	21	दि०

चन्द्रमा की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
0	0	1	1	1	1	0	1	0	मा०
25	17	15	10	17	12	17	20	15	दि०
0	30	0	0	30	30	30	0	0	घ०

चं० द० मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	गृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	1	0	1	0	0	1	0	0	मा०
12	1	28	3	29	12	5	10	17	दि०
15	30	0	15	45	15	0	0	30	घ०

चं० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
2	2	2	2	1	3	0	1	1	मा०
21	12	25	16	1	0	27	15	1	दि०
0	0	30	30	30	0	0	0	30	घ०

चं० द० बृहस्पति के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
2	2	2	0	2	0	1	0	2	मा०
4	16	8	28	20	24	10	28	12	दि०

चं० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	बु०	के०	शु०	सू०	मं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
3	2	1	3	0	1	1	2	2	मा०
0	20	3	5	28	17	3	25	16	दि०
15	45	15	0	30	30	15	30	0	घ०

चं० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	च०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
2	0	2	0	1	0	2	2	2	मा०
12	29	25	25	12	29	16	8	20	दि०
15	45	0	30	30	45	30	0	45	घ०

चं० द० केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	1	0	0	0	1	0	1	0	मा०
12	5	10	17	12	1	28	3	29	दि०
15	0	30	30	15	30	0	15	45	घ०

चन्द्रमा की दशा में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु	के०	ग्र०
3	1	1	1	3	2	3	2	1	मा०
10	0	20	5	0	20	5	25	5	दि०

चं० द० सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	सू०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	1	मा०
9	15	10	27	24	28	25	10	0	दि०
0	0	30	0	0	30	30	30	0	घ०

मंगल की दशा में मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
8	22	19	23	20	8	24	7	12	दि०
34	2	36	16	49	34	30	21	15	घ०
30	0	0	30	30	30	0	0	0	प०

मं० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
1	1	1	1	0	2	0	1	0	मा०
26	20	29	23	22	3	18	1	22	दि०
42	24	51	33	3	0	54	30	3	घ०

मं० द० गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
1	1	1	0	1	0	0	0	1	मा०
14	23	17	19	26	16	28	19	20	दि०
48	12	36	36	0	48	0	36	24	घ०

मं० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बु०	ग्र०
2	1	0	2	0	1	0	1	1	मा०
3	26	23	6	19	3	23	29	23	दि०
10	31	16	30	47	15	16	51	12	घ०
30	30	30	0	0	0	30	0	0	प०

मं० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
1	0	1	0	0	0	1	1	1	मा०
20	20	29	17	29	20	23	17	26	दि०
34	49	30	51	45	49	33	36	31	घ०
30	30	0	0	0	30	0	0	30	प०

मं० द० केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
8	24	7	12	8	22	19	23	20	दि०
34	30	21	15	34	3	36	16	49	घ०
30	0	0	0	30	0	0	30	30	प०

मं० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
2	0	1	0	2	1	2	1	0	मा०
10	21	5	24	3	26	6	29	24	दि०
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घ०

मं० द० सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
6	10	7	18	16	19	17	7	21	दि०
18	30	21	54	48	57	51	21	0	घ०

मंगल की दशा में चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
0	0	1	0	1	0	0	1	0	मा०
17	12	1	28	3	29	12	5	10	दि०
30	15	30	0	15	45	15	0	30	घ०

राहु की दशा में राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
4	4	5	4	1	5	1	2	1	मा०
25	9	3	17	26	12	18	21	26	दि०
48	36	54	42	42	0	36	0	42	घ०

रा० द० बृहस्पति के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	च०	मं०	रा०	ग्र०
3	4	4	1	4	1	2	1	4	मा०
25	16	2	20	24	13	12	20	9	दि०
12	48	24	24	0	12	0	24	36	घ०

रा० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
5	4	1	5	1	2	1	5	4	मा०
12	25	29	21	21	25	29	3	16	दि०
27	21	51	0	18	30	51	54	48	घ०

रा० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
4	1	5	1	2	1	4	4	4	मा०
10	23	3	15	16	23	17	2	25	दि०
3	33	0	54	30	33	42	24	21	घ०

रा० द० केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	2	0	1	0	1	1	1	1	मा०
22	3	18	1	22	26	20	29	23	दि०
3	0	54	30	3	42	24	51	33	घ०

रा० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
6	1	3	2	5	4	5	5	2	मा०
0	24	0	3	12	24	21	3	3	दि०

रा० द० रवि के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मा०
16	27	18	18	13	21	15	18	24	दि०
12	0	54	36	12	18	54	54	0	घ०

रा० द० चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
1	1	2	2	2	2	1	3	0	मा०
15	1	21	12	25	16	1	0	27	दि०
0	30	0	0	30	30	30	0	0	घ०

रा० द० मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	1	1	1	1	0	2	0	1	मा०
22	26	20	29	23	22	3	18	1	दि०
3	42	24	51	33	3	0	54	30	घ०

बृहस्पति की दशा में बृहस्पति के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
3	4	3	1	4	1	2	1	3	मा०
12	1	18	14	8	८	4	14	25	दि०
24	36	48	48	0	24	0	48	12	घ०

गु० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
4	4	1	5	1	2	1	4	4	मा०
24	9	23	2	15	16	23	16	1	दि०
24	12	12	0	36	0	12	48	36	घ०

गु० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
3	1	4	1	2	1	4	3	4	मा०
25	17	16	10	8	17	2	18	9	दि०
36	36	0	48	0	36	24	48	12	घ०

गु० द० केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	1	0	0	0	1	1	1	1	मा०
19	26	16	28	19	20	14	23	17	दि०
36	0	48	0	36	24	48	12	36	घ०

गु० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
5	1	2	1	4	4	5	4	1	मा०
10	18	20	26	24	8	2	16	26	दि०

गु० द० सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मा०
14	24	16	13	8	15	10	16	18	दि०
24	0	48	12	24	36	48	48	0	घ०

गु० द० चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
1	0	2	2	2	2	0	2	0	मा०
10	28	12	4	16	8	28	20	24	दि०

गु० द० मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	1	1	1	1	0	1	0	0	मा०
19	20	14	23	17	19	26	16	28	दि०
36	24	48	12	36	36	0	48	0	घ०

गु० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
4	3	4	4	1	4	1	2	1	मा०
9	25	16	2	20	24	13	12	20	दि०
36	12	18	24	24	0	12	0	24	घ०

श० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
5	5	2	6	1	3	2	5	4	मा०
21	3	3	0	24	0	3	12	24	दि०
28	25	10	30	9	15	10	27	24	घ०
30	30	30	0	0	0	30	0	0	प०

श० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
4	1	5	1	2	1	4	4	5	मा०
17	26	11	18	20	26	25	9	3	दि०
16	31	30	27	45	31	21	12	25	घ०
30	30	0	0	0	30	0	0	30	प०

श० दशा केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	o	0	1	0	1	1	2	1	मा०
23	6	19	3	23	29	23	3	26	दि०
16	30	57	15	16	51	12	10	31	घ०
30	0	0	0	30	0	0	30	30	प०

श० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
6	1	3	2	5	5	6	5	2	मा०
10	27	5	6	21	2	0	11	6	दि०
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घ०

श० द० सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मा०
17	28	19	21	15	24	18	19	27	दि०
6	30	57	18	36	9	27	57	0	घ०

श० द० चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
1	1	2	2	3	2	1	3	0	मा०
17	3	25	16	0	20	3	5	28	दि०
30	15	30	0	15	45	15	0	30	घ०

श० द० मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	1	1	2	1	0	2	0	1	मा०
23	29	23	3	26	23	6	19	3	दि०
16	51	12	10	31	16	30	57	15	घ०
30	0	0	30	30	30	6	0	0	प०

श० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
5	4	5	4	1	5	1	2	1	मा०
3	16	12	25	29	21	21	25	29	दि०
54	48	27	21	51	0	18	30	51	घ०

श० द० गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
4	4	4	1	5	1	2	1	4	मा०
1	24	9	23	2	15	16	23	16	दि०
36	24	12	12	0	36	0	12	48	घ०

बु० की दशा और बु० की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
4	1	4	1	2	1	4	3	4	मा०
2	20	24	13	12	20	10	25	17	दि०
49	34	30	21	15	34	3	36	16	घ०
30	30	0	0	0	30	0	0	30	प०

बु० दशा और केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	1	0	0	0	1	1	1	1	मा०
20	29	17	29	20	23	17	26	20	दि०
49	30	51	45	49	33	36	31	34	घ०
30	0	0	0	30	0	0	30	30	प०

बु० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
5	1	2	1	5	4	5	4	1	मा०
20	21	25	29	3	16	11	24	29	दि०
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घ०

बु० द० सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	0	0	0	1	1	1	0	1	मा०
15	25	17	15	10	18	13	17	21	दि०
18	30	51	54	48	27	21	51	0	घ०

बु० द० चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
1	0	2	2	2	2	0	2	0	मा०
12	29	16	8	20	12	29	25	25	दि०
30	45	30	0	45	15	45	0	30	घ०

बु० दशा मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बृ०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	1	1	1	1	0	1	0	0	मा०
20	23	17	26	20	20	29	17	29	दि०
49	33	36	31	34	49	30	51	45	घ०
30	0	0	30	30	30	0	0	0	प०

बु० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
4	4	4	4	1	5	1	2	1	मा०
17	2	25	10	23	3	15	16	23	दि०
42	24	21	3	33	0	54	30	33	घ०

बु० द० गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
3	4	3	1	4	1	8	1	4	मा०
18	9	25	17	16	10	8	17	2	दि०
48	12	36	36	0	48	0	36	24	घ०

बु० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
5	4	1	5	1	2	1	4	4	मा०
3	17	26	11	18	20	26	25	9	दि०
25	16	31	30	27	45	31	21	12	घ०
30	30	30	0	0	0	30	0	0	प०

केतु की दशा में केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
8	24	7	12	8	22	19	23	20	दि०
34	30	21	15	34	3	36	16	49	घ०
30	0	0	0	30	0	0	30	30	प०

के० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
2	0	1	0	2	1	2	1	0	मा०
10	21	5	24	3	26	6	29	24	दि०
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घ०

के० द० सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
6	10	7	18	16	19	17	7	21	दि०
18	30	21	54	48	57	51	21	0	घ०

के० द० चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
0	0	1	0	1	0	0	1	0	मा०
17	12	1	28	3	29	12	5	10	दि०
30	15	30	0	15	45	15	0	30	घ०

के० द० मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
8	22	19	23	20	8	24	7	12	दि०
34	3	36	16	49	34	30	21	15	घ०
30	0	0	30	30	30	0	0	0	प०

के० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्रं०
1	1	1	1	0	2	0	1	0	मा०
26	20	29	23	22	3	18	1	22	दि०
24	24	51	33	3	0	54	30	3	घ०

के० द० गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
1	1	1	0	1	0	0	0	1	मा०
14	23	17	19	26	16	28	19	20	दि०
48	12	36	36	0	48	0	36	24	घ०

के० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
2	1	0	2	0	1	0	1	1	मा०
3	26	23	6	19	3	23	29	23	दि०
10	31	16	30	57	15	16	51	12	घ०
30	30	30	0	0	0	30	0	0	प०

के० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
1	0	1	0	0	0	1	1	1	मा०
20	20	29	17	29	20	23	17	26	दि०
34	49	30	51	45	49	33	36	31	घ०
30	30	0	0	0	0	0	0	30	प०

शु० द० शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ग्र०
6	2	3	2	6	5	6	5	२	मा०
20	0	10	10	0	10	10	20	१०	दि०

शु० द० रवि के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ग्र०
0	1	0	1	1	1	1	0	2	मा०
18	0	21	24	18	27	21	21	0	दि०

शु० द० चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्र०
1	1	3	2	3	2	1	3	1	मा०
20	5	0	20	5	25	5	10	0	दि०

शु० द० मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्र०
0	2	1	2	1	0	2	0	1	मा०
24	3	26	6	29	24	40	21	5	दि०
30	0	0	30	30	30	0	0	0	घ०

शु० द० राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्र०
5	4	5	5	2	6	1	3	2	मा०
12	24	21	3	3	0	24	0	3	दि०

शु० द० गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्र०
4	5	4	1	5	1	2	1	4	मा०
8	2	16	26	10	18	20	26	24	दि०

शु० द० शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ग्र०
6	5	2	6	1	3	2	5	5	मा०
0	11	6	10	27	5	6	21	2	दि०
30	30	30	0	0	0	30	0	0	घ०

शु० द० बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ग्र०
4	1	5	1	2	1	5	4	5	मा०
24	29	20	21	25	29	3	16	11	दि०
30	30	0	0	0	30	0	0	30	घ०

बु० द० केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ग्र०
0	2	0	1	0	2	1	2	1	मा०
24	10	21	5	24	3	25	6	29	दि०
30	0	0	0	30	0	0	30	30	घ०

सक्ष्म दशा व प्राण\दशा ज्ञान :– प्रत्येक दशा के पाँच अंग--

प्रत्यन्तर्दशा में विशेष :–

लग्नेशरोगनाथौ च निधनेशेन संयुतौ ।
मारकेशयुतौ दृष्टौ रोगनाथांशगौ यदि ।। 83 ।।
तस्य भुक्तौ विजानीयाद् व्यथां शस्त्रसमुद्भवाम् ।
शुभयोगेन बाधः स्यात्पापयोगेन मृत्युकृत् ।। 84 ।।

(i) यदि जन्म लग्न में लग्नेश, षष्ठेश व अष्टमेश का योग है। अर्थात 1.6.8 भावेशों में कम से कम दो या सबका योग हो तथा उन पर मारकेश (2.7 भावेश) की दृष्टि या योग हो यह एक योग है ।

(ii) यदि उक्त 1.6.8 भावेशों की स्थिति नवांश में षष्ठेश की राशि में हो यह दूसरा योग है ।

इन दोनों योगों के रहने पर जब भी इन योगकारक ग्रहों का प्रत्यन्तर, अन्तर आदि होगा तब शस्त्रघात होता है ।

यदि उक्त योग कारकों का शुभ ग्रह से योग हो तो अनिष्ट फल प्रत्यन्तर, अन्तर आदि होगा तब शस्त्रघात होता है ।

यदि उक्त योग कारकों का शुभ ग्रह से योग हो तो अनिष्ट फल साधारण होता है तथा पापयोग रहने पर विशेष अनिष्ट, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। शस्त्र को यहाँ घातक उपकरण का द्योतक (उपलक्षण) समझना चाहिए। 1.6.8 भावेशों या निसर्ग पापग्रह या द्वादशेश की दशा में इन्हीं भावेशों की अन्तर्दशा हो तथा उक्त योग बने तब उक्त योग कारक ग्रह के प्रत्यन्तर या सूक्ष्मादि दशा में अनिष्ट फल घटित होगा।

राशिशीलानुसारेण वदेत् रोगादिकारणम्।
मेषवर्गगतौ तौ चेज्जम्बुकादिभयं भवेत्।। 85।।
वृषवर्गगतौ तौ चेत् वृश्चिकाद्भयमादिशेत्।
युग्मवर्गगतौ भीतिः कपिजानात्रसंशयः।। 86।।
कुलीरवर्गगतौ चेद्रासभाद् भयमादिशेत्।
सिंहवर्गगतौ स्यातां भयं व्याघ्रादितो भवेत्।। 87।।
कन्याया वर्गगौ स्यातां भयं भल्लूकवर्गतः।
तुलायां तु गजाद्भीतिरष्टमेऽपि च तद्भयम्।। 88।।
यदि कार्मुकवर्गस्थौ शस्त्राद् वा वाहनाद्भयम्।
मृगकुम्भगतौ स्यातां गोलाङ्गूलादितो भयम्।। 89।।
मीनवर्गगतौ स्यातां भयं मत्स्यादिवर्गतः।
एवं विचार्य वक्तव्यं जनानां च शुभाशुभम्।। 90।।

उक्त योग बनने पर पूर्वोक्त राशिशीलाध्याय में बताए गए धातु, मूल, जीवादि द्वारा तत्तत् रोगों की उत्पत्ति समझनी चाहिए । यदि उक्त योग कारक दो ग्रह मेष के वर्ग (द्रेष्काण, नवांशादि व राश्यादि) में गए हों तो गीदड़ आदि जंगली कुत्तेनुमा जानवरों से, वृष वर्ग में हो तो बिच्छू आदि जहरीले डंकवाले जानवरों से, मिथुन वर्ग में हो तो बन्दर आदि से, कर्क वर्ग में हों तो गधे घोड़े, खच्चर आदि से, सिंह वर्ग में हो तो व्याघ्र आदि जंगली हिंसक जानवरों से, कन्या वर्ग में हों तो भालू आदि जंगली जानवरों से, तुला वर्ग में हाथी आदि से, वृश्चिक वर्ग में हो तो भी हाथी आदि से, धनुवर्गगत हों तो शस्त्रादि से या वाहन से, मकर कुम्भ वर्ग में हों तो लम्बी पूँछ वाले जानवर (लंगूर आदि), मीन वर्गगत हों तो जलजन्तु मकर, मत्स्यादि से भय होता है। यदि पूरा योग बने तो इनके द्वारा मृत्यु होती है। इस तरह विचारपूर्वक मृत्यु आदि अनिष्ट फल बताना चाहिए।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां प्रत्यन्तर्दशा-
फलाध्यायस्त्रिषष्टितमः।। 63।।

64

।। अथ सूक्ष्मदशाफलाध्यायः ।।

सूक्ष्मदशा का साधन :–

गुण्या स्वस्वदशावर्षैः प्रत्यन्तरदशामितिः ।
खार्कैः भक्ता पृथग् लब्धिः सूक्ष्मा सा जायते दशा ।। 1 ।।

प्रत्यन्तर दशा की अवधि को स्वस्व दशा वर्ष से गुणा करके 120 से भाग देने पर लब्धि सूक्ष्म दशा होती है ।

उदाहरणार्थ सूर्य प्रत्यन्तरदशा दिनादि 5.24 है । इसे सजातीय बनाया तो 324 घड़ी मिली । $(324\times6)\div120 = 16$ घड़ी 12 पल सूर्यान्तर्दशा में सूर्यप्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्षम दशा है । इस अवधि को 6 घंटे 29 मिनट भी कह सकते हैं । इसी तरह $\frac{324\times10}{120} = 27$ घड़ी या 10 घंटे 48 मिनट चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा, सूर्यान्तर ये सूर्य प्रत्यन्तर में होगी ।

विंशोत्तरी दशा का प्रारम्भ व अन्त सूर्य के गतांशों से अर्थात् सौर मान से व्यक्त करना ही प्रामाणिक है । अंग्रेजी तिथि द्वारा इसे व्यक्त करने से प्रायः 1-2 दिनों का अन्तर रहता है । सूर्य स्पष्टानुसार ही अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म व प्राण दशादिकों का आरम्भ व अन्त जानना वैज्ञानिक व शास्त्रीय है, उसमें त्रुटि की सम्भावना अल्पाल्प रहती है ।

उक्त विधि से ही सब ग्रहों की सूक्ष्म दशा जानी जा सकती है । हम समझते हैं कि प्रत्यन्तर तक की सूक्ष्मता ही बहुत अधिक है । सदैव अन्तर प्रत्यन्तर के साथ गोचर का समन्वय अवश्य करें, अन्यथा परिणाम आकलन में त्रुटि रहेगी । ग्रन्थ का कलेवर अधिक बढ़ जाने के भय से हम सूक्ष्म प्राणदशा की सारिणियाँ नहीं दे रहे हैं । यदि आवश्यक हो तो गणना करके स्वयं निकाल सकते हैं ।

सूर्य प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा :–

निजभूमिपरित्यागो प्राणनाशभयं भवेत् ।
स्थाननाशो महाहानिः निजसूक्ष्मगते रवौ ।। 2 ।।
देवब्राह्मणभक्तिश्चनित्यकर्मरतस्तथा ।
सुप्रीतिः सर्वमित्रैश्च रवेः सूक्ष्मगते विधौ ।। 3 ।।
क्रूरकर्मरतिस्तिग्मशत्रुभिःपरिपीडनम् ।
रक्तस्रावादिरोगश्च रवौ सूक्ष्मगते कुजे ।। 4 ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो अपने स्थान का त्याग, प्राणनाश का भय, स्थान नाश, बहुत बड़ी हानि होती है ।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा हो तो देव ब्राह्मणों की भक्ति, अत्यधिक व्यस्तता मित्रों से स्नेह भाव होता है । मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो क्रूर कार्यों में रति, खतरनाक शत्रुओं से पीड़ा, रक्तस्रावादि रोग होते हैं ।

चौराग्निविषभीतिश्च रणे भङ्गः पराजयः ।
दानधर्मादिहीनश्च रवौ सूक्ष्मगते ह्यगौ ।। 5 ।।
नृपसत्काररराजार्हः सेवकैः परिपूजितः ।
राजचक्षुर्गतः शान्तः सूर्यसूक्ष्मगते गुरौ ।। 6 ।।
चौर्यसाहस कर्मार्थं देवब्राह्मणपीडनम् ।
स्थानच्युतिं मनोदुःखं रवौ सूक्ष्मगते शनौ ।। 7 ।।

राहु की सूक्ष्म दशा हो तो चोर, अग्नि, विष भय, युद्ध में पराजय, दानधर्मादि की हानि, गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से सत्कार, राजा द्वारा मान्यता, सेवकों द्वारा मान, राजा की नजरों में आना तथा शान्त चित्त होता है ।

शनि की सूक्ष्म दशा हो तो चोरी, साहसिक कार्य, देव ब्राह्मणों को कष्ट पहुँचाना, स्थान भ्रंश, मन में दुःख होता है ।

दिव्याम्बरादि लब्धिश्च दिव्यस्त्रीपरिभोगिता ।
अचिन्तितार्थसिद्धिश्च रवौ सूक्ष्मगते बुधे ।। 8 ।।
गुरुतार्थविनाशश्च दारभृत्यभवस्तथा ।
क्वचित्सेवकसम्बन्धो रवौ सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 9 ।।

पुत्रमित्रकलत्रादि सौख्यसम्पन्न एव च ।
नानाविधा च सम्पत्ती रवौ सूक्ष्मगते भृगौ ।। 10 ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो अच्छे वस्त्रादि की प्राप्ति, उत्तम स्त्री की प्राप्ति, अनायास ही कार्य में सफलता होती है।

केतु सूक्ष्म दशा में बड़प्पन की हानि, धन की हानि, नौकरों व स्त्री द्वारा मान हानि, कहीं–कहीं पर नौकरी–चाकरी या जी हजूरी करने का अवसर होता है ।

शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो पुत्र मित्र व स्त्री का सुख, अनेक प्रकार की सुख–सम्पत्तियों से सम्पन्नता होती है ।

चन्द्र प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशाफल :–

भूषणं भूमिलाभश्च सन्मानं नृपपूजनम् ।
तामसत्वं गुरुत्वं च निजे सूक्ष्मगते विधौ ।। 11 ।।
दुःखं शत्रुविरोधश्च कुक्षिरोगः पितुर्मृतिः ।
वातपित्तकफोद्रेकः विधौ सूक्ष्मगते कुजे ।। 12 ।।
क्रोधनं मित्रबन्धूनां देशत्यागो धनक्षयः ।
विदेशान्निगडप्राप्तिर्विधोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ ।। 13 ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में चन्द्र की ही सूक्ष्म दशा हो तो भूषण, भूमि का लाभ, सज्जनों द्वारा मान, राज मान्य होना, तामसिक आचरण व बड़प्पन होता है ।

मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो दुःख, शत्रुओं से विरोध, पेट में रोग, पिता की मृत्यु, वात–पित्त–कफ की अधिकता होती है ।

राहु की सूक्ष्म दशा हो तो मित्रों व बन्धुओं की नाराजगी, स्थान त्याग, धन की हानि, विदेश में कैद आदि होती है ।

छत्रचामर संयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः ।
सर्वत्र सुखमाप्नोति विधोः सूक्ष्मगते गुरौ ।। 14 ।।
राजोपद्रवभीतिः स्याद् व्यवहारे धनक्षयः ।
चौरत्वं विप्रभीतिश्च विधोः सूक्ष्मगते शनौ ।। 15 ।।

राजमानं वस्तुलाभो विदेशाद् वाहनादिकम् ।

पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च विधोः सूक्ष्मगते बुधे ।। 16 ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो छत्र चँवर आदि का सुख वैभव अर्थात् राज्यलाभ या राजसी ठाट–बाट एवं सर्वत्र सुख होता है ।

शनि की सूक्षम दशा हो तो राजा की ओर से भय, व्यापार आदि या मुकदमेबाजी में धनहानि, चोर व ब्राह्मणों से भय होता है ।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो राजसम्मान, इष्ट वस्तु का लाभ, विदेश से वाहनादि की प्राप्ति, पुत्र व पौत्रादिकों की समृद्धि होती है ।

आत्मनो वृत्ति हननं सस्य श्रृंगवृषादिभिः ।

अग्निसूर्यादिभीतिः स्याद् विधोः सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 17 ।।

विवाहो भूमिलाभश्च वस्त्राभरण वैभवम् ।

राज्यलाभश्च कीर्तिश्च विधोः सूक्ष्मगते भृगौ ।। 18 ।।

क्लेशात्क्लेशः कार्यनाशः, पशुधान्यधनक्षयः ।

गात्रवैषम्यभूमिश्च विधोः सूक्ष्मगते रवौ ।। 19 ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो खेती–बाड़ी या पशुपक्षी आदि द्वारा अपनी जीविका की हानि, अग्नि या धूप आदि से भय होता है ।

शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो विवाह, भूमिप्राप्ति, वस्त्राभरण व वैभव, राज्यलाभ, कीर्ति आदि फल होता है ।

सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो कष्ट ही कष्ट, कार्य में हानि, पशु व धन–धान्य की हानि, शरीर की शिथिलता होती है ।

मंगल प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा :–

भूमिहानिर्मनःखेदो ह्यपस्मारी च बन्धुयुक् ।

पुरक्षोभमनस्तापो निजसूक्ष्मगते कुजे ।। 20 ।।

अंगदोषो जनाद्भीतिः प्रमदावंशनाशनम् ।

वह्निसर्पभयं घोरं भौमे सूक्ष्मगतेऽप्यहौ ।। 21 ।।

देवपूजारतिश्चात्र कन्याभ्युत्थानतत्परः ।

लोके पूजा प्रमोदश्च भौमे सूक्ष्मगते गुरौ ।। 22 ।।

मंगल प्रत्यन्तर में मंगल की ही सूक्ष्म दशा हो तो भूमि की हानि, मन में खिन्नता, अपस्मार मिर्गी या उत्तेजना की अधिकता, भाइयों का साथ, सम्पूर्ण स्थान बस्ती आदि को क्षोभ होता है । राहु की सूक्ष्म दशा हो तो

शरीर में विकार, लोगों से भय, स्त्री कुल में हानि, आग या सूर्यादि से भय होता है।

मंगल प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो देव पूजा में रति, मन्त्र सिद्धि के अवसर, लोगों में मान्यता व उससे उत्तम आनन्द होता है।

बन्धनान्मुच्यते बद्धो धनधान्यपरिच्छदः ।
भृत्यार्थबहुलः श्रीमान् भौमे सूक्ष्मगते शनौ ।। 23 ।।
वाहनं छत्रसंयुक्तं राज्यभोग परं सुखम् ।
कासश्वासादिका पीडा भौमे सूक्ष्मगते बुधे ।। 24 ।।
परप्रेरितबुद्धिश्च सर्वत्रापि च गर्हिता ।
अशुचिः सर्वकालेषु भौमेसूक्ष्मगते ध्वजे ।। 25 ।।

मंगल प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो बन्धन से छुटकारा, धन–धान्य की वृद्धि, नौकरों–चाकरों की बहुतायत, धनवृद्धि, श्रीमन्तता होती है।

बुध की सूक्ष्म दशा में वाहन, ऊँचे अधिकार की प्राप्ति, राजसी ठाट–बाट व सुख, खाँसी या श्वास रोग से पीड़ा होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा हो तो अपनी बुद्धि की निष्क्रियता, दूसरों द्वारा चलाया जाना, सर्वत्र निन्दा एवं अपवित्रता सी रहती है।

इष्टस्त्रीभोगसम्पत्तिरिष्टभोजनसंग्रहः ।
इष्टार्थस्यापि लाभश्च भौमेसूक्ष्मगते भृगौ ।। 26 ।।
राजद्वेषो द्विजात्क्लेशः कार्याभिप्रायवंचकः ।
लोकेऽपि निन्द्यतामेति भौमे सूक्ष्मगते रवौ ।। 27 ।।
शुदध्त्वंधनसम्प्राप्तिर्देवब्राह्मणवत्सलः ।
व्याधिना परिभूयेत भौमे सूक्ष्मगते विधौ ।। 28 ।।

मंगल प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो उत्तम व प्रिय स्त्री से सम्पर्क, सम्पत्ति व उत्तम खान–पान का सुख, अभीष्ट सफलता होती है।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो पवित्रता, धन लाभ, देवता व ब्राह्मणों की प्रियता, रोगादि से पीड़ा होती है।

राहु प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा :–

लोकोपद्रव बुद्धिश्च स्वकार्ये मतिविभ्रमः ।
शून्यता चित्तदोषः स्यात् स्वीये सूक्ष्मगतेऽप्यगौ ।। 29 ।।

दीर्घरोगी दरिद्रश्च सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
दानधर्मरतः शस्तो राहोः सूक्ष्मगते गुरौ ।। 30 ।।
कुमार्गात् कुत्सितोऽर्थश्च दुष्टश्च परसेवकः ।
असत्संगमतिर्मूढो राहोः सूक्ष्मगते शनौ ।। 31 ।।
स्त्रीसम्भोगमतिर्वाग्मी लोकसम्भावनावृतः ।
अन्नमिच्छंस्तनुग्लानी राहोः सूक्ष्मगते बुधे ।। 32 ।।
माधुर्यमानहानिश्च बन्धनं चाप्रमाकरम् ।
पारुष्यं जीवहानिश्च राहोः सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 33 ।।

राहु प्रत्यन्तर में यदि राहु की सूक्ष्म दशा हो तो लोगों द्वारा उपद्रव कराने या लोगों को भड़काने का विचार, अपने काम में बुद्धि का न लगना, सर्वत्र सूनापन, मनोविकार होते हैं।

गुरु की सूक्ष्म दशा में लम्बा रोग, दरिद्रता, सबका प्रिय, दानधर्म में संलग्न होता है। शनि की सूक्ष्म दशा हो तो कुमार्ग व निन्दित तरीके से धनागम, दुष्ट कार्य, दूसरों की चाकरी, सज्जनसंगति से विरक्ति, बुद्धिभ्रम होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री सम्भोग, वाचालता, बुद्धिमत्ता, लोकमान्य होना, सदैव खाने का संग्रह करने की बुद्धि, शरीर में निर्बलता होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा होने पर नम्रता व मधुरता, मानहानि, बन्धन, मन में निश्चय की कमी, कठोरता, प्राणियों की हानि आदि फल होते हैं।

बन्धनान्मुच्यते जातः स्थानमानार्थसंचयः ।
कारणाद्द्रव्यलाभश्च राहोः सूक्ष्मगते भृगौ ।। 34 ।।
व्यक्तार्शो गुल्मरोगी च क्रोधहानिस्तथैव च ।
वाहनादि सुखं सर्वं राहोः सूक्ष्मगते रवौ ।। 35 ।।
मणिरत्नधनावाप्तिर्विद्योपासनशीलवान् ।
देवार्चनपरो भक्त्या राहोः सूक्ष्मगते विधौ ।। 36 ।।
निर्जितो जनविद्रावो जनैः क्रोधश्च बन्धनम् ।
चौर्यशीलरतिर्नित्यं राहोः सूक्ष्मगते कुजे ।। 37 ।।

राहु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो बन्धनों से मुक्ति, पदवी, धन व सम्मान की प्राप्ति, सकारण द्रव्य लाभ होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में बवासीर, गुल्म (जिगर आदि) रोग, क्रोध की कमी या व्यर्थता, वाहनों का सुख होता है।

यदि चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो रत्नादि धन की प्राप्ति, विद्या प्राप्ति में परिश्रम, शीलवान् होना, देवताओं की भक्ति आदि फल होते हैं।

मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो पराजय, लोकोपद्रव, लोगों की नाराजगी, बन्धन, चोरी की वृत्ति, आदि कुफल होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा :-

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं स्वीये सूक्ष्मगते गुरौ ।। 38 ।।
व्रतभंगो मनस्तापो विदेशे वसुनाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरोः सूक्ष्मगते शनौ ।। 39 ।।
विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च ससम्मानं धनागमः।
गृहे सर्वविधं सौख्यं गुरोः सूक्ष्मगते बुधे ।। 40 ।।
ज्ञानं विभवपाण्डित्ये शास्त्रश्रोता शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 41 ।।
रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिसौख्यं च गुरोः सूक्ष्मगते भृगौ ।। 42 ।।

गुरु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो शोक का कुप्रभाव, धन की अधिकता, हवनादि कार्य, शिव भक्ति, वाहन व अधिकारादि की प्राप्ति होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में वचन या प्रतिज्ञा का भंग, मन में सन्ताप, विदेश में धनहानि, बन्धुओं से विरोध होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो विद्या, बुद्धि, सम्मान सहित धन का लाभ, घर में सब प्रकार के सुख होते हैं।

केतु की सूक्ष्म दशा हो तो ज्ञान, वैभव, पाण्डित्य (विद्वत्ता), शास्त्रों का श्रवण, शिवभक्ति, अग्निहोत्रादि कार्य गुरुभक्ति आदि फल होते हैं।

शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो रोगनाश, सुख, भोग, धनधान्य वृद्धि, पुत्र व स्त्री का सुख आदि उत्तम फल होते हैं।

वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्मोद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः सूक्ष्मगते रवौ ।। 43 ।।

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः ।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरोः सूक्ष्मगते विधौ ।। 44 ।।
स्त्री जनाच्चविषोत्पत्तिर्बन्धनं च रुजोभयम् ।
देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते कुजे ।। 45 ।।
व्याधिभिः परिभूतः स्याच् चौरैरपहृतं धनम् ।
सर्पवृश्चिकभीतिश्च गुरोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ ।। 46 ।।

गुरु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो वात, पित्त, प्रकोप, कफ की अधिकता, शरीर में विशिष्ट भीतरी कमजोरी करने वाली बीमारी, शूल रोगादि होते हैं ।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में अधिकार की बहुलता, पुत्र व सम्पत्ति की प्राप्ति, आँख व पेट में पीड़ा होती है । मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्रियों के कारण मन व तन का कष्ट, बन्धन, रोगभय, देशान्तर गमन, भ्रम आदि फल होते हैं ।

राहु की सूक्ष्म दशा में रोगों से पीड़ा, चोरों द्वारा हानि, सर्प व बिच्छू आदि का भय होता है ।

शनि प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा :–

धनहानिर्महाव्याधिः वातपीडाकुलक्षयः ।
भिन्नाहारी महादुःखी निजसूक्ष्मगते शनौ ।। 47 ।।
वाणिज्यवृत्तेर्लाभश्च विद्याविभवमेव च ।
स्त्रीलाभश्च महाप्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते बुधे ।। 48 ।।
चौरोपद्रव कुष्ठादि वृत्तिक्षयविगुम्फनम् ।
सर्वांगपीडनं व्याधिः शनेः सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 49 ।।

शनि प्रत्यन्तर में शनि की ही सूक्ष्म दशा हो तो धनहानि, बड़ा रोग, वातकष्ट, कुल की हानि, अनियमित व अल्पमात्रा में भोजन, महान् दुःख होता है ।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो व्यापार से लाभ, विद्या की वृद्धि, स्त्री प्राप्ति, बड़ा लाभ होता है । केतु की सूक्ष्म दशा होने पर चोरादि का उपद्रव, उत्कट त्वचा रोग, व्यवसाय हानि, सर्वांगपीड़ा व रोगादि होते हैं ।

ऐश्वर्यमायुधाभ्यासः पुत्रलाभोऽभिषेचनम् ।
आरोग्यं धनकामौ च शनेः सूक्ष्मगते भृगौ ।। 50 ।।

राजतेजोऽधिकारत्वं स्वगृहे जायते कलिः ।
किंचित्पीडा स्वदेहोत्था शनेः सूक्ष्मगते रवौ ।। 51 ।।
स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजा बहुव्ययः ।
स्त्रीपुत्रैश्च समं सौख्यं शनेः सूक्ष्मगते विधौ ।। 52 ।।

यदि शनि प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो ऐश्वर्य, शस्त्राभ्यास, पुत्रलाभ, अभिषेक, स्वास्थ्य, धन व भोग होते हैं ।

सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो राजसी तेजस्विता, अधिकारप्राप्ति, घर में कलह, शरीर में पीड़ा होती है । चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो बुद्धि की वृद्धि, बड़े कार्य की शुरूआत, तेज की हानि, अधिक व्यय, स्त्री व पुत्रादि का सुख होता है ।

तेजो हानिर्महोद्वेगो वह्निमान्द्यं भ्रमः कलिः ।
वातपित्तकृता पीडा शनेः सूक्ष्मगते कुजे ।। 53 ।।
पितृमातृविनाशश्च मनोदुःखं गुरुव्ययम् ।
सर्वत्र विफलत्वं च शनेः सूक्ष्मगतेऽप्यहौ ।। 54 ।।
सन्मुद्राभोगसम्मानंधनधान्यविवर्धनम् ।
छत्रचामरसम्प्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते गुरौ ।। 55 ।।

शनि प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो तेज की हानि, महान् उद्वेग, पाचन सम्बन्धी विकार, भ्रमण, कलह, वातपित्त से पीड़ा होती है ।

राहु की सूक्ष्म दशा हो तो माता–पिता की हानि, मन में दुःख, अधिक व्यय, सर्वत्र असफलता आदि होती है ।

गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो उत्तम धन का लाभ व भोग, धन–धान्य वृद्धि, छत्र चामर अर्थात् अधिकार की प्राप्ति होती है ।

बुध प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा :–

सौभाग्यं राजसम्मानं धनधान्यादि सम्पदः ।
सर्वेषां प्रियदर्शी च निजसूक्ष्मगते बुधे ।। 56 ।।
बालग्रहोऽग्निभीस्तापः स्त्रीगदोद्भवदोषभाक् ।
कुमार्गी कुत्सिताशी च बौधे सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 57 ।।
वाहनं धनसम्पत्तिर्जलजान्नार्थसम्भवः ।
शुभकीर्तिर्महाभोगो बौधे सूक्ष्मगते भृगौ ।। 58 ।।

ताडनं नृपवैषम्यं बुद्धिस्खलनरोगभाक् ।

हानिर्जनापवादं च बौधे सूक्ष्मगते रवौ ।। 59 ।।

बुध प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो सौभाग्य, राजसम्मान, धनधान्यादि की वृद्धि, सबका स्नेह आदि प्राप्त होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा हो तो ग्रह पीड़ा, अग्निभय, मनस्ताप, स्त्री के रोग से स्वयं को रोग या कष्ट, कुमार्ग गमन, निन्दित भोजन आदि फल होते हैं।

शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो वाहन व धनसम्पत्ति आदि का लाभ, पानी में उत्पन्न होने वाले पदार्थों से धनप्राप्ति, सुनाम, महान् भोग आदि फल होते हैं।

सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो सर्वत्र तिरस्कार, राजा की तिरछी नजर, बुद्धि की कमी, निर्णय लेने में कमजोरी, हानि, बदनामी आदि फल होते हैं।

सुभगः स्थिरबुद्धिश्च राजसम्मानसम्पदः ।

सुहृदां गुरुसंचारो बौधे सूक्ष्मगते विधौ ।। 60 ।।

अग्निदाहो विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता ।

विभ्रमश्च महोद्वेगो बौधे सूक्ष्मगते कुजे ।। 61 ।।

अग्निसर्पनृपाद्भीतिः कृच्छादरिपराभवः ।

भूतावेशभ्रमाद् भ्रान्ति बौधे सूक्ष्मगतेऽप्यहौ ।। 62 ।।

बुध प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो सौभाग्य, स्थिर बुद्धि, राजसम्मान व सम्पत्ति, मित्रों में गौरव वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो अग्निभय, विषसंक्रमण, जड़ता, दरिद्रता, भ्रम, उद्वेग आदि फल होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा हो तो अग्नि, सर्प व राजा आदि से भय, कष्टपूर्वक शत्रुओं की पराजय, भूतावेश (विचित्र मानसिक रोग) के कारण भ्रम या उन्माद आदि फल होते हैं।

गृहोपकरणं भव्यं दानं भोगादि वैभवम् ।

राजप्रासादसम्पत्तिर्बौधे सूक्ष्मगते गुरौ ।। 63 ।।

वाणिज्यवृत्तिलाभश्च विद्याविभवमेव च ।

स्त्रीलाभश्च महाव्याप्तिर्बौधे सूक्ष्मगते शनौ ।। 64 ।।

बुध प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो घरेलू उपकरणों की प्राप्ति, घर में आर्थिक समृद्धि के लक्षण, दानधर्म में रति, भोग प्राप्ति, राजमहल जैसा वैभव होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा हो तो व्यापार से लाभ, विद्या वृद्धि, स्त्री सुख, स्त्री प्राप्ति, अधिक फैलाव (कार्य, नाम, उत्तरदायित्त्व आदि में वृद्धि) होती है।

केतु प्रत्यन्तर में सूक्ष्मदशा :–

पुत्रदारादिजं दुःखं गात्रवैषम्यमेव च।
दारिद्र्याद् भिक्षुकवृत्तिर्नैजे सूक्ष्मगते ध्वजे।।65।।
रोगनाशोऽर्थनाशश्च गुरुविप्रानुवत्सलः।
संगमः स्वजनैः सार्धं केतोः सूक्ष्मगते भृगौ।। 66।।
युद्धं भूमिविनाशश्च विप्रवासः स्वदेशतः।
सुहृद्विपत्तिरार्त्तिश्च केतोः सूक्ष्मगते रवौ।।67।।

केतु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री पुत्रादि का दुःख, शरीर में शिथिलता, गरीबी, भिक्षावृत्ति की नौबत होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो रोगनाश, धननाश, गुरु व ब्राह्मणों का स्नेह, अपने लोगों से मिलन होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो युद्ध, भूमिनाश, परदेश वास, मित्रों पर विपत्ति व कष्ट होता है।

दासीदाससमृद्धिश्च युद्धेलब्धिर्जयस्तथा।
ललिताकीर्तिरुत्पन्ना केतोः सूक्ष्मगते विधौ।। 68।।
आसनेभयमश्वादेश्चौरदुष्टादिपीडनम्।
गुल्मपीडा शिरोरोगः केतोः सूक्ष्मगते कुजे।। 69।।
विनाशः स्त्रीगुरूणां च दुष्टस्त्रीसंगमाल्लघुः।
वमनं रुधिरं पित्तं केतोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।। 70।।
रिपोर्विरोधः सम्पत्तिः सहसा राजवैभवम्।
पशुक्षेत्रविनाशार्तिः केतोः सूक्ष्मगते गुरौ।। 71।।

केतु प्रत्यन्तर में चन्द्र की सूक्ष्म दशा हो तो नौकरों की वृद्धि, युद्ध में लाभ व विजय, उत्तम कीर्ति होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो वाहन या अश्व आदि से गिरने का भय, चोर या दुष्टों बदमाशों से पीड़ा, गुल्मरोग, सिर में व्याधि होती है।

राहु की सूक्ष्मदशा में स्त्री व गुरु की हानि, दुष्ट स्त्री के कारण बदनामी, वमन, खूनीपित्त आदि होता है। गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रुओं से विरोध, सम्पत्ति, राजसी ठाटबाट, पशु व क्षेत्रादि की हानि होती है।

मृषापीड़ाभवेत्क्षुद्रसुखोत्पत्तिश्चलङ्घनम्।

स्त्रीविरोधः सत्यहानिः केतोः सूक्ष्मगते शनौ।। 72।।

नानाविधजनाप्तिश्च विप्रयोगोऽरिपीडनम्।

अर्थसम्पत्समृद्धिश्च केतोः सूक्ष्मगते बुधे।। 73।।

केतु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो मिथ्या (बनावटी) कष्ट, साधारण सुख, आहार–विहार में विघ्न, स्त्रियों से विरोध, सत्याचरण की कमी होती है।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो अनेक प्रकार से लोगों का सहयोग, वियोग, शत्रुओं को पीड़ा, धन–सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में सूक्ष्मदशा :–

शत्रुहानिर्महत्सौख्यं शंकरालयनिर्मितिः।

तडागकूपनिर्माणं निजसूक्ष्मगते भृगौ।। 74।।

उरस्तापो भ्रमश्चैव गतागतविचेष्टितम्।

क्वचिल्लाभः क्वचिद् हानि भृगोः सूक्ष्मगते रवौ।। 75।।

आरोग्यं धनसम्पत्तिः कार्यलाभोगतागतैः।

बुदिधविद्याविवृद्धिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते विधौ।। 76।।

शुक्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रु हानि, बहुत सुख, शंकर भगवान् का मन्दिर निर्माण, तड़ाग कूपादि सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो हृदय में सन्ताप, बुद्धि भ्रम, व्यर्थ आना जाना, कहीं लाभ, कहीं हानि होती है। चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो स्वास्थ्य, धन–सम्पत्ति का लाभ, भ्रमण द्वारा कार्य में लाभ, बुद्धि विद्या की वृद्धि होती है।

जडत्वं रिपुवैषम्यं देहभ्रंशो महद्भयम्।

व्याधिदुःखसमुत्पत्तिर्भृगोः सूक्ष्मगते कुजे।। 77।।

राज्याग्निसर्पजा भीतिर्बन्धुनाशो गुरुव्यथा।

स्थानच्युतिर्महाभीतिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यहौ।। 78।।

सर्वत्रकार्यलाभश्च क्षेत्रार्थविभवोन्नतिः ।

वणिग्वृत्तेर्महालब्धिर्भृगोः सूक्ष्मगते गुरौ ।। 79 ।।

शुक्र प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो जड़ता, शत्रुओं से विरोध, शरीर घात, महान् भय, रोग, दुःख का उदय होता है ।

राहु की सूक्ष्म दशा हो तो राज्य, अग्नि या सर्प से पीड़ा, बन्धुओं की हानि, बड़ी व्यथा, स्थान परिवर्तन, महान् भय होता है ।

गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो सर्वत्र कार्यों में लाभ, धन–सम्पत्ति की वृद्धि, व्यापार से लाभ होता है ।

शत्रुपीडा महद्दुःखं चतुष्पादविनाशनम् ।

स्वगोत्रगुरुहानिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते शनौ ।। 80 ।।

बान्धवादिषु सम्पत्तिर्व्यवहारो धनोन्नतिः ।

पुत्रदारादितः सौख्यं भृगोः सूक्ष्मगते बुधे ।। 81 ।।

अग्निरोगो महापीडा मुखनेत्रशिरोव्यथा ।

संचितार्थात्मनः पीडा भृगोः सूक्ष्मगते ध्वजे ।। 82 ।।

यदि शुक्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रुओं से पीड़ा, महान् दुःख, चौपाए धन की हानि, अपने कुल के बड़े पुरुष की हानि होती है ।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो बन्धु–बान्धवों से सम्पत्ति व व्यवहार (मुकदमा या आपसी बातचीत) से धन वृद्धि, पुत्र व स्त्री का सुख होता है ।

यदि केतु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि रोग (पाचन विकार, अधिक भूख) या अग्नि की चपेट के कारण रोगोत्पत्ति, मुख, आँखों व सिर में पीड़ा, संचित धन के संग्रह में विघ्न, तज्जन्य मानसिक पीड़ा आदि होती है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
सूक्ष्मदशाफलाध्यायश्चतुःषष्टितमः ।। 64 ।।

65

।। अथ प्राणदशाफलाध्यायः ।।

प्राणदशा साधन :–

पृथक खगदशावर्षैर्हन्यात् सूक्ष्मदशामितिम् ।

ह्रते सर्वदशावर्षैर्ज्ञेया प्राणदशामितिः ।। 1 ।।

पूर्वोक्त नियमानुसार ही प्रत्येक ग्रह की सूक्ष्म दशा की अवधि को ग्रह के विंशोत्तरी आदि ग्रह दशा वर्षों से गुणा करके 120 का (या अन्य दशा प्रकार में सम्पूर्ण दशा वर्षों से) भाग देने पर 'लब्धि प्राणदशा' की अवधि होती है।

उदाहरणार्थ सूर्य की सूक्ष्म दशा 16 घड़ी 12 पल वा 972 पलों को 6 से गुणा करके 120 का भाग देने से 5832÷120=48 पल 36 विपल या 19 मिनट 27 सेकेण्ड सूर्य की सूक्ष्मदशा में सूर्य की प्राण दशा होती है। इसी तरह चन्द्रादि के दशा वर्ष 10.7.18 आदि से 972 पल को बारी–बारी से गुणा करके 120 का भाग देने से सूर्य सूक्ष्म दशा में चन्द्रादि की प्राणदशा आ जाएगी।

सूर्य सूक्ष्म दशा में प्राणदशा :–

पौंश्चल्यं विषजा बाधा चौराग्निनृपजं भयम् ।

कष्टं सूक्ष्मदशा काले रवौ प्राणदशां गते ।। 2 ।।

सुखं भोजनसम्पत्तिः संस्कारो नृपवैभवम् ।

उदारादिकृपाभिश्च रवै प्राणगते विधौ ।। 3 ।।

भूपोपद्रवमन्यार्थेद्रव्यनाशोमहद्भयम् ।

महत्यपचयप्राप्ती रवेः प्राणगते कुजे ।। 4 ।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो परस्त्री लोलुपता, विषबाधा, चोरादि से भय व कष्ट आदि फल होते हैं।

चन्द्र की प्राणदशा हो तो सुख, भोजन सम्पत्ति, राजसी वैभव, उदार लोगों की कृपा आदि होती है। मंगल की प्राणदशा में औरों के कारण राजकीय उपद्रव, धननाश, महान् भय, अधिक हानि होती है।

अन्नोद्भवा महापीडा विषोत्पत्तिर्विशेषतः ।

अर्थाग्निराजभिः क्लेशो रवेः प्राणगतेऽप्यहौ ।। 5 ।।

नानाविद्यार्थसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः ।
नृपविप्राश्रये सूक्ष्मे रवेः प्राणगते गुरौ ।। 6 ।।
बन्धनं प्राणनाशश्च चित्तोद्वेगस्तथैव च ।
बहुबाधा महाहानी रवेः प्राणगतेशनौ ।। 7 ।।
राजान्नभोगः सततं राजलांछनतत्पदम् ।
आत्मासन्तर्पयेदेवं रवेः प्राणगते बुधे ।। 8 ।।

यदि सूर्य की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राण दशा हो तो भोजन के दोष से पीड़ा, विषसंक्रमण, धन व अग्नि व राजा से क्लेश होता है ।

गुरु की प्राणदशा में अनेक विद्या व धन सम्पति का लाभ, कार्य में लाभ, राजा या ब्राह्मण के स्थान पर जाने से लाभ के योग होते हैं ।

शनि की प्राणदशा में बन्धन, प्राणनाश, मन में उद्वेग, अनेक बाधाएँ, बड़ी हानि होती है । बुध की प्राणदशा हो तो राजसी भोजन, राजा द्वारा उपाधि या राजसी चिन्ह धारण करना एवं मन में बहुत सन्तोष होता है ।

अन्योन्यं कलहश्चैव वसुहानिः पराजयः ।
गुरुस्त्रीबन्धुवर्गैश्च सूर्यप्राणगते ध्वजे ।। 9 ।।
राजपूजाधनाधिक्यं स्त्रीपुत्रादि भवं सुखम् ।
अन्नपानादि भोगादि सूर्यप्राणगते भृगौ ।। 10 ।।

यदि सूर्य की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो परस्पर कलह, धन की हानि, पराजय, गुरुजनों, स्त्री व बन्धुओं से नीचा देखना आदि फल होते हैं ।

शुक्र की प्राणदशा हो तो राजा द्वारा, सत्कार, धन की अधिकता, स्त्री–पुत्रादि का सुख, खाने–पीने की मौज रहती है ।

चन्द्र सूक्ष्म दशा में प्राणदशा :–

स्त्रीपुत्रादि सुखं द्रव्यं लभते नूतनाम्बरम् ।
योगसिद्धिं समाधिं च निजप्राणगते विधौ ।। 11 ।।
क्षयं कुष्ठं बन्धुनाशं रक्तस्रावान्महद्भयम् ।
भूतावेशादि जायेत विधोः प्राणगते कुजे ।। 12 ।।
सर्पभीति विशेषेण भूतोपद्रवान् सदा ।
दृष्टिक्षोभो मतिभ्रंशो विधोः प्राणगते कुजे ।। 13 ।।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की ही प्राणदशा हो तो स्त्री–पुत्रादि का सुख, नूतन वस्त्रों की प्राप्ति, साधना में सफलता व मन का नियन्त्रण आदि होता है ।

मंगल की प्राणदशा हो तो क्षय, त्वचारोग, कुष्ठादि, बन्धुओं की हानि, रक्तस्राव का भय, भूत–पिशाचादि मानवेतर प्राणियों का प्रकोप होता है ।

राहु की प्राणदशा हो तो विशेषतया सर्पभय, विचित्र प्रकार के उपद्रव, दृष्टि में विकार, बुद्धि में भ्रम होता है ।

धर्मवृद्धिःक्षमाप्राप्तिर्दैवब्राह्मणपूजनम् ।
सौभाग्यं प्रियदृष्टिश्च चन्द्रप्राणगते गुरौ ।। 14 ।।
सहसादेहपतनशत्रूपद्रववेदना ।
अन्धत्वं च धनप्राप्तिश्चन्द्रप्राणगते शनौ ।। 15 ।।
चामरच्छत्र सम्प्राप्ती राज्यलाभो नृपात्ततः ।
समत्वं सर्वभूतेषु चन्द्रप्राणगते बुधे ।। 16 ।।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो धर्मवृद्धि, क्षमा प्राप्ति, देवता व ब्राह्मणों से सत्कार, सौभाग्य, प्रियजनों की अनुकूलता होती है ।

शनि की प्राणदशा हो तो अचानक शरीर कष्ट, शत्रुओं द्वारा उपद्रव, वेदना, अन्धापन, धन लाभ होता है ।

बुध की प्राणदशा हो तो चँवर छत्रादि की प्राप्ति अर्थात् राजसी ठाट–बाट, राज्य लाभ, राजा से लाभ, सब जीवों के प्रति उदारता व समदृष्टि होती है ।

शस्त्राग्निरिपुजापीडा विषाग्निकुक्षिरोगिता ।
पुत्रदारवियोगश्च चन्द्रप्राणगते ध्वजे ।। 17 ।।
पुत्रमित्रकलत्राप्तिर्विदेशाच्च धनागमः ।
सुखसम्पत्तिरर्थश्च चन्द्रप्राणगते भृगौ ।। 18 ।।
क्रूरता कोपवृद्धिश्च प्राणहानिर्मनोव्यथा ।
देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रप्राणगते रवौ ।। 19 ।।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो शस्त्राग्नि व शत्रु से पीड़ा, विषभय, पेट की बीमारी, स्त्री व पुत्रादि से वियोग होता है ।

शुक्र की प्राणदशा हो तो पुत्र, मित्र, स्त्री आदि की प्राप्ति, विदेश से धन लाभ, सुख सम्पत्ति, आदि फल होते हैं ।

मंगल सूक्ष्म दशा में प्राणदशा :–

कलहो रिपुभिर्बन्धः रक्तपित्तादिरोगभीः ।
निजसूक्ष्मदशामध्ये कुजेप्राणगते फलम् ।। 20 ।।

विच्युतः सुतदारैश्च बन्धूपद्रवपीडितः ।

प्राणत्यागोविषेणैव भौमप्राणगतेऽप्यहौ ।। 21 ।।

देवार्चनपरः श्रीमान् मन्त्रानुष्ठानतत्परः ।

पुत्रपौत्रसुखावाप्तिर्भौमप्राणगते गुरौ ।। 22 ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो कलह, शत्रुओं द्वारा बन्धन, रक्तपित्तादि रोग का भय होता है।

राहु की प्राणदशा में स्त्री–पुत्रादि से वियोग, बन्धुओं से उपद्रव होने से पीड़ा, विष द्वारा प्राण त्याग होता है।

बृहस्पति की प्राणदशा हो तो देवतादि का पूजन, श्री वृद्धि, मन्त्रों का अनुष्ठान, पुत्रपौत्रादि का सुख होता है।

अग्निबाधाभवेन्मृत्युरर्थनाशः पदच्युतिः ।

बन्धुभिर्बन्धुतावाप्तिर्भौमप्राणगते शनौ ।। 23 ।।

दिव्याम्बरसमुत्पत्तिर्दिव्याभरणभूषितः ।

दिव्यांगनायाः सम्प्राप्तिर्भौमप्राणगते बुधे ।। 24 ।।

पतनोत्पातपीडा च नेत्रक्षोभो महद्भयम् ।

भुजङ्गाद् द्रव्यहानिश्च भौमप्राणगते ध्वजे ।।25 ।।

यदि मंगल की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो अग्निभय, मृत्यु, धन की हानि, पद की हानि, भाई–बन्धुओं से परस्पर प्रेम स्नेह आदि होता है।

यदि बुध की प्राणदशा हो तो उत्तम वस्त्रादि की प्राप्ति, उत्तम आभूषण की प्राप्ति, दिव्य व उत्तम स्त्री का साथ मिलता है।

केतु की प्राणदशा हो तो जीवन में उत्थान–पतन या गिरने का भय, नेत्र में विकार या चोट, महान् भय, साँप आदि के कारण धन–सम्पत्ति की हानि होती है।

धनधान्यादि सम्पत्तिर्लोकपूजा सुखागमा ।

नानाभोगैर्भवेद्भोगी भौमप्राणगते भृगौ ।। 26 ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो मनुष्य को धनधान्य की वृद्धि, लोगों द्वारा सम्मान, सुख–प्राप्ति और अनेक प्रकार के भोग मिलते हैं!

ज्वरोन्मादः क्षयोऽर्थस्य राजविस्नेहसम्भवः ।

दीर्घरोगी दरिद्री स्याद् भौमप्राणगते रवौ ।। 27 ।।

सूर्य की प्राणदशा हो तो तीव्र बुखार के कारण बड़बड़ाहट, धन हानि, राजा का कोप, दरिद्रता व लम्बे समय तक चलने वाला रोग होता है ।

भोजनादिसुखप्राप्तिर्वस्त्राभरणजं सुखम् ।
शीतोष्णव्याधिपीड़ा च भौमप्राणगते विधौ ।। 28 ।।

चन्द्रमा की प्राण दशा हो तो खान पान का खूब सुख, वस्त्रामरणादि भौतिक सुखों की प्राप्ति, गर्मी सर्दी से होने वाले रोग उत्पन्न होते हैं ।

राहु सूक्ष्म दशा में प्राणदशा फल :–

अन्नाशने विरक्तश्च विषभीतिस्तथैव च ।
साहसादधननाशश्च राहौ प्राणगते भवेत् ।। 29 ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में यदि राहु की ही प्राण दशा हो तो भोजन के प्रति अरुचि, विषभय और अति साहस से धन नाश होता है ।

अङ्गसौख्यंविनिर्भीतिवाहनादेश्चसङ्गता ।
नीचैः कलहसम्प्राप्तिः राहोः प्राणगते गुरौ ।। 30 ।।

यदि गुरु की प्राण दशा हो तो शरीर का सुख, सर्वत्र निडरता वाहनादि सम्पत्ति का सुख, लेकिन नीच लोगों से कलह होती हैं ।

गृहदाहः शरीरे रुङ्नीचैरपहृतं धनम् ।
तथा बन्धनसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते शनौ ।। 31 ।।

यदि शनि की प्राणदशा हो तो घर का नाश, शरीर में रोगोत्पत्ति, नीच लोगों के द्वारा धन की हानि और बन्धनादि कुफल होते हैं ।

गुरूपदेशविभवोगुरुसत्कारवदर्धनम् ।
गुणवांच्छीलवांश्चापि राहोः प्राणगते ।। 32 ।।

यदि बुध की प्राणदशा हो तो गुरुओं के उपदेश से सुख, गुरुजनों का सम्मान या गुरुजनों द्वारा स्वयं का सम्मान, गुणवृद्धि और अच्छा आचरण होता है ।

स्त्रीपुत्रादिविरोधश्चगृहान्निष्क्रमणादपि ।
साहसात्कार्यहानिश्च राहोः प्राणगते ध्वजे ।। 33 ।।

यदि केतु की प्राणदशा हो तो स्त्री–पुत्रादि परिवार जनों से विरोध, घर छोड़ने की स्थिति और अति साहस से काम में हानि होती है ।

छत्रवाहनसम्पत्तिः सर्वार्थफलसंचयः ।
शिवार्चनगृहारम्भो राहोः प्राणगते भृगौ ।। 34 ।।

यदि शुक्र की प्राणदशा हो तो अधिकार प्राप्ति, वाहन सुख, राजसी टाठ–बाट, सब कार्यों में सफलता, शिव–पूजा के अवसर, नूतन गृह निर्माण का प्रारम्भ होता है।

अर्शादिरोगभीतिश्चराज्योपद्रवसम्भवः।
चतुष्पादादिहानिश्च राहोः प्राणगते रवौ।। 35।।

यदि सूर्य की प्राणदशा हो तो बवासीर आदि गुदा द्वार के रोग, राज्य की ओर से उपद्रव की सम्भावना, पशु वाहनादि की हानि होती है।

सौमनस्यं च सद्बुद्धिः सत्कारो गुरुदर्शनम्।
पापाद्भीतिर्मनःसौख्यं राहोः प्राणगते विधौ।। 36।।

यदि चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो मन में प्रसन्नता, उदारता, बुद्धि का उदय, संसार में आदर, गुरुजनों का दर्शन, पाप कार्यो से भय और मन में सुख–सन्तोष होता है।

चाण्डालाग्निवशाद्भीतिः स्वपदच्युतिरापदः।
मलिनः श्वादिवृत्तिश्च राहोः प्राणगते कुजे।। 37।।

यदि मंगल की प्राणदशा हो तो नीच लोगों व अग्नि आदि से भय, अपने पद की हानि, विपत्ति, मलिनता, नीच आचरण आदि कुफल होते हैं।

गुरु सूक्ष्म दशा में प्राणदशा फल :–

हर्षागमो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं निजप्राणगते गुरौ।। 38।।

बृहस्पति की सूक्ष्म दशा में उसी की प्राणादशा हो तो खुशी के अवसर, धन–वृद्धि, यज्ञ–हवन आदि शुभ कार्यो की सम्पन्नता, शिव पूजा व अधिकारवृद्धिपूर्वक वाहन का लाभ होता है।

व्रतहानिर्विषादश्च विदेशे धननाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरोः प्राणगते शनौ।। 39।।

शनि की प्राणदशा हो तो वचन पालन करने में कठिनाई, मन में खिन्नता, विदेश में धनहानि और बन्धु–बान्धवों से वैर–विरोध होता है।

विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च लोके पूजा धनागमः।
स्त्रीपुत्रादि सुखप्राप्तिर्गुरोः प्राणगते बुधे।। 40।।

बुध की प्राण दशा हो तो विद्या–बुद्धि की वृद्धि, लोगों द्वारा सत्कार, धन लाभ, स्त्री–पुत्रादि का सुख होता है।

ज्ञानं विभव पाण्डित्यं शास्त्रज्ञानं शिवार्चनम् ।

अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः प्राणगते ध्वजे । । 41 । ।

केतु की प्राण दशा हो तो ज्ञान वृद्धि, वैभव का लाभ, पाण्डित्य, शास्त्र का ज्ञान, शिव–भक्ति, हवनादि शुभ कार्य, गुरु भक्ति होती है ।

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः ।

पुत्रदारादिजं सौख्यं गुरोः प्राणगते भृगौ । । 42 । ।

शुक्र की प्राणदशा हो तो रोग नाश, सुख, भोग प्राप्ति, धन धान्य का लाभ और स्त्री पुत्रादि का सुख होता है ।

वात–पित्त प्रकोपं च श्लेषोद्रेकं तु दारुणम् ।

रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः प्राणगते रवौ । । 43 । ।

सूर्य की प्राणदशा हो तो शरीर में वात–पित्त का विकार, कफ की वृद्धि और शरीर में भीतरी कमजोरी पैदा करने वाला रोग होता है ।

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः ।

नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरौ प्राणगते विधौ । । 44 । ।

यदि चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो राजसी सुख–भोगों की प्राप्ति, वैभव–वृद्धि, पुत्र–प्राप्ति लेकिन आँख व पेट में पीड़ा होती है ।

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं वातिनिग्रहः ।

देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरोः प्राणगते कुजे । । 45 । ।

मंगल की प्राणदशा हो तो स्त्री द्वारा दोष की उत्पत्ति, बन्धन, विषमय, अत्यधिक बाधाएँ, देशान्तर में गमन, और बुद्धि में भ्रम होता है ।

व्याधिभिः परिभूतः स्याच्चौरैरपहृतं धनम् ।

सर्पवृश्चिकभीतिश्च गुरौ प्राणगतेप्यहौ । । 46 । ।

यदि राहु की प्राणदशा हो तो अनेक रोगों से पीड़ा, चोरों द्वारा धन–हानि, साँप व बिच्छू आदि से भय होता है ।

शनि–सूक्ष्म दशा में प्राणदशा फल :–

ज्वरेण ज्वलिता कान्तिः कुष्ठरोगोदरादिरुक् ।

जलाग्निकृतमृत्युः स्यान्निजप्राणगते शनौ । । 47 । ।

धनं धान्यं च मांगल्यं व्यवहाराभिपूजनम् ।

देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते बुधे । । 48 । ।

मृत्युवेदनदुःखं च भूतोपद्रवसम्भवः ।

परदाराभिभूतत्वं शनेः प्राणगते ध्वजे । । 49 । ।

शनि की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राण दशा हो तो तीव्र बुखार, त्वचा व पेट के रोग एवं पानी या अग्नि के कारण मृत्यु भय होता है।

बुध की प्राणदशा हो तो धन–धान्य की प्राप्ति, सर्वत्र मंगल, लोक–व्यवाहर में लाभ और देव–ब्राह्मणों में भक्ति होती है।

केतु की प्राणदशा हो तो मृत्युतुल्य कष्ट, विचित्र अप्राकृतिक उपद्रव और दूसरे की स्त्री द्वारा अपमान होता है।

पुत्रार्थविभवसौख्यं क्षितिपालादितः सुखम्।

अग्निहोत्रं विवाहश्च शनेः प्राणगते भृगौ।। 50।।

अक्षिपीडाशिरोव्याधिः सर्पशत्रुभयं भवेद्।

अर्थहानिर्महाक्लेशः शनेः प्राणगते रवौ।। 51।।

आरोग्यं पुत्रलाभश्च शान्तिपौष्टिकवर्धनम्।

देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते विधौ।। 52।।

शुक्र की प्राणदशा हो तो पुत्र–प्राप्ति या पुत्र की उन्नति, धन वृद्धि, राज–पक्ष से सुख हवनादि शुभ कार्य व विवाह होता है।

सूर्य की प्राणदशा हो तो नेत्र व शिर में रोग, सर्प या शत्रु से भय, धनहानि और अत्यधिक क्लेश होता है।

चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो स्वास्थ्य वृद्धि, पुत्र–प्राप्ति, सुख शान्ति, पुष्टि और देव ब्राह्मणों में भक्ति होती है।

गुल्मरोगः शत्रुभीतिर्मृगयाप्राणनाशनम्।

सर्पाग्निविषतो भीतिः शनेः प्राणगते कुजे।। 53।।

देशत्यागो नृपाद्भीतिर्मोहनं विषभक्षणम्।

वातपित्तकृता पीडा शनेः प्राणगतेऽप्यहौ।। 54।।

सेनापत्यं भूमिलाभः सङ्गमाः स्वजनैः सह।

गौरवं नृपसम्मानं शनेः प्राणगते गुरौ।। 55।।

शनि की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो जिगर–तिल्ली का रोग, शत्रुभय, शिकार के प्रसंग में मृत्युयोग, सर्प, अग्नि व विष से भय होता है।

यदि राहु की प्राणदशा हो तो स्थान परित्याग, राज पक्ष से भय, बेहोशी, विष भक्षण व वात–पित्त की पीड़ा होती है।

वृहस्पति की प्राणदशा हो तो सेनापतित्व, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, अपने लोगों से मिलन, बड़प्पन और राजसम्मान मिलता है।

बुध सूक्ष्म दशा में प्राण दशा फल :–

आरोग्यं सुखसम्पत्तिर्धर्मकर्मादि साधनम्
समत्वं सर्वभूतेषु निजप्राणगते बुधे ।। 56 ।।
वह्नितस्करतो भीतिः परमाधिविषोद्भवः ।
देहान्तकरणं दुःखं बुधप्राणगते ध्वजे ।। 57 ।।
प्रभुत्वं धनसम्पतिः कीर्तिर्धर्मः शिवार्चना ।
पुत्रदारादिके सौख्यं बुधप्राणगते भृगौ ।। 58 ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में यदि बुध की प्राणदशा हो तो शरीर सुख, धन–सम्पत्ति, धर्म कर्म की सफलता व सभी प्राणियों में समान बुद्धि होती है। यदि केतु की प्राणदशा हो तो अग्नि व चोर से भय, तीव्र मानसिक रोग, आघात, विष संक्रमण और मृत्यु का कष्ट होता है।

यदि शुक्र की प्राणदशा हो तो सामर्थ्य में वृद्धि, धन–सम्पत्ति, कीर्ति, शिव पूजन और स्त्री–पुत्रादि परिवार जनों का सुख होता है।

अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादो बान्धवानां रतिः स्त्रियाः ।
प्राप्यते स्तेयसम्पतिर्बुधप्राणगते रवौ ।। 59 ।।
स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो धनागमः ।
लभते सर्वतः सौख्यं बुधप्राणगते विधौ ।। 60 ।।
पतितः कुक्षिरोगी च दन्तनेत्रादिना व्यथा ।
अर्शार्तिः प्राणसन्देहो बुधे प्राणगते कुजे ।। 61 ।।

बुध सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो मानसिक कष्ट, ज्वर, अधिक भावावेश या उन्माद, स्त्री व बन्धु–बान्धवों का प्रेम व चोरों से धन लाभ होता है।

चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो स्त्री–प्राप्ति, धन सम्पत्ति की प्राप्ति, कन्या का जन्म और सर्वत्र सुख मिलता है।

मंगल की प्राणदशा हो तो आचरण से पतन, पेट में रोग, नेत्र व दाँतों में पीड़ा, गुदा द्वार के रोग और मृत्यु भय होता है।

वस्त्राभरणसम्पत्तिर्वियोगो विप्रवैरिता ।
सन्निपातोद्भवं दुःखं बुधे प्राणगते ऽप्यहौ ।। 62 ।।
गुरुत्वं धनसम्पतिर्विद्या सद्गुणसंग्रहः ।
व्यवसायेन संल्लाभो बुधे प्राणगते गुरौ ।। 63 ।।

चौर्येण निधनप्राप्तिर्विधनत्वं दरिद्रता ।

याचकत्वं विशेषेण बुधे प्राणगते शनौ ।। 64 ।।

राहु की प्राणदशा हो तो वस्त्राभरणों की प्राप्ति, सम्पत्ति वृद्धि, अपने लोगों से वियोग, ब्राह्मणों से वैर और सन्निपात अर्थात् तीव्र घातक ज्वर से पीड़ा होती है ।

गुरु की प्राणदशा हो तो गौरव में वृद्धि, धन सम्पति व विद्या की प्राप्ति, गुणों में निखार, व्यवसाय से लाभ होता है ।

शनि की प्राणदशा हो तो चोरों से मृत्यु भय, धन की बड़ी हानि दरिद्रता व भिक्षुक वृत्ति होती है ।

केतु सूक्ष्म दशा में प्राण दशा फल :–

अश्वपातेनघातश्च शत्रुतः कलहागमः ।

निर्विचारवधोत्पत्तिर्निजप्राणगते ध्वजे ।। 65 ।।

क्षेत्रलाभो वैरिनाशो हयलाभो मनः सुखम् ।

पशुक्षेत्रधनाप्तिश्च केतोः प्राणगते भृगौ ।। 66 ।।

स्तेयाग्निरिपुभीतिश्च धनहानिर्मनोव्यथा ।

प्राणान्तकरणं कष्टं केतोः प्राणगते रवौ ।। 67 ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो वाहन से गिरने का भय, शत्रुओं से कलह व अनजाने में या सहसा हत्या करने का पाप लगता है ।

शुक्र की प्राणदशा हो तो धन–सम्पत्ति का लाभ, शत्रुओं का नाश, वाहन की प्राप्ति, मन में सन्तोष, व भूमि, पशु, व धन लाभ होता है ।

सूर्य की प्राण दशा हो तो चोर, अग्नि व शत्रु से भय, धन की हानि, मानसिक पीड़ा व मृत्यु तुल्य कष्ट होता है ।

देवद्विजगुरोः पूजा दीर्घमात्रा धनं सुखम् ।

कर्णे वा लोचने रोगः केतोः प्राणगते विधौ ।। 68 ।।

पित्तरोगोनसावृद्धिर्विभ्रमः सन्निपातजः ।

स्वबन्धुजनविद्वेषः केतोः प्राणगते कुजे ।। 69 ।।

विरोधः स्त्रीसुताद्यैश्च गृहान्निष्क्रमणं भवेत् ।

स्वसाहसात्कार्यहानिः केतोः प्राणगतेऽप्यहौ ।। 70 ।।

चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो देवता व ब्राह्मणों में भक्ति, उनसे सत्कार प्राप्ति, दूर देश की यात्रा, धन व सुख लाभ, किन्तु आँख या कान में रोग होता है ।

मंगल की प्राणदशा हो तो पित्त रोग, नाक की हड्डी बढ़ना, बुखार के कारण मनोरोग व अपने लोगों से वैर होता है।

राहु की प्राणदशा हो तो अपनी स्त्री व पुत्रों से विरोध, घर का त्याग, दुख, साहस के कारण कार्य हानि होती है।

शस्त्रव्रणैर्महारोगोह्वत्पीडादिसमुद्भवः ।

सुतदारवियोगश्च केतोः प्राणगते गुरौ ।। 71 ।।

मतिविभ्रममतीक्ष्णत्वं क्रूरकर्मरतिः सदा ।

व्यसनाद् बन्धनं दुःखं केतो प्राणगते शनौ ।। 72 ।।

कुसुमं शयनं भूषा लेपनं भोजनादिकम् ।

सौख्यं सर्वांगभोग्यं च केतोः प्राणगते बुधे ।। 73 ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में बृहस्पति की प्राणदशा हो तो हथियार की चोट, बड़ा रोग, ह्रदय रोग और स्त्री पुत्रादि से वियोग होता है।

शनि की प्राणदशा हो तो बुद्धि भ्रम अत्यधिक विनम्रता या बुद्धि की कमजोरी, क्रूर कार्यो के प्रति आकर्षण और कई प्रकार की मुसीबतें होती हैं।

यदि बुध की प्राणदशा हो तो उत्तम वस्त्र, उत्तम आभूषण, उत्तम शैय्या व उत्तम सुगन्ध, उत्तम भोजन व सब प्रकार का शारीरिक सुख होता है।

शुक्र सूक्ष्म दशा में प्राण दशा :–

ज्ञानमीश्वरभक्तिश्च सन्तोषश्च धनागमः ।

पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च निजप्राणगते भृगौ ।। 74 ।।

लोकप्रकाशकीर्तिश्च सुतसौख्यविवर्जितः ।

उष्णादिरोगजं दुःखं शुक्रप्राणगते रवौ ।। 75 ।।

देवार्चने कर्मरतिर्मन्त्रतोषगतत्परः ।

धनसौभाग्यसम्पत्तिः शुक्रप्राणगते विधौ ।।76 ।।

शुक्र सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो ज्ञान, ईश्वरभक्ति, सन्तोष, धनलाभ, पुत्र पौत्रादि की वृद्धि व उन्नति होती है।

सूर्य की प्राणदशा हो तो संसार में बहुत कीर्ति, पुत्र सुख से रहित, गर्मी का रोग तथा उससे दुःख होता है।

चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो देव पूजन में रति कार्य में अधिक लीनता, योजना (मन्त्रादि) की सिद्धि के लिए तत्पर, धन व सौभाग्य की वृद्धि होती है।

ज्वरो मसूरिका स्फोटकण्डूचिपिटककादिकाः।
देवब्राह्मणपूजा च शुक्रप्राणगते कुजे।।77।।
नित्यं शत्रुकृता पीडा नेत्रकुक्षिरुजादयः।
विरोधः सुहृदां पीडा शुक्रप्राणगतेऽप्यहौ।।78।।
आयु रोग्यमैश्वर्यं पुत्रस्त्रीधनवैभवम्।
छत्रवाहनसम्प्राप्तिः शुक्रप्राणगते गुरौ।।79।।

शुक्र सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो बुखार, खसरा रोग, फोड़े फुंसी आदि त्वचाविकार, देव ब्राह्मणों का सत्कार होता है।

राहु की प्राणदशा हो तो शत्रुओं में पीड़ा, आँख व पेट में रोग, मित्रों से विरोध होता है।

गुरु की प्राणदशा हो तो आयु, आरोग्य व ऐश्वर्य की वृद्धि, पुत्र व स्त्री आदि व धन का सुख, अधिकार व वाहनादि की प्राप्ति होती है।

रजोपद्रवजा भीतिः सुखहानिर्महारुजः।
नीचैः सह विवादश्च भृगोः प्राणगते शनौ।।80।।
सन्तोषो राजसम्मानं नानादिग्भूमिसम्पदः।
नित्यमुत्साहवृद्धिश्च शुक्रप्राणगते बुधे।।81।।
जीवितात्मयशोहानिर्धनधान्यपरिक्षयः।
त्यागभोगधनानिस्युः शुक्रप्राणगते ध्वजे।।82।।
एवमृक्षदशानां हि पंचभेदात्मकं फलम्।
फलानि कथितान्यत्र संक्षेपादेव तेऽग्रतः।।83।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो राजा की ओर से उपद्रव, भय, सुख में कमी, बड़ा रोग, नीच जनों के साथ विवाद होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा हो तो मन में सन्तोष, राजसम्मान, अनेक स्थानों पर भूमि व सम्पत्ति की वृद्धि, मन में उत्साह होता है।

केतु की प्राणदशा हो तो जीवन व यश की हानि, धन धान्य की हानि, जीवन यापन मात्र के लायक धन शेष रहता है।

इस प्रकार दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म दशा व प्राणदशा इन पाँचों भेदों के आधार पर संक्षिप्त दशा फल मैंने तुम्हारे समक्ष कहा है।

इन सब दशा फलों से ज्ञात होता है कि पराशर ऋषि ने विंशोत्तरी दशा को सर्वाधिक उपयोगी व व्यापक माना है। विंशोत्तरी दशा वास्तव में अद्वितीय, अनुपम दशा प्रकार है। सभी दशा फलों में दशेश, व अन्तर्दशेश की भाव राशि स्थिति को देखें। पुनः दशेश व अन्तर्दशेश का परस्पर सम्बन्ध देखें। प्रत्यन्तर फल में दशेश अन्तर्दशेश व प्रत्यन्तर्दशेश आदि का भी सम्बन्ध देखें। महादशेश सर्वत्र मुख्य होता है। यह ध्यान रखें।

सामान्यतः प्रत्यन्तर तक की सूक्ष्मता को देखना ही विचारणीय है, तब प्राणदशा की तो बात ही क्या ? दशा, अन्तर्दशा, गोचर व प्रत्यन्तर, बस इतना देखना ही व्यावहारिक व उपयोगी है। एक दशा में 9 अन्तर्दशाएँ, उन नौ अन्तर्दशाओं में 81 प्रत्यन्तर दशाएँ, सभी प्रत्यन्तरों में इतनी ही सूक्ष्म दशाएँ व एक सूक्ष्मदशा में इतनी ही प्राणदशाएँ बनाने पर जन्मपत्र का कलेवर व बनाने वाले ज्योतिषी का दबदबा बेशक बढ़े, लेकिन इतने गहरे पैठकर भी विशेष उपलब्धि होने वाली नहीं है, यह हमारा स्पष्ट मत है। महर्षि स्वयं भी इस बात को समझते थे। इसी कारण उन्होंने प्रत्यन्तरादिकों का सम्पूर्ण फल नहीं कहा है। सूक्ष्म दशा घण्टा मिनटात्मक व प्राणदशा तो प्रायः मिनटात्मक होती है। जब घण्टे मिनटों पर दशा बदलेगी, तब मनुष्य का प्रयत्न, विचार, परिस्थितियाँ, गोचर (प्रामाणिक फल कथन विधि), नक्षत्रादि क्या सब अकारथ हो जाएँगे ? केवल सूक्ष्म दशा भेद ही सर्वसिद्धिदायक होंगे, यह बात खूब विचार करने पर भी गले नहीं उतरती तथा व्यवहार में इसे हम पंगु ही पाते हैं।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
प्राणदशाफलाध्यायः पंचषष्टितमः ।। 65 ।।

66

।।अथ कालचक्रान्तर्दशाध्यायः ।।

जगद्धिताय प्रोक्तानि पुरा यानि पुरारिणा ।
तानि चक्रान्तर्दशाफलानि कथयाम्यहम् ।।1।।

भगवान् शंकर ने काल चक्रदशा कही है, उस दशा प्रकार में अन्तर्दशा का फल अब मैं (पराशर) कहता हूँ।

पहले काल चक्र दशा में अन्तर्दशा साधन कह चुके हैं। उदाहरण द्वारा विषय को स्पष्ट किया जा चुका है। पुनश्च 100.85.83.86 वर्ष मेषादि राशियों के अंशों में (काल चक्रांश) आयु वर्ष या सम्पूर्ण दशा वर्ष क्रमशः होते

हैं। सिंह व धनु राशि से आगे 100. 85. 83.86 वर्षों की क्रमिक आवृत्ति होती है। इसके चक्र आगे यथावसर दिए जाएँगे।

जिस राशि के जो दशा वर्ष पीछे सव्य व अपसव्य चक्र में लिखे हैं, उन्हें परस्पर गुणा करके सम्पूर्ण दशा वर्षों से भाग देने पर लब्धि अन्तर्दशा होती है। उदाहरणार्थ मेषांश में मेष की दशा के वर्ष 7 हैं। इन सात वर्षों में सब 9 राशियों की अन्तर्दशा जाननी है। अतः 7 × 7 = 49 ÷100 = 5 मास 26 दिन 24 घड़ी मेष में मेषान्तर्दशा है। मेष वर्ष 7× वृष वर्ष 16 = 112÷100= 1.1.13.12 वर्षादि वृष की अन्तर्दशा मेष में हुई। मेष वर्ष 7× धनु वर्ष 10 = 70÷100 = 8 मास 12 दिन धनु की अन्तर्दशा है। सब अन्तर्दशाओं का योग राशि दशा के सम्पूर्ण दशा वर्षों के बराबर होगा। इसी तरह सब राशियों के अंशों में अन्तर्दशा होती है। आगे सव्य चक्र की सारिणियाँ दी जा रही हैं।

मेषांश अन्तर्दशा फल :–

मेषांशे स्वान्तरे भौमे ज्वरश्च व्रणसम्भवः।
बुधशुक्रेन्दुजीवेषु सुखं शत्रुभयं रवौ।।2।।

मेषांश में यदि मंगल अर्थात् मेष, वृश्चिक राशि की अन्तर्दशा हो तो ज्वर, चोट भय होता है।

बुध, शुक्र, चन्द्र व गुरु की राशियों की अन्तर्दशा में सुख होता है। सिंह राशि की अन्तर्दशा में शत्रु भय होता है।

वृषांश में अन्तर्दशा :–

वृषांशे स्वान्तरे सौरे कलहो रोगसम्भवः।
विद्यालाभस्तनौ सौख्यं गुरौ तत्रगते फलम्।।3।।
देशत्यागोमृतिर्वापि शस्त्रघातो ज्वरोऽथवा।
वृषभस्वांशके विप्र ! कुजे तत्र गते फलम्।।4।।
वस्त्राभरणलाभश्च स्त्रीसुयोगो महत्सुखम्।
शुक्रेन्दु सुतचन्द्रेषु वृषभस्वांशके फलम्।।5।।
नृपाद्भयं पितृमृर्तिः श्वापदाद्यैर्भयं रवौ।।

वृषांश में शनि (मकर, कुम्भ) की अन्तर्दशा में कलह व रोगोत्पत्ति की सम्भावना, धनु मीन की अन्तर्दशा में विद्यालाभ, शरीर में सुख, मेष वृश्चिक के अन्तर में देश त्याग, मृत्यु के अवसर, शस्त्र की चोट, ज्वरादि रोग होते हैं।

वृष, तुला, मिथुन, कन्या व कर्क का अन्तर हो तो वस्त्राभूषण की प्राप्ति, स्त्री से संयोग व बड़ा सुख होता है ।

सिंह की अन्तर्दशा में राजा से भय, पिता की मृत्यु, हिंसक जानवरों से भय होता है ।

मिथुनांश में अन्तर्दशा :-

मिथुने स्वांशके शुक्रे धनवस्त्रसमागमः ।।6।।
पितृमातृमृतेर्भीतिर्ज्वरश्च व्रणसम्भवः ।
दूरदेशप्रयाणं च मिथुने स्वांशके कुजे ।।7।।
बुद्धिविद्याविवृद्धिश्च महाविभवसम्भव ।
लोके मानश्च प्रीतिश्च मिथुने स्वांशके गुरौ ।।8।।
विदेशगमनं व्याधिर्मरणं धननाशनम् ।
बन्धुनाशोऽथवा विप्र ! मिथुने स्वांशके शनौ ।।9।।
विद्यावस्त्रादि लाभश्च दारपुत्रादिजं सुखम् ।
सर्वत्रमानमाप्नोति मिथुने स्वांशके बुधे ।।10।।

मिथुनांश में शुक्र की राशि की अन्तर्दशा हो तो धन, वस्त्र की प्राप्ति होती है । अर्थात् भौतिक सुख मिलते हैं ।

मंगल (मेष, वृश्चिक) की अन्तर्दशा हो तो माता–पिता की मृत्यु का भय, ज्वर, चोट दूर प्रदेशों की यात्रा होती है ।

गुरु (9.12) का अन्तर हो तो बुद्धि, वैभव में बढ़ोत्तरी, संसार में मान, स्नेह की वृद्धि होती है ।

शनि (10.11) अन्तर में विदेश यात्रा, बीमारी, मृत्यु, धन का नाश, बन्धुओं की हानि होती है ।

बुधान्तर (3.6) में विद्या लाभ, वस्त्रादि लाभ, स्त्री–पुत्रादि का सुख व सर्वत्र सम्मान मिलता है ।

कर्कांश में अन्तर्दशा :-

कर्के स्वांशगते चन्द्रे पुत्रदारसुखं महत् ।
ऐश्वर्यं लभते लोके मानं प्रीतिं तथैव च ।।11।।
शत्रुभ्यश्च पशुभ्यश्च भयं राजकुलात् तथा ।
आधिव्याधिभयं चैव कर्के स्वांशगते रवौ ।।12।।
पुत्रदारसुहृत्सौख्यं धनवृद्धिस्तथैव च ।
लोके मानं यशश्चैव कर्कांशे बुधशुक्रयोः ।।13।।

कर्कांश में कर्कान्तर हो तो स्त्री पुत्रादि का सुख, ऐश्वर्य, मान सम्मान व सुख यश होता है। सिंहान्तर या सूर्यान्तर में शत्रुओं से भय, पशुओं व राज कुल से भय, तन में कष्ट होता है। बुध शुक्रान्तर (3.6.2.7) में स्त्री पुत्रादि व मित्रों का सुख अर्थात् सहायता, धन में वृद्धि, संसार में मान सम्मान, यश प्राप्ति होती है।

विषशस्त्रमृतेर्भीतिं ज्वररोगादिसम्भवम्।
पीडां चैव समाप्नोति कर्के स्वांशगते कुजे।। 14।।
विभवस्यातिलाभश्च शरीरेऽपि सुखं तथा।
नृपात् सम्मानलाभश्च कर्के स्वांशगते गुरौ।। 15।।
वातव्याधिभयं घोरं सर्पवृश्चिकतो भयम्।
नानाकष्टमवाप्नोति कर्के स्वांशगते शनौ।। 16।।

कर्कांश में मंगल (1.8) का अन्तर हो तो विष या शस्त्र से मरणभय, ज्वरादि रोगों की सम्भावना एवं पीड़ा होती है।

गुरु अन्तर में (9.12) वैभव बढ़ोत्तरी, अत्यधिक लाभ, शरीर में सुख तथा राजा के पक्ष से सम्मान व लाभ होता है।

कर्कांश में शनि (10.11) का अन्तर हो तो वातविकार की अधिकता, साँप बिच्छू आदि से भय व अनेक प्रकार के कष्ट मिलते हैं।

सिंहांश में अन्तर्दशा :–

सिंहांशे स्वांशगे भौमे मुखरोगभयं दिशेत्।
पित्तज्वरकृतां बाधां शस्त्रक्षतमथापि वा।। 17।।
धनवस्त्रादिलाभश्च स्त्रीपुत्रादिसुखं तथा।
बुधभार्गवयोर्विप्र ! सिंहांशे स्वान्तरस्थयोः।। 18।।
उच्चात् पतनभीतिश्च स्वल्पद्रव्यसमागमः।
विदेशगमनं चैव सिंहे स्वान्तर्गते विधौ।। 19।।
भयं शत्रुजनेभ्यश्च ज्वरादिव्याधिसम्भवः।
ज्ञानहानिर्मृतेर्भीतिः सिंहे स्वान्तर्गते रवौ।। 20।।
धनधान्यादि लाभं च प्रसादं द्विजभूपयोः।
विद्यावृद्धिमवाप्नोति सिंहे स्वान्तर्गते गुरौ।। 21।।

सिहांश में मंगल का (1.8) अन्तर हो तो मुख में रोग होने का भय, पित्त का बुखार, हथियार या नुकीले पदार्थ से चोट लगती है।

बुध शुक्र के अन्तर (3.6.2.7) में धन वस्त्रादि का लाभ, स्त्री व पुत्रादि का सुख आदि अच्छे फल होते हैं।

चन्द्रमा का अन्तर हो तो किसी ऊँचे स्थान से गिरने का भय, कम धनागम, विदेश गमन होता है।

सिंहांश में सिंह का अन्तर हो तो शत्रुओं से भय, ज्वरादि रोगोत्पत्ति, ज्ञान बुद्धि की हानि, मरण भय होता है।

गुरु अन्तर (9.12) में धन धान्यादि का लाभ, ब्राह्मण व राजादि द्वारा सम्मान या सत्कार, विद्या में वृद्धि होती है।

कन्यांश में अन्तर्दशा :–

कन्यायां स्वांशगे सौरे कष्टं प्राप्नोति मानवः।
प्रयाणं च ज्वरं चैव क्षुद्भवं वैक्लवं तथा।। 22।।
नृपप्रसादमैश्वर्यंसुहृद्बन्धुसमागमम्।
विद्यावृद्धिमवाप्नोति कन्यायां स्वांशके गुरौ।। 23।।
पित्तज्वरभवा पीडा विदेशे गमनं तथा।
शस्त्रघातोऽग्निभीतिश्च कन्यायां स्वान्तरे कुजे।। 24।।
भृत्यपुत्रार्थलाभश्च नानासुखसमागमः।
बुधभार्गवचन्द्रेषु कन्यास्वांशगतेषु च।। 25।।
प्रयाणं रोगभीतिश्च कलहो बन्धुभिः सह।
शस्त्रघातभयं चैव कन्यांशे स्वांशगे रवौ।। 26।।

कन्यांश में मकर कुम्भ का अन्तर हो तो कष्ट प्राप्ति, स्थान त्याग, ज्वरादि रोग व भूख की परेशानी होती है।

गुरु का अन्तर (9.12) हो तो राजा की प्रसन्नता, ऐश्वर्य, मित्रादि से समागम, विद्यावृद्धि होती है।

बुधान्तर (3.6) हो तो पित्तज्वर की पीड़ा, विदेश गमन, शस्त्र की चोट, अग्नि भय होता है।

कन्यांश में बुध शुक्र (3.6.2.7) का अन्तर हो तो नौकरों चाकरों का सुख, धन लाभ, अनेक प्रकार के सुख होते हैं।

सूर्य या सिंह राशि का अन्तर हो तो स्थान त्याग, रोग का भय, बन्धुओं से कलह, शस्त्र की चोट का भय होता है।

तुलांश में अन्तर्दशा :–

तुले स्वान्तर्गते शुक्रे सद्बुद्धिश्च सुखोदयः।
स्त्रीपुत्रधनवस्त्रादि लाभो भवति निश्चितः।। 27।।

पितृकष्टं सुहृद्वैरं शिरोरोगो ज्वरोदयः ।
विषशस्त्राग्निभीतिश्च तुले स्वान्तर्गते कुजे ।। 28 ।।
द्रव्यरत्नादि लाभश्च धर्मकार्यं नृपादरः ।
सर्वत्रसुखसम्प्राप्तिस्तुले स्वांशगते गुरौ ।। 29 ।।
प्रयाणं च महाव्याधिः क्षेत्रादेः क्षतिरेव च ।
शत्रुबाधा च कार्येषु तुले स्वांशगते शनौ ।। 30 ।।
पुत्रजन्मधनप्राप्तिः स्त्रीसुखं च मनः प्रियम् ।
भाग्योदयश्च विज्ञेयस्तुले स्वान्तर्गते बुधे ।। 31 ।।

तुलांश में 2.7 राशि की अन्तर्दशा हो तो अच्छी बुद्धि, सुख प्राप्ति, स्त्री पुत्रादि व धनादि का लाभ होता है।

मंगलान्तर में पिता को कष्ट, मित्रों से शत्रुता, सिर में रोग, ज्वर, विष शस्त्रों से भय होता है।

गुरु अन्तर (9.12) में धन व रत्नादि का लाभ, धर्म कार्य, राजा से सम्मान, सर्वत्र सुख होता है।

शनि अन्तर में (10.11) स्थान त्याग, बड़ा रोग, जमीन–जायदाद की हानि, शत्रु बाधा होती है।

बुधान्तर (3.6) में पुत्र जन्म, धनप्राप्ति, स्त्री का सुख, मन में सुख, भाग्योदय होता है।

वृश्चिकांश में अन्तर्दशा :–

शशांकबुधशुक्रेषु वृश्चिके स्वांशगेषु च ।
नानाधान्यधनप्राप्तिर्व्याधिनाशो महत्सुखम् ।। 32 ।।
शत्रुक्षोभभयं व्याधिमर्थनाशं पितुर्भयम् ।
श्वापदाद्भयमाप्नोति वृश्चिके स्वांशगे रवौ ।। 33 ।।
वातपित्तभयं चैव मसूरीव्रणमादिशेत् ।
अग्निशस्त्रादिभीतिश्च वृश्चिके स्वांशगे कुजे ।। 34 ।।
धनं धान्यं च रत्नं च देवब्राह्मणपूजनम् ।
राजप्रसादमाप्नोति वृश्चिके स्वांशगे गुरौ ।। 35 ।।
धनबन्धुविनाशश्च जायते मानसी व्यथा ।
शत्रुबाधा महाव्याधिवृश्चिके स्वांशगे शनौ ।। 36 ।।

वृश्चिकांश में बुध व शुक्र का अन्तर हो तो अनेक प्रकार के धन धान्य की प्राप्ति, रोग नाश होता है।

सिंहान्तर हो तो शत्रु से भय, रोग, धननाश, पिता को भय, हिंसक जन्तुओं से भय होता है।

मंगलान्तर में वातपित्त का भय, खसरा चेचक आदि रोग, रोग जनित घाव, अग्नि व शस्त्र से भय होता है।

गुरु अन्तर (9.12) में धन धान्य की समृद्धि, देव ब्राह्मण पूजन, राजा की प्रसन्नता होती है।

शनि (10.11) अन्तर्दशा में धन व बन्धुओं का नाश, मानसिक व्यथा, शत्रु बाधा बड़ा रोग होता है।

धनुरंश में अन्तर्दशा :-

अतिदाहं ज्वरं छर्दि मुखरोगं विशेषतः।
नानाक्लेशमवाप्नोति चापांशे स्वांशगे कुजे।। 37।।
श्रियं विद्यां च सौभाग्यं शत्रुनाशं नृपात्सुखम्।
भार्गवेन्दुजचन्द्राणां चापे स्वस्वांशगे दिशेत्।। 38।।
भार्यावित्तविनाशः च कलहं च नृपाद्भयम्।
दूरयात्रामवाप्नोति चापांशे स्वांशगे रवौ।। 39।।
दानधर्म तपोलाभं राजपूजनमाप्नुयात्।
भार्याविभवलाभं च चापे स्वांशगते गुरौ।। 40।।

धनुरंश में मंगल (1.8) का अन्तर हो तो अधिक जलन (अम्ल) बुखार, वमन, मुख में रोग, अनेक कष्ट होते हैं।

बुध, शुक्र व चन्द्र (3.6.2.7.4) का अन्तर हो तो शोभा, लक्ष्मी की वृद्धि, सौभाग्य, शत्रुओं का नाश, राजा से सुख होता है।

सिंहान्तर्दशा में स्त्री व धन का नाश, राजा से भय, कलह, दूर प्रदेशों की यात्रा, सम्मान, स्त्री व वैभव की प्राप्ति होती है।

गुरु अन्तर (9.12) में दानधर्म की वृद्धि, तपस्या की सफलता, राजा से सम्मान, स्त्री व वैभव की प्राप्ति होती है।

मकरांश में अन्तर्दशा –

द्विजदेवनृपोद्भूतं कोपं बन्धुविनाशनम्।
देशत्यागमवाप्नोति मकरस्वांशगे शनौ।। 41।।
देवार्चनं तपोध्यानं सम्मानं भूपतेः कुले।
भार्गवज्ञेन्दुजीवानां मृगांशेऽन्तर्दशाफलम्।। 42।।

शिरोरोगं ज्वरं चैव करपादक्षतं दिशेत् ।

रक्तपित्तातिसारांश्च मृगस्वांशगते कुजे ।। 43 ।।

विनाशं पितृबन्धूनां ज्वररोगादिकं दिशेत् ।

नृपशत्रुभयं चैव मृगांशस्वांशगे शनौ ।। 44 ।।

मकरांश में शनि (10.11) का अन्तर हो तो ब्राह्मण, देवता व राजा का कोप, बन्धुओं का नाश, देश त्याग होता है।

मकरांश में शुक्र–बुध व चन्द्र गुरु (2.7.3.6.4.9.12) का अन्तर हो तो देव पूजन, यजन, तप, राजसम्मान व कुल में वृद्धि होती है।

मंगल (1.8) के अन्तर में सिर में रोग, ज्वर, हाथ–पैरों में घाव, रक्त पित्त, दस्त की बीमारी होती है।

मकर कुम्भ का अन्तर हो तो पिता आदि का विनाश, रोगोत्पत्ति व राजा या शत्रु से भय भी होता है। (सम्बद्ध श्लोक 41)

कुम्भांश में अन्तर्दशा :–

नानाविद्यार्थलाभश्च पुत्रस्त्रीमित्रजं सुखम् ।

शरीरारोग्यमैश्वर्यं कुम्भे स्वांशगते भृगौ ।। 45 ।।

ज्वराग्निचौरजा पीडा शत्रूणां च महद्भयम् ।

मनोव्यथामवाप्नोति घटांशस्वान्तरे कुजे ।। 46 ।।

नैरुज्यं च सुखं चैव सम्मानं भूपतो द्विजात् ।

मनः प्रसादमाप्नोति कुम्भांशस्वांशगे गुरौ ।। 47 ।।

पुत्रमित्रधनस्त्रीणां लाभं चैव मनः प्रियम् ।

सौभाग्यवृद्धिमाप्नोति कुम्भांशस्वांशगे बुधे ।। 48 ।।

धातुत्रयप्रकोपं च कलहं देशविभ्रमम् ।

क्षयव्याधिमवाप्नोति कुम्भांशस्वांशगे शनौ ।। 49 ।।

कुम्भांश में 2.7 राशि का अन्तर हो तो अनेक विद्या व धन का लाभ, पुत्र, स्त्री व मित्रों का सुख, शरीर सुख, ऐश्वर्य होता है।

1.8 का अन्तर हो तो ज्वर, अग्नि व चोर से भय, शत्रुओं से भय, मनोव्यथा होती है।

9.2 राशि का अन्तर हो तो शरीर सुख, राजमान्यता, ब्राह्मणों द्वारा सम्मान, मन में सन्तोष होता है।

3.6 राशि का अन्तर हो तो पुत्र, स्त्री मित्रों व धन का लाभ, मनोनुकूल कार्य, सौभाग्यवृद्धि होती है।

10.11 राशियों की अन्तर्दशा हो तो तीनों धातु (वात–पित्त–कफ) का प्रकोप, परिभ्रमण, कलह, क्षय रोग होता है।

मीनांश में अन्तर्दशा :–

विद्यावृद्धिमवाप्नोति स्त्रीसुखं व्याधिनाशनम्।
सुहृत्संगं मनः प्रीतिं मीनांशस्वांशगे विधौ।। 50।।
बन्धुभिः कलहं चैव चौरभीतिं मनोव्यथाम्।
स्थानभ्रंशमवाप्नोति मीनांशस्वांशगे रवौ।। 51।।
रणेविजयमाप्नोति पशुभूमिसुतागमम्।
धनवृद्धिं च मीनांशे स्वांशयोर्बुधशुक्रयोः।। 52।।
पित्तरोगं विवादं च स्वजनैरपि मानवः।
शत्रूणां भयमाप्नोति मीनांशस्वांशगे कुजे।। 53।।
धनवस्त्रकलत्राणां लाभो भूपसमादरः।
प्रतिष्ठा बहुधा लोके मीनांशस्वांशगे गुरौ।। 54।।
धननाशो मनस्तापो वेश्यादीनां च संगमात्।
देशत्यागो भवेद् वापि मीनांशस्वांशगे शनौ।। 55।।

मीनांश में चन्द्रमा का अन्तर हो तो विद्या वृद्धि, स्त्री सुख, रोगनाश, मित्रों का संग, मन में प्रसन्नता होती है।

सिंह राशि का अन्तर हो तो बन्धुओं से कलह, चोरभय, मानसिक कष्ट, स्थान परिवर्तन होता है।

बुध शुक्र (3.6.2.7) का अन्तर हो तो युद्ध में विजय, पशुधन व भूमि की प्राप्ति, पुत्र लाभ, धन वृद्धि होती है।

1.8 राशि की अन्तर्दशा हो तो पित्तरोग, विवाद, अपने लोगों द्वारा भी विरोध, शत्रुभय होता है।

गुरु अन्तर्दशा (9.12) में धन, वस्त्र व स्त्री सुख की प्राप्ति, राजसम्मान, संसार में प्रतिष्ठा होती है।

मीनांश में शनि (10.11) की अन्तर्दशा हो तो धन नाश, मन में सन्ताप, वेश्या गमन, देश त्याग आदि कुफल होते हैं।

हमारे उदाहरण में अपसव्य चक्र में कुम्भांश में सम्प्रति वृष दशा काल चक्र में विद्यमान है । मिथुन संक्रान्ति के दिन 2046 वि. सवंत् में दशारम्भ हुआ । अतः 3 वर्ष 1 मास तक वृषान्तर्दशा जो कि 2049 में कर्क संक्रान्ति तक है । तत्पश्चात् एक वर्ष 8 मास 24 दिन अर्थात् मेष संक्रान्ति के 24 अंश जाने पर संवत् 2051 तक बुध या मिथुन की अन्तर्दशा रहेगी । तत्पश्चात् 3.1 वर्षादि या मेष संक्रान्ति 24 अंश संवत् 2054 तक शुक्र या वृष की अन्तर्दशा पुनः रहेगी ।

जातक को पूर्व वृष दशा में सम्पत्ति से लाभ व धनागम, विद्यालाभ (नानाविद्यार्थलाभ) हुआ । ततः मिथुनान्तर्दशा में मित्र व धन का लाभ व सौभाग्य हुआ । ततः शुक्रान्तर्दशा शुरू होते ही पुनः धन लाभ व अभी तक सम्पत्ति का लाभ हो चुका है । यह वास्तविकता है । पाठक स्वयं दशाफल की प्रामाणिकता की परीक्षा कर सकते हैं । उदाहरण में वृषराशि चतुर्थ स्थान में है तथा शुभ राशि है । इसका स्वामी शुक्र वर्गोत्तम नवांश में मित्रक्षेत्री है । कारक ग्रह से केन्द्र में है, अतः इसी दशा में चतुर्थभाव सम्बन्धी फल गृह, राज्य, भूमि का सुख, धन लाभ, वाहन लाभ आदि होगा ।

अन्तर्दशा में विशेष विचार :–

एवं प्राज्ञैश्च विज्ञेयं कालचक्रदशाफलम् ।
अन्तर्दशाफलं चैव वामर्क्षेऽप्येवमेव च ।। 56 ।।
इदं फलं मया प्रोक्तं धर्माधर्मकृतं पुरा ।
तत्सर्वं प्राणिभिर्नित्यं प्राप्यते नात्र संशयः ।। 57 ।।
सुहृदोऽन्तर्दशाभव्या पापस्यापि द्विजोत्तम ।
शुभस्यापि रिपोश्चैव शुभा च प्रकीर्तिता ।। 58 ।।

इसी प्रकार काल चक्र दशा के सव्य व अपसव्य चक्र की विभिन्न दशाओं का फल समझना चाहिए ।

मित्र ग्रह की राशि की अन्तर्दशा पापराशि होने पर उत्तम व शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा शुभ होने पर भी अशुभ फल देती है ।

मेषांशीय मेषदशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	
दशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	0	0	7
मास	5	1	7	5	4	7	1	5	8	0
दिन	26	13	16	19	6	16	13	26	12	0
घ.	24	12	48	12	0	48	12	24	0	0

मेषांशीय वृषदशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृप	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	
दशेश	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	यो.
व.	2	1	3	0	1	2	1	1	1	16
मास	6	5	4	9	5	6	1	6	1	0
दिन	21	8	9	18	8	21	13	0	13	0
घ.	36	24	36	0	24	36	12	0	12	0

मेषांशीय मिथुनदशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृप	
दशेश	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	0	1	0	0	0	1	9
मास	9	10	5	9	5	7	10	7	5	0
दिन	21	20	12	21	8	16	24	16	8	1
घ.	36	24	0	36	24	48	0	48	24	0

मेषांशीय कर्कदशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	
दशेश	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बु.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	4	1	1	1	1	2	1	3	1	21
मास	4	0	10	4	5	1	5	4	10	0
दिन	27	18	20	9	19	6	19	9	20	0
घ.	36	0	24	36	12	0	12	36	24	0

मेषांशीय सिंहदशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	
दशेश	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	5	9	4	6	4	9	5	0	0
दिन	0	12	18	6	0	6	18	12	18	0
घ.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मेषांशीय कन्यादशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बृ.	चं.	सू.	यो.
व.	0	1	0	0	0	1	0	1	0	9
मास	9	5	7	10	7	5	9	10	5	0
दिन	21	8	16	24	16	8	21	20	12	0
घ.	36	24	48	0	48	24	36	24	0	0

मेषांशीय तुलादशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	
दशेश	शु.	मं.	बृ.	मं.	श.	बु.	चं.	र.	बु.	यो.
व.	2	1	1	1	2	1	3	0	1	16
मास	6	1	7	1	6	5	4	9	5	0
दिन	21	13	6	13	21	8	9	18	8	0
घ.	36	12	0	12	36	24	36	0	24	0

मेषांशीय वृश्चिकदशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	
दशेश	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	1	0	1	0	0	2	7
मास	5	8	5	1	7	5	4	7	1	0
दिन	26	12	26	13	16	19	6	15	13	0
घ.	24	0	24	12	48	12	0	48	12	0

मेषांशीय धनुदशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	1	0	2	0	0	0	1	10
मास	0	8	7	10	1	6	10	7	8	0
दिन	0	12	6	24	6	0	24	6	12	0

वृषांशीय मकरदशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	
दशेश	श.	शु.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	3	9	5	11	2	5	0
दिन	7	7	19	28	1	2	25	24	2	0
घ.	45	45	14	35	3	28	45	42	48	0
पल	53	53	42	18	32	14	53	21	14	0

वृषांशीय कुम्भदशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	
दशेश	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	3	9	5	11	2	5	2	0
दिन	7	19	28	1	2	25	24	2	7	0
घ.	45	54	35	3	18	45	42	28	45	0
पल	53	42	18	32	14	53	21	14	53	0

वृषांशीय मीनदशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	यो.
व.	1	0	1	1	2	0	1	0	0	10
मास	2	9	10	0	5	7	0	5	5	0
दिन	3	26	17	21	19	1	21	19	19	0
घ.	31	28	38	10	24	45	10	24	24	0
पल	46	14	49	35	42	53	35	43	43	0

वृषांशीय वृश्चिकदशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	
दशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	0	0	0	7
मास	6	3	8	8	4	8	3	3	9	0
दिन	27	24	26	22	28	26	28	28	26	0
घ.	31	31	49	35	14	49	35	35	28	0
पल	46	10	25	17	7	25	18	18	14	0

वृषांशीय तुलादशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	
दशेश	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	यो.
व.	3	1	3	0	1	0	0	1	1	16
मास	0	8	11	11	8	9	9	10	3	0
दिन	4	9	13	8	9	1	1	17	24	0
घ.	14	52	3	49	52	3	3	38	21	0
पल	7	56	32	25	56	32	32	49	11	0

वृषांशीय कन्यादशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	
दशेश	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	2	0	0	0	0	1	0	1	9
मास	11	2	6	11	5	5	0	8	8	0
दिन	13	20	10	13	2	2	21	26	9	0
घ.	3	28	35	3	28	28	10	49	52	0
पल	32	14	18	32	14	14	35	25	56	0

वृषांशीय कर्कदशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	
दशेश	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	5	1	2	0	0	2	1	3	2	21
मास	2	2	2	11	11	5	8	11	2	0
दिन	7	24	20	25	25	19	22	13	20	0
घ.	45	42	28	45	45	24	35	3	28	0
पल	53	21	14	53	53	43	17	23	14	0

वृषांशीय सिंहदशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	
दशेश	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	6	2	2	7	4	11	6	2	0
दिन	15	10	24	24	1	28	8	10	24	0
घ.	52	35	42	42	45	14	49	35	42	0
पल	56	18	21	21	53	7	25	18	14	0

वृषांशीय मिथुनदशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	यो.
व.	0	0	0	1	0	1	0	2	6	9
मास	11	5	5	0	8	8	11	2	0	0
दिन	13	2	2	21	26	9	13	20	10	0
घ.	3	28	28	10	49	52	3	28	35	0
पल	32	14	14	35	25	56	32	14	18	0

मिथुनांशीय वृषदशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मेप	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेप	वृष	मिथुन	
दशेश	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	3	1	1	0	0	1	1	3	1	16
मास	1	4	11	9	9	11	4	1	8	0
दिन	0	5	3	7	7	33	5	0	24	0
घ.	21	47	58	35	35	58	47	21	34	0
पल	41	0	33	25	25	33	0	41	42	0

मिथुनांशीय मेषदशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	
दशेश	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बृ.	शु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	1	0	1	7
मास	7	10	4	4	10	7	4	9	4	0
दिन	2	3	1	1	3	2	5	3	5	0
घ.	31	36	26	26	36	31	47	15	47	0
पल	48	52	45	45	52	48	0	10	0	0

मिथुनांशीय मीनदशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	
दशेश	बृ.	श.	श	वृष	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	0	1	0	1	1	1	0	10
मास	2	5	5	2	10	11	1	11	10	0
दिन	13	23	23	13	3	3	0	3	3	0
घ.	44	29	29	44	36	58	21	58	36	0
पल	6	38	38	6	52	33	42	33	52	0

मिथुनांशीय कुम्भदशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	
दशेश	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बृ.	शु.	मं.	बृ.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	4	9	5	9	4	5	0
दिन	9	9	23	1	7	6	7	1	23	0
घ.	23	23	29	26	35	8	35	26	29	0
पल	52	52	38	45	25	40	25	45	38	0

मिथुनांशीय मकरदशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	
दशेश	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	4	9	5	9	4	5	2	0
दिन	9	23	1	7	6	7	1	23	9	0
घ.	23	29	26	35	8	35	26	29	23	0
पल	52	38	45	25	40	25	45	38	52	0

मिथुनांशीय धनुदशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	यो.
व.	1	0	1	1	1	0	1	0	0	10
मास	2	10	11	1	11	10	2	5	5	0
दिन	13	3	3	0	3	3	13	23	23	0
घ.	44	26	58	21	58	36	44	29	29	0
पल	6	52	33	42	33	52	6	38	38	0

मिथुनांशीय मेषदशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	
दशेश	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	0	0	0	7
मास	7	4	9	4	7	10	4	4	10	0
दिन	2	5	3	5	2	3	1	1	3	0
घ.	31	47	15	47	31	36	26	26	36	0
पल	48	0	10	0	40	52	45	45	52	0

मिथुनांशीय वृष के दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	
दशेश	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	यो.
व.	3	1	3	1	1	0	0	1	1	16
मास	1	8	1	4	11	9	9	11	4	0
दिन	0	24	0	5	3	7	7	3	5	0
घ.	21	34	21	47	58	35	35	58	47	0
पल	41	42	41	0	33	25	25	33	0	0

मिथुनांशीय मिथुन के दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	0	1	9
मास	11	8	9	1	5	5	1	9	8	0
दिन	21	24	3	0	6	6	0	3	24	0
घ.	19	34	15	21	8	8	21	15	34	0
पल	32	42	10	42	40	40	42	10	42	0

कर्कांशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
दशेश	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बु.	यो.
व.	5	1	2	3	1	2	0	0	2	9
मास	1	2	2	10	8	5	11	11	5	0
दिन	16	19	11	26	15	9	21	21	7	0
घ.	2	32	9	3	20	4	37	37	4	0
पल	47	5	46	42	56	11	41	41	11	0

कर्कांशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	
दशेश	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	6	11	4	6	2	2	6	3	4
दिन	14	8	4	26	29	23	23	29	19	0
घ.	39	22	53	30	18	43	43	18	32	0
पल	4	20	1	42	9	15	15	9	5	0

कर्कांशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बु.	चं.	सू.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	2	0	9
मास	11	8	8	0	5	5	0	2	6	0
दिन	9	2	23	16	0	0	16	11	8	0
घ.	0	47	43	44	41	41	44	9	22	0
पल	11	24	15	40	51	51	40	46	30	0

कर्कांशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	
दशेश	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	2	1	1	0	0	1	3	0	1	16
मास	11	3	10	8	8	10	10	11	8	0
दिन	21	18	9	27	27	26	4	4	2	0
घ.	37	50	46	54	54	46	30	53	47	0
पल	41	14	2	26	26	2	42	1	26	0

कर्कांशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	
दशेश	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	र.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	1	0	0	1	7
मास	6	9	3	3	9	8	4	8	2	0
दिन	2	23	27	27	23	15	26	23	18	0
घ.	6	1	12	12	1	20	30	43	50	0
पल	59	24	33	33	24	56	42	15	14	0

ककांशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	
दशेश	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	0	1	2	0	1	1	0	10
मास	1	5	5	1	5	6	0	10	9	0
दिन	28	17	17	28	9	29	16	9	23	0
घ.	36	36	36	36	4	18	44	46	1	0
पल	16	30	30	16	13	9	40	2	24	0

ककांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	
दशेश	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	11	2	5	8	3	5	0
दिन	6	6	17	21	23	0	27	27	17	0
घ.	58	58	26	37	43	41	54	12	26	0
पल	37	37	30	31	15	51	26	33	30	0

ककांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	
दशेश	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	यो.
व.	1	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	11	2	5	8	3	5	2	0
दिन	6	17	21	23	0	27	27	17	6	0
घ.	58	26	37	43	41	54	12	26	58	0
पल	37	30	41	15	51	26	33	30	37	0

ककांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	
दशेश	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	यो.
व.	1	2	0	1	1	0	1	0	0	10
मास	1	5	6	0	10	9	1	5	5	0
दिन	28	9	29	16	9	23	28	17	17	0
घ.	36	4	18	34	46	1	36	26	26	0
पल	16	13	9	40	2	24	16	30	30	0

सिंहांशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	कन्या	वृष	मेष	मीन	
दशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	0	0	7
मास	5	1	7	5	4	7	1	7	8	0
दिन	26	13	16	19	6	16	13	2	12	0
घ.	24	12	48	12	0	48	12	4	0	0

सिंहांशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मि.	वृष	मेष	मीन	वृश्चि.	
दशेश	बृ.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	यो.
व.	2	1	3	0	1	2	1	1	1	16
मास	6	5	6	9	5	6	1	7	1	0
दिन	21	8	9	18	8	21	13	6	13	0
घ.	36	24	36	0	24	36	12	0	12	0

सिंहांशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	कर्क	सिंह	मि.	वृष	मेष	मीन	वृश्चि.	तुला	
दशेश	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	0	1	0	0	0	1	9
मास	9	10	5	9	5	7	10	7	5	0
दिन	21	20	12	21	8	16	24	16	8	0
घ.	36	24	0	36	24	48	0	48	24	0

सिंहाशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	मि.	वृष	मेष	मीन	मकर	तुला	कन्या	
दशेश	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	4	1	1	3	1	2	1	3	1	21
मास	4	0	10	4	5	1	5	4	10	0
दिन	27	18	20	9	19	6	19	9	21	0
घ.	36	0	24	36	12	0	12	36	24	0

सिंहांशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	मि.	वृष	मेष	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	
दशेश	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	5	9	4	6	4	9	5	0	0
दिन	0	12	17	6	0	6	18	12	18	0

सिहांशीय मिथुन दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	वृष	मेष	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	यो.
व.	0	1	0	0	0	1	0	1	0	9
मास	9	5	7	10	7	5	9	10	5	0
दिन	21	8	16	24	17	8	21	20	12	0
घ.	36	24	48	0	48	24	36	25	0	0

सिहांशीय वृष दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मेष	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मि.	
दशेश	शु.	मं.	बु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	2	1	1	1	2	1	3	0	1	16
मास	6	1	7	1	6	5	4	9	5	0
दिन	21	13	6	13	21	8	9	18	8	0
घ.	36	12	0	12	36	24	36	0	24	0

सिहांशीय मेष दशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मि.	वृष	
दशेश	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बृ.	शु.	यो.
व.	0	0	0	1	0	1	0	0	1	7
मास	5	8	5	1	7	5	4	7	1	0
दिन	26	12	26	13	16	19	6	16	13	0
घ.	24	0	24	12	48	12	0	48	12	0

सिहांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मि.	वृष	मेष	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	1	0	2	0	0	1	0	10
मास	0	8	7	10	1	6	10	7	8	0
दिन	0	12	6	24	6	0	24	6	12	0

कन्यांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्र्तदशा

राशि	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	
दशेश	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	3	9	5	11	2	5	0
दिन	7	7	19	28	1	2	25	24	2	0
घ.	45	45	14	35	3	28	45	42	28	0
पल	53	53	42	18	32	14	53	21	14	0

कन्यांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुम्भ	
दशेश	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	3	9	5	11	2	5	2	0
दिन	7	19	28	1	2	25	44	2	7	0
घ.	45	54	35	3	28	45	42	28	45	0
पल	53	42	18	32	14	53	21	14	53	0

कन्यांशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुम्भ	मकर	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	यो.
व.	0	0	1	1	2	0	1	0	0	10
मास	2	9	10	0	5	7	0	5	5	0
दिन	3	26	17	21	19	1	21	19	19	0
घ.	31	28	38	10	24	45	10	24	24	0
पल	46	14	49	35	42	43	35	43	43	0

कन्यांशीय मेष दशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुम्भ	मकर	धनु	
दशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	0	0	0	7
मास	6	6	8	8	4	8	3	3	9	0
दिन	27	24	26	22	28	26	28	28	26	0
घ.	31	21	49	35	14	49	35	35	18	0
पल	46	10	25	17	7	25	18	18	14	0

कन्यांशीय वृष दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	
दशेश	श.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	यो.
व.	3	1	3	0	1	0	0	1	1	16
मास	0	8	11	11	8	9	9	10	3	0
दिन	4	9	13	8	9	1	1	17	24	0
घ.	14	52	3	49	52	3	3	38	21	0
पल	7	56	32	25	56	32	32	49	11	0

कन्यांशीय मिथुन दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	
दशेश	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	2	0	0	0	0	1	0	1	9
मास	11	2	6	11	5	5	0	8	8	0
दिन	13	20	10	13	2	2	21	26	9	0
घ.	3	28	35	3	28	28	10	49	52	0
पल	32	14	18	22	14	14	35	25	56	0

कन्यांशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	कन्या	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	
दशेश	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	5	1	2	0	0	2	1	3	2	21
मास	2	2	2	11	11	5	8	11	2	0
दिन	7	24	20	25	25	11	22	13	20	0
घ.	45	42	28	45	45	24	35	3	28	0
पल	53	21	14	43	43	43	17	32	14	0

कन्यांशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	कन्या	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	
दशेश	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	6	2	2	7	4	11	6	2	0
दिन	15	10	24	24	1	28	8	10	24	0
घ.	52	35	42	42	45	14	49	35	42	0
पल	56	17	21	21	53	7	25	18	21	0

कन्यांशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	यो.
व.	0	0	0	1	0	1	0	2	0	9
मास	11	5	5	0	8	8	11	2	6	0
दिन	13	2	2	21	26	9	13	20	10	0
घ.	3	28	28	10	49	52	3	28	35	0
पल	32	14	14	35	25	56	32	14	18	0

तुलांशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	
दशेश	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	3	1	1	0	0	1	1	3	1	16
मास	1	4	11	9	9	11	4	1	8	0
दिन	0	5	3	7	7	3	5	0	24	0
घ.	21	47	58	35	35	58	47	21	34	0
पल	41	0	33	25	25	33	0	41	42	0

तुलांशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कल्या	तुला	
दशेश	मं.	बृ.	शु.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	1	0	1	7
मास	7	10	4	4	10	7	4	9	4	0
दिन	2	3	1	1	3	2	5	3	5	0
घ.	31	36	26	26	36	31	47	15	47	0
पल	48	52	45	45	52	48	0	10	0	0

तुलांशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	तुला	वृश्चि.	
दशेश	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	0	1	0	1	1	1	0	10
मास	2	5	5	2	10	11	1	11	10	0
दिन	13	23	23	13	3	3	0	3	3	0
घ.	44	29	29	44	36	58	21	58	36	0
पल	6	38	38	6	52	33	42	33	52	0

तुलांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	
दशेश	श.	श.	बृ.	मं.	श.	बु.	शु.	मं.	बु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	4	9	5	9	4	4	0
दिन	9	9	23	1	7	6	7	1	1	0
घ.	23	23	29	26	35	8	35	26	26	0
पल	52	52	38	45	25	40	25	45	45	0

तुलांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	
दशेश	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	4	9	5	8	4	5	2	0
दिन	9	23	1	7	6	7	1	23	9	0
घ.	23	29	26	35	8	35	26	29	33	0
पल	52	38	45	25	40	25	45	38	12	0

तुलांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	यो.
व.	1	0	1	1	1	0	1	0	0	10
मास	2	10	11	1	11	10	2	5	5	0
दिन	13	3	3	0	3	3	13	23	23	0
घ.	44	36	58	21	58	36	44	29	29	0
पल	6	52	33	42	33	52	6	38	38	0

तुलांशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	तुला	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
दशेश	मं.	शु.	बु.	शु.	मं	बृ.	श.	श.	बृ	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	0	0	0	7
मास	7	4	9	4	7	10	4	4	10	0
दिन	2	5	5	5	2	3	1	1	3	0
घ.	31	47	15	47	31	36	26		36	0
पल	48	0	10	0	48	52	45	45	52	0

तुलांशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	
दशेश	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	यो.
व.	3	1	3	1	1	0	0	1	1	16
मास	1	8	1	4	11	9	9	11	4	0
दिन	0	24	0	5	3	7	7	3	5	0
घ.	21	34	21	47	58	35	35	58	47	0
पल	41	42	41	0	33	25	25	33	0	0

तुलांशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	
दशेश	बृ.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बु.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	0	0	9
मास	11	8	9	1	5	5	1	9	8	0
दिन	21	24	3	0	6	6	0	3	24	0
घ.	19	34	15	21	8	8	21	15	34	0
पल	32	42	10	42	40	40	42	10	42	0

वृश्चिकांशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	
दशेश	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	5	1	2	3	1	2	0	0	2	21
मास	1	2	2	10	8	5	11	11	5	0
दिन	16	19	11	26	15	9	21	21	9	0
घ.	2	32	9	30	20	4	37	37	4	0
पल	47	5	46	42	56	11	41	41	11	0

वृश्चिकांशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	कर्क	
दशेश	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	2	1	5
मास	3	6	11	4	6	2	2	6	2	0
दिन	14	8	4	26	29	23	23	29	19	0
घ.	39	22	53	30	18	43	43	18	32	0
पल	4	20	1	42	9	15	15	9	5	0

वृश्चिकांशीय मिथुन दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	2	0	9
मास	11	8	8	0	5	5	0	2	6	0
दिन	9	2	23	16	0	0	16	11	8	0
घ.	4	47	43	44	41	41	44	9	22	0
पल	11	26	15	40	51	51	40	46	20	0

वृश्चिकांशीय वृष दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	
दशेश	श.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बृ.	यो.
व.	2	1	1	0	0	1	3	0	1	16
मास	11	3	10	8	8	10	10	11	8	0
दिन	21	18	9	27	27	9	26	4	2	0
घ.	37	50	46	54	54	46	30	53	47	0
पल	41	14	2	26	26	2	42	1	26	0

वृश्चिकांशीय मेष दशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	
दशेश	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	1	0	0	1	7
मास	6	9	3	3	9	8	4	8	3	0
दिन	25	23	27	27	23	15	26	23	18	0
घ.	6	1	12	12	1	20	30	42	50	0
पल	59	24	33	33	24	56	42	15	14	0

वृश्चिकांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	
दशेश	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	श.	मं.	यो.
व.	1	0	0	1	2	0	1	1	0	10
मास	1	5	5	1	5	6	0	10	9	0
दिन	28	17	17	28	9	29	16	9	23	0
घ.	36	26	26	36	4	18	44	46	1	0
पल	16	30	30	16	13	9	40	2	24	0

वृश्चिकांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	
दशेश	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	11	2	5	8	3	5	0
दिन	6	6	17	21	23	0	27	27	17	0
घ.	58	58	36	37	43	41	54	12	26	0
पल	37	37	30	41	15	51	26	33	30	0

वृश्चिकांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	
दशेश	श.	गु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	11	2	5	8	3	5	2	0
दिन	6	17	21	23	0	27	27	17	6	0
घ.	58	26	37	43	41	54	12	26	58	0
पल	37	30	41	15	51	26	23	30	37	0

वृश्चिकांशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	
दशेश	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	यो.
व.	1	2	0	1	1	0	1	0	0	10
मास	1	5	6	0	10	9	1	5	5	0
दिन	28	9	29	16	9	23	28	17	17	0
घ.	36	4	28	44	46	1	36	26	26	0
पल	16	13	9	40	2	24	16	30	30	0

धनुरंशीय मेष दशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	
दशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बु.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	0	0	7
मास	5	1	7	5	4	7	1	5	8	0
दिन	26	13	16	19	6	16	13	26	12	0
घ.	24	12	48	12	0	48	12	24	0	0

धनुरंशीय वृष दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	
दशेश	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	मं.	यो.
व.	2	1	3	0	1	2	1	1	1	16
मास	6	5	6	9	5	6	1	6	1	0
दिन	21	8	9	18	8	21	13	36	13	0
घ.	36	24	36	2	16	36	12	0	12	0

धनुरंशीय मिथुन दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	
दशेश	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	0	1	0	0	0	1	9
मास	9	10	5	9	5	7	10	7	5	0
दिन	21	20	12	21	8	16	24	16	8	0
घ.	36	24	0	36	24	48	0	48	24	0

धनुरंशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	
दशेश	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	4	1	1	3	1	2	1	3	1	21
मास	4	0	10	4	5	1	5	4	10	0
दिन	27	18	20	9	19	6	19	9	20	0
घ.	36	0	24	36	12	0	12	36	24	0

धनुरंशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	
दशेश	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	5	9	4	3	4	9	5	0	0
दिन	0	12	18	6	0	6	18	12	18	0

धनुरंशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	यो.
व.	0	1	0	0	0	1	0	1	0	9
मास	9	5	7	10	7	5	9	10	5	0
दिन	21	8	16	24	16	8	21	20	12	0
घ.	36	24	48	0	48	24	36	24	0	0

धनुरंशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	
दशेश	शु.	मं.	बु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	2	1	1	1	2	1	3	0	0	16
मास	6	1	7	1	3	5	4	9	5	0
दिन	21	13	6	13	21	8	9	18	8	0
घ.	36	12	0	12	36	24	36	0	24	0

धनुरंशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	
दशेश	मं.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	1	0	1	0	0	1	7
मास	5	8	5	1	7	5	4	7	1	0
दिन	26	12	26	13	16	19	6	16	13	0
घ.	24	0	24	12	48	12	0	48	12	0

धनुरंशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	1	0	2	0	0	1	0	10
मास	0	8	7	10	1	6	10	7	8	0
दिन	0	12	6	24	6	0	24	6	12	0

मकरांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मियुन	
दशेश	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	3	9	5	11	2	5	0
दिन	7	7	19	28	1	2	29	24	2	0
घ.	45	45	24	35	3	28	45	42	28	0
पल	53	53	42	18	32	14	53	21	24	0

मकरांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	
दशेश	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	7	19	28	1	2	25	24	2	7	0
दिन	2	5	3	9	5	11	2	5	2	0
घ.	45	24	35	3	28	45	42	28	45	0
पल	53	42	18	32	14	53	21	14	53	0

मकरांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	वृष	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	
दशेश	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	यो.
व.	1	0	1	1	2	0	1	0	0	10
मास	2	9	10	0	5	7	0	5	5	0
दिन	3	26	17	21	19	1	21	19	19	0
घ.	31	28	38	10	24	45	10	24	24	0
पल	46	14	49	35	42	53	35	43	43	0

मकरांशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	
दशेश	शु.	मं	बु.	चं.	र.	बु.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	0	0	0	10
मास	6	3	8	8	4	8	3	3	9	0
दिन	27	24	26	22	28	26	28	28	26	0
घ.	31	21	49	35	14	49	35	35	28	0
पल	46	10	25	17	7	25	18	18	14	0

मकरांशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	
दशेश	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	यो.
व.	6	1	3	0	1	0	0	1	1	16
मास	0	8	11	11	8	9	9	10	3	0
दिन	4	9	13	8	9	1	1	17	24	0
घ.	14	52	3	49	52	3	3	38	21	0
पल	7	56	32	35	56	32	32	49	11	0

मकरांशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	
दशेश	बु.	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	2	0	0	0	0	1	0	1	9
मास	11	2	6	11	5	5	0	8	8	0
दिन	13	20	10	13	2	2	21	26	9	0
घ.	3	28	35	3	28	28	10	49	52	0
पल	32	14	18	32	14	14	35	25	56	0

मकरांशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	
दशेश	चं.	सू.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	5	1	2	0	0	2	1	3	2	21
मास	2	2	2	11	11	5	8	11	2	0
दिन	7	24	20	25	25	19	22	13	20	0
घ.	45	42	28	45	45	24	35	3	28	0
पल	53	31	14	53	53	43	17	32	14	0

मकरांशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	
दशेश	र.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	6	2	2	7	4	11	6	2	0
दिन	15	10	24	24	1	28	8	10	24	0
घ.	52	35	42	42	45	14	49	35	42	0
पल	56	18	21	21	53	7	35	18	21	0

मकरांशीय मिथुन दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चि.	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	यो.
व.	0	0	0	1	0	1	0	2	0	9
मास	11	5	5	0	8	8	11	2	6	0
दिन	13	2	4	21	26	9	13	20	10	0
घ.	3	28	28	10	49	52	3	28	35	0
पल	32	14	14	35	25	56	32	14	18	0

कुम्भांशीय वृष दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	
दशेश	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	यो.
व.	3	1	1	0	0	1	1	3	11	16
मास	1	4	11	9	9	11	4	1	8	0
दिन	0	5	3	7	7	3	5	0	24	0
घ.	21	47	58	35	35	58	47	21	34	0
पल	41	0	33	25	25	33	0	41	42	0

कुम्भांशीय मेष दशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	
दशेश	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	1	0	1	7
मास	7	10	4	4	10	7	4	9	4	0
दिन	2	3	1	1	3	2	5	3	5	0
घ.	31	36	26	26	36	31	47	15	47	0
पल	48	52	45	45	52	48	0	10	0	0

कुम्भांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	
दशेश	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	0	1	0	1	1	1	0	10
मास	2	5	5	2	10	11	1	11	10	0
दिन	13	23	23	13	3	3	0	3	3	0
घ.	44	29	29	44	36	5	1	58	36	0
पल	6	38	38	6	52	33	42	33	52	0

कुम्भांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	
दशेश	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	4	9	5	9	4	5	0
दिन	9	9	23	1	7	6	7	1	23	0
घ.	23	23	29	26	35	8	35	26	29	0
पल	52	52	38	45	25	40	25	45	38	0

कुम्भांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	
दशेश	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	4	9	5	9	4	5	2	0
दिन	9	23	1	37	6	37	1	23	9	0
घ.	23	29	26	35	8	35	26	29	23	0
पल	52	38	45	25	40	25	45	28	52	0

कुम्भांशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	
दशेश	गु.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	यो.
व.	1	0	1	1	1	0	1	0	0	10
मास	2	10	11	1	11	10	2	5	5	0
दिन	13	3	3	0	3	3	13	23	23	0
घ.	44	36	58	21	58	36	44	29	29	0
पल	6	52	33	42	33	52	6	38	38	0

कुम्भांशीय मेष दशा वर्ष 7 में मेषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	
दशेश	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	0	0	0	7
मास	7	4	9	4	7	10	4	4	10	0
दिन	2	5	3	5	2	3	1	1	3	0
घ.	31	47	16	47	31	36	26	26	36	0
पल	48	0	10	0	48	52	45	45	52	0

कुम्भांशीय वृष दशा वर्ष 16 में वृषादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	
दशेश	शु.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	यो.
व.	3	1	3	1	1	0	0	1	1	16
मास	1	8	1	4	11	9	9	11	4	0
दिन	0	24	0	5	3	7	7	3	5	0
घ.	21	34	21	47	58	35	35	58	47	0
पल	41	42	41	0	33	25	25	33	0	0

कुम्भांशीय मिथुन दशा वर्ष 9 में मिथुनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	धनु	मेष	वृष	
दशेश	बु.	श.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	0	1	9
मास	11	8	9	1	5	5	1	9	8	0
दिन	21	24	3	0	6	6	0	3	24	0
घ.	19	34	15	21	8	8	21	15	34	0
पल	32	42	10	42	40	40	42	10	42	0

मीनांशीय कर्क दशा वर्ष 21 में कर्कादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
दशेश	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	यो.
व.	5	1	2	3	1	2	0	0	0	21
मास	1	2	2	10	8	5	11	11	5	0
दिन	16	19	11	26	15	9	21	21	9	0
घ.	2	32	9	30	20	4	37	37	4	0
पल	47	5	47	42	56	11	41	41	11	0

मीनांशीय सिंह दशा वर्ष 5 में सिंहादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	
दशेश	सू.	बृ.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	1	5
मास	3	6	11	4	6	2	2	6	2	0
दिन	14	8	4	26	29	23	23	29	19	0
घ.	19	22	53	30	18	43	43	8	32	0
पल	4	20	1	42	9	15	15	9	5	0

मीनांशीय कन्या दशा वर्ष 9 में कन्यादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कन्या		वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	
दशेश	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	र.	यो.
व.	0	1	0	1	0	0	1	2	0	9
मास	11	8	8	0	5	5	0	2	6	0
दिन	9	2	23	16	0	0	16	11	8	0
घ.	4	47	43	44	41	41	44	9	22	0
पल	11	26	15	40	51	51	40	46	20	0

मीनांशीय तुला दशा वर्ष 16 में तुलादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	
दशेश	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	यो.
व.	2	1	0	0	0	1	3	0	1	16
मास	11	3	10	8	8	10	10	11	8	0
दिन	21	18	9	27	27	9	26	4	2	0
घ.	37	50	46	54	54	46	30	53	47	0
पल	41	14	2	26	26	2	42	1	26	0

मीनांशीय वृश्चिक दशा वर्ष 7 में वृश्चिकादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	
दशेश	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	यो.
व.	0	0	0	0	0	1	0	0	1	7
मास	6	9	3	3	9	8	4	8	3	0
दिन	25	23	27	27	23	15	26	23	18	0
घ.	6	1	12	12	1	20	30	43	50	0
पल	59	24	33	33	24	56	42	15	14	0

मीनांशीय धनु दशा वर्ष 10 में धनुरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	
दशेश	बृ.	श.	श.	बृ.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	यो.
व.	1	0	0	1	2	0	1	1	0	10
मास	1	5	5	1	5	6	0	10	9	0
दिन	28	17	17	28	9	29	16	9	23	0
घ.	36	26	26	36	4	18	44	46	1	0
पल	16	30	30	16	13	9	40	9	24	0

मीनांशीय मकर दशा वर्ष 4 में मकरादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मकर	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	
दशेश	श.	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	2	5	1	2	5	8	3	5	0
दिन	6	6	17	21	13	0	27	27	17	0
घ.	58	58	26	37	43	41	54	12	26	0
पल	37	37	30	41	15	51	26	33	30	0

मीनांशीय कुम्भ दशा वर्ष 4 में कुम्भादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	कुम्भ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	
दशेश	श.	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	यो.
व.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
मास	2	5	11	2	5	8	3	5	2	0
दिन	6	17	21	23	0	27	27	17	6	0
घ.	58	26	37	43	41	54	12	26	58	0
पल	37	30	41	15	51	26	23	30	37	0

मीनांशीय मीन दशा वर्ष 10 में मीनादि राशियों की अन्तर्दशा

राशि	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	
दशेश	बृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	यो.
व.	1	2	0	1	1	0	1	0	0	10
मास	1	5	6	0	10	9	1	5	5	0
दिन	28	9	29	16	9	23	28	17	17	0
घ.	36	4	18	44	46	1	36	26	26	0
पल	16	13	9	40	2	24	16	30	30	0

वास्तव में पूर्व जन्म में किए गए पुण्यों व पापों का फल मनुष्य को निश्चय से भोगना पड़ता हैं। दशाफल केवल उन्हीं शुभाशुभ कर्म फलों का संकेत मात्र करते हैं।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां काल–
चक्रान्तर्दशाफलाध्यायः षट्षष्टितमः ।।66।।

67

।।अथकालचक्रांश दशाफलाध्यायः।।

नवांशवश दशाफल :–

मेषे तु रक्तजा पीड़ा वृषभे धान्यवर्धनम्।
मिथुने ज्ञानवृद्धिश्च कर्के धनपतिर्भवेत्।।1।।
सिहंभे शत्रुबाधा स्यात् कन्यायां स्त्रीजनात् सुखम्।
तुलभे राजमन्त्रित्वं वृश्चिकके मृत्युतो भयम्।।2।।
अर्थलाभो भवेच्चापे मेषस्य नवभागके।
फलमेवं विजानीयाद् दशाकाले द्विजोत्तम!।।3।।

मेषांश में जन्म हो तो मेष की दशा में रक्त विकार। वृष दशा में धान्य वृद्धि।, मिथुन दशा में ज्ञान विद्यादि या अनुभव की वृद्धि। कर्क दशा में धनाढ्यता होती है। सिंह दशा में शत्रु बाधा, कन्या दशा में स्त्री वर्ग से सुख, तुला दशा में राजमन्त्रिता, वृश्चिक दशा में मरण भय, धनु दशा में धन लाभ होता है। इस तरह काल चक्र दशा का फल जन्मकालीन काल चक्रांश द्वारा भी देखना चाहिए।

वृष नवांशराशि दशाफल :–

मकरे पापकर्माणि कुम्भे वाणिज्यतो धनम्।
मीने सर्वार्थसिद्धिश्च वृश्चिकके वह्नितो भयम्।।4।।
तुलभे राजपूजा च कन्यायां शत्रुतो भयम्।
कर्के पत्नीजने कष्टं सिहंभे नेत्रपीडनम्।।5।।
मिथुने विषतो भीतिर्वृषस्य नवमांशके।

वृषांश में जन्म हो तो मकर में पापकर्म, कुम्भ दशा में व्यापार से धन लाभ, मीन दशा में सब मनोरथों की सिद्धि, वृश्चिक दशा में अग्नि भय, तुला दशा में राज सम्मान, कन्या दशा में शत्रु से भय, कर्क दशा में

पत्नी आदि को कष्ट, सिंह दशा में नेत्र पीड़ा, मिथुन दशा में विषमय होता है।

मिथुनांश राशि दशा फल :–

वृषभे धनलाभः स्यान्मेषे तु ज्वरसम्भवः ।। 6 ।।
मीने तु मातुलप्रीतिः कुम्भे शत्रुविवर्धनम् ।
मकरे चोरतो भीतिश्चापे विद्याविवर्धनम् ।। 7 ।।
मेषे तु शस्त्रसंघातो वृषे तु कलहो भवेत् ।
मिथुने सुखमाप्नोति मिथुनांशे फलं त्विदम् ।। 8 ।।

मिथुनांश में जन्म हो तो वृष राशि दशा में धन लाभ, मेष में ज्वरादि रोग पीड़ा, मीन दशा में मामापक्ष से स्नेह, कुम्भ दशा में शुत्रु वृद्धि, मकरदशा में चोरों से भय, धनु दशा में विद्यावृद्धि, मेष दशा में शस्त्र की चोट, वृष दशा में कलह व मिथुन दशा में सुख होता है।

कर्कांशीय राशिदशा :–

कर्कटे सुखमाप्नोति सिंहे भूपालतो भयम् ।
कन्यायां बन्धुतः सौख्यं तुलभे कीर्तिमाप्नुयात् ।। 9 ।।
वश्चिके च पितुः कष्टं चापे ज्ञानधनागमः ।
मकरे त्वयशो लोके कुम्भे वाणिज्यतः क्षतिः ।। 10 ।।
मीने सुखमवाप्नोति कर्कांशे फलमीदृशम् ।

कर्कांश में कर्क दशा में सुख, सिंह दशा में राजभय, कन्या दशा में बन्धुओं से सुख, तुला दशा में कीर्ति, वृश्चिक दशा में पिता को कष्ट या पिता से कष्ट, धनु दशा में ज्ञानप्राप्ति, मकर दशा में बदनामी, कुम्भ दशा में व्यापार में हानि तथा मीन दशा में सुख होता है।

सिंहांशीय दशाफल :–

वृश्चिके कलहः पीडा तुलभे सुखसम्पदः ।। 11 ।।
कन्यायां धनधान्यानि कर्के पशुगणाद् भयम् ।
सिंहे सुखं च दुःखं च मिथुने शत्रुवर्धनम् ।। 12 ।।
वृषे च सुखसम्पत्तिः मेषे कष्टमवाप्नुयात् ।
मीने तु दीर्घयात्रा स्यात् सिंहांशे फलमादिशेत् ।। 13 ।।

सिंहांश में वृश्चिक दशा में कलह व पीड़ा, तुला दशा में सुख सम्पति, कन्या दशा में धन धान्य, कर्क दशा में पशुवर्ग से भय, सिंह दशा में सुख दुःख मिश्रित फल, मिथुन दशा में शत्रु वृद्धि, वृष दशा में सुख सम्पत्ति, मेष दशा में कष्ट, मीन दशा में लम्बी यात्रा होती है।

कन्यांशीय दशा फल –

कुम्भभे धनलाभः स्यान्मकरेऽपि धनागमः ।
चापे भ्रातृजनात्सौख्यं मेषे मातृसुखं वदेत् ।। 14 ।।
वृषभे पुत्रसौख्यं च मिथुने शत्रुतो भयम् ।
कर्के दारजनैः प्रीतिः सिंहे व्याधिविवर्धनम् ।। 15 ।।
कन्यायां च सुतोत्पत्तिः कन्यांशे फलमीदृशम् ।

कन्यांश में कुम्भ दशा में धन लाभ, मकर दशा में धन लाभ, धनु दशा में भाइयों से सुख, मेष दशा में माता से सुख, वृष दशा में पुत्र सुख, मिथुन दशा में शत्रु से भय, कर्क में स्त्री जनों से विशेष लगाव, सिंह दशा में रोग वृद्धि, कन्या दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

तुलांशीय दशा फल :–

तुलभे धनसम्पत्तिः वृश्चिके भ्रातृतः सुखम् ।।16 ।।
पितृवर्गसुखं चापे मातृकष्टं मृगे वदेत् ।
कुम्भे वाणिज्यतो लाभः मीने च सुखसम्पदम् ।। 17 ।।
वृश्चिके च स्त्रियः पीडा तुले च जलतो भयम् ।
कन्यायां सुखसम्पत्तिस्तुलांशे फलमीदृशम् ।। 18 ।।

तुलांश में तुला दशा में धन सम्पत्ति, वृश्चिक दशा में भाइयों से सुख, धनु दशा में पितृ वर्ग से सुख, मकर दशा में माता को कष्ट, कुम्भ दशा में व्यापार से लाभ, मीन दशा में सुख सम्पत्ति, वृश्चिक दशा में स्त्री से पीड़ा, तुला दशा में पानी से भय, कन्या दशा में सुख सम्पत्ति होती है।

वृश्चिकांशगत राशि दशा फल :–

कर्कभे धनहानिः स्यात् सिंहे भूपालतो भयम् ।
मिथुने भूमिलाभश्च वृषभे धनसम्पदः ।। 19 ।।
मेषे तु रक्तजा पीडा मीने च सुखमादिशेत् ।
कुम्भे वाणिज्यतो लाभो मकरे च धनक्षतिः ।। 20 ।।
चापे च सुखसम्पत्ति वृश्चिकांशे फलं त्विदम् ।

वृश्चिकांश में कर्क दशा हो तो धन हानि, सिंह दशा में राजा से भय, मिथुन दशा में भूमि से लाभ, वृष दशा में धन सम्पत्ति, मेष में रक्तविकार, मीन दशा में सुख, कुम्भ दशा में व्यापार से लाभ, मकर में धन हानि, धनु दशा में सुख व सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होती है।

धनुरंशीय दशा फल :–

मेषे च धनलाभः स्यात् वृषे भूमिविवर्धनम् ।। 21 ।।
मिथुने सर्वसिद्धिः स्यात् कर्कभे सुखसम्पदः ।
सिंहे सर्वसुखोत्पत्तिः कन्यायां कलहागमः ।। 22 ।।
तुले वाणिज्यतो लाभो वृश्चिके रोगजं भयम् ।
चापे पुत्रसुखं वाच्यं धनुरंशे फलं वदेत् ।। 23 ।।

धनुरंशीय मेष दशा में धन लाभ, वृष में भूमि की वृद्धि, मिथुन दशा में सर्वत्र सफलता, कर्क दशा में सुख सम्पत्ति, सिंह दशा में सब प्रकार के सुख, कन्या दशा में कलह या विवाद, तुला में व्यापार से लाभ, वृश्चिक दशा में रोग भय धनु दशा में पुत्र सुख होता है।

मकरांशीय राशि दशा फल :–

मकरे पुत्रलाभः स्यात् कुम्भे धनविवर्धनम्।
मीने कल्याणमाप्नोति वृश्चिके पशुतो भयम्।। 24 ।।
तुलभे त्वर्थलाभः स्यात् कन्यायां शत्रुतो भयम्।
कर्कटे श्रियमाप्नोति सिंहे शत्रुजनाद्भयम्।। 25 ।।
मिथुने विषतो भीतिर्मृगांशेषु फलं त्विदम्।

मकरांशीय मकर दशा में पुत्र लाभ, कुम्भ दशा में धनवृद्धि, मीन दशा में कल्याण, वृश्चिक दशा में पशुओं से भय, तुला दशा में धन लाभ, कन्या दशा में शत्रुओं से भय, कर्क दशा में लक्ष्मी व शोभा, सिंह में शत्रुओं से भय तथा मिथुन दशा में विष का भय होता है।

कुम्भांशीय दशा फल :–

वृषभे धनसम्पत्तिर्मेषे नेत्ररुजो भयम्।। 26 ।।
मीनभे दीर्घयात्रा स्यात् कुम्भे धनविवर्धनम्।
मकरे सर्वसिद्धिः स्याच्चापे ज्ञानविवर्धनम्।। 27 ।।
मेषे सौख्यविनाशः स्यात् वृषभे मरणं भवेत्।
मिथुने सुखसम्पत्तिः कुम्भे तु फलमीदृशम्।। 28 ।।

कुम्भांशीय वृष दशा में धनसम्पत्ति, मेष दशा में नेत्र रोग, मीन दशा में लम्बी यात्रा, कुम्भ दशा में धनवृद्धि, मकर दशा में सब प्रकार की सफलता, धनु दशा में ज्ञानवृद्धि, मेष दशा में सुख की हानि, वृष दशा में मृत्यु, मिथुन दशा में सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

मीनांशीय दशा फल :–

कर्कटे धनवृद्धिः स्यात् सिंहे राजाश्रयं वदेत्।
कन्यायां धनधान्यानि तुले वाणिज्यतो धनम्।। 29 ।।
वृश्चिके ज्वरजा पीडा चापे ज्ञानसुखोदयः।
मकरे स्त्रीविरोधः स्यात् कुम्भे तु जलतो भयम्।। 30 ।।
मीने तु सर्वसौभाग्यं मीनांशे फलमीदृशम्।
दशाद्यंशक्रमेणैव ज्ञात्वा सर्व फलं वदेत्।। 31 ।।

मीनांशीय कर्क दशा में धनवृद्धि, सिंह दशा में राजा का आश्रय, कन्या दशा में धनधान्यादि, तुला दशा में व्यापार लाभ, वृश्चिक दशा में ज्वरादि, धन दशा में ज्ञान व सुख, मकर दशा में स्त्रियों से विरोध, कुम्भ दशा में जल से भय, मीन दशा में सब प्रकार से सौभाग्य वृद्धि होती है।

इस तरह नवांश भेद से भी दशा का मुख्य फल समझना चाहिए। एक ही दशा में यदि विरोधी फल दिखे तो स्वबुद्धि से भाव भावेश सम्बन्धादि से निर्णय करना चाहिए।

ग्रह शान्ति का विधान :–

क्रूरग्रहदशाकाले शान्तिं कुर्याद् विधानतः।
ततः शुभमवाप्नोति तद्दशायां न संशयः।। 32।।

यदि किसी ग्रह या राशि की दशा में अनिष्ट फल दिखता हो तो शास्त्रोक्त विधि से पूर्वोक्त दशान्तर्दशा फलाध्याय में बताई गई विधि से जप, दान, यज्ञ, पाठ आदि करना चाहिए। शान्ति विधान से उस दशा में निःसन्देह अशुभ फल निवृत्त हो जाता है।

शान्ति विधान करने से शुभ फल की अवश्यंभाविता बढ़े या न बढ़े, लेकिन अशुभ की निवृत्ति अवश्य होती है। शान्ति के विषय में पीछे ग्रहदशाध्याय में कहा गया है, विशेष शान्ति विधान आगे उत्तरखण्ड में बताया जाएगा।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
कालचक्रनवांश–दशाफलाध्यायः सप्तषष्टितमः।।67।।

।। इतिपूर्वखण्डम्।।

68

।। अथाष्टकवर्गाध्यायः।।

मैत्रेय उवाच :–

भगवन् भवताख्यातं ग्रहभावादिजं फलम्।
संकरात् तत्फलानां च ग्रहाणां गति संकरात्।। 1।।
इत्थमेवेति नो सर्वे ज्ञात्वा वक्तुमलं नराः।
कलौ पापरतानां च मन्दा बुद्धिर्यतो नृणाम्।। 2।।
अतोऽल्पबुद्धिगम्यं यत् शास्त्रमेतद् वदस्व मे।
तत्तत्कालग्रहस्थित्या मानवानां परिस्फुटम्।। 3।।
सुखदःखपरिज्ञानमायुषो निर्णयं तथा।
बहूनामृषिवर्याणां सम्मतां फलपद्धतिम्।। 4।।

मैत्रेय बोले—भगवान् आपने अभी तक ग्रह भाव व दशादि के आधार पर विभिन्न फल कहे।

लेकिन उन फलों में ग्रह गति की विभिन्नता के कारण अनेक मिश्रित या भिन्न फल देखा जाता है। अर्थात् बताए गए सारे फल ही होंगे अथवा उनमें से कुछ होंगे इत्यादि प्रकार से निश्चयपूर्वक कहना मनुष्यों के लिए कठिन है।

कलियुग में पाप कर्मो की वृद्धि होने के कारण मनुष्य की बुद्धि उतनी तीक्ष्ण नहीं है। इसलिए कृपा करके अनेक ऋषियों द्वारा समर्थित फलादेश की कोई ऐसी पद्धति बतलाएँ जिससे अल्पबुद्धि मनुष्य भी फल कथन में समर्थ हो सकें।

पराशर उवाच—

साधु पृष्टं त्वया ब्रह्मन्! कथयामि तवाग्रतः।
लोकयात्रा परिज्ञानमायुषो निर्णयं तथा।। 5।।
संकरस्याविरोधं च शास्त्रस्यापि प्रयोजनम्।
जनानामुपकारार्थ सावधानमनाः श्रृणु।। 6।।

पराशर बोले—तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा, मनुष्यों की आयु सुख दुःख आदि के ज्ञानार्थ परस्पर अविरोधी फल कथन हेतु शास्त्र का कथन करता हूँ। आप सावधान होकर कृपया सुनें।

निश्चित फल जानने के लिए यद्यपि सामान्य नियम प्रभावी होते हैं। किन्तु एक ही परिस्थिति में फलों की भिन्नता देखी जाती है। इसलिए यह उत्तर भाग विशेष विधि की व्यवस्था देता है।

लग्नादि व्ययपर्यन्तं भावाः संज्ञानुरूपतः।
फलदा शुभसंदृष्टा युक्ता वा शोभना मताः।। 7।।
ते तूच्चादिगैः खेटैर्न चास्तारिभनीचगैः।
पापैर्दृष्टयुताभावाः कल्याणेतरदायकाः।। 8।।
तैरस्तारिभनीचस्थैर्न च मित्रस्वभोच्चगैः।
एवं सामान्यतः प्रोक्तं होराशास्त्रज्ञसूरिभिः।। 9।।
मयैतत् सकलं प्रोक्तं पूर्वाचार्यानुवर्तिना।
आयुश्च लोकयात्रां च शास्त्रस्यास्य प्रयोजनम्।। 10।।
निश्चेतुं तत्र शक्नोति वसिष्ठो वा वृहस्पतिः।
किं पुनर्मनुजास्तत्र विशेषात्तु कलौ युगे।। 11।।

लग्न से द्वादश भावगत बारह भाव अपने नाम के अनुसार ही फल देते हैं, अर्थात् तन, धन, भ्राता आदि का विचार क्रमशः होता है, लेकिन ये भाव जब ग्रह से युक्त दृष्ट या उच्चादिगत ग्रह युक्त हों तब शुभ होते हैं।

यदि अस्तंगत नीचगत, शत्रुक्षेत्री या पापग्रह से दृष्ट हों तो भाव की हानि करते हैं। यह एक सामान्य नियम है। होरा वेत्ताओं ने जैसा कहा था वैसा मैंने पिछले खण्ड में कहा।

मनुष्यों की आयु का ज्ञान और जीवन में आने वाले सुख–दुःख (लोकयात्रा) का ज्ञान ही ज्योतिष का प्रयोजन है। लेकिन वशिष्ठ या वृहस्पति भी स्वयं निश्चय से फल कथन नहीं कर सकते तब कलियुग में सामान्य मनुष्यों की शक्ति कितनी होगी !

ज्योतिष संकेतक या सूचक शास्त्र है, नियामक नहीं। जिस प्रकार सड़क पर लगे यातायात के चिन्हों द्वारा आगे की यात्रा का पूर्वाभास हो जाता है उसी प्रकार जीवन यात्रा की भवितव्यता का संकेत ज्योतिष शास्त्र करता है।

सामान्यांशो विशेषांशो ज्योतिःशास्त्रं द्विधोदितम्।
प्रोक्तः सामान्यभागस्तु निश्चयांशस्तु कथ्यते।। 12।।

ज्योतिष शास्त्र के दो भेद कहे गये हैं, सामान्य व विशेष। पूर्व खण्ड में मैंने सामान्य नियमों को कहा, अब विशेष भाग को कहता हूँ।

यथा लग्नाच्च चन्द्राच्च ग्रहाणां भावजं फलम्।
तथाऽन्येभ्योऽपि खेटेभ्यो विचिन्त्यं दैवविद्वरैः।। 13।।
अतो रव्यादि खेटानां सलग्नानां पृथक्–पृथक्।
अष्टानां सर्वभावोत्थं यथोक्तमशुभं शुभम्।। 14।।
ज्ञात्वाऽऽदौ करणं स्थानं विन्दुरेखोपलक्षितम्
कर्मादष्टकवर्गस्य वाच्यं स्पष्टफलं यथा।। 15।।

जिस प्रकार लग्न, चन्द्र व सूर्य से फल विचार कहा है उसी प्रकार अन्य ग्रहों की राशियों के आधार पर भी फल विचार करना चाहिए। अर्थात् सूर्य से शनि तक सातों ग्रहों की जन्मकालीन राशि व लग्न इन आठ राशियों के आधार पर सम्पूर्ण फल का विचार करना चाहिए, अर्थात् प्रत्येक भाव से सम्बन्धित फल पर प्रत्येक ग्रह का प्रभाव न्यूनाधिक रूप से अधिक रहता है। इसी फल विचार पद्धति का नाम अष्टक वर्ग है।

इसीलिए इन आठों राशियों के द्वारा संकेतित अशुभ व शुभ बिन्दुओं को विश्लेषित करके स्पष्ट रूप से फल कहना चाहिए। आगे प्रसंगवशात

अशुभ फल को करण या बिन्दु (०) से और शुभ फल को खड़ी रेखा (।) से प्रकट किया जाएगा।

लेकिन शुभ और अशुभ फल को अपने क्षेत्र की परम्परा के अनुसार संकेतित करना चाहिए। यदि बिन्दु से शुभ फल द्योतित करेंगे तो रेखा (।) स्वयमेव अशुभ का द्योतक होगी। दक्षिण भारत में आज भी शुभ फल को बिन्दु (0) द्वारा द्योतित करते हैं, जबकि उत्तर भारत में यह (0) अशुभ फल का द्योतक है।

सामान्य नियम से विशेष नियम सदैव बलवान् होता है। उदाहरणार्थ रात्रि में सोना चाहिए, यह सामान्य नियम है किन्तु घर में विवाह हो या रोग–शोक का अवसर हो, उपद्रव की घड़ी हो तो शयन रीति नीति के विरुद्ध ही है। तब विवाह आदि शुभ कार्यो के अवसर में रात्रि में नहीं सोना चाहिए, यह विशेष नियम हुआ। सामान्य नियम सामान्य परिस्थितियों में ही लागू होते हैं, किन्तु वे ही सामान्य नियम व्यक्ति–स्थान–काल–देश भेद से भिन्न हो जाया करते हैं। जैसे किसी एक व्यक्ति का लाभ योग दूसरे व्यक्ति पर भी समान परिस्थितियों में लागू तो होगा, किन्तु समान दशा अन्तर्दशा रहने पर भी उद्योगपति नौकरीपेशा व्यवसायी व मजदूर की लाभ मात्रा व प्रभाव अवश्य ही अलग–अलग होगा। अतः सामान्य नियमों के साथ विशेष नियमों का विश्लेषण भी विचार व गवेषणापूर्वक अवश्य करना चाहिए।

सूर्य के बिन्दुप्रद ग्रह :–

तनुस्वायुस्त्रिरिष्फेषु पंच कामे सुखेऽर्णवाः।
अरौ भाग्ये त्रयः पुत्रे षट् करौ खे भवे च भूः।। 16।।
लग्नेन्दुजीवशुक्रज्ञास्तनौ स्वे मरणेऽपि च।
रविभौमार्कि–चन्द्रार्या व्यये ज्ञेन्दुसितार्यकः।। 17।।
सुखे होरेन्दुशुक्राश्च धर्मेऽर्कार्किकुजा अरौ।
होराज्ञार्येन्दवः कामे भवे दैत्येन्द्रपूजितः।। 18।।
सहजेऽर्कार्किशुक्रार्यभौमाः रवेगुरु–भार्गवौ।
सुतेऽर्कार्केन्दु–लग्नार–शुक्राः स्युःकरणं रवेः।।19।।

सूर्य जिस राशि में स्थित हो उससे 1.2.8.3.12. इन भावों में पाँच ग्रह बिन्दु प्रद होते हैं, 7-4 में चार ग्रह बिन्दु प्रद होते हैं। 6.9 भाव में तीन ग्रह, 5 वें भाव में 6 ग्रह, दशम में 2 ग्रह, एकादश में एक ग्रह बिन्दु प्रद होता है, इसी को स्पष्ट कर रहे हैं–

सूर्य से 1.2.8 भावों में लग्न, चन्द्रमा, गुरु, शुक्र व बुध ये पाँच बिन्दु प्रद है। द्वादश भाव में सूर्य, मंगल, शनि, चन्द्र व गुरु ये पाँच ग्रह बिन्दु प्रद हैं।

चतुर्थ भाव में बुध, चन्द्रमा, शुक्र, गुरु चे चार ग्रह, नवम में लग्न, चन्द्रमा व शुक्र ये तीन ग्रह, षष्ठ भाव में सूर्य, शनि, मंगल ये तीन ग्रह, सप्तम स्थान में लग्न, बुध वृहस्पति और चन्द्रमा ये चार ग्रह, एकादश भाव में शुक्र, तृतीय में सूर्य, शनि, चन्द्रमा, लग्न, मंगल व शुक्र ये छः ग्रह करण प्रद होते हैं। अर्थात् जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान में हो उससे अशुभ स्थानों में जाने पर अशुभ फल करेगा।

चन्द्रमा के बिन्दुप्रद ग्रह :–

भाग्यस्वयोश्च षड् वेश्ममृत्तिहोरासु पंच च।
मानदुश्चिक्ययोरेकः सुते वेदा अरिस्त्रियोः।। 20।।
त्रयो व्ययेऽष्टावाये च शून्यं शीतकरस्य तु।
होरार्कारार्किभृगवोऽगंज्ञर्कि न्द्वार्कभार्गवाः।। 21।।
जीवोऽर्कार्कीन्दुलग्नारा होरेन्दु–गुरु–भास्कराः।
सितज्ञार्याः कुजतनुमन्दास्ते सितशीतगू।। 22।।
होरार्कारार्किविंज्जीवाः शनिः खं सकलाः क्रमात्।

चन्द्रमा के 2-9 स्थान में छः ग्रह, 4.8.1 में पाँच ग्रह, 3.10 में एक ग्रह, पंचम में 4 ग्रह व 6-7 भाव में 3, ग्रह, बारहवें में 8 बिन्दु ग्रह प्रद हैं, ग्यारहवें भाव में कोई भी ग्रह बिन्दुप्रद नहीं है।

लग्न, सूर्य, मंगल, शनि व शुक्र ये पाँच ग्रह लग्न में, बुध, लग्न, सूर्य, चन्द्रमा, शनि व शुक्र ये छः ग्रह द्वितीय स्थान में बिन्दुप्रद हैं। तृतीय स्थान में गुरु, चतुर्थ स्थान में सूर्य, शनि, चन्द्रमा लग्न व मंगल, पंचम स्थान में लग्न, चन्द्र, गुरु सूर्य ये चार ग्रह और षष्ट स्थान में शुक्र, बुध गुरु ये 3 ग्रह, सप्तम में मंगल लग्न व शनि ये 3, अष्टम स्थान में शुक्र, चन्द्रमा, लग्न मंगल, शनि ये पाँच ग्रह, नवम स्थान में लग्न, सूर्य, मंगल, शनि, बुध गुरु ये छः ग्रह, दशम में शनि और बारहवें स्थान में सभी ग्रह बिन्दुप्रद होते हैं, शेष स्थानों में सब जगह रेखा समझनी चाहिए, अर्थात् उक्त ग्रह बिन्दु स्थान के अतिरिक्त स्थानों में शुभ फलप्रद होंगे।

भौम के बिन्दुप्रद ग्रह :–

व्ययवेश्म सुत स्त्रीषु षट् सप्त धनधर्मयोः।। 23।।
होरा मृत्यवोः शरा वेदा विक्रमे खे त्रयः क्षते।
द्वौ भवे शून्यमेवं स्यात् करणं भूमिजस्य तु।। 24।।

कुजस्यार्केन्दु विंजीवसिता लग्नशनी च तु।
सितारगुरुमन्दाः स्युर्धर्मोक्तेषु कुजं विना।। 25।।
चन्द्रारगुरुशुक्रार्किलग्नानिकुजभास्करौ।
ज्ञेन्द्वर्कसितलग्नार्या एषु शुक्रं विना ततः।। 26।।
विना शनिं सप्त धर्मे सितेन्दुज्ञा वियततः।
अर्कार्किज्ञेन्दुलग्नाराः करणं प्रोच्यते क्रमात्।। 27।।

मंगल से 12-4-5-7- इन स्थानों में 6 ग्रह। 2-9 स्थानों में 7 ग्रह। 1-8 में पाँच ग्रह। तृतीय में 4 ग्रह। दशम में तीन ग्रह, षष्ठ में 2 ग्रह बिन्दुप्रद हैं और एकादश स्थान में कोई ग्रह बिन्दुप्रद नहीं होता। अर्थात् समी ग्रह रेखाप्रद होते हैं, लग्न में सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शुक्र; तृतीय में शुक्र मंगल गुरु शनि; पंचम में चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शानि; लग्न, षष्ठ में मंगल, शनि; सप्तम में बुध चन्द्रमा, सूर्य शुक्र, लग्न; बृहस्पति से अष्टम में बुध चन्द्रमा सूर्य लग्न व गुरु। नवम तृतीय में, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्न; दशम स्थान में शुक्र, चन्द्रमा, बुध, द्वादश स्थान में सूर्य शनि बुध चन्द्रमा लग्न व मंगल ये 6 ग्रह बिन्दुप्रद है।

बुध के बिन्दुप्रद ग्रह :–

तनुस्वग्रहकर्मारिधर्मेष्वाग्निर्मृतौ करौ।
भ्रातृस्त्रियो रसा लाभे शून्यं पुत्रे व्यये शराः।। 28।।
बुधास्यर्केन्दुगुरवो गुरुसूर्यबुधाः क्रमात्।
लग्नार्कारार्किं चन्द्रार्या ज्ञार्कार्या हि बुधस्य तु।। 29।।
जीवारेन्द्वार्किलग्नानिशुक्रमन्दधरासुताः।
ज्ञेन्दु लग्नार्कशुक्रार्या ज्ञार्कौ जीवेन्दु लग्नः।। 30।।
अर्कार्यशुक्राः शून्यं च होरेन्द्वारार्किभार्गवाः।

1.2.4.10.6.9 भावों में तीन ग्रह। अष्टम में दो। 3.7 भाव में 6 ग्रह। एकादश में 0 ग्रह, 5.12 भाव में 5 ग्रह बिन्दुप्रद हैं। अर्थात् बुध से प्रथम भाव में सूर्य, चन्द्र, गुरु। द्वितीय भाव में गुरु सूर्य बुध। तृतीय में लग्न सूर्य मंगल, शनि, चन्द्र गुरु। चतुर्थ में बुध, सूर्य, गुरु। पंचम में गुरु, मंगल, चन्द्र, शनि, लग्न। षष्ठ में शुक्र, शनि, मंगल। सप्तम में बुध, चन्द्र, लग्न, सूर्य, शुक्र, गुरु। अष्टम में सूर्य बुध। नवम में गुरु चन्द्र लग्न। दशम में सूर्य, गुरु, शुक्र। एकादश में 0। द्वादश में लग्न, चन्द्र, मंगल, शनि, व शुक्र बिन्दुप्रद हैं। अर्थात् उक्त स्थानों में प्रोक्त ग्रह अशुभ फलदायक हैं। शेष स्थान, रेखा या शुभ प्रद हैं। इन्हीं श्लोकों के आधार पर वराहमिहिरादि आचार्यो ने

बाद में अष्टकवर्ग के रेखाप्रद स्थान बोधक श्लोक लिखे हैं। विशेषार्थ हेतु हमारा बृहज्जातक भी देखें।

गुरु के बिन्दुप्रद ग्रह :–

रूपं धनाययोः खे द्वौ व्यये सप्त क्षतेऽर्णवाः ।। 31 ।।
मृतिविक्रमयोः पंच गुरोः शेषेषु वह्नयोः ।
लग्ने शुक्रेन्दुमन्दाः स्वे आये मन्दश्च विक्रमे ।। 32 ।।
लग्नारेन्दुज्ञभृगवः सुतेऽर्कार्यकुजा गृहे ।
शुक्रमन्देन्दवो द्यूने बुध–शुक्र–शनैश्चराः ।। 33 ।।
जीवारर्केन्दवः शत्रौ सर्वे मन्दं बिना व्यये ।
कर्मणीन्दुशनी धर्मे मन्दार गुरवो मृतौ ।। 34 ।।
लग्नार्किसितचन्द्रज्ञाः करणं च गुरोरिदम् ।

गुरु से 2.11 भाव में 1। दशम में 2। द्वादश में 7। षष्ठ में 4। 3.8 में 5। शेष सब स्थानों में 3-.3 ग्रह बिन्दुप्रद हैं।

लग्न में शुक्र, चन्द्र व शनि। द्वितीय व एकादश में शनि। तृतीय में लग्न, मंगल, चन्द्र, बुध, शुक्र। पंचम में सूर्य, गुरु, मंगल। चतुर्थ में शुक्र, शनि, चन्द्र। सप्तम में बुध, शनि। षष्ठ में गुरु, मंगल, सूर्य व चन्द्र। द्वादश में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, लग्न। दशम में चन्द्र शनि। नवम में शनि, मंगल व गुरु। अष्टम में लग्न, शनि, शुक्र, चन्द्र व बुध। उक्त ग्रह बिन्दुप्रद होते हैं।

शुक्र के बिन्दुप्रद ग्रह :–

सुतायुर्व्रिक्रमेष्वक्षि तनुस्वव्ययखेष्विषुः ।।35 ।।
अष्टौ स्त्रियामरौ षड् भूर्धर्मे मित्रेऽक्षि खे भवे ।।
लग्ने स्वेऽर्कारविज्जीवमन्दाः सर्वे च लाभे ।। 36 ।।
अर्कार्यौ विक्रमस्थाने सुतेऽर्कारौ शुभे रविः ।
सुखेऽर्कबुधजीवाः स्युर्भौमज्ञौ मृतिभे द्विज! ।। 37 ।।
शुक्रार्केन्द्वार्किलग्नार्याः शत्रौ शून्यं भवे व्यये ।
होरार्किबुधशुक्रार्यास्तन्वारज्ञेन्द्विनाश्च खे ।।38 ।।

शुक्र से 5.8.3 भाव में 2 ग्रह। 1.2.12.10 में 5 ग्रह। 7 भाव में 8। 6 भाव में 6 ग्रह। 9 भाव में 1। 4 भाव में 3 ग्रह। 11 भाव में 0। यह बिन्दुप्रद ग्रहों की संख्या है। इसी का स्पष्टीकरण किया जा रहा है।

लग्न व द्वितीय में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि। सप्तम में सभी 9 ग्रह। तृतीय में सूर्य व गुरु। पंचम में सूर्य मंगल। नवम में सूर्य। चतुर्थ में सूर्य, बुध, गुरु। अष्टम में मंगल बुध। षष्ठ में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, शनि, लग्न व गुरु। एकादश में 0। व्यय भाव में लग्न, शनि, बुध, शुक्र, गुरु। दशम में लग्न, मंगल, बुध, चन्द्र व सूर्य, बिन्दुप्रद होते हैं।

शनि के बिन्दुप्रद ग्रह :–

स्वस्त्रीधर्मेषु सप्ताऽङ्गां मृतिहोरागृहेषु च।
आज्ञाभ्रातृव्यये वेदा रूपं शत्रौ सुते शराः।। 39।।
आये शून्यं शनेरेवं करणं प्रोच्यते बुधैः।
गृहे तनौ च लग्नार्कौ स्वस्त्रियोश्च रविं विना।। 40।।
हित्वा धर्मे बुधं माने लग्नाररविचन्द्रजान्।
ततो भ्रातरि जीवार्कबुधशुक्राः क्षते रविः।। 41।।
व्यये लग्नेन्दुमन्दार्काः सितार्केन्दुज्ञलग्नकाः।
सुते मृतौ बुधार्कौ च हित्वाऽऽये खं शनेर्विदः।। 42।।

2.7.9 भाव में 7। 1.4.8 भाव में 6 ग्रह। 10.3.12 में 4 ग्रह। 6 भाव में 1 ग्रह। 5 भाव में 5 ग्रह। 1 भाव में 0 ग्रह बिन्दुप्रद होते हैं।

लग्न व चतुर्थ भाव में लग्न व सूर्य को छोड़कर शेष 6 ग्रह। 2.7 में सूर्य रहित शेष 7 ग्रह। नवम भाव में बुधरहित शेष 7 ग्रह। दशम में लग्न, सूर्य, मंगल, बुध को छोड़कर शेष 4 ग्रह। तृतीय में गुरु, सूर्य, बुध शुक्र। षष्ठ में सूर्य। द्वादश में लग्न, चन्द्र, शनि, सूर्य। पंचम में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, लग्न, बुध। अष्टम में सूर्य बुध को छोड़कर शेष 6 ग्रह रेखाप्रद होते हैं।

सूर्य के रेखाप्रद स्थान :–

उक्ताऽन्ये स्थानदातार इति स्थानं विदुर्बुधाः।
अथ स्थान ग्रहान् वक्ष्ये सुख बोधाय सूरिणाम्।। 43।।
स्वायुस्तनुषु मन्दारसूर्या जीवबुधौ सुते।
विक्रमे ज्ञेन्दुलग्नानि लग्नार्कार्किकुजा गृहे।। 44।।
ते च ज्ञेन्दु खभे चाऽऽये सर्वे शुक्रं विना व्यये।
लग्नशुक्रबुधाः शत्रौ ते च जीवसुधाकरौ।। 45।।

घूनेऽर्कारार्किशुक्राश्चधर्मेऽर्कारार्किविद्गुरुः ।

अभी तक बिन्दु या करण प्रद या अशुभ द्योतक स्थानों को कहा है। अब सुविधार्थ ग्रहों के रेखाप्रद स्थान भी कहता हूँ। सूर्याष्टक वर्ग में 2.8.1 भाव में शनि, मंगल, सूर्य। पंचम में गुरु, बुध। तृतीय में बुध, चन्द्र, लग्न। चतुर्थ में लग्न, रवि, शनि, मंगल। दशम में लग्न, रवि, शनि, मंगल, बुध व चन्द्रमा। एकादश में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, लग्न। द्वादश में लग्न, शुक्र, बुध। षष्ठ में लग्न, शुक्र, बुध, गुरु, चन्द्र। सप्तम में रवि, मंगल, शनि, शुक्र। नवम में सूर्य, मंगल, शनि, बुध, गुरु ये ग्रह रेखाप्रद होते हैं।

अर्थात् सभी ग्रह अपनी अपनी अधिष्ठित राशि से कहे गए भावों में रेखाप्रद होते हैं। इसकी सारिणी आगे दी जा रही है।

चन्द्र रेखाप्रद स्थान :–

झेन्दुजीवाः कुजार्यौ ज्ञार्केन्द्वारार्कितनूशनाः ।। 46 ।।
जीवशुक्रबुधाःभौमबुधशुक्रशनैश्चराः ।
रवीन्द्वारार्किलग्नानि रवीन्द्वार्यज्ञभार्गवाः ।। 47 ।।
अर्कज्ञजीवाः शुक्रेन्दू ते च तौ लग्नभूसुतौ ।
सर्वे शून्यं क्रमात्प्रोक्तं स्थानं शीतकरस्य च ।। 48 ।।

चन्द्रमा के अष्टम वर्ग में प्रथम भाव में बुध, चन्द्र, गुरु। द्वितीय में मंगल गुरु। तृतीय में बुध, सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि, लग्न व शुक्र। चतुर्थ में गुरु, शुक्र, बुध। पंचम में मंगल, बुध, शुक्र, शनि। षष्ठ में सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि लग्न। सप्तम में सूर्य, चन्द्र, गुरु, बुध, शुक्र। अष्टम में सूर्य, बुध, गुरु। नवम में शुक्र, चन्द्र। दशम में शुक्र, चन्द्र, लग्न, मंगल, सूर्य, बुध, गुरु। एकादश में सब ग्रह। द्वादश में कोई भी ग्रह रेखाप्रद नहीं होता है।

मंगल के रेखाप्रद स्थान :–

लग्नमन्दकुजाः भौमो होराज्ञेन्दुदिनाधिपाः ।
मन्दारौ ज्ञरवी ज्ञेन्दुजीवर्कातनुभार्गवाः ।। 49 ।।
मन्दारौ तौ सितश्चार्किः कुजार्कार्यार्किलग्नकाः ।
सर्वे गुरुसितौ स्थानं भौमस्यैवं विदुर्बुधाः ।। 50 ।।

मंगलाष्टक्वर्ग में प्रथम स्थान में लग्न, शनि, मंगल। 2 भाव में मंगल। तृतीय में लग्न, बुध, चन्द्र, सूर्य। चतुर्थ में शनि मंगल। पंचम में सूर्य, बुध। षष्ठ में बुध, चन्द्र, गुरु, सूर्य, लग्न व शुक्र। सप्तम में शनि मंगल। अष्टम में शनि, मंगल व शुक्र। नवम में शनि। दशम में मंगल, सूर्य, गुरु, शनि, लग्न। एकादश में सब ग्रह। द्वादश में गुरु व शुक्र रेखाप्रद होते हैं। अर्थात् अपनी अधिष्ठित राशि से प्रोक्त स्थानों में रेखाप्रद हैं।

बुधाष्टक वर्ग के रेखाप्रद ग्रह :–

लग्नमन्दारशुक्रज्ञालग्नारेन्दुसितार्कजाः ।
शुक्रज्ञौ लग्नचन्द्रार्किसितारा ज्ञार्कभार्गवाः ।।51 ।।
जीवज्ञार्केन्दु लग्नानि भूमिपुत्रशनैश्चरौ ।
तौ च लग्नेन्दुशुक्रार्या मन्दारार्कज्ञभार्गवाः ।। 52 ।।
लग्नमन्दारविच्चन्द्राः सर्वे जीवज्ञभास्कराः ।

बुधाष्टक वर्ग में अपनी अपनी अधिष्ठित राशि से प्रथम में लग्न, शनि, मंगल, शुक्र व बुध । द्वितीय में लग्न, मंगल, शुक्र व शनि । तृतीय में शुक्र व बुध । चतुर्थ में लग्न, चन्द्र, शनि, शुक्र व मंगल । पंचम में बुध, सूर्य व शुक्र । षष्ठ में गुरु, बुध, सूर्य, लग्न । सप्तम में मंगल व शनि । अष्टम में मंगल शनि, लग्न, चन्द्र, शुक्र व गुरु । नवम में शनि, मंगल, सूर्य, बुध व शुक्र । दशम में लग्न, शनि, मंगल, बुध, चन्द्र । एकादश में सभी ग्रह तथा द्वादश में गुरु, बुध, सूर्य रेखाप्रद होते हैं ।

बृहस्पति के रेखाप्रद स्थान–

गुरोर्लग्ने सुखे जीवलग्नारार्कबुधा धने ।। 53 ।।
चन्द्रशुक्रौ च दुश्चिक्ये मन्दार्कार्या शनिर्व्यये ।
सुते शुक्रेन्दुलग्नज्ञमन्दाश्चन्द्रं विना त्वरौ ।।54 ।।
लग्नारार्याऽर्केन्दवोऽस्ते मृतौ जीवार्कभूसुताः ।
धर्मे शुक्रार्कलग्नेन्दुबुधा मन्दं विनाऽय भे ।।55 ।।
माने गुरुबुधारार्कशुक्रहोरास्तथा बिदुः ।

गुरु के अष्टम वर्ग में 1.4 स्थान में गुरु, लग्न, मंगल, सूर्य, बुध, । द्वितीय में चन्द्र व शुक्र । तृतीय में शनि, सूर्य, गुरु । द्वादश में शनि । पंचम में शुक्र, चन्द्र, लग्न, बुध, शनि । षष्ठ में चन्द्ररहित सब पंचम स्थानानुसारी ग्रह अर्थात् शुक्र, लग्न, बुध, शनि । सप्तम में लग्न, मंगल, गुरु, सूर्य, चन्द्र । अष्टम में गुरु, सूर्य, मंगल । नवम में शुक्र, सूर्य, लग्न, चन्द्र, बुध । एकादश में शनि रहित सब ग्रह । दशम भाव में गुरु, बुध, मंगल, सूर्य, शुक्र, लग्न । ये ग्रह रेखाप्रद होते हैं ।

शुक्र के रेखाप्रद ग्रह :–

लग्नशुक्रेन्दवस्ते ते ज्ञार्क्यारास्ते ज्ञवर्जिताः ।। 56 ।।
सुतभे लग्नशशिज शशांकार्यार्किभार्गवाः ।
ज्ञारौ शून्यं सितऽर्केन्दुगुरुलग्नशनैश्चराः ।। 57 ।।
सर्वे रविं बिना शुक्रगुरुमन्दाश्च मानभे ।
सर्वे कुजेन्दुरवयः क्रमाद् भृगुसुतस्य च ।। 58 ।।

शुक्राष्टक वर्ग में प्रथम व द्वितीय स्थान में लग्न, शुक्र, चन्द्रमा। तृतीय में भी शुक्र, चन्द्र व लग्न और बुध, शनि, मंगल। चतुर्थ में शुक्र, चन्द्र, लग्न, शनि, मंगल। पंचम में लग्न, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि, शुक्र। षष्ठ में बुध व मंगल। सप्तम में 0 ग्रह। अष्टम में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, गुरु, लग्न व शनि। नवम में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, व लग्न। दशम में शुक्र, गुरु व शनि। एकादश में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, रेखाप्रद होते हैं।

शनि अष्टक वर्ग में रेखास्थान :–

शनेः रवितनू सूर्यो लग्नेन्दुकुज सूर्यजाः।
लग्नार्कौ जीवमन्दाराः सर्वे सूर्य विना क्षेत्र।। 59।।
अर्कोऽर्कज्ञौ बुधोऽर्कारतनुज्ञाः सकलास्ततः।
कुजज्ञगुरुशुक्राश्च क्रमात् स्थानमिदं विदुः।।60।।

शनि के अष्टक वर्ग में प्रथम भाव में सूर्य व लग्न। द्वितीय में सूर्य। तृतीय में लग्न, चन्द्र, मंगल व शनि। चतुर्थ में लग्न, सूर्य। पंचम में गुरु, शनि व मंगल। षष्ठ में सूर्य रहित सातों ग्रह। सप्तम में सूर्य। अष्टम में सूर्य बुध। नवम में बुध। दशम में सूर्य, मंगल, लग्न, बुध। एकादश में सभी ग्रह तथा द्वादश में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र रेखाप्रद होते हैं।

लग्न के बिन्दुप्रद स्थान व ग्रह :–

तनौ तुर्ये च वह्निः स्याद् दुश्चिक्ये द्वौ धने शराः।
बुद्धिमृत्यकंरिःफेषु षट् खेशक्षतराशिषु।। 61।।
रूपं स्त्रियां गुरुं त्यक्त्वा लग्नस्य करणं त्विदम्।
होरा सूर्येन्दवो लग्ने लग्नारेन्द्विनसूर्यजाः।। 62।।
गुरुज्ञौ लग्न चन्द्रारा लसूचंमंबुसौरयः।
क्षते शुक्रस्तथा चैकः कामे सर्वे गुरुं विना।। 63।।
मृतौ भृगुबुधौ त्यक्त्वा धर्मे गुरुसितौ विना।
कर्मण्याये तथा शुक्रो व्यये सूर्येन्दुवर्जिताः।। 64।।

पीछे लग्न के विन्दुस्थान नहीं कहे थे। अतः अब कह रहे हैं। लग्न से 1.4 स्थान में तीन ग्रह। तृतीय में 2 ग्रह। द्वितीय में 5 ग्रह। 5.8.9.12 में 6 ग्रह। 10.11.6 भाव में एक ग्रह। सप्तम में गुरुरहित सब अर्थात् सात ग्रह। करण या बिन्दुप्रद होते हैं।

लग्न में सूर्य, लग्न व चन्द्र। द्वितीय में मंगल, चन्द्र, सूर्य, शनि। तृतीय में गुरु, बुध। चतुर्थ में लग्न, चन्द्र, मंगल। पंचम में लग्न, रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि। षष्ठ में अकेला शुक्र। सप्तम में गुरु रहित शेष 7 ग्रह। अष्टम में शुक्र व बुध को छोड़कर शेष ग्रह। नवम में गुरु शुक्र को छोड़कर शेष सब 6 ग्रह करण या बिन्दु देते हैं।

लग्नाष्टक वर्ग के रेखा स्थान :-

लग्नस्येदं तु सम्प्रोक्तं करणं द्विजपुंगव ! ।
अथ स्थानं प्रवक्ष्यामि लग्नस्येह क्रमाद् द्विज ! । । 65 । ।
आर्किज्ञशुक्रगुर्वाराःसौम्यदेवेज्यभार्गवाः ।
हित्वा सौम्यगुरुशेषाः सूज्ञेज्यसितसूर्यजाः । । 66 । ।
तथाजीवभृगूबुधौ सर्वे शुक्रं विना क्षते ।
जीव एकस्तथा द्यूने मृतौ सौम्यभृगू तथा । । 67 । ।
धर्मे गुरुसितावेव खे भवे शुक्रमन्तरा ।
सूर्यचन्द्रौ तथा रिःफे स्थानं लग्नस्य कीर्तितम् । । 68 । ।

लग्न के करण स्थानों को कहकर अब रेखास्थानों को कहता हूँ। लग्न से प्रथम भाव में शनि, बुध, शुक्र, गुरु, मंगल । द्वितीय में बुध, गुरु, शुक्र । तृतीय में बुध गुरु रहित शेष सब । चतुर्थ में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि । पंचम में गुरु शुक्र । षष्ठ में शुक्र को छोड़कर शेष सब 7 ग्रह । सप्तम में अकेला गुरु । अष्टम में बुध शुक्र । नवम में गुरु शुक्र । दशम व एकादश में शुक्र रहित सब 7 ग्रह । द्वादश में सूर्य व चन्द्र रेखाप्रद होते हैं ।

पहले बता चुके हैं कि करण या बिन्दु (o) को अशुभ प्रद तथा रेखा (।) को शुभप्रद समझना चाहिए । जो स्थान बिन्दुप्रद हैं, उन्हें छोड़कर शेष स्थान रेखा स्थान हैं । इसी बात को यहाँ स्पष्टतया खुलासा करके कहा है । वराहमिहिर ने इन 68 श्लोकों का आशय केवल 8 श्लोकों में ही कुशलतापूर्वक गूँथ दिया है । बृहज्जातक के अभिनव भाष्य में इस विषय में लिख ही चुके हैं । अपि च अष्टक वर्ग महानिबन्ध मंजुलाक्षरा में बहुत विस्तार से उदाहरणों व क्रिया प्रदर्शन को दिखाते हुए हमने लिखा ही है । पुनश्च यहाँ ग्रन्थानुरोध से आवश्यक तथ्यों को पुनरावृत्त करते हैं । पीछे श्लोकों में जिस स्थान में जिस ग्रह को बिन्दुप्रद कहा है, उस ग्रह के नीचे उसी स्थान में बिन्दु व रेखा प्रोक्त स्थानों में रेखा रखने से सारिणियाँ उत्पन्न हो जाती हैं । जैसे सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य को 3.5.6.12 स्थानों में बिन्दुप्रद कहा है । अतः शेष 1.2.4.7.8.9.10.11 स्थानों में सूर्य अपने अष्टक वर्ग चक्र में अपनी अधिष्ठित राशि में रेखाप्रद रहेगा । इसी तरह सब ग्रहों के अष्टक वर्ग बन जाते हैं ।

तेरह खाने पड़े व 9 खाने खड़े बनाकर अर्थात् 14 रेखाएँ पड़ी व 10 रेखाएँ खड़ी खींचने से 117 कोष्टकों का अष्टकवर्ग चक्र बन जाता है । यहाँ आठों अष्टक वर्ग चक्र के रेखा स्थान क्रमशः सारिणीबद्ध किए जा रहे हैं ।

सूर्याष्टकवर्ग रेखा(48)

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
1	3	1	3	5	6	1	3
2	6	2	5	6	7	2	4
4	10	4	6	9	12	4	6
7	11	7	9	11		7	10
8		8	10			8	11
9		9	11			9	12
10		10				10	
11		11				11	

चन्द्राष्टक वर्ग रेखा (49)

च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	सू.
1	2	1	1	3	3	3	3
3	3	3	4	4	5	6	6
6	5	4	7	5	6	10	7
7	6	5	8	7	11	11	8
10	9	7	10	9			10
11	10	8	11	10			11
	11	10	12	11			
		11					

मंगल अष्टक वर्ग रेखा (39)

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ	शु०	श०	ल०
3	3	1	3	6	6	1	1
5	6	2	5	10	8	4	3
6	11	4	6	11	11	7	6
10		7	11	12	12	8	10
11		8				9	11
		10				10	
		11				11	

बुध अष्टकवर्ग रेखा (54)

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ	शु०	श०	ल०
5	2	1	1	6	1	1	1
6	4	2	3	8	2	2	2
9	6	4	5	11	3	4	4
11	8	7	6	12	4	7	6
12	10	8	9		5	8	8
					8		
	11	9	10		9	9	10
		10	11		11	10	11
		11	12			11	

गुरु अष्टकवर्ग रेखा (56)

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ	शु०	श०	ल०
1	2	1	1	1	2	3	1
2	5	2	2	2	5	5	2
3			4		6	6	4
4	7	4		3			
7			5				5
	9	7	6	4	9	12	6
8				7			
9		8			10		7
	11	10	9	8			9
10		11	10		11		
				10			10
11			11	11			11

शुक्राष्टक वर्ग रेखा (52)

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ	शु०	श०	ल०
8	1	3	3	5	1	3	1
11	2						
	3	5	5	8	2	4	2
12							
	4	6	6	9	3	5	3
	5					8	
	8	9	9	10	4	9	4
	9	11	11	11	5		5
					8		
	11					10	
	12	12			9		8
					10	11	9
					11		11

शनि अष्टकवर्ग रेखा (39)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
1	3	3	6	5	6	3	1
2	6	5	8	6	11	5	3
4	11	6	9	11	12	6	4
7		10	10	12		11	6
8		11	11				10
10		12	12				11
11							

लग्नाष्टक वर्ग रेखा (49)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
3	3	1	1	1	1	1	3
4	6	3	2	2	2	3	6
6	10	6	4	4	3	4	10
10	11	10	6	5	4	6	11
11	12	11	8	6	5	10	
12			10	7	8	11	
			11	9	9		
				10			
				11			

प्रत्येक अष्टक वर्ग में चक्र बनाते समय ग्रह जिस राशि में हो उसी को प्रथम स्थान मानकर शेष स्थानों की गणना करें। उदाहरण में अष्टकवर्ग निकालकर आगे दिखाया जा रहा है।

चक्र निर्माण विधि :–

करणं बिन्दुवल्लेख्यं स्थानं रेखास्वरूपकम्।
करणं त्वशुभदं प्रोक्तं स्थानं शुभफलप्रदम्।। 69।।

दशरेखा लिखेदूर्ध्वास्तिर्यग् रेखा चतुर्दश।

नगेशकोष्ठसंयुक्तं चक्रमेवं प्रजायते।।70।।

तिर्यगष्टसु कोष्ठेषु विलग्न सहितान् खगान्।

आद्येष्वूर्ध्वाधरेष्वेवं भावसंख्या लिखेद्‌बुधः।। 71।।

यथोक्तं विन्यसेत्तत्र करणं स्थानमेव वा।

ततः शुभाशुभं ज्ञात्वा जातकस्य फलं वदेत्।। 72।।

करण को बिन्दुवत् (०) व स्थान को रेखावत् (।)लिखना चाहिए। करण अशुभ को व रेखा शुभ फल को द्योतित करती है।

दस रेखाएँ खड़ी व 14 रेखाएँ पड़ी लिखें। तब 117 कोष्टकों का अष्टक वर्ग चक्र बनता है। आठ कोष्ठकों में लग्न सहित सात ग्रहों को व 12 कोष्ठकों में 12 भावों या राशियों को लिखें। तब यथास्थान रेखा लगाने से चक्र तैयार होता है। रेखा संख्याओं से जातक का शुभाशुभ फल बताना चहिए।

ग्रन्थ के अनुसार पीछे व्याख्या की जा चुकी है। लेकिन आप चाहें तो खड़े कोष्ठकों में ग्रह व पड़े कोष्ठकों में भाव लिखें या पड़े कोष्ठकों में ग्रह लिखें, उसमें कोई भेद नहीं है। कुछ विद्वान्, लग्न कुण्डली के आकार का भी अष्टकवर्ग चक्र लिखते हैं। लग्न कुण्डलीवत् लिखने से स्थान की बचत होती है। आप यथेच्छ कोई भी प्रकार अपना सकते हैं।

हमारे उदाहरण में सूर्य मकर राशि में है। सूर्याष्टक वर्ग सारिणी में 1.2.4.7.8.9.10.11 भाव संख्या लिखी है। इसका अर्थ है कि सूर्याष्टक वर्ग में सूर्य के नीचे इन इन भावो में (सूर्याधिष्ठित मकर से गिनकर) रेखा लगानी हैं। इसी तरह चन्द्रमा आदि के नीचे भी उल्लिखित भावों में ग्रहाधिष्ठित राशि से गिनकर रेखाएँ लगेंगीं। यही विधि सर्वत्र लागू है। इसी पद्धति से सूर्याष्टक वर्ग चक्र का उदाहरण यहाँ दिखाया जा रहा है।

सूर्याष्टक वर्ग (उदा०)

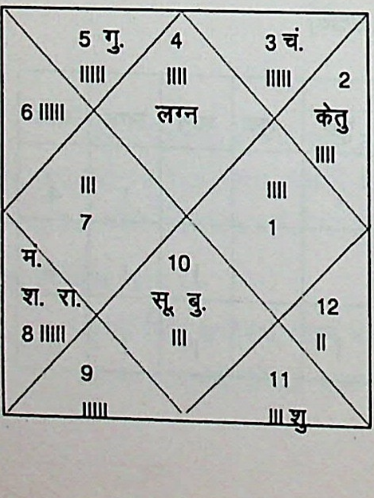
राशि	ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	योग
मेष		।	।			।			।	4
वृष	केतु			।	।			।	।	4
मिथुन	चन्द्र			।	।	।		।	।	5

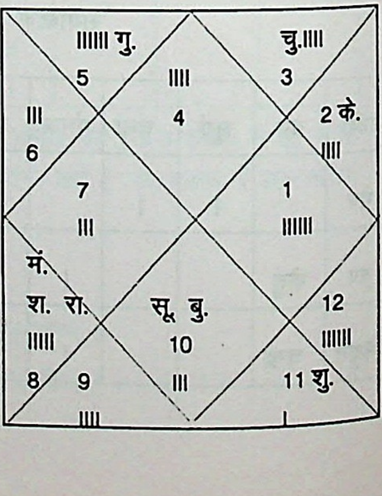
कर्क		I		I			I	I		4
सिंह	गुरु	I	I	I			I	I		5
कन्या		I		I	I			I	I	5
तुला		I			I				I	3
वृश्चिक	मं. श. रा.	I	I	I	I			I		5
धनु				I	I	I		I	I	5
मकर	सू.बु	I				I	I			3
कुम्भ	शुक्र	I		I				I		3
मीन			I		I					2

इसी बात को लग्न चक्र की तरह भी लिखा जा सकता है । स्थानाभाव के कारण अष्टकवर्ग रेखाओं का प्रदर्शन उदाहरण में चक्रवत् ही किया जा रहा है । जिस राशि या भाव में जितनी रेखाएँ हों उन्हें 8 में से घटाकर बिन्दु होते हैं ।

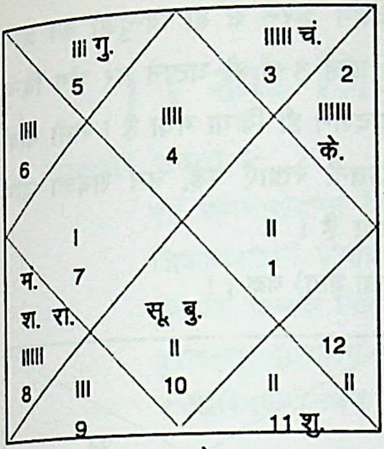
।। पूर्वोदाहरणम् ।।

सूर्याष्टक रेखा (जन्मचक्रयुक्त) चन्द्राष्टकरेखा

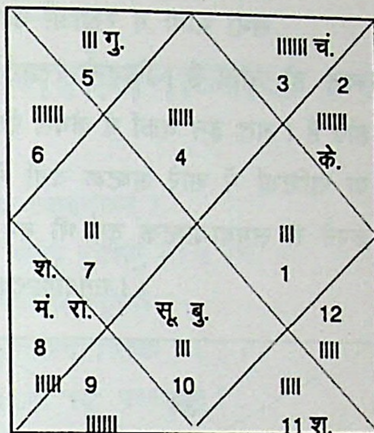




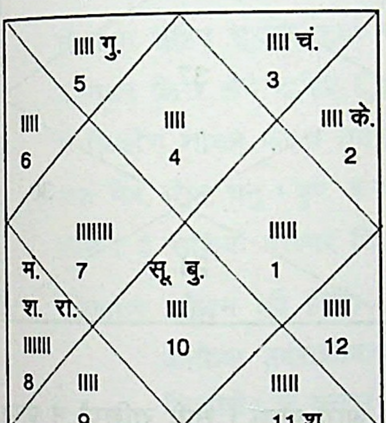
भौमाष्टक रेखा



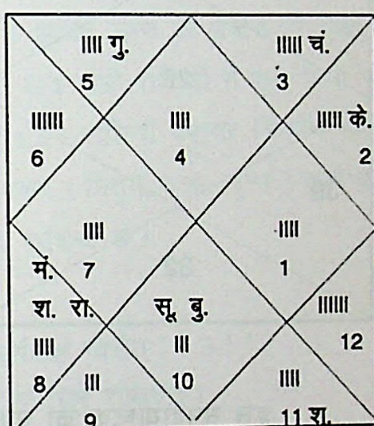
बुधाष्टक रेखा



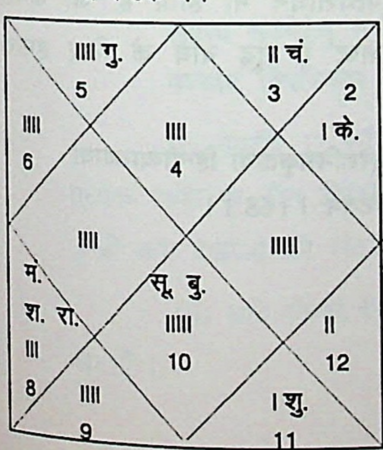
गुरु अष्टक रेखा



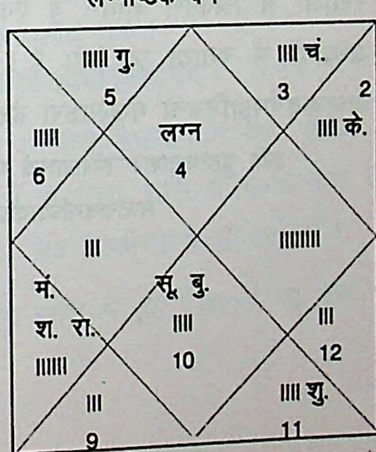
शुक्राष्टकरेखा



शन्यष्टक वर्ग

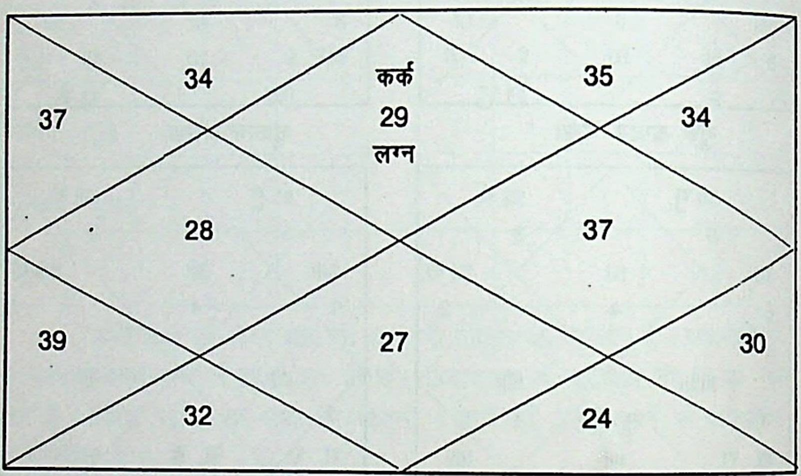


लग्नाष्टक वर्ग



सभी भावों में रेखाओं का प्रदर्शन करने से ही बिन्दुओं का ज्ञान स्वतः हो जाता है। जितनी रेखाएँ हों, उन्हें 8 में से घटाने पर शेष बिन्दु होते हैं। अतः इन चक्रों में केवल रेखा प्रदर्शन ही किया गया है। सभी भावों या राशियों में सारे अष्टक वर्गो में जितनी रेखाएँ पड़ें, उन सबका योग करने से समुदायाष्टक वर्ग भी बन जाता है।

।। समुदायाष्टक (रेखा योग) चक्र ।।



इस समुदायाष्टक का उपयोग आगे होगा। सभी राशियों में प्राप्त रेखाओं में त्रिकोण शोधन व एकाधिपत्यशोधन भी होता है, जो अगले अध्यायों में बताया जा रहा है। विशिष्ट व गूढ़ बोध के लिए हमारी अष्टकवर्गमहानिबन्ध मंजुलाक्षरा देखें।

इति बृहत्पाराशर होराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां मष्टकवर्गाध्यायोऽष्टषष्टितमः ।। **68** ।।

69

। । अथ त्रिकोणशोधनाध्यायः । ।

पाराशर उवाच :-

एवं सलग्नखेटानां विधायाष्टकवर्गकम् ।
त्रिकोणशोधनं कुर्यादादौ सर्वेषु राशिषु । । 1 । ।
त्रिकोणं कथ्यते विप्र ! मेषसिंहधनूंष्यथ ।
वृषकन्यामृगास्याश्च युग्मतौलिघटास्तथा । । 2 । ।
कर्कवृश्चिकमीनाश्च त्रिकोणा स्युः परस्परम् ।

पराशर बोले—हे मैत्रेय ! इस प्रकार पिछले अध्याय में प्रोक्त विधि से लग्न सहित सूर्यादि सात ग्रह व आठवें लग्न के अष्टकवर्ग रेखा स्थान जानकर लिख लेने चाहिए । इसके बाद सभी राशियों में कुल प्राप्त रेखाओं में त्रिकोण शोधन करना चाहिए । 1.5.9 राशियाँ परस्पर त्रिकोण होती हैं । अतः मेष, सिंह, धनु । वृष, कन्या, मकर । मिथुन, तुला, कुम्भ । कर्क वृश्चिक, मीन । ये राशियाँ परस्पर त्रिकोण राशियाँ हैं ।

त्रिकोण शोधन की विधि :-

अधोऽधः सर्वराशीनामष्टवर्गफलं न्यसेत् । । 3 । ।
त्रिकोणेषु च यन्यूनं तत्तुल्यं त्रिषु शोधयेत् ।
एकस्मिन् भवने शून्यं तत् त्रिकोणं न शोधयेत् । । 4 । ।
समत्वं सर्वगेहेषु सर्वं संशोधयेद् बुधः ।
पश्चाद् विपश्चिता कार्यमेकाधिपतिशोधनम् । । 5 । ।

(i) मेषादि 12 राशियों के नीचे अष्टक वर्ग रेखा संख्या लिखें । प्रत्येक राशि के तीन त्रिकोणों में से जिस राशि में सबसे कम रेखा हों उन्हीं कम रेखाओं की संख्या को सब त्रिकोणों में से घटा लें ।

(ii) यदि किसी त्रिकोण राशि में (0) रेखा हो तो कुछ भी नहीं घटाएँ ।

(iii) यदि तीनों त्रिकोणों में बराबर रेखाएँ हों तो तीनों त्रिकोणों में 0 रखें ।

इस प्रकार त्रिकोण शोधन करके एकाधिपत्य शोधन करना चाहिए ।

त्रिकोण शोधन अर्थात् परस्पर तीन त्रिकोण राशियों में से जिसकी सबसे कम रेखाएँ होंगीं, उसकी रेखा संख्या को तीनों जगह घटा लेंगे। तब एक जगह 0 अवश्य बचेगा ।

यदि किसी त्रिकोण राशि में पहले से ही 0 रेखा हो तो उसमें त्रिकोण शोधन नहीं होगा, अथवा 0 घटने से सर्वत्र यथावत् रेखाएँ रह जाएँगी । यदि तीनों जगह बराबर रेखाएँ हों तो सर्वत्र 0 ही रह जाएगा ।

अपने पूर्वोक्त उदाहरण में सब अष्टकवर्गों का त्रिकोण शोधन करके यहाँ बताया जा रहा है । त्रिकोण शोधन प्रस्ताराष्टकवर्गाध्याय में हमने उपयोगिता व फलादेश के साथ सोदाहरण अपनी अष्टकवर्गमहानिबन्ध मंजुलाक्षरा में समझाया है । विशेष जिज्ञासु उसका अध्ययन करें ।

त्रिकोण शोधन में जिस ग्रह का शोधन करना हो, उस ग्रह की आश्रित राशि से राशि चक्र लिखते हैं । राशियों के नीचे उसी ग्रह के अष्टकवर्ग की रेखाएँ लिखेंगे, तब त्रिकोणशोधन करेंगे ।

मकर, वृष, कन्या त्रिकोण राशियों में मकर में सबसे कम रेखाएँ हैं । अतः मकर रेखा 3 को वृष, कन्या की रेखा संख्या 4 में से क्रमशः घटाया तो 1 रेखा बची । इसी तरह अन्य राशियों में भी किया जाएगा ।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के अष्टकवर्गों में भी शोधन होगा । सभी शोधनों का एकत्र चक्र आगे एक ही स्थान पर दिया जाएगा ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
त्रिकोणशोधनाध्याय एकोनसप्ततितमः ।। 69 ।।

70

।। अथ एकाधिपत्यशोधनाध्यायः ।।

पूर्व त्रिकोणं संशोध्य राशीनां स्थापयेत्फलम् ।
पृथक् पृथक् ततः कुर्यादेकाधिपतिशोधनम् ।। 1 ।।
क्षेत्रद्वये फलानि स्युस्तदा संशोधयेद् यथा ।
क्षीणेन सह चान्यस्मिन् शोधयेद् ग्रह वर्जिते ।। 2 ।।
उभयोर्ग्रहसंयोगे न संशोध्यः कदाचन ।
ग्रहयुक्ते फलैर्हीने ग्रहाभावे फलाधिके ।। 3 ।।
ऊनेन सममन्यस्मिन् शोधयेद्ग्रहवर्जिते ।
फलाधिकैर्ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन् सर्वमुत्सृजेत् ।। 4 ।।
उभयत्रग्रहाभावे समत्वे सकलं त्यजेत् ।
सग्रहाग्रहयोस्तुल्ये सर्व संशोध्यमग्रहे ।। 5 ।।
कुलीरसिंहयोः राश्योः पृथक् क्षेत्रं पृथक् फलम् ।
संशोध्यैकाधिपत्यं हि ततः पिण्डं प्रसाधयेत् ।। 6 ।।

त्रिकोण शोधन के बाद जो रेखाएँ शेष रहें, उन रेखाओं में एकाधिपत्यशोधन संस्कार भी करें ।

(i) कर्क व सिंह राशि को छोड़कर शेष 10 राशियों की रेखाओं में ही एकाधिपत्य शोधन होता है । एक है अधिपति या स्वामी जिनका, उन राशियों की रेखाओं का शोधन एकाधिपत्य शोधन है । जैसे 1.8 मंगल, 2.7 शुक्र 3.6 बुध, 9.12 गुरु, 10.11 शनि । अतः इन्हीं 10 राशियों में ही यह शोधन या संस्कार (घटाना) होगा ।

(ii) यदि एक ग्रह की दोनों राशियाँ ग्रहहीन हों तो कम रेखाओं को अधिक रेखाओं में से घटाकर शेष को रखना ।

(iii) यदि दोनों राशियों में ग्रह हों तो यह शोधन नहीं करना चाहिए ।

(iv) यदि एक राशि में ग्रह हो तथा दूसरी में न हो तो ग्रह युक्त राशि की त्रिकोण शुद्ध रेखा कम हों तो उन्हें अधिक रेखा में से घटाएँ, शेष रेखाएँ ग्रह रहित के नीचे रखें तथा ग्रह युक्त के नीचे सारी त्रिकोण शुद्ध रेखाएँ रखें ।

(v) यदि ग्रह युक्त एक राशि की त्रिकोण शुद्ध रेखाएँ अधिक हों तो ग्रह रहित के नीचे 0 तथा ग्रह युक्त के नीचे कोई संस्कार न करके यथावत् पूर्वप्राप्त रेखाएँ ही रखें ।

(vi) यदि दोनों राशियों में ग्रह न हों तथा दोनों में रेखाएँ बराबर हों तो दोनों के नीचे 0 रख दें।

(vii) सग्रह व अग्रह राशि में यदि बराबर रेखाएँ हों तो ग्रहरहित के नीचे 0 रखें तथा ग्रह युक्त के नीचे यथावत् फल रहेगा।

(viii) 4.5 राशि का एकाधिपत्यशोधन नहीं होता।

हमारे उदाहरण में सभी अष्टकवर्ग चक्रों का एकाधिपत्य शोधन इस प्रकार होगा। सूर्याष्टक वर्ग में मकर कुम्भ दोनों में ग्रह हैं। अतः इनका एकाधिपत्य शोधन नहीं होगा। तब त्रिकोण शुद्ध रेखाएँ ही एकाधिपत्य शुद्ध रेखाएँ मानी जाएँगी। मीन व धनु में कोई भी ग्रह नहीं है। मीन में त्रिकोण शुद्ध 2 तथा धनु में 0 है। अतः 2.0 ही क्रमशः रहे। मेष वृश्चिक में वृश्चिक ग्रह युक्त तथा 1 रेखा वाली है। मेष में 2 रेखाएँ हैं। तो ग्रह रहित के नीचे। तथा सग्रह के नीचे यथावत् 1 रेखा रखी। वृष तुला ग्रह रहित है। इनमें क्रमशः 1.2 रेखाएँ हैं। अतः 0.1 रेखाएँ बचीं। मिथुन कन्या में मिथुन सग्रह व 3 रेखा युक्त है। कन्या में 0 रेखा है। अतः मिथुन के नीचे 3 व कन्या के नीचे 0 ही रखा। ये एकाधिपत्य शुद्ध रेखाएँ हैं। इसी विधि से सबकी एकाधिपत्य शुद्ध रेखाएँ जानी जा सकती हैं।

।। सूर्य त्रिकोण शोधन ।। (उदा०)

राशि	मे.	सिं.	धनु.	वृ.	क.	म.	मि.	तु.	कु.	क.	वृ.	मी.
रेखा	6	6	4	4	3	3	4	3	1	4	5	6
त्रि. शो.	2	2	0	1	0	0	3	2	0	0	1	2

।। चन्द्र त्रिकोणशोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा	6	6	4	4	3	3	4	3	1	4	5	6
त्रि. शो.	2	2	0	1	0	0	3	2	0	0	1	2

।। मंगल त्रिकोण शोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा	2	3	3	6	4	2	5	1	2	4	5	2
त्रि. शो.	0	1	1	4	2	0	4	०	1	2	3	0

।। बुध त्रिकोण शोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा	3	3	6	6	6	3	6	3	4	5	5	4
त्रि. शो.	0	0	3	3	3	0	3	0	1	1	1	0

।। गुरु त्रिकोण शोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा:	5	4	4	4	4	4	4	7	5	4	6	5
त्रि. शो.	1	0	0	0	0	0	0	3	1	0	2	1

।। शुक्र त्रिकोण शोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा	4	4	3	5	6	3	5	4	4	4	4	6
त्रि. शो.	1	1	0	2	3	0	1	0	0	0	0	2

।। शनि त्रिकोण शोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा	5	4	4	1	4	5	2	4	1	4	3	2
त्रि. शो.	1	0	0	0	3	4	1	3	0	2	1	0

।। लग्न त्रिकोण शोधन ।।

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
रेखा	8	5	3	4	5	4	4	3	4	0	6	3
त्रि. शो.	5	2	0	0	1	0	1	0	1	0	6	3

इस प्रकार अपने पूर्वोक्त उदाहरण में त्रिकोण शोधन दिखाया गया है। अब इनमें एकाधिपत्य शोधन करेंगे। जिन दो राशियों का स्वामी कोई एक ही ग्रह हो, उन्हीं दो राशियों में एकाधिपत्यशोधन होगा। कर्क व सिंह में एकाधिपत्य शोधन नहीं होता।

।। सूर्याष्टक एकाधिपत्यशोधन ।।

राशि	1	8	2	7	3	6	4	5	9	12	10	11
ग्रह		शनि मंगल राहु	केतु		चन्द्र			गुरु			सूर्य बुध	शुक्र
त्रिकोण शु. रेखा	2	1	1	2	3	0	0	2	0	2	0	0
एका. शो.	1	1	0	1	3	0	0	2	0	2	0	0

स्थूणाभिखननन्याय से एकाधिपत्य के नियमों का सिंहावलोकन करते हैं, ताकि विषय और स्पष्ट हो जाए।

(i) 4.5 राशि में एकाधिपत्यशोधन नहीं होता है।

(ii) त्रिकोण शोधन के बाद यदि किसी एक राशि में 0 हो तब भी रेखाए यथावत् रहेंगी।

(iii) दोनों राशि ग्रह रहित हों और त्रिकोण शुद्ध रेखा समान हों तब भी 0 शेष रहता है।

(iv) एक राशि ग्रह रहित हो, दोनों राशियों में सग्रह राशि की रेखा कम हो तो, कम रेखा मान को अधिक में से घटाएँ तथा सग्रह के नीचे कोई परिवर्तन न करें।

(v) सग्रह राशि की रेखा अधिक हो तो अग्रह के नीचे 0 तथा सग्रह को यथावत् रखें।

(vi) यदि दोनों में ग्रह हों तो भी एकाधिपत्य शोधन नहीं होता, तब त्रिकोण शुद्ध रेखाएँ ही वहाँ पर भी लिख दी जाती हैं। ग्रहों में राहु केतु का विचार नहीं होता है।

अष्टकवर्ग के सभी नियमों व उपनियमों की सोदाहरण विवेचना व प्रस्तुति हम पहले ही अपने 'अष्टक वर्ग महानिबन्ध मंजुलाक्षरा' में कर चुके हैं।

।।चन्द्रैकाधिपत्यशोधन ।।

राशि	1 . 8		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
ग्रह		मं. श. रा.	केतु		चन्द्र			गुरु			सूर्य बुध	शुक्र
त्रि. शु. रे.	2	1	1	2	3	0	0	2	0	2	0	0
एका. शो.	1	1	0	1	3	0	0	2	0	2	0	0

।। मंगलैकाधिपत्यशोधन ।।

राशि	1 . 8		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
त्रि. शु. रे.	0	3	4	0	4	2	2	1	1	0	0	1
एका. शो.	0	3	4	0	2	2	1	1	1	0	0	1

।। बुधैकाधिपत्यशोधन ।।

राशि	1 . 8		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
त्रि. शु. रे.	0	1	3	0	3	3	1	0	3	0	0	1
एका. शो.	0	1	3	0	3	0	1	0	3	0	0	1

।। गुर्वैकाधिपत्यशोधन ।।

राशि	1 . 8 .		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
त्रि. शु. रे.	1	2	0	3	0	0	0	0	0	1	0	1
एका. शो.	0	2	0	3	0	0	0	0	0	1	0	1

।।शुक्रैकाधिपत्य शोधन ।।

राशि	1 . 8		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
त्रि. शु. रे.	1	0	2	0	1	3	0	1	0	2	0	0
एका. शो.	1	0	2	0	1	2	0	1	0	2	0	0

।। शन्यैकाधिपत्य शोधन ।।

राशि	1 . 8		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
त्रि. शु. रे.	1	1	0	3	1	3	2	0	0	0	4	0
एका. शो.	0	1	0	3	1	2	2	0	0	0	4	0

।। लग्नैकाधिपत्यशोधन ।।

राशि	1 . 8		2 . 7		3 . 6		4 . 5		9 . 12		10 . 11	
त्रि. शु. रे.	5	6	0	0	1	1	0	2	0	3	0	1
एका. शो.	0	6	0	0	1	0	0	2	0	3	0	1

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्याया मेकाधिपत्यशोधनाध्यायः सप्ततितमः ।। 70 ।।

71

।। अथ पिण्डसाधनाध्यायः ।।

पराशर उवाच :–

एवं शोध्यावशेषाङ्कं राशिमानेन वर्धयेत् ।

ग्रहयुक्ते हि तद्राशौ ग्रहमानेन वर्धयेत् ।। 1 ।।

सर्वेषां च पुनर्योगः पिण्डाख्यः कथ्यते द्विज ।।

गौसिंहौ दशभिर्गुण्यौ वसुभिर्युग्मवृश्चिकौ ।। 2 ।।

सप्तभिस्तुलमेषौ च मृगकन्ये च पंचभिः ।

शेषाः स्वसंख्यया गुण्या ग्रहमानमथोच्यते ।। 3 ।।

जीवारशुक्रसौम्यानां दशाष्टनगसायकाः ।

पंचशेषग्रहाणां च मानं प्रोक्तमिदं क्रमात् ।। 4 ।।

(i) सभी राशियों के पूर्व प्राप्त एकाधिपत्य शुद्ध रेखामान को, यहीं कहे जा रहे राशि गुणक से गुणा करें । यह क्रिया सभी ग्रहों के अष्टकवर्गों में अलग–अलग होगी ।

(ii) यदि किसी राशि में ग्रह हो तो उस राशि की त्रिकोण शुद्ध रेखाओं को ग्रह गुणक से गुणा करें । यह क्रिया भी आठों चक्रों में करें । इस प्रकार सबका योग करने पर 'राशिपिण्ड' व 'ग्रहपिण्ड' कहलाता है ।

(iii) वृष सिंह– 10, मिथुन वृश्चिक–8, मेष तुला–7, मकर कन्या–5, ये राशि गुणक हैं । शेष राशियों के राशि की क्रमसंख्या अर्थात् कर्क–4, धनु–9, कुम्भ–11, मीन–12 ही गुणक होते हैं ।

(iv) ग्रहगुणक–सूर्य–5, चन्द्र–5, मंगल–8, बुध–5, गुरु–10, शुक्र–7, शनि–5, क्रमशः समझने योग्य हैं ।

यहाँ ध्यातव्य है कि किसी राशि में यदि एक से अधिक ग्रह हों तो उस राशि की शुद्ध रेखाओं को बारी–बारी से सभी ग्रहों के गुणकों से गुणा करें ।

राशि पिण्ड व ग्रह पिण्ड का योग करने पर 'योगपिण्ड' कहलाता है। इस पिण्ड साधन से फलादेश किया जाता है। आगामी अध्याय में फलादेश बताया जाएगा।

हमारे उदाहरण में सूर्याष्टक वर्ग की त्रिकोणैकाधिपत्य शुद्ध रेखाओं को राशि गुणकों से गुणा किया तो मेष–7, वृष–0, सिंह–20, कंन्या–0, तुला–7, वृश्चिक–8, धनु–0, मिथुन–24, कर्क–0, मीन 24 ये राशि गुणकों व रेखाओं का गुणनफल हुआ। इन सबका योग 7+24+20+7+8+24 =90 राशि पिण्ड है। इसी अष्टक वर्ग में जिन राशियों में ग्रह हैं, उन राशियों की त्रिकोणैकाधिपत्य शुद्ध रेखाओं को ग्रह गुणक से गुणा किया तो सूर्य की आश्रित राशि मकर की रेखा0रहने से 0, चन्द्र राशि मिथुन की रेखा 3× चन्द्रगुणक 5 = 15। मंगल शनि की राशि वृश्चिक की रेखा 1×8=8 तथा 1×4=4 हुआ। बुध–0, गुरु–– 20, शुक्र–– सबका योग 0, है। राशि पिण्ड 90+ग्रह पिण्ड 48 = 137 योगपिण्ड हुआ।

इसी पद्धति से चन्द्राष्टक वर्ग का चक्र बनाकर दिखाया जा रहा है, ताकि लेखन प्रकार स्पष्ट हो जाए।

।। चन्द्राष्टक वर्ग चक्र ।। (उदा०)

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिहं	क.	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रह			चन्द्र		गुरु			मं.श.		सू.बु.		
रेखा	6	4	4	4	6	3	3	5	4	3	1	6
त्रि.शु. रे.	2	1	3	0	2	0	2	1	0	0	0	2
एका शु.रे.	1	0	3	0	2	0	1	1	0	0	0	2
राशि गुण.	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12
राशि पि.	7	10	24	4	20	0	7	8	0	0	0	24
ग्रह गुण	-	-	5	-	10	-	-	8/5	-	5/5	7	-
ग्र.पि	-	-	15	-	20	-	-	8/5	-	00	0	-

राशिपिण्ड 104 + ग्रहपिण्ड 48 = 152 चन्द्र योगपिण्ड

मंगलाष्टक वर्ग आदि की त्रिकोणैकाधिपत्यशुद्ध रेखाओं से भी इसी प्रकार क्रिया की तो इस प्रकार परिणाम प्राप्त हुए ।

मंगलाष्टक रेखा में राशि पिण्ड क्रमशः 0 + 40 + 16 + 4 + 10 + 1 = + 0 + 24 + 9 + 0 + 11 + 0 = 124 राशिपिण्डं है । 10 + 10 + 24 + 15 + 0 + 0 + 7 = 56 ग्रहपिण्ड तथा इनका योग 180 योगपिण्ड हुआ ।

बुधाष्टक में 30 + 24 + 4 + 8 + 27 + 11 = 104 रशिपिण्ड व 15 + 8 + 5 + 7 = 35 ग्रहपिण्ड = 139 योगपिण्ड है ।

गुर्वष्टक में 21 + 16 + 11 + 12 = 60 राशिपिण्ड तथा 16 + 10 + 7 = 33 ग्रहपिण्ड व 93 योग पिण्ड हुआ ।

शुक्राष्टक में 7 + 20 + 8 + 10 + 10 + 24 = 79 राशिपिण्ड व 5 + 10 = 15 ग्रहपिण्ड तथा 94 योगपिण्ड है ।

शन्यष्टक में 8 + 8 + 10 + 21 + 8 + 20 = 75 राशिपिण्ड एवं 5 + 8 + 5 + 20 + 20 = 58 ग्रहपिण्ड तथा 75 + 58 = 133 योगपिण्ड हुआ ।

लग्नाष्टक मे 8 + 20 + 48 + 11 + 36 = 123 राशिपिण्ड तथा 5 + 20 + 48 + 39 + 7 = 110 ग्रहपिण्ड 233 योगपिण्ड हुआ ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां पिण्डसाधनाध्याय एकसप्ततितमः ।। 71 ।।

।। अथाष्टकवर्गफलाध्यायः ।।

अष्टकवर्ग से विचारणीय विषय :–

आत्मप्रभावशक्तिश्च पितृचिन्ता रवेः फलम् ।
मनोबुद्धिप्रसादं च मातृचिन्ता मृगाङ्कत: ।। 1 ।।
भ्रातृसत्त्वंगुणं भूमिं भौमेनैव विचिन्तयेत् ।
वाणिज्यकर्मवृत्तिं च सुहृदं च बुधेन तु ।। 2 ।।
गुरुणा देहपुष्टिं च विद्यापुत्रार्थसम्पदः ।
भृगोर्विवाहकर्माणि भोगस्थानं च वाहनम् ।। 3 ।।
वेश्यास्त्रीजनसम्भोगं शुक्रेण च निरीक्षयेत् ।
आयुश्च जीवनोपायं दुःखशोकभयानि च ।। 4 ।।
सर्वक्षयं च मरणं मन्देनैव निरीक्षयेत् ।

(i) सूर्याष्टक वर्ग से आत्मा, जीवनी शक्ति, प्रभाव, तेज, शक्ति, पिता का विचार करना चाहिए । संक्षेप में सूर्य जिन–जिन चीजों का कारक होता है, तत्तत् सब कुछ सूर्याष्टक वर्ग से देखें । फल विचार की विधि बताई जा रही है ।

(ii) चन्द्राष्टक वर्ग में मन, बुद्धि, प्रसन्नता, उदासी, माता का विचार, स्थान आदि देखें ।

(iii) भौमाष्टक वर्ग में भाई, मनोबल, अचल सम्पत्ति, भूमि आदि को देखें ।

(iv) व्यापार, व्यवसाय, रोजगार, मित्रता आदि बुधाष्टक वर्ग में देखें ।

(v) गुर्वष्टक वर्ग में शरीर, शरीर की पुष्टि, विद्या, पुत्र, धन–सम्पति आदि देखें ।

(vi) शुक्राष्टक में विवाह, वैवाहिक सुख, वाहन, सुख भोग, विलास, जीवन स्तर, पराई या हीन स्त्री से सम्बन्ध, प्रेम आदि देखें ।

(vii) शन्यष्टक में आयु, जीवन में आने वाली विपत्ति, भय, शोक, अवनति, सब प्रकार की हानि, मृत्यु आदि देखें ।

फलविचार की विधि :–

तत्तद्भावफलाङ्केन गुणयेद् योगपिण्डकम् ।।5।।

सप्तविंशोद्धृतं शेषतुल्यर्क्षे यातिभानुजः ।

यदा यदा तस्य भावस्यार्तिं निर्दिशेद्बुधः ।।6।।

जिस भाव से सम्बन्धित फल का विचार करना हो, उस भाव की रेखाओं की संख्या से योगपिण्ड को गुणा करें । गुणनफल में 27 का भाग दें । शेष संख्या तुल्य अश्विनी आदि नक्षत्र में जब शनि गोचर करेगा, तब तब उस भाव की हानि बतानी चाहिए ।

सूर्याष्टक से पिता का विचारः–

अर्काश्रितर्क्षान्नवमो राशिः पितृगृहं स्मृतम् ।

तदराशिफलसंख्याभिर्वर्धयेत् योगपिण्डकम् ।। 7 ।।

विभजेत् सप्तविंशत्या शेषर्क्षं याति भानुजः ।

यदा तदा पितृक्लेशो भवतीति न संशयः ।। 8 ।।

तत्त्रिकोणगते वापि पिता पितृसमोऽपि वा ।

मरणं तस्य जानीयात् पीड़ा वा महतीं वदेत् ।। 9 ।।

जन्म समय में सूर्य जिस राशि में हो, उस राशि से नवीं राशि को पिता का स्थान समझें ।

सूर्याष्टक वर्ग में उस नवीं राशि को जितनी रेखाएँ मिली हों, उस रेखा संख्या को सूर्याष्टक के योग पिण्ड से गुणा कर 27 का भाग दें । शेष नक्षत्र में जव शनि गोचर करेगा तब पिता को कष्ट होगा । अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण नक्षत्रों में शनि का गोचर हो तब पिता या पितृतुल्य व्यक्ति की मृत्यु होती है, या महान् कष्ट होता है ।

प्रत्येक नक्षत्र से दसवाँ व उन्नीसवाँ नक्षत्र त्रिकोण नक्षत्र होता है । अष्टक वर्ग पद्धति गोचर की एक गूढ़ व विस्तृत पद्धति है ।

हमारे पूर्वोदाहरण में सूर्याधिष्ठित राशि मकर से नवीं राशि कन्या को सूर्याष्टक में 3 रेखाएँ मिली हैं । अतः सूर्ययोगपिण्ड 138×3 = 414÷27 शेष 9 है । अश्विनी से गिनने पर श्लेषा नवाँ नक्षत्र है । जब–जब शनि श्लेषा में रहेगा तब–तब मनुष्य के पिता को कष्ट होगा । अथवा ज्येष्ठा (10 वें) रेवती नक्षत्र में शनि होगा तब–तब कष्ट होगा । वास्तव में भी कर्क राशिगत शनि में इस व्यक्ति के पिता को मृत्यु तुल्य कष्ट हो चुका है ।

फल ज्ञान का प्रकारान्तर :–

गुणयेद् योगपिण्डं वा तद्राशिफलसंख्यया ।
अर्कोद्धृतावशेषर्क्षं यदा गच्छति भानुजः ।। 10 ।।
तत् त्रिकोणर्क्षकं वापि पितृकष्टं तदा वदेत् ।
रिष्टप्रददशायां तु मरणं कष्टमन्यदा ।। 11 ।।

अथवा योगापिण्ड व राशिगत रेखाओं को गुणा करके 12 से भाग दें तो शेष राशि या उसकी त्रिकोण राशियों में शनि का गोचर हो तब पिता को कष्ट होता है । यदि उस समय पिता को अरिष्ट कारक दशा भी चल रही हो तो मृत्यु भी सम्भव है, अन्यथा कष्ट ही होता है ।

उसी उदाहरण में 414÷12 = शेष 6 है । अतः कन्या राशि या 10.2 राशियों में जब शनि गोचर करेगा तथा साथ ही पिता को अशुभ दशा भी चल रही हो, तब पिता की मृत्यु होगी । नक्षत्र व राशि से प्राप्त समय में से नक्षत्र द्वारा प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय होता है, ऐसा हमने अनुभव में पाया है ।

पिता का अरिष्ट विचार :–

अर्कात् तु तुर्यगे राहौ मन्दे वा भूमिनन्दने ।
गुरुशुक्रे क्षणरुते पितृहा जायते नरः ।।12 ।।
लग्नाच्चन्द्राद्गुरुस्थाने याते सूर्यसुतेऽथवा ।
पापैर्दृष्टे युतेवापि पितृनाशं वदेद्बुधः ।। 13 ।।
लग्नात्सुखेश्वरारिष्टदशाकाले पितृक्षयः ।
अनुकूलदशाकाले नेति चिन्त्यं विचक्षणैः ।। 14 ।।

(i) पूर्व प्रकार से त्रिकोण नक्षत्रों की राशि में शनि का गोचर हो तथा उसी समय सूर्य राशि से चतुर्थ में राहु हो या शनि हो या मंगल हो तथा गुरु शुक्र की दृष्टि से वह चतुर्थगत राहु सर्वथा रहित हो तो पिता की मृत्यु होती है ।

(ii) लग्न या चन्द्र से नवम राशि में शनि का गोचर हो तथा वह शनि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो पिता का परम अरिष्ट होता है ।

(iii) लग्न से चतुर्थ भावेश की दशा हो तथा उस दशा में जब पिता की अरिष्ट कारक दशा व पूर्वोक्त प्रकार से गोचर का भी समन्वय हो जाए तो पिता की मृत्यु होती है ।

(iv) पिता की शुभ दशा रहने पर मृत्यु न होकर कष्ट मात्र होता है ।

पितृनाश का अन्य योग :–

पितृजन्माष्टमे जातस्तदीशे लग्नगेऽपि वा ।
करोति पितृकार्याणि स एवात्र न संशयः ।। 15 ।।

यदि पिता के जन्म लग्न से अष्टम राशि लग्न में पुत्र का जन्म हो अथवा पिता का अष्टमेश पुत्र के जन्म लग्न में स्थित हो तो मनुष्य के पिता की मृत्यु हो जाती है, तथा वह पिता के कार्यों का उत्तरदायित्व स्वयं सँभालता है ।

पितृसुख योग :–

सुखनाथदशायां तु सुखप्राप्तेश्च सम्भवः ।
सुखेशे लग्नलाभस्थे चन्द्रस्थानाद्विशेषतः ।। 16 ।।
पितृगेहसमायुक्ते जातः पितृवशानुगः ।
पितृजन्मतृतीयर्क्षे जातः पितृधनाश्रितः ।। 17 ।।
पितृकर्मगृहे जातः पितृतुल्यगुणान्वितः ।
तदीशे लग्नसंस्थेऽपि पितृश्रेष्ठो भवेन्नरः ।। 18 ।।
एवं पूर्वोक्तसामान्यफलं चात्रापि चिन्तयेत् ।। 19 ।।

(i) जब मनुष्य को चतुर्थेश की दशा हो तब अनुकूल गोचर व अष्टक वर्गानुसार शुभ नक्षत्र में शनि गोचर रहने पर पिता से या स्वयं अपने प्रयत्नों से अधिक सुख मिलता है ।

(ii) यदि चतुर्थेश लग्न से 1-11 स्थानों में हो या चन्द्र से एकादश स्थान में हो तो विशेष सुख प्राप्ति योग होते हैं ।

(iii) यदि सुखेश चन्द्र से दशम भाव में हो तो जातक पिता का विशेष आदर व आज्ञा पालन करता है ।

(iv) पिता के जन्म लग्न या चन्द्र से तृतीय राशि में पुत्र का जन्म लग्न या चन्द्र होने पर व्यक्ति पिता की धन–सम्पत्ति पर आश्रित रहता है । अर्थात् पैतृक सम्पत्ति का विशेष सुख मिलता है ।

(v) पिता के जन्म लग्न या राशि से दशम राशि में जन्म होने पर व्यक्ति पिता के समान गुण व रूप वाला होता है ।

(vi) यदि स्वयं का दशमेश लग्न में हो या अपने पिता का दशमेश लग्न में हो तो मनुष्य अपने पिता से विशेष श्रेष्ठ होता है ।

इन नियमों के साथ पूर्वोक्त सामान्य भावविचार के नियमों का भी प्रयोग करना चाहिए ।

सूर्याष्टक वर्ग से विशेष निर्देश :–

सूर्याष्टवर्गे यच्छून्यं तन्मासे वंत्सरं प्रति ।
विवाहव्रतचूडादिशुभकर्मपरित्यजेत् ।। 20 ।।
यत्र रेखाधिका मासे तत्र संवत्सरेऽपि च ।
अनिष्टेऽपि रवौ जीवे शुभकर्म समाचरेत् ।। 21 ।।

सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में 0 रेखा हो, उस सौर मास को प्रतिवर्ष विवाह, व्रतबन्ध, यज्ञोपवीतादि मंगल कृत्यों में आजीवन वर्जित करें।

जिस मास में अधिक रेखा हो, उस सौर मास में, सामान्य नियमों से सूर्य व गुरु का अनिष्टकारी स्थानों में गोचर होते हुए भी शुभ कार्य करने चाहिए।

गोचर की अपेक्षा अष्टकवर्ग की महत्ता प्रतिपादित की गई है। अष्टकवर्ग द्वारा ही गोचर की शुद्धि का प्रामाणिक विचार होता है।

चन्द्राष्टक वर्ग फल विचार :–

एवं चन्द्राष्टवर्गे च यत्र शून्यं भवेद् बहु ।
तत्र तत्र गते चन्द्रे शुभं कर्म परित्यजेत् ।। 22 ।।
चन्द्राच्चतुर्थतो मातृप्रासाद ग्रामचिन्तनम् ।
चन्द्रात्सुखफलात् पिण्डं वर्धयेद् भैश्च सम्भजेत् ।। 23 ।।
शेषमृक्षं शनौ याते मातृहानि विनिर्दिशेत् ।
तत्तत्त्रिकोणगे वापि शनौ मातृरुजं वदेत् ।। 24 ।।

चन्द्राष्टक वर्ग में जिस राशि में 0 या अत्यल्प रेखाएँ हों, उस राशि में चन्द्रमा के रहने पर भी शुभ कार्य वर्जित करें।

चन्द्रमा की अधिष्ठित राशि से चतुर्थ स्थान में माता, भवन, स्थान आदि का विचार करना चाहिए।

पूर्ववत् चन्द्र से चतुर्थ राशि में जितनी रेखाएँ हों, उन्हें चन्द्र पिण्ड से गुणा करके 27 से भाग दें। शेष नक्षत्र या उससे त्रिकोण नक्षत्रों में रहने पर मातृकष्ट, माता को रोग या विचारणीय बातों की क्षति होती है।

हमारे उदाहरण में मिथुनस्थ चन्द्रमा से चतुर्थ कन्या राशि की रेखा संख्या 3 को चन्द्रपिण्ड संख्या 152 से गुणा किया तो 456÷27= अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में शनि रहे तो माता को विशेष कष्ट तथा आर्द्रा स्वाति में रहने पर रोग या भवन, स्थान आदि की हानि कहनी चाहिए। वर्तमान में शतभिषागत शनि में जातक की माता को चोट लग चुकी है। विचारणीय सम्बन्धी की दशादि का विचार भी सर्वत्र करना चाहिए।

मंगलाष्टक फल विचार :–

भौमाष्टवर्गे संचिन्त्यं भ्रातृविक्रमधैर्यकम् ।
कुजाश्रितात् तृतीयर्क्षं बुधैर्भ्रातृगृहं मतम् ।। 25 ।।
त्रिकोण शोधनं कृत्वा यत्र स्यादधिकं फलम् ।
भूमेर्लाभोऽत्र भार्याया भ्रातृणां सुखमुत्तमम् ।। 26 ।।
भौमो बलविहीनश्चेद् दीर्घायुर्भ्रातृको भवेत् ।
फलानि यत्र क्षीयन्ते तत्र भौमे गते क्षतिः ।। 27 ।।
तृतीयर्क्ष फलेनाथ पिण्डं सम्वर्ध्य पूर्ववत् ।
शेषमृक्षं शनौ याते भ्रातृकष्टं विनिर्दिशेत् ।। 28 ।।

मंगलाष्टक वर्ग से भाई, पराक्रम, धैर्य आदि का विचार करना होता है। मंगल की आश्रित राशि से तृतीय राशि से यहाँ भाई आदि का विचार करना है। त्रिकोण शोधन के बाद जिस राशि में अधिक रेखाएँ बचें, उस राशि में जब–जब मंगल गोचर करे, तब–तब भूमि, स्त्री व भाइयों का सुख होगा।

जन्म समय में मंगल यदि निर्बल हो तो जातक के भाई सुखी व दीर्घायु होते हैं। मंगल बली हो तो भाइयों की अपेक्षा जातक स्वयं सुखी व दीर्घायु होता है, यह बात अन्यथा सिद्ध है।

कम त्रिकोण शुद्ध रेखा वाली राशि में मंगल रहे तो भूमि, स्त्री आदि की हानि होती है।

पूर्ववत् मंगल से तृतीय राशिगत रेखा × पिण्ड करके 27 का भाग दें। शेष नक्षत्र या उसके त्रिकोण नक्षत्रों में शनि जाने पर भ्रातृकष्ट होता है।

हमारे उदाहरण में त्रिकोण शोधन के बाद मिथुन व वृष में 4-4 रेखाएँ सर्वाधिक हैं। अतः जब मंगल इन राशियों में होगा तब–तब मनोबल, धैर्य या भूमि आदि (भूमि यहाँ सम्पत्ति का द्योतक है) का लाभ होगा। मेष, तुला, मीन, मकर में 0 रेखा बची हैं। अतः इन राशियों में जब–जब मंगल होगा तब–तब भूमि आदि की चिन्ता होगी।

मंगल की अधिष्ठित राशि वृश्चिक से तृतीय राशि मकर में रेखा संख्या 2× मंगल पिण्ड 180 = 360÷27 = शेष सात अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा, पू. भाद्र. में शनि रहने पर भाइयों को कष्ट होगा।

बुधाष्टक वर्ग फल :–

बुधात्तुर्ये कुटुम्बं च मातुलं मित्रमेव च ।
बुधे फलाधिके राशौ गते तेषां सुखं दिशेत् ।। 29 ।।

बुधाष्टवर्गे संशोध्य शेषमृक्षं गते शनौ ।

कष्टं कुटुम्बमित्राणां मातुलानां च निर्दिशेत् ।। 30 ।।

बुध से चतुर्थ स्थान में कुटुम्ब, माता, मित्र (व्यापार, धन, आजीविका आदि) का विचार करना चाहिए ।

जिस राशि में अधिक रेखाएँ हों: उसमें बुध का गोचर होने पर इन चीजों का सुख होता है ।।

बुधाष्टक वर्ग की शुद्ध रेखाओं से पूर्ववत् पिण्ड को गुणा करके 27 से भाग देने पर शेष नक्षत्र में शनि रहने पर उक्त बातों का कष्ट होता है ।

तत्पंचमे मन्त्रविद्यालिपिबुद्ध्यादि चिन्तयेत् ।। 31 ।।

इसी तरह बुध से पंचम स्थान गत रेखाओं से मन्त्र, विद्या, बुद्धि, लेखन कार्य, आदि का विचार करें ।

उदाहरण में बुध मकर में है । मकर से चतुर्थ मेष में रेखा संख्या 3× योग पिंड 139=417÷27= शेष 12 अर्थात् उ. फा. में शनि रहेगा तब–तब व्यापार कुटुम्ब, मित्रादि का सुख कम होगा ।

बुधाष्टक में वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक में अधिक रेखाएँ हैं, अतः इन में जब बुध होगा तब लाभ रहेगा ।

बुध से पंचम वृष राशि में रेखा 6×139 = 834÷27 = शेष 24 शतभिषा में शनि रहने पर विद्या, बुद्धि, लेखन कार्य में शिथिलता होगी ।

जीवाष्टक वर्गफल :–

जीवात्पंचमतो ज्ञानं धर्मं पुत्रं च चिन्तयेत् ।

तस्मिन् फलाधिके राशौ सन्तानस्य सुखं दिशेत् ।। 32 ।।

बृहस्पतेः सुतस्थाने फलंयत्संख्यकं भवेत् ।

शत्रुनीचगृहं त्यक्त्वा तावती सन्ततिर्ध्रुवा ।। 33 ।।

सुतभेशनवांशैश्च तुल्या वा सन्ततिर्भवेत् ।

सुतभावफलेनैवं पिण्डं संगुण्य पूर्ववत् ।। 34 ।।

पुत्रकष्टं विजानीयात् शेषमृक्षं गते शनौ ।

एवं धर्मं च विद्यां च कल्पयेत् कालवित्तमः ।। 35 ।।

(i) गुरु से पंचम स्थान में ज्ञान, धर्म, पुत्र का विचार करें । गुर्वष्टक वर्ग में अधिक रेखा वाली राशि में गुरु आने पर उक्त चीजें बढ़ती हैं ।

(ii) गुरु से पंचम में जितनी रेखाएँ हों, उन रेखाओं में से शत्रु क्षेत्री व नीचगत व अस्तंगत ग्रहों द्वारा दत्त रेखाओं को घटा लें । शेष रेखाओं के बराबर सन्तान संख्या होती है ।

(iii) अथवा पंचमेश (लग्न या गुरु से) जितने नवांश में हो, उतनी सन्तति कहें।

(v) पूर्ववत् गुरु से पंचमगत रेखा संख्या व योगपिण्ड को गुणा करके 27 का भाग देने पर शेष नक्षत्र में शनि रहने पर पुत्र को कष्ट होता है तथा धर्म, विद्या, बुद्धि की हानि होती है।

हमारे उदाहरण में गुरु अष्टकवर्ग में तुला में 7 व वृश्चिक में 8 रेखा हैं। अतः इन राशियों में गुरु आने पर सन्तान वृद्धि या सन्तान प्राप्ति होगी। इन्हें पहले वृश्चिक राशि के बृहस्पति में पहली सन्तान हुई थी। इनसे त्रिकोण राशियों में गुरु रहने पर सन्तानादि की उन्नति होगी।

गुरु से पंचम धनु में 4 रेखाएँ हैं। अतः 4 सन्तान सम्भव हैं। अथवा गुरु से पंचमेश गुरु ही है। वह वृष नवांश में है। सिंह राशिगत गुरु का वृषभ दूसरा नवांश है। अतः दो सन्तति निश्चित हैं। इनकी वास्तविक सन्तान संख्या 2 हैं।

गुरु से पंचम धनु राशि की रेखा संख्या 4× योगपिण्ड 93 = 372 ÷ 27 शेष 21 उ. षा. नक्षत्र में जब शनि होगा तब पुत्र को कष्ट होगा। इस समय में सन्तान को कष्ट नहीं हुआ। आगामी भगण में कमी हो सकता है।

शुक्राष्टक वर्ग फल :–

शुक्रस्याष्टवर्गं च निक्षिप्याकाशचारिषु।
यत्र यत्र फलानिस्युर्भूयांसि तत्र वै मतम्।। 36।।
वित्तं कलत्रं भूमिं च तत्तद्देशाद् विनिर्दिशेत्।
शुक्राज्जामित्रतोदार लब्धिश्चिन्त्या विचक्षणैः।। 37।।
जामित्रतत् त्रिकोणस्थराशिदिग्देशसम्भवा।
सुखदुःखे स्त्रियाश्चिन्त्ये पिण्डं संवर्ध्य पूर्ववत्।। 38।।

शुक्राष्टक वर्ग में अधिक रेखा वाली राशियों में जब–जब शुक्र जाएगा, तब–तब धन, स्त्री, सम्पत्ति आदि का विशेष सुख या स्नेह वृद्धि या प्राप्ति होगी।

शुक्र से सप्तम स्थान में स्त्री प्राप्ति या विवाहादि का विचार करना चाहिए। सप्तम या उससे त्रिकोण भावगत राशि की दिशा, देश आदि में उत्पन्न स्त्री का लाभ कहना चाहिए।

पूर्ववत् $\frac{\text{पिण्ड} \times \text{सप्तमस्थ रेखा}}{27}$ करके शेष नक्षत्र में शनि आने पर स्त्री के दुःख या कष्ट का तथा अन्यत्र शुभ स्थानों में रहने पर सुखादि का भोग कहना चाहिए।

उदाहरण में कन्या, मीन, वृष, मिथुन में 6.6.5.5 रेखाएँ हैं। इन राशियों में शुक्र आने पर सदैव स्त्री व सुखादि का भोग होगा। इसमें भी इन राशियों के गुण धर्म व देशानुसार प्राप्ति होगी।

शुक्र से सप्तम में सिंह राशि में 4 रेखाएँ हैं। सिंह या त्रिकोण धनु या मेष राशियों की दिशा पूर्व है। फलस्वरूप इनकी स्त्री इनके जन्मस्थान से पूर्व दिशा में उत्पन्न होगी। सिंह राशि का वर्ण गौर, दिशा पूर्व, शरीर में स्थूलता या विशालता व क्षत्रिय वर्ण है। वास्तव में इस उदाहरण वाले व्यक्ति की पत्नी भी गौर वर्ण, कुछ स्थूल (प्रारम्भ से ही) पूर्व दिशा में उत्पन्न व दबंग स्वभाव वाली ही है।

शुक्र से सप्तमस्थ रेखा योग 4× पिण्ड 94 = 376 ÷ 27 = शेष पू. भा. 25 वाँ नक्षत्र है। अतः इस नक्षत्र में जब शनि होगा अथवा पुनर्वसु या विशाखा में रहेगा, तब स्त्री को कष्ट होगा। स्त्री की दशान्तर्दशा का समन्वय भी करना चाहिए।

शन्यष्टक वर्ग फल :–

शनैश्चराश्रितस्थानादष्टमं मृत्युभं स्मृतम्।
तदेव चायुषः स्थानं तस्मादायुर्विचिन्तयेत्।। 39।।

शनि की आश्रित राशि से अष्टम स्थानगत राशि मृत्युराशि होती है। वही आयु का स्थान भी है। उसी से आयु विचार भी करना चाहिए।

लग्नात्प्रभृतिमन्दान्तं फलान्येकत्र कारयेत्।
तद्योगफलतुल्याब्दे व्याधिं वैरं समादिशेत्।। 40।।
एवं मन्दादि लग्नान्तं फलान्येकत्र योजयेत्।
तत्तुल्यवर्षे जातस्य तस्य व्याधिभयं भवेत्।। 41।।
द्वयोर्योगसमे वर्षे कष्टं मृत्युसमं दिशेत्।
दशरिष्टसमायोगे मृत्युरेव न संशयः।। 42।।

शनि के अष्टकवर्ग में लग्न से शनि तक या शनि से लग्न तक जितनी रेखाएँ हों, उन रेखाओं के योग फल के बराबर आयुवर्ष में रोग, शोक, विपत्ति, वैर आदि होते हैं।

दोनों प्रकार से प्राप्त आयु वर्षों के योग के बराबर आयु वर्ष में मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। उस समय दशान्तर्दशा से भी मारक विचार पुष्ट होता हो तो मृत्यु की सम्भावनाएँ अधिक बलवती हो जाती हैं।

हमारे उदाहरण में शनि वृश्चिक में है। लग्न कर्क तक शन्यष्टक में रेखाएँ 27 हैं। इसी तरह लग्न से शनि तक 19 योग है। फलस्वरूप 19 वें वर्ष में कष्ट, हानि, भय, क्षय, दरिद्रतादि या 27वें वर्ष में रोगभय हो सकता

है। इन दोनों ही आयुवर्षों में यह जातक उक्त प्रकार के कष्ट भोग चुका है।

अथवा 27+19 = 46वें वर्ष में कष्ट होगा। पूर्वप्रदर्शित विंशोत्तरी दशानुसार उस समय शनि में गुरु की अन्तर्दशा रहेगी। शनि वृष व मिथुन में गोचर करेगा।

पिण्डं संस्थाप्य गुणयेत् शनेरष्टमगैः फलम्।

सप्तविंशतिह्वच्छेषतुल्यर्क्षे संगते शनौ।। 43।।

तत्त्रिकोणर्क्षगे वापि जातकस्य मृतिं वेदत्।

अर्कह्वच्छेषराशौ वा तत् त्रिकोणेऽपि तद्वदेत्।। 44।।

शन्यष्टक वर्ग में शनि से अष्टम स्थानगत रेखाओं का योग × योगपिण्ड करके, उसे 27 से भाग दें। शेष तुल्य या उसके त्रिकोण नक्षत्रों में शनि गोचर करते समय मृत्यु होनी चाहिए।

अथवा उक्त गुणनफल को 12 से भाग देकर प्राप्त राशि व उसके त्रिकोणों में शनि रहने पर मृत्यु होती है।

शनि वृश्चिक में है, अतः उससे अष्टम मिथुन राशि की रेखा संख्या 2 को शनि योगपिण्ड 133 से गुणा किया तो 266÷27= शेष 23वाँ नक्षत्र धनिष्ठा व उससे त्रिकोण, मृगशिरा, चित्र में शनि रहने पर कष्ट होगा या मृत्यु होगी।

अपि च 266÷12 = शेष 2 राशि या 2.6.10 राशियों में शनि रहने पर मृत्यु होगी। यह बात पिछले श्लोकों से प्राप्त परिणाम से घटित हो जाती है।

शनैश्चराष्टवर्गेषु यत्र नास्ति फलं गृहे।

तत्र नैव शुभं तस्य यदा याति शनैश्चरः।। 45।।

यत्र राशौ शुभाधिक्यं तत्रयाते शनैश्चरे।

जातकस्य ध्रुवं ज्ञेयं तस्मिन् काले शुभं फलम्।। 46।।

शन्यष्टक वर्ग में जिस राशि में 0 रेखा हो, उस राशि में शनि गोचर करे तो तब शुभ फल नहीं होते।

जिस राशि में रेखाएँ या अधिक रेखाएँ हों, उसमें गोचर करते समय मनुष्य को सदैव शुभ फल मिलते हैं।

इस विषय में ध्यातव्य है कि राशि रेखा 0 होने पर, उसी राशि में शनि, सूर्य व चन्द्र साथ–साथ जब रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से शुभ योग न होगा तब मृत्यु होगी। उस समय विंशोत्तरी दशादि का समन्वय भी आवश्यक है।

इसी समस्त विषय का विस्तृत विवेचन हम अपनी अष्टक. वर्ग महानिबन्ध मंजुलाक्षरा में पृ. 241-294 पर भी कर चुके हैं।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्याया-
मष्टकवर्ग-फलाध्यायो द्विसप्ततितमः ।। 72 ।।

73

।। अथाष्टकवर्गायुर्दायाध्यायः ।।

पराशर उवाच-

अथात्रायुः प्रवक्ष्येऽहमष्टवर्गसमुद्भवम् ।
दिनद्वयं विरेखायां रेखायां सार्धवासरम् ।। 1 ।।
दिनमेकं द्विरेखायां त्रिरेखायां दिनार्धकम् ।
वेदतुल्यासु रेखासु सार्धसप्तदिनं स्मृतम् ।। 2 ।।
द्विवर्ष पंचरेखासु षड्रेखासु चतुः समाः ।
षड्वर्षं सप्तरेखासु वसवोऽष्टासु वत्सराः ।। 3 ।।
एवं यदागतायुः स्यात् सर्वखेटसमुद्भवम् ।
तदर्थं स्फुटमायुः स्यादष्टवर्गसमुद्भवम् ।। 4 ।।

पराशर बोले-

अब मैं अष्टवर्ग द्वारा आयु का विचार बताता हूँ। जिस राशि में कोई रेखा न हो उसके 2 दिन। एक रेखा हो तो 1 दिन 12 घंटे। 2 रेखाओं से 1 दिन। तीन रेखाओं से आधा दिन या 12 घंटे। 4 रेखाओं से 7 दिन 12 घंटे। 5 रेखाओं से 2 वर्ष। 6 रेखाओं से 4 वर्ष। 7 रेखाओं से 6 वर्ष। 8 रेखाओं से 8 वर्ष आयु मिलती है।

इस पद्धति से अष्टक वर्गों में सभी राशियों की आयु जानकर जोड़ लें। समस्त योगफल का आधा स्पष्टायु (अष्टवर्गायु) होती है।

हमारे पूर्वोक्त उदाहरण में आयुः साधन की प्रक्रिया का प्रदर्शन कर रहे हैं। सूर्याष्टक वर्ग में मेष में रेखा योग 4 , अतः आयु वर्ष 7.5 दिन। वृष, कर्क में भी 4-4 रेखाओं से $7.5+7.5=15$ दिन। तुला, मकर, कुम्भ में 3-3 रेखाओं से आधा आधा दिन तो कुल 1.5 दिन। मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु में 5-5 रेखाओं से 2-2 वर्ष तो कुल $2\times5=10$ वर्ष। मीन में रेखा योग 2 तो आयु 1 दिन। सबका योग 10 वर्ष 25 दिन सूर्याष्टक वर्गायु है। इसका आधा 5 वर्ष 12 दिन 12 घंटे स्पष्टायु (सूर्याष्टक) रही।

आयुः स्पष्टीकरण की यह विधि तथा अष्टक वर्गायु साधन के अन्य कई प्रकार हमारी अष्टकवर्ग मंजुलाक्षरा पृ. 336-338 पर भी देखें।

चन्द्राष्टक वर्ग में आयु वर्ष इस प्रकार रहेंगे।

मेष, सिंह, मीन 6 रेखा = 4×3 = 12 वर्ष। वृश्चिक 5 रेखा = 2 वर्ष। वृष, मिथुन, कर्क, धनु में 4-4 रेखा = 7.5×4 = 30 दिन। कन्या, तुला, मकर में 3 रेखा = .5 दिन ×3=1.5 दिन। कुम्भ में 1 रेखा= 12 घंटे का आधा दिन। कुल आयु 14 वर्ष 32 दिन व स्पष्टायु 7 वर्ष 16 दिन है।

मंगलाष्टक वर्ग में वृष 6 रेखा = 4 वर्ष। मिथुन, वृश्चिक 5 रेखा = 2×2=4 वर्ष। कर्क, कन्या 4 रेखा = 7.5 दिन ×2=15 दिन। सिंह, धनु 3 रेखा = 12 घंटे ×2 या 1 दिन। मेष, मकर, कुम्भ, मीन 2 रेखा = 1 दिन ×4 = 4 दिन। तुला 1 रेखा = आधा दिन। कुल 8 वर्ष 20 दिन 12 घंटे व स्पष्टायु 4.10.6 वर्षादि रही।

बुधाष्टक में वृष, मिथुन, कन्या, धनु 6 रेखा = 4×4 = 16 वर्ष। कर्क, वृश्चिक 5 रेखा से 2 वर्ष ×2 = 4 वर्ष। कुम्भ मीन 4 रेखा = 7.5×2=15 दिन। मेष, सिंह, तुला, मकर 3 रेखा = आधा दिन ×4=2 दिन। कुल योग 20 वर्ष 17 दिन व स्पष्टायु 10 वर्ष 8 दिन 12 घंटे है। इसी विधि से सबकी स्पष्टायु जानी गई है। तदनुसार उदाहरण में व्यक्ति की अष्टक वर्गोत्पन्नायु इस प्रकार है––

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घंटे
सूर्य	05	0	12	12
चन्द्र	7	0	16	0
मंगल	8	0	20	12
बुध	10	0	8	12
गुरु	8	0	26	6
शुक्र	6	0	23	0
शनि	2	0	20	0
लग्न	8	0	1	18
योग	54	4	8	12

योग पिण्डों से भी आयुः साधन किया जाता है। एक ही व्यक्ति की भिन्न प्रकार से आयु निकालने पर अलग–अलग मान आता है। इसी उदाहरण में यदि योगपिण्डों से अष्टकवर्गायु निकालें तो 71 वर्ष 11 मास के लगभग स्पष्टायु आएगी। यह पद्धति अष्टकवर्ग महानिबन्ध, मंजुलाक्षरा

के पृ. 311-316 पर देखें। जैमिनीय मत से आयु लगभग 60 वर्ष 5 मास आती है। निसर्गाद्यायु पीछे दिखा चुके हैं। वास्तव में आयु का गणितीय साधन आज भी विचार व शोध की अपेक्षा रखता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्याया-
मष्टकवर्गायुर्दायाध्यायस्त्रिसप्ततितमः ।। 73 ।।

74

।। अथ समुदायाष्टकवर्गाध्यायः ।।

समुदायाष्टक निर्माणः–

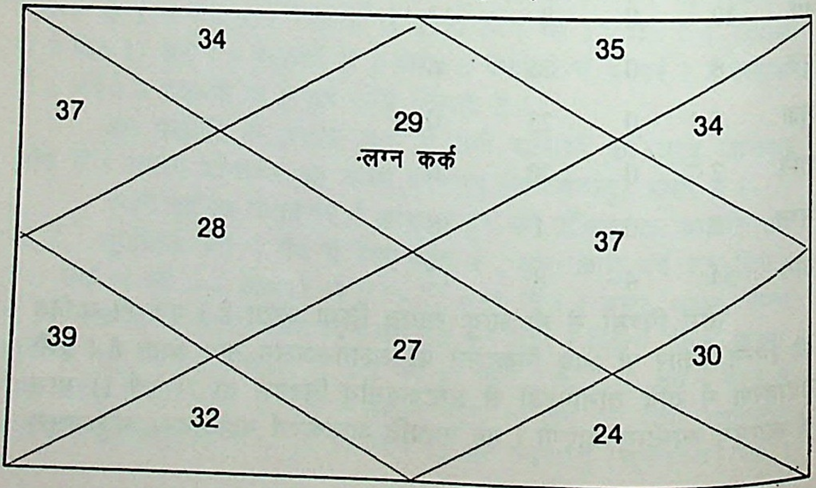
द्वादशारं लिखेच्चक्रं जन्मलग्नादिभैर्युतम् ।
सर्वाष्टकफलान्यत्र संयोज्य प्रतिभं न्यसेत् ।। 1 ।।
समुदायाभिधानोऽयमष्टवर्गः समुच्यते ।
अतः फलानि जातानां विज्ञेयानि द्विजोत्तम ! ।। 2 ।।

पराशर बोले– हे मैत्रेय ! 12 कोष्ठकों वाला चक्र (कुण्डली) बनाकर उसमें जन्म लग्नादि 12 भावों में स्थित राशियों को लिखें।

आठों अष्टक वर्गों में एक–एक राशि में जितनी रेखाएँ हों, उन्हें जोड़कर तत्तत् राशि में लिखने से 'समुदायाष्टक वर्ग चक्र' बना जाता है। इसके आधार पर जातक का फल कहा जाता है।

हमारे उदाहरण में कर्क लग्न है। कर्क राशि में सूर्यादि आठों अष्टकवर्गों की रेखाओं का योग क्रमशः 4+4+4+5+4+4+4+0=29 है।

।। समुदायाष्टक वर्ग (उदा.) ।।



अतः लग्न राशि में 29 रेखा हैं। इसी तरह सब राशियों की रेखाओं का योग करके यह चक्र बना लिया गया।

समुदाय रेखा फल :–

त्रिंशाधिक फला ये स्यू राशयस्ते शुभप्रदाः।
पंचविंशादि त्रिंशान्तफला मध्यफलाः स्मृताः।। 3।।
अतः क्षीणफला ये ते राशयः कष्टदुःखदाः।
शुभे श्रेष्ठफलान् राशीन् योजयेत् मतिमान्नरः।। 4।।
कष्टराशीन् सुकार्येषु वर्जयेद् द्विजसत्तम !।
श्रेष्ठराशिगतः खेटः शुभोऽन्यत्राऽशुभप्रदः।। 5।।

इस तरह समुदायाष्टक में जिस राशि में 30 से अधिक रेखा योग हो, वे राशियाँ या भाव शुभ फलप्रद होते हैं। 25 से 30 तक रेखा योग वाले भाव मध्यम फलद हैं। 25 से कम रेखा योग कष्ट व दुःखप्रद होता है।

गोचर में जब ग्रह अधिक या शुभ फलप्रद राशि में रहे, तभी उसे बलवान् समझना चाहिए। कष्टराशिगत ग्रह को सर्वत्र शुभ कार्यों में वर्जित करें। श्रेष्ठ राशिगत ग्रह शुभ व अन्यथा अशुभ होते हैं।

आशय यह है कि उपनयन विवाहादि में चन्द्रबल, गुरुबल व सूर्य-बल देखा जाता है। अतः गुरु, चन्द्र व सूर्य जब 30 या अधिक रेखा वाली राशि में रहें तथा सामान्य गोचर नियमों से अशुभ स्थान में भी रहे, तब भी शुभ ही होगा। कारण यह है कि अष्टवर्ग से ही गोचर शुद्धि अधिक प्रामाणिक होती है।

हमारे उदाहरण में 2.3.5.6.10.11.12 भाव श्रेष्ठ हैं। 1.4.7.9 मध्यम व 8 भाव अधम है। लेकिन सामान्यतः 6.8.12 आदि अशुभ भावों में कम रेखा योग ही शुभ है। अतः कुल मिलाकर शुभ फल की अधिकता है।

रेखा योग से भाव फल :–

तन्वादि व्ययपर्यन्तं दृष्ट्वा भावफलानि वै।
अधिके शोभनं ज्ञेयं हीने हानिं विनिर्दिशेत्।। 6।।
मध्ये मध्यफलं ब्रूयाद्तत्तद्भावसमुद्भवम्।
कष्टान् राशीन् मुहूर्त्तेषु वर्जयेत्सर्वदा बुधः।। 7।।

लग्न से व्यय तक जिस भाव में अधिक श्रेष्ठ रेखाएँ हों, उस भाव की वृद्धि व मध्यम रेखा योग से मध्यम फल तथा हीन रेखा योग से हीनफल होता है। कष्टफलद कम रेखा योग वाली राशि में सम्बन्धित ग्रह का गोचर रहने पर, मुहूर्त्तादि में उसे वर्जित करना चाहिए।

सब कामों में चन्द्र बल देखा जाता है। अतः चन्द्रमा कष्ट राशि में हो तो शुभ कार्य न करें। विवाहादि में गुरुबल आदि भी इसी तरह देखें। लेकिन 6.8.12 में कम रेखाएँ होना शुभ है, यह बात यहाँ स्वतः सिद्ध है।

मध्यात् फलाधिको लाभो लाभात् क्षीणफलो व्ययः।

लग्नं फलाधिकं यस्य भोगवानर्थवान् भवेत्।। 8।।

विपरीतेन दारिद्रयं भवत्येव न संशयः

दशम से एकादश में अधिक रेखा हों तथा द्वादश में एकादश से कम रेखा हों, लग्न में अधिक हों तो मनुष्य धनी व सुखी होता है।

यदि द्वादश में एकादश की अपेक्षा अधिक रेखा व लग्न में कम हों तो मनुष्य दरिद्र होता है।

हमारे उदाहरण में ऐसा नहीं है। अतः जातक की सफलता मध्यम ही रहेगी।

इसी तरह लग्न की अपेक्षा अष्टम में कम रेखाएँ हों तो आयु ठीक सन्तोषप्रद होती है। लेकिन केन्द्र त्रिकोणादि में अधिक रेखाएँ रहने से कुल मिलाकर जातक सुखी व यशस्वी, परिश्रम से मान प्राप्त करने वाला होना चाहिए। सर्वाधिक रेखा पुत्र व विद्या स्थान में हैं। अतः जातक विद्यावान्, पुत्रवान् व बुद्धिमान् होगा।

खण्डत्रय की कल्पना :–

दशावदिह भावानां कृत्वा खण्डत्रयं बुधः।। 9।।

पश्येत् पापसमारूढं खण्डे कष्टकरं वदेत्।

सौम्यैर्युक्तं शुभं ब्रूयात् मिश्रैर्मिश्रफलं यथा।। 10।।

क्रमाद् बाल्याद्यवस्थासु खण्डत्रयफलं वदेत्।

खण्डत्रयफलं ज्ञात्वा दशाफलमुदीरयेत्।। 11।।

लग्नादि 12 भावों के तीन खण्ड करने चाहिए। जिस खण्ड में पाप ग्रह हों आयु का वही खण्ड (बचपन, जवानी, बुढ़ापा) कष्टकर होता है। शुभ ग्रह युक्त खण्ड शुभ व मिश्रित ग्रह युक्त मिश्रित फल वाला होता है।

खण्डानुसार फल की कल्पना करके दशा फल से भी समन्वय करना चाहिए।

खण्डविभाग में मतभेद :–

(i) लग्न से चतुर्थ सहित 1.2.3.4 भाव प्रथम खण्ड, 5.6.7.8 मध्यम खण्ड व 9.10.11.12 तृतीय खण्ड है। यह एक मत है।

(ii) कुछ आचार्य मीन से मिथुन तक प्रथम, कर्क से तुला तक द्वितीय तथा वृश्चिक से कुम्भ तक अन्तिम खण्ड मानते हैं। यह द्वितीय मत है।

(iii) चारों केन्द्र स्थान प्रथम खण्ड, चारों पणफर मध्यखण्ड, चारों आपोक्लिम तृतीय खण्ड है। यह तृतीय मत है।

(iv) एक मतानुसार रेखा योग करते समय खण्ड निर्धारण में 8.12 भाव की रेखाओं को नहीं जोड़ा जाता।

यद्यपि बहुमत मीनादि से खण्ड निर्णय के पक्ष में है, किन्तु हम लग्नादि या केन्द्रादि पक्ष को अधिक उपादेय समझते हैं। जिस खण्ड में अधिक रेखा योग हो वही सुखप्रद होता है।

हमारे उदाहरण में खण्ड निर्धारण इस प्रकार है—

भाव	रेखा	रेखा योग
1. 2. 3. 4	29 + 34 + 37 + 28 =	128
5. 6. 7. 8	39 + 32 + 27 + 24 =	122
9. 10. 11. 12	30 + 37 + 34 + 35 =	136

मध्यम खण्ड में रेखा योग कम है, किन्तु बुध, शुक्र व कारक ग्रह वहाँ रहने से मध्यावस्था में विशेष उन्नति होनी चाहिए।

केन्द्रादि मत से 29 + 28 + 27 + 37 = 129 प्रथम खण्ड। 34 + 39 + 24 + 34 = 131 मध्यम खण्ड। 37 + 32 + 30 + 35 = 134 अन्तिम खण्ड है। तदनुसार मध्यम खण्ड या प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था उत्तरोत्तर उन्नतिदायिनी हैं।

यस्मिन् वयसि तुंगाश्च मुदिताः स्वगृहे स्थिताः।
तत्र राज्यसुखं लक्ष्मीस्तेजो भवति निश्चितम्।। 12।।
यस्मिन् वयसि मन्दाश्चेत्क्रूरदृष्टिविरश्मिकाः।
तत्रहानिं रुजं विद्यात् पदभ्रंशः खलागमः।। 13।।

जिस खण्ड में उच्चगत, मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री ग्रह हों, उस खण्ड में राज्यलाभ, लक्ष्मी व प्रभाव बढ़ता है।

जिस खण्ड में नीचगत, क्रूर दृष्ट, अस्तंगत ग्रह हों, उसमें रोग, शोक, हानि, पदनाश आदि होता है।

ध्यान रहे तीनों खण्डों में 120 से अधिक रेखा योग होना सर्वत्र शुभ है। 1.2.3 खण्डों में उत्तरोत्तर अधिक रेखाएँ हों तो मनुष्य ज्यों ज्यों प्रौढ़ होता है, वैसे—वैसे ही धन व सुख बढ़ता है।

शुभ वर्ष ज्ञान :–

लग्नस्थाने फलं यावद् वर्षे तावन्मिते बुधः ।
सम्पदैश्वर्य विद्यां च विद्याद् योगानुसारतः ।। 14 ।।
लग्ने लाभे सुखे यस्य खगुणादधिकं फलम् ।
राज्यश्रीस्तस्य जायेत चत्वारिंशन्मितेऽब्दके ।। 15 ।।
नवमे च सुखे नूनं फलं मध्यं भवेद्यदि ।
अष्टाविंशति वर्षान्ते नरवाहन संयुतः ।। 16 ।।
वित्तेश्वरस्य दिग्भागे वित्तमाप्नोति मानवः ।
रन्ध्रेश्वरस्य दिग्भागे देहस्तत्रविनश्यति ।। 17 ।।

समुदायाष्टक में लग्न में जितनी रेखाएँ हों, उतनी ही आयु में मनुष्य को विशेष सुख, धन व उन्नति, राजयोगादि के बलाबलानुसार मिलती है।

1.4.11 भावों में यदि 30 से अधिक रेखाएँ हों तो मनुष्य को 40 वें या उससे आगे के वर्षो में विशेष शुभ फल, पद व प्रतिष्ठा मिलती है।

9.4 भावों में 25 से अधिक रेखाएँ हों तो मनुष्य को 28वें वर्ष में या तदुपरान्त वाहन योग होता है।

हमारे उदाहरण में 9.4 भावों में 25 से अधिक रेखाएँ हैं। इस जातक को वाहन सुख 27वें वर्ष के अन्त में मिलना प्रारम्भ हो गया था।

अशुभ वर्ष ज्ञान :–

लग्नात्प्रभृतिमन्दान्तमेकीकृत्यफलानि वै ।
सप्तभिर्गुणयेत्पश्चात्सप्तविंशोद्धृतात्फलम् ।। 18 ।।
मन्दात्प्रभृतिलग्नान्तमेवमेव प्रकल्पयेत् ।
तत्समर्क्षे गते पापे कष्टं वा रोगमादिशेत् ।। 19 ।।

लग्न से शनि तक या शनि से लग्न तक की समुदाय रेखाओं को जोड़ें। योगफल को 7 से गुणा कर 27 का भाग दें। शेष तुल्य नक्षत्र में शनि या पाप ग्रह के गोचर करने पर रोग या कष्ट कहना चाहिए।

हमारे उदाहरण में लग्न से शनि तक $29+34+37+28 = 128\times7 = 896\div27 = 33$ लब्धि, शेष 5 है। अतः जब–जब पाँचवें मृगशिरा नक्षत्र में पापी शनि, राहु आदि होंगे, तब–तब कष्ट होगा। इस पद्धति में कुछ लोग शनि की भाव रेखाओं को नहीं जोड़ते तथा कुछ उन्हें भी जोड़ते हैं।

अथवा शनि से लग्न तक $39+32+27+24+30+37+34+35 = 258\times7 = 1806\div27 =$ लब्धि 66 शेष 24 है। अतः चौबीसवें नक्षत्र

शतभिषा में अधिक पापयोग होगा तब कष्ट होगा। अथवा लब्धि तुल्य वर्षों 33 व 66 में कष्ट होगा।

शुभाशुभ वर्ष मासादि ज्ञान :–

वर्षादौ सर्वखेटानां गोचरात्फलयोगतः।
शुभाशुभं विजानीयान्मासादीनां तथैव च।। 20।।
पंचविंशाधिकशतद्वयात्पुष्टे महत्फलम्।
आतदर्ध समं वाच्यं तन्यूने सौख्यनाशनम्।। 21।।

वर्षारम्भ या मासारम्भ या दिनारम्भ में सातों सूर्यादि ग्रह जिन–जिन राशियों में गोचर करें उन सब राशियों की जन्मकालीन समुदाय रेखाओं को जोड़ लें।

यह रेखायोग यदि 225 से अधिक हो तो बहुत उत्तम फल होंगे यदि 225 के आधे 112 से 225 के बीच हों तो मध्यम व 112 से कम होने पर सर्वथा हानि होती है। अथवा उक्त विचार पृथक् पृथक् अष्टकवर्ग रेखाओं से भी कर सकते हैं। तब 30 से अधिक रेखायोग शुभ है।

इस पद्धति से सौर वर्ष प्रवेश, या संवत्सरारम्भ या मासारम्भ में फल जानना चाहिए। उदाहरणार्थ वर्ष 1994 में पूर्वोक्त उदाहरण के सन्दर्भ में सभी ग्रह क्रमशः जिन राशियों में हैं, उनकी समुदाय रेखाएँ 27 + 34 + 24 + 24 + 27 + 28 + 24 = 184 मध्यम फलप्रद हैं। इसी विधि से संक्रान्ति के दिन का विचार कर सारे सौर मास का फलाफल भी ज्ञातव्य है।

30 से कम रेखा : अनिष्ट शान्ति :–

रेखाभिः सप्तभिर्युक्ते मासे मृत्युभयं नृणाम्।
सुवर्णं विंशतिपलं दद्याद्द्वौ तिलपर्वतौ।। 22।।
रेखाभिरष्टभिर्युक्ते मासे मृत्युवशो नरः।
असत्फलंविनाशाय दद्यात् कर्पूरजां तुलाम्।। 23।।
रेखाभिर्नवभियुक्ते मासे सर्पभयं वदेत्।
अश्वैश्चतुर्भिः संयुक्तं रथं दद्याच्छुभाप्तये।। 24।।
रेखाभिर्दशभिर्युक्ते मासे शस्त्रभयं तथा।
दद्याच्छुभफलावाप्त्यै कवचं वज्रसंयुतम्।। 25।।

(i) जिस मास में 7 रेखा योग (भिन्नाष्टक विधि से) हो तो उसमें मृत्युभय होता है। एतदर्थ 20 पल सोना व दो ढेर तिलों का दान करना चाहिए।

(ii) 8 रेखा वाले मास में भी मृत्यु का भय होता है, तदर्थ मनुष्य को कपूर से तुला दान करना चाहिए, इससे अशुभ फल नष्ट होता है।

(iii) 9 रेखा वाले मास में सर्प का भय होता है, तब अनिष्ट शमनार्थ 4 घोड़ों से युक्त रथ का दान करना चाहिए।

दस रेखा वाले मास में शस्त्र की चोट का भय होता है। तब शान्ति के लिए वज्र व कवच की प्रतिमा का दान करना चाहिए। सर्वत्र अप्रचलित या कठिन दान वस्तु के स्थान पर उसकी रजतमयी प्रतिमा का दान करना युक्तियुक्त है।

अभिशापभयं तत्र रेखा रुद्रसमा द्विज !।
दिक्पलस्वर्णघटितां प्रदद्यात् प्रतिमां विधोः।। 26 ।।
युक्ते द्वादश रेखाभिर्जले मृत्युभयं वदेत्।
सशस्यभूमिं विप्राय दत्त्वा शुभं फलं भवेत्।। 27 ।।
विश्वप्रमितरेखाभिर्व्याघ्रान्मृत्युभयं भवेत्।
विष्णोर्हिरण्यगर्भस्य दानं कुर्याच्छुभाप्तये।। 28 ।।
शक्रप्रमितरेखाभिर्युक्ते मासे मृतेर्भयम्।
वराहप्रतिमां दद्यात् कनकेन विनिर्मिताम्।। 29 ।।
तिथिभिश्च नृपाद्भीतिर्दद्यात् तत्र गजं द्विज !।
रिष्टं षोडशभिर्दद्यात् मूर्तिं कल्पतरोस्तथा।। 30 ।।

11 रेखा वाले मास में बहुत कष्ट का योग होता है। तब 10 पल सोने से निर्मित चन्द्र प्रतिमा का दान करें।

12 रेखा वाले मास में जल से मृत्यु भय होता है, तब खड़ी फसल से युक्त भूमि का दान करना चाहिए।

13 रेखा वाले मास में व्याघ्रादि जंगली जन्तुओं से भय होता है। तच्छान्त्यर्थ विष्णु भगवान् की प्रतिमा (शालिग्राम) का दान करना चाहिए।

14 रेखा वाले मास में मृत्यु का भय होता है। तब सुवर्णनिर्मित वराह भगवान् की प्रतिमा का दान करना चाहिए।

15 रेखा मास में राजभय होता है, तदर्थ हाथी का दान करें। 16 रेखा वाले मास में अरिष्ट होता है, तदर्थ कल्पवृक्ष की सुवर्ण या रजत प्रतिमा का यथाशक्ति दान करें।

सप्तेन्दुभिर्व्याधिभयं दद्यात् धेनुं गुडं तथा।
कलहोऽष्टेन्दुभिर्दद्याद् रत्नगोभूहिरण्यकम्।। 31 ।।

अङ्केन्दुभिः प्रवासः स्याच्छान्तिं कुर्याद्यथाविधि ।
विंशत्या बुद्धिनाशः स्यात् गणेशं तत्र पूजयेत् ।। 32 ।।
रोगपीडैकविंशत्या दद्याद्धान्यस्य पर्वतम् ।
यमाश्विभिर्बन्धुपीडा दद्याद्द्वादशकं द्विज ! ।। 33 ।।
त्रयोविंशति संयुक्ते मासे क्लेशमवाप्नुयात् ।
सौवर्णी प्रतिमां दद्याद् रवेः सप्तपलैर्बुधः ।। 34 ।।

17 रेखा वाले मास में रोगभय, तदर्थ गाय व गुड़ का दान करें। जगन्मोहन नामक ग्रन्थ में गुड़धेनु अर्थात् गुड़ का निर्दिष्ट मात्रा में ढेर दान करने का विधान है।

18 रेखा से कलहागम होता है। तदर्थ रत्न, गाय व सोने का दान करें। 19 रेखा से प्रवास होता है। अतः यथाविधि शान्ति करें। जगन्मोहन में हाथी, घोड़ा आदि वाहन बताया गया है।

20 रेखा से बुद्धिनाश होता है, अतः गणेश की पूजा करें। 21 से रोग होता है अतः धान्य पर्वत का दान करें।

22 से बन्धुबान्धवों को पीड़ा होती है, अतः दस धेनु दान या मात्र वास्तविक गोदान करना चाहिए।

23 रेखा युक्त मास में क्लेश होता है, अतः सूर्य की 7 पल निर्मित सुवर्ण प्रतिमा का दान करें।

वेदाश्विभिर्बन्धुहीनो दद्याद् गोदशकं नृपः ।
सर्वरोगविनाशार्थं जपहोमादिकं चरेत् ।। 35 ।।
धीहानिः पंचविंशत्या पूज्या वागीश्वरी तदा ।
षड्विंशत्यार्थहानिः स्यात् स्वर्णं दद्याद् विचक्षण ! ।। 36 ।।
तथा च सप्तविंशत्या श्रीसूक्तं तत्र संजपेत् ।
अष्टाविंशति संयुक्ते मासे हानिश्च सर्वथा ।। 37 ।।
सूर्यहोमश्च विधिना कर्त्तव्यः शुभकांक्षिभिः ।
एकोनत्रिंशता चापि चिन्ताव्याकुलितो भवेत् ।। 38 ।।
घृतवस्त्रसुवर्णानि तत्र दद्याद् विचक्षणः ।
त्रिंशता पूर्णधान्याप्तिरिति जातकनिर्णयः ।। 39 ।।

24 रेखायुक्त मास में दस गायों का दान करें। तब मनुष्य बन्धुहीन होने से बच जाता है। तथा सब रोगों को नष्ट करने के लिए जप व हवनादि करना चाहिए।

25 रेखायुक्त मास में बुद्धि हानि होती है, अतः सरस्वती देवी की उपासना करें।

26 से धनहानि होती है, तब सुवर्ण का दान करें। 27 से भी धनहानि होती है, तब श्रीसूक्त का जप करें। 28 रेखा युक्त मास में सर्वथा हानि होती है, तब विधिविधान से सूर्य का हवन करना चाहिए।

29 रेखा युक्त मास में मनुष्य चिन्तातुर होता है। तब घी, वस्त्र व सुवर्ण का दान करें।

30 रेखा रहने पर भोजन का सुख होता है, अर्थात् आदमी योग क्षेम निर्वाह कर लेता है। 30 से अधिक रेखाएँ होने पर क्रमशः अधिकाधिक शुभ होता जाता है। कहा भी है।

रेखाधिक्ये शस्तं शून्याधिक्ये ततोऽधर्म कथितम्।।

पाराशर होरा के ये सभी श्लोक यथावत् 'जगन्मोहन' नामक ग्रन्थ में भी आ गए हैं। यह फलविधान भिन्नाष्टक विधि से कहा गया है। ग्रहों की रेखा गणना में कुछ लोग चन्द्रमा से 6.8.12 भावगत राशियों की रेखाए नहीं जोड़ते। तब 25 से अधिक रेखाएँ ही शुभ होंगी। सामान्यतः सात ग्रहों (मास प्रवेशादि में) की $8 \times 7 = 56$ रेखाएँ, तब इसकी आधी 28 रेखाए भी विभाजक बिन्दु पर स्थित हैं। लेकिन 30 से अधिक रेखाएँ यहाँ शस्त्र कही हैं। अतः सब ग्रहों की राशियों का रेखायोग 30 से अधिक या समुदायाष्टक में 120 से अधिक रहने पर उत्तरोत्तर शुभ होगा।

दान के विषय में वक्तव्य है कि यहाँ बताई गई वस्तुओं को अन्यथा न लें। राजा आदि सामर्थ्यवान् लोगों के लिए वास्तविक वस्तु और अन्य जनों के लिए सामर्थ्य व श्रद्धानुसार उन–उन चीजों की सोने या चाँदी की प्रतिमा बनाकर देनी चाहिए।

ध्यान रखिए दान के सन्दर्भ में वित्तशाठ्य करना महापाप है। धन व सामर्थ्य होते हुए भी दान की वस्तु में अन्यथा बचत करने का प्रयत्न, सौदेबाजी करना या झूठ का सहारा लेना, छलछद्म से वस्तु हासिल करना 'वित्तशाठ्य' कहलाता है।

मात्रा के विषय में ध्यातव्य है कि पल आज का तोला नहीं है। भाव प्रकाश नामक आयुर्वेद के ग्रन्थ में दवा निर्माण के प्रसंग में कहा गया है–

16 माशा = 1 कर्ष। 4 कर्ष = 1 पल = 64 मासे = लगभग 165 ग्राम। अतः 1 पल कम से कम 64–65 ग्राम का सिद्ध होता है। जहाँ बीस पल लिखा है, वहाँ 1 किलो 300 ग्राम सोने का दान करना आजकल असम्भव ही है। शास्त्र की आज्ञा है कि सामर्थ्य हो तो पूरा दान करें।

कम सामर्थ्य हो तो तदर्ध (उसका आधा) करें। और कम सामर्थ्य हो तो पुनः तदर्ध अर्थात् आधे का आधा (चौथाई) भी कर सकते है। तब 5 पल या 325 ग्राम की बात शास्त्रोक्त हुई। पुराने आचार्य व महर्षि भी इस बात को समझते थे, कि यह बहुत कठिन हो सकता है। अतः दूसरा विकल्प 'तिलादि धान्यों का पर्वत' कहकर उपस्थित कर दिया है।

पर्वत का मान व अर्थ क्या है ? ढेर पर्वत है। 1000 द्रोण का पर्वत उत्तम, 500 द्रोण का मध्यम, 300 द्रोण का सामान्य। अतः 4000 सेर, 2000 व 1200 सेर मान धान्य प्राप्त हुआ। अर्थात् लगभग 1000 किलो का एक पर्वत माना है। अशक्ति होने पर सामर्थ्यानुसार दान करना चाहिए। इस विषय का विशेष विवरण दान चन्द्रिका, प्रयोग पारिजात, जगन्मोहन, मत्स्यपुराणादि में भी मिलता है।

रामवह्निनयुते मासे व्यापाराद्धनमाप्नुयात्।
उद्योगसिद्धिश्च भवेन्मान्यते च नृपैरपि।। 40।।
सहेम वस्त्रलाभश्च चतुस्त्रिंशत्समन्विते।
कुरामे धनसंप्राप्तिर्यमवाह्निनयुते सुतः।। 41।।
अक्षाग्निभिर्भवेच्छ्रीमान् धनावाप्तिर्नगानलैः।
गजवह्निनमिते मासे मनसा चिन्तितं फलम्।। 42।।
अंक गुणोन्मिते मासे धनं द्रव्यं सरत्नकम्।
धनवान् कीर्तिमांश्चैव चत्वारिंशति वर्धते।। 43।।
अत उर्ध्व यशोऽर्थाप्तिः पुण्यश्रीरुपचीयते।
भूवेद संयुते मासे नानालाभं प्रपद्यते।। 44।।
पञ्चवेदैः पुनः श्रीमानुदारो बहुसेवितः।
महाधनो महाभोगो महीमण्डलसंस्थितः।। 45।।
तत उर्ध्व सुखं वित्तं विभवं च समन्ततः।
वेदवेदमिते मासे राजमान्यो भवेन्नरः।। 46।।
पंचवेदमिते मासे ज्ञानवान् धनिको भवेत्।
पुण्यसागरसंयुक्तः परमात्मा स्वयं भवेत्।। 47।।

33 रेखाएँ हों तो उस मास में व्यापार से धनप्राप्ति, परिश्रम में सफलता, राजसम्मान होता है।

34 रेखाओं से सुवर्ण व वस्त्रादि का लाभ होता है। 31 रेखाओं वाले मास में धन लाभ,।

32 रेखा वाले मास में पुत्र प्राप्ति होती है। 35 रेखा मास में श्री मन्तता, 37 रेखा से धनागम होता है।

38 रेखा वाले मास में मनोरथों की सिद्धि होती है। 39 रेखा मास में धन, रत्नादि की प्राप्ति।

40 रेखा से धन व कीर्ति। 41 से 43 रेखा वाले मास में यश व धन तथा पुण्य वृद्धि होती है।

41 रेखा वाले मास में नाना प्रकार के लाभ। 42 रेखा से श्रीमान् व बहुत से लोगों का समर्थन, महाधनी, भोगों की प्राप्ति होती है।

43 रेखाओं से वैभव, सुख, धन मिलता है। 44 रेखा वाले मास में राजमान्यता। 45 रेखा से ज्ञान व धन की वृद्धि तथा 46 रेखाओं से स्वयं मनुष्य परमात्मा तुल्य होता है।

तत उर्ध्वं नृपत्वं स्यात् पुण्यवृद्धिः सुशोभते।
एवं ग्रहाणां रेखैक्यं कुर्यादिष्टे दिने ततः।। 48।।
अष्टविंशे फलं मध्यमधिकोने शुभाशुभम्।
फलं सर्वं विज्ञेयमिति जातकनिर्णयः।। 49।।

इसके ऊपर रेखाएँ हों तो राजपद, पुण्यों की वृद्धि होती है। इसी तरह जिस दिन का फल विचार करना हो, उस दिन भी सातों ग्रहों की गोचर राशियों की रेखाओं का योग करके दिन फल को देखें।

जिस दिन 28 रेखा योग हो तो मध्यम फल। 28 से कम में कम फल तथा 28 से अधिक रेखा योग में अधिक शुभ फल होता है। इस प्रकार जातक फल का निर्णय करना चाहिए।

अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु।
अतोऽष्टवर्गसंशुद्धिरन्वेष्या सर्वकर्मसु।। 50।।
तावद्गोचरमन्वेष्यं यावन्न प्राप्यतेऽष्टकम्।
अष्टवर्गे तु सम्प्राप्ते गोचरं विफलं भवेत्।। 51।।

जिस समय अष्टक वर्ग से अनुकूल समय हो तो उस समय में सभी शुभ कार्य सम्पन्न करने चाहिए। जब तक अष्टक वर्ग की शुद्धि न हो, तभी तक गोचर देखना चाहिए। अष्टक वर्ग अनुकूल हो तथा गोचर प्रतिकूल भी हो, तब भी उनुकूल फल होते हैं। अष्टक वर्ग के सामने गोचर सदैव विफल होता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां समुदायाष्टकवर्गाध्यायश्चतुःसप्ततितमः।। **74**।।

75

।। अथ रश्मिफलाध्यायः ।।

पराशर उवाच :-

अथ रश्मीन् प्रवक्ष्यामि ग्रहाणां द्विजसत्तम ! ।
दिङ्नवेष्विषु सप्ताष्टशराः स्वोच्चे कराः रवेः ।। 1 ।।
नीचे खं चान्तरे प्रोक्ता रश्मयश्चानुपाततः ।
नीचोनं तु ग्रहं भार्धाधिक्ये चक्राद् विशोधयेत् ।। 2 ।।
स्वीयरश्मिहतं षड्भिर्भजेत् स्यू रश्मयः स्वकाः ।

पराशर बोले-

अब मैं ग्रहों की रश्मियाँ बताता हूँ। सूर्यादि ग्रह यदि अपने परमोच्च में हो तो क्रमशः 10.9.5.5.7.8.5 रश्मियाँ पाते हैं। परम नीच में 0 राश्मि होती है। बीच में ग्रह हो तो अनुपात से रश्मियाँ निकालें।

ग्रहस्पष्ट में से ग्रह के परम नीच को घटा लें। यदि शेष 6 राशि से अधिक हो तो 12 राशियों में से घटाकर उसे षड्भाल्प कर लें, अर्थात् 6 राशियों से कम रखें। तब उस षड्भाल्प घटाफल को अपनी रश्मि संख्या से गुणा करके 6 से भाग देने पर लब्धि ग्रह की रश्मियाँ होती हैं।

रश्मियों में विशेष संस्कार :-

अपरैरत्र संस्कारविशेषो कथितो यथा ।। 3 ।।
स्वोच्चभेते त्रिगुणिताः स्वत्रिकोणे द्विसंगुणाः ।
स्वभे त्रिघ्ना द्विसंभक्ता अधिमित्रगृहे तथा ।। 4 ।।
वेदघ्ना रामसंभक्ता मित्रभे षड्गुणास्ततः ।
पंचभक्तास्तथा शत्रुगृहे वेद् दलिताः कराः ।। 5 ।।
अधिशत्रुगृहे द्विघ्नाः पंचभक्ताः समे समाः ।
शनि शुक्रौ विना ताराग्रहा अस्तं गता यदि ।। 6 ।।
विरश्मयो भवन्त्येवं ज्ञेया स्पष्टकरा इति ।
रश्मियोगवशादेवं फलं वाच्यं विचक्षणैः ।। 7 ।।

पूर्वोक्त प्रकार से साधित रश्मियों में संस्कार भी कहे गए हैं। स्वोच्चगत ग्रह की पूर्व प्राप्त रश्मि संख्या को तीन से गुणा करें।

मूल त्रिकोणगत ग्रह की रश्मियों को 2 से गुणा करें। स्वराशिगत ग्रह की रश्मियों को 3 से गुणा कर 2 का भाग दें अर्थात् डेढ़ गुणा करें।

अधिमित्र के घर में हों तो 4 से गुणा करके 3 का भाग दें। मित्र ग्रह की रश्मियों को 6 से गुणा करके 5 का भाग दें। शत्रु ग्रह में होने पर आधा करें। अधिशत्रु के घर में हो तो 2 से गुणा करके 5 का भाग दें। सम के गृह में हो तो कोई संस्कार नहीं होता। इस प्रकार सब स्पष्ट रश्मियों को जोड़कर उससे फल कहें।

हमारे उदाहरण में सूर्यस्पष्ट 9.11.15 में से सूर्य का परम नीच 6.10°.0′ घटाया तो 3.1°.15′ बचा। यह स्वयं ही 6 रशियों से कम (षड्भाल्प) है। इसे सूर्य की उच्च रश्मि संख्या 10 से गुणा किया तो 30.10.150 या 3.12.30 को 6 से भाग दिया। तब लब्धि क्रमशः 5.2.5 यही सूर्य की मध्यम रश्मियाँ हैं।

चन्द्र स्पष्ट 2.11°.21′ में से नीच 7.3.0 घटाया तो 7.8.21 को षड्भाल्प किया। चन्द्रराशि संख्या 9 से गुणा किया तो 36.189.281 या 39.13.41 = 6.32.17 या 6.33 चन्द्रमा की मध्यम रश्मियाँ हैं। इसी पद्धति से सब ग्रहों की रश्नियाँ निकाली गई हैं।

।। मध्यम रश्मियाँ (उदा.)

सूर्य	5.2.5	बुध	1.14.00	शनि	4.20
चन्द्र	06.33.0	गुरु	5.14.0		
मंगल	2.44.0	शुक्र	5.46.00		

अब पंचधा मैत्री के आधार पर इनमें संस्कार करेंगे। सूर्य शनि के क्षेत्र में है। शनि सूर्य का पंचधा मैत्री में सम है, अतः कोई संस्कार नहीं होगा।

चन्द्रमा भी समगृह में होने से यथावत् रश्मियों वाला है। मंगल स्वक्षेत्री है। अतः डेढ़ गुनी रश्मियाँ $2.44 \times 3/2 = 4.6$ रश्मियाँ हुईं। बुध अस्तंगत होने से 0 रश्मि वाला रहेगा। गुरु की समक्षेत्र में होने से यथावत् रश्मियाँ हैं। शुक्र अधिमित्र के घर में है। अतः $\frac{5.46 \times 4}{3} = 7.41$ रश्मियाँ रहीं। शनि अधिशत्रु के घर में है, अतः 2 से गुणा कर 5 से भाग दिया। $\frac{(4.20)\ 2}{5} = \frac{8.40}{5} = 1.44$ रश्मियाँ हुईं।

इस प्रकार हमारे उदाहरण में स्पष्ट रश्मियाँ इस प्रकार रहीं। सूर्य 5.2। बुध 0। गुरु 5.14।शुक्र 7.41। शनि 1.44। सबका योग 30.20 है।

रश्मि योग से फल :–

एकादि पंचपर्यन्तं रश्मिसंख्या भवेद्यदि।
दरिद्राः दुःख सन्तप्ता अपि जाता कुलोत्तमे।।8।।
परतो दशकं यावत् निर्धना भारवाहकाः।
स्त्रीपुत्रगृहहीनाश्च जायन्ते मनुजा भुवि।।9।।
एकादश स्वल्पपुत्राः स्वल्पवित्ताश्च मानवाः।
द्वादश स्वल्पवित्ताश्च धूर्ता मूर्खाश्च निर्बलाः।।10।।

कुल रश्मियाँ 1 से 5 तक हों तो मनुष्य दरिद्र, दुःखी ही होता है, चाहे वह उत्तम कुल में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो।

6-10 रश्मियाँ हों तो मनुष्य निर्धन, बोझा ढोने वाले, मजदूर, स्त्री पुत्रादि व घर के सुख से रहित होते हैं।

11 रश्मि योग से कम पुत्र व धन वाले एवं 12 रश्मि योग से कम धनी, धूर्त, मूर्ख व निर्बल होते हैं।

चौर्य कर्मरता नित्यं चेत् त्रयोदश रश्मयः।
चतुर्दशसु धर्मात्मा कुटुम्बानां च पोषकाः।।11।।
कुलोचित क्रियासक्तो धनविद्यासमन्वितः।
रश्मिभिः पंचदशभिः सर्वविद्यागुणान्वितः।।12।।
स्ववंशमुख्यो धनवानित्याह भगवान् स्वयम्।
परतश्च कुलेशाना बहुभृत्याः कुटुम्बिनः।।13।।

13 रश्मि योग से मनुष्य चोरी आदि करने वाले, उठाईगीर, राहजन, छोटी–छोटी चीजों पर नीयत खराब करने वाले होते हैं।

14 रश्मियोग से मनुष्य धर्मात्मा, कुटुम्ब का भरण–पोषण करने लायक कमाने वाला होता है। तथा अपनी कुल क्रमानुसार कार्य (आजीविका) करने वाला, धन व विद्या का कार्यसाधक योग होता है।

कुल रश्मियाँ 15 रहने से मनुष्य सर्व विद्या गुणों से युक्त अर्थात् सब तरह से कार्य कुशल, सीखने व जानने की प्रवृत्ति वाला, अपने कुल परिवार में मुख्य (अग्रणी) धनी होता है, ऐसा स्वयं ब्रह्माजी ने कहा है। इससे अधिक अर्थात् 16-21 रश्मि योग रहने पर मनुष्य कुल पालक, अनेक सेवकों वाला घर–गृहस्थ के सुख से युक्त होता है।

कीर्तिमन्तो जनैः पूर्णाः सर्वे च सुखिनः क्रमात् ।

पंचाशज्जनपालश्चेदेकविंशतितो बलात् ।। 14 ।।

दानशीलः कृपायुक्तो द्वाविंशतिसु रश्मिषु ।

सुखयुक्सौम्यशीलश्चेत् त्रयोविंशतिरश्मयः ।। 15 ।।

आत्रिंशत्परतः श्रीमान् सर्वसत्त्वसमन्वितः ।

राजप्रियश्च तेजस्वी जनैश्च बहुभिर्वृतः ।। 16 ।।

21–50 तक रश्मियोग होने से मनुष्य यशस्वी, अनेक लोगों का सहयोग व समर्थन पाने वाला, सुखी होता है । इन सब फलों की मात्रा ग्रहबल व कुल स्तर से निर्धारित करनी चाहिए ।

22 रश्मियों से दानशीलयुक्त, कृपालु होता है । 23 से सुखी, सौम्य चरित्र होता है । 24-30 तक श्रीमान् अर्थात् प्रतिष्ठित व धनी, सब प्रकार से सुख व मनोबल से युक्त, राजा का प्रिय, तेजस्वी, अनेक लोगों से घिरा हुआ अर्थात् लोकप्रिय होता है ।

अत उर्ध्व तु सामन्तश्चत्वारिंशत्करावधि ।

जनानां शतमारभ्य सहस्रावधि पोषकः ।। 17 ।।

अत उर्ध्व तु भूपालः पंचाशत्किरणावधि ।

तत उर्ध्व करैर्विप्र ! चक्रवर्ती नृपो भवेत् ।। 18 ।।

एवं प्रसूतिकालोत्थ नभोगकरसम्भवम् ।

कुलक्रमानुसारेण जातकस्य फलं वदेत् ।। 19 ।।

31 से 40 तक रश्मियोग हो तो मनुष्य सामन्त अर्थात् बड़ा जागीरदार, इलाकेदार, अधिकारी, स्वयं निर्णायक सचिव, अवर सचिव इत्यादि अर्थात् जिसकी जबाबदेही सर्वोच्च सत्तासीन व्यक्ति से ही सीधे हो । वह 100 से अधिक 1000 तक व्यक्तियों पर नियन्त्रण, अधिकार या उत्तरदायित्व वहन करने की सामर्थ्य रखता है ।

41 से 50 रश्मियोग से मनुष्य राजा होता है । 50 से अधिक रश्मि योग हो तो चक्रवर्ती सम्राट् होता है ।

इस प्रकार जन्मकालीन ग्रहों की रश्मियाँ जानकर उनसे कुलक्रम व स्तरानुसार फलादेश करें ।

क्षत्रियश्चक्रवर्ती स्याद् वैश्यो राजा प्रजायते ।

शूद्रश्च सधनो विप्रो यज्ञकर्मक्रियारतः ।। 20 ।।

उच्चाभिमुखखेटस्य कराः पुष्टफलप्रदाः ।

नीचाभिमुखखेटस्य ततो न्यून फलप्रदाः ।। 21 ।।

उदाहरणार्थ अधिक रश्मियोग से राजकुल क्षत्रिय वंशोत्पन्न व्यक्ति चक्रवर्ती, वैश्य राजा मात्र, शूद्र बहुत धनी तथा विप्र अपने यज्ञ यागादिक व अध्यापनादि में श्रेष्ठ स्तर प्राप्त करता है। जो ग्रह उच्च राशि की ओर अग्रसर हों, उनकी रश्मियाँ पूरा व पुष्ट फल देती हैं। नीचोन्मुख ग्रह की रश्मियाँ अपेक्षाकृत कम फल देती हैं।

सर्वेषामेव खेटानामेवं रश्मिवशाद्द्विज ! ।

शुभं वाप्य शुभं चापि फलं भवति देहिनाम् ।। 22 ।।

रश्मिज्ञानं विना सम्यक् न फलं ज्ञातुमर्हति ।

तस्माद् रश्मीन् प्रसाध्यैवं फलं वाच्यं विचक्षणैः ।। 23 ।।

इस प्रकार सब ग्रहों का व्यक्तिगत फल भी रश्मियोग से जाना जा सकता है। रश्मि बलानुसार ही ग्रह अपना शुभाशुभ फल देते हैं।

रश्मियों के बिना ठीक–ठीक फल जनना कठिन है, अतः रश्मिसाधन करके तदनुसार फल कहना चाहिए।

इस विषय में सारावली व हमारा वृद्ध वन जातक भी देखें। कुछ आचार्य सब ग्रहों की समान 7-7 रश्मियाँ ही उच्च में रहने पर मानते हैं। तब भी कुल रश्मि योग 49 ही होगा। इस मध्यम रश्मि संख्या में पूर्वोक्त संस्कार करने से 50 से अधिक रश्मियाँ भी हो सकती हैं। यवनेश्वर ने संस्कार कुछ अलग कहे हैं तथा सारावली में रश्मियों का फल सुन्दर है।

यदि उत्तम राजयोगादि बनते हों तो रश्मियों के फल से उसमें तारतम्य होगा ही। यदि साधारण योग पड़े हों तथा रश्मियाँ अधिक हों, तब भी मनुष्य बहुतों से अधिक सफल होगा ही, इत्यादि स्वबुद्धि प्रयोग सर्वत्र करना चाहिए।

बल व रश्मियोग का समन्वय :–

स्थानवीर्याधिके देशे मुख्यः स्यादनुपाततः ।

दिग्बली विजयी चेष्टावीर्याधिक्ये प्रभुर्भवेत् ।। 24 ।।

कालवीर्याधिके कार्ये सदोत्साही तथायने ।

स्ववंशोत्कर्षता स्वोच्चे वर्गमुख्यो निसर्गतः ।।

जात्यादिगुणसंयोगात्कार्ये युक्तः प्रजायते ।। 25 ।।

यदि ग्रहों का स्थान बल अधिक हो तथा रश्मियोग सम्यक् हो तो मनुष्य सारे देश में प्रसिद्ध व प्रधान पुरुष होता है। दिग्बल अधिक हो तो मनुष्य सर्वत्र सफल व सम्मानित होता है। चेष्टाबल अधिक हो तो

नेतृत्व गुण से युक्त होता है। काल बल की अधिकता से सब कामों में कुशल व लगनशील, अयन बल की अधिकता से जीवनपर्यन्त कुलमुख्य होता है।

अधिक उच्च बल से अपने वर्ग व क्षेत्र में अग्रगण्य तथा निसर्ग बल ही अधिक हो तो जाति कुलानुसार कार्य करने वाला होता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां रश्मिफलाध्यायः पंचसप्ततितमः ।। 75 ।।

76

।।अथ सुदर्शनचक्राध्यायः ।।

पराशर उवाच :–

अथोच्यते मया विप्र ! रहस्यं ज्ञानमुत्तमम् ।
जगतामुपकाराय यत् प्रोक्तं ब्रह्मणा स्वयम् ।। 1 ।।
विश्वचक्रंकालचक्रंदिव्यचक्रंसुदर्शनम् ।
विष्णोः कराम्बुजावासमीडे तज्ज्ञानमद्भुतम् ।। 2 ।।
चक्रं सुदर्शनं नाम यद्वशात् प्रस्फुटं फलम् ।
नृणां तन्वादिभावानां ज्ञातुं शक्नोति दैववित् ।। 3 ।।
जन्मतो मृत्युपर्यन्तं वर्षमासदिनोद्भवम् ।
शुभं वाप्यशुभं सर्वं तच्छृणुष्वैकमानसः ।। 4 ।।

पराशर बोले– हे मैत्रेय ! अब मैं आपके समक्ष गूढ़ रहस्य पूर्ण विशिष्ट व ब्रह्मप्रोक्त ज्ञान को कहता हूँ। भगवान् विष्णु के हाथ में निवास करने वाला दिव्य चक्र समस्त काल व लोगों का नियामक है, उसी सुदर्शन चक्रात्मक ज्ञान को यहाँ कहते हैं।

इस सुदर्शन चक्र के आधार पर दैवज्ञ तन्वादि द्वादश भावों के फल का विवेक कर सकता है।

इसी के आधार पर जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त वर्ष, मास व दिन का शुभाशुभ सब फल जानना सम्भव है। आप उसी को सावधान होकर सुनिए।

सुदर्शन चक्र का स्वरूपः–

एककेन्द्रोद्भवं रम्यं लिखेद् वृत्तत्रयं द्विज ! ।

द्वादशारं च तत् कुर्याद् भवेदेवं सुदर्शनम् ।। 5 ।।

तत्राद्यवृत्ते लग्नाद्या भावा लेख्याः सखेचराः ।

तदूर्ध्ववृत्ते चन्द्राच्च भावाः खेटसमन्विताः ।।6 ।।

तदूर्ध्ववृत्तेसूर्याच्चक्रमाद्भावाग्रहान्विताः ।

एवमेकैकभावेऽत्र भवेद् भानां त्रयं त्रयम् ।। 7 ।।

एक ही केन्द्र से तीन परस्पर गभित अर्थात् एक के बाहर एक समानान्तर वृत्त खीचें । उनमें 12 अर या खाने बनाने से 'सुदर्शन चक्र' बन जाता है ।

पहले वृत्त को 12 भावों में जन्मकुण्डली, दूसरे वृत्त में चन्द्रकुण्डली व तीसरे वृत्त में सूर्य कुण्डली लिखकर सभी ग्रहों को यथास्थान स्थापित कर लें ।

इस प्रकार एक–एक भाव में तीन–तीन राशियाँ आ जाएँगी ।

अत्र तु प्रथमो भावो लग्नेन्दुरविभिर्युतः ।

तं प्रकल्प्य तनुं त्वग्रे ज्ञेया भावा धनादयः ।। 8 ।।

तत्र तत्र ग्रहस्थित्या ज्ञेयं तत्तत्फलं बुधैः ।

इस सुदर्शन चक्र में प्रथम भाव में लग्न, सूर्य व चन्द्र रहेंगे । उन तीनों को संयुक्त प्रथम भाव मानकर, वहाँ से आगे धनादि भावों की कल्पना करके उनमें स्थित ग्रहों से भाव फल कहना चाहिए ।

फलविचार :–

तनुभावे शुभः सूर्यो ज्ञेयः पापः स्वभोच्चगः ।। 9 ।।

शुभो ज्ञेयोऽन्यथा खेटो न शुभोऽसत्खगो मतः ।।

एवं शुभाशुभं ज्ञात्वा तत्तद्भावफलं वदेत् ।। 10 ।।

लग्न में सूर्य पापी नहीं माना जाएगा । पाप ग्रह भी स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री हो तो पापी नहीं होगा, अपितु शुभ ही रहेगा । निसर्ग शुभ, शुभ व निसर्ग पाप स्वोच्चादिगत न रहने पर पाप ही रहेंगे । शुभ ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्री हों तो शुभ नहीं होंगे, यह बात अन्यथा सिद्ध है ।

यो भावः स्वामिसौम्याभ्यां युक्तोदृष्टोऽयमेधते ।

पापैर्दृष्टो युतो वा स्यात् तस्य हानिः प्रजायते ।। 11 ।।

जिस भाव में भावेश या शुभ ग्रह स्थित हों या दृष्टि रखें उसकी वृद्धि होती है। जिस भाव पर पाप ग्रहों की दृष्टि या योग हो, उस भाव की हानि होती है।

ज्ञेयं सग्रहभावस्य ग्रहयोग समं फलम्।
अग्रहस्य तु भावस्य गृहदृष्टिसमं फलम्।। 12।।
शुभैरेवं शुभं पापैरशुभं मिश्रखेचरैः।
शुभाधिके शुभं ज्ञेयमशुभं त्वशुभाधिके।। 13।।
एवं भावेषु खेटानां योगं दृष्टिं विलोक्य च।
तारतम्येन वाच्यानि फलानि द्विजसत्तम!।। 14।।

(i) जिस भाव में ग्रह हों वहाँ ग्रह स्थिति से फल कहें। (ii) जहाँ ग्रह न हो उस भाव का फल ग्रह दृष्टि के अनुसार कहें।

(ii) शुभ ग्रहयोग दृष्टि से शुभ फल व अशुभ ग्रह योग दृष्टि से अशुभ फल होता है। मिश्रित ग्रहों से मिश्रित फल होता है।

(iii) किसी भाव में शुभाधिक्य होने से शुभ व अशुभाधिक्य होने से अशुभ होता है।

(iv) इस प्रकार भावों में ग्रह योग व दृष्टि का विचार करके समन्वय करते हुए तारतमिक रूप से साधक व बाधक बातों का विचार करके फल कहें।

ग्रहदृग्योग हीन भाव का फल :–

यत्र नैव ग्रहः कश्चिन्न दृष्टिः कस्यचिद्भवेत्।
तदा तद्भावजं ज्ञेयं तत्स्वामिवशतः फलम्।। 15।।

जिस भाव में कोई ग्रह न हो तथा दृष्टि भी न हो तो उस भाव का फल भावेश के आधार पर कहना चाहिए।

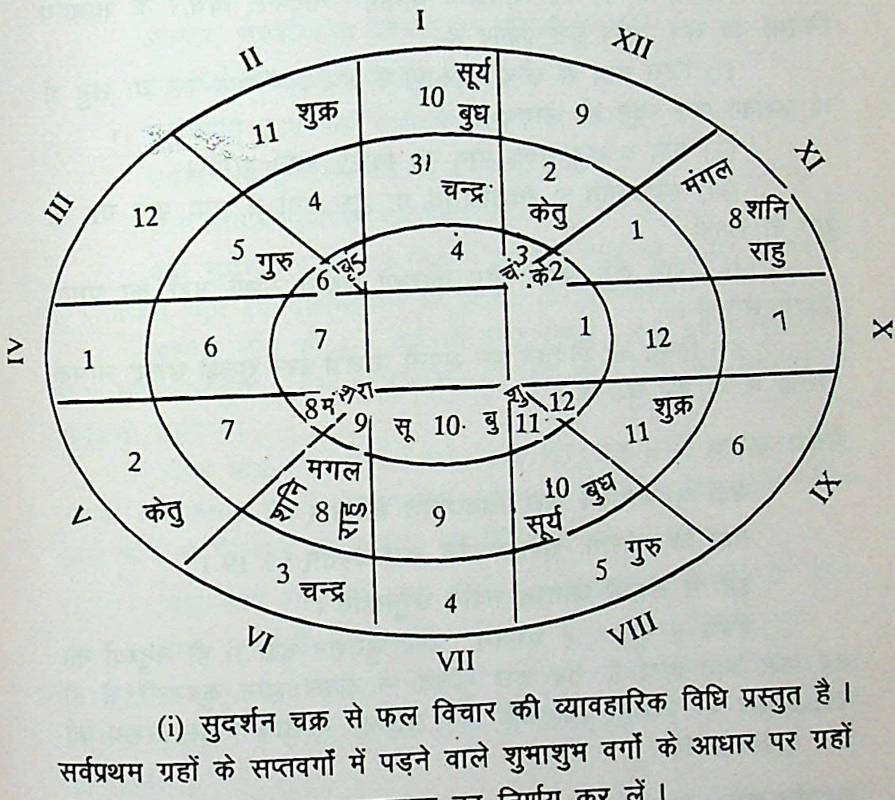
सप्तवर्गों का प्रयोग :–

शुभोऽप्यशुभवर्गेषुह्यधिकेष्वशुभप्रदः।
पापोऽपि शुभवर्गेषु ह्यधिकेषु शुभप्रदः।। 16।।
स्वभोच्चस्य शुभस्यात्र वर्गा ज्ञेयाः शुभावहाः।
शत्रोः क्रूरस्य नीचस्य षड्वर्गो अशुभप्रदाः।। 17।।
एवं सर्वेषु खेटेषु भावेष्वपि द्विजोत्तम!।
शुभाशुभत्वं संचिन्त्य ततस्तत्फलमादिशेत्।। 18।।

यदि शुभ ग्रह भी सप्तवर्गों में अधिक स्थानों पर पापवर्ग में गया हो तो अशुभ ही होगा। पाप ग्रह यदि अधिक शुभ वर्ग में गया हो तो शुभ ही समझा जाएगा। अपनी उच्च राशि व निसर्ग शुभ ग्रह की राशि के वर्ग को यहाँ शुभ समझना चाहिए। शत्रु, पापी ग्रह, नीच राशि के वर्ग अशुभ प्रद होते हैं।

इस तरह सब ग्रहों व भावों का विचार करके तत्तद्भाव का शुभाशुभ फल कहें। हमारे पूर्वोक्त उदाहरण का सुदर्शन चक्र अधोलिखित है।

।। सुदर्शन चक्र प्रदर्शन (उदा०) ।।



(i) सुदर्शन चक्र से फल विचार की व्यावहारिक विधि प्रस्तुत है। सर्वप्रथम ग्रहों के सप्तवर्गों में पड़ने वाले शुभाशुभ वर्गों के आधार पर ग्रहों के शुभ फलदत्व व अशुभ फलदत्व का निर्णय कर लें।

हमारे उदाहरण में सूर्य 6 वर्गों में शुभ है। चन्द्रमा 4 वर्गों में शुभ है। मंगल 5 वर्गों में शुभ, बुध 4 वर्गों में, गुरु 3 वर्गों में ही शुभ है तथा शुक्र 4 वर्गों में, शनि 5 वर्गों में, राहु 2 वर्गों में ही शुभ है। इस तरह सूर्य अति शुभ, तब मंगल शनि, ततः चन्द्र व बुध शुभ तथा गुरु राहु अशुभ हैं।

उदाहरण में लग्न में सूर्य, बुध चन्द्र ये तीनों ही अति शुभ व मध्यम शुभ हैं, अतः प्रथम भाव फल पुष्ट होगा। लेकिन षष्ठ में राहु रहने से फल में कमी होगी।

चतुर्थ व दशम में कोई ग्रह नहीं है। तब दृष्टि देखेंगे। चतुर्थ पर गुरु की पूर्ण दृष्टि, सूर्य बुध चन्द्र की त्रिपाद दृष्टि, शनि की पूर्ण दृष्टि है। अतः शुभ दृष्टि की अधिकता है। अपि च मंगल, बुध व शुक्र की राशि पड़ने से भी शुभ है। अतः चतुर्थ भाव का फल अवश्य मिलेगा। लेकिन 1.4 भाव से 6.8 में राहु रहने से जीवन का मार्ग सरल नहीं रहेगा। इसी तरह भावगत राशियों से भी फल समझना चाहिए। भावफल विचार के सामान्य नियमों का सार संक्षेप इस प्रकार है–

(i) जिस भाव से केन्द्र त्रिकोण व अष्टक में पाप ग्रह या राहु हों तो उसका फल न्यून हो जाएगा।

(ii) पाप व राहु युक्त भाव की विशेष हानि होगी।

(iii) स्वोच्चगत व स्वराशिगत या शुभ वर्गों में गया पाप ग्रह भी शुभ ही समझें।

(iv) राहु केतु अपने योग कारकों अर्थात् साथी ग्रहों का प्रभाव अवश्य लेते हैं।

इस विषय का विवेचन हम अपनी **'उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर'** नामक पुस्तक में भी कर चुके हैं।

मैत्रेय उवाच :–

यदा सुदर्शनादेव फलं सिद्धयति देहिनाम्।
तदा किं मुनिभिः सर्वैर्लग्नादेव फलं स्मृतम्।। 19।।
इति मे संशयो जातस्तं भवान् छेत्तुमर्हति।

मैत्रेय ने पूछा– हे भगवन्! जब सुदर्शन चक्र से ही मनुष्यों का सब फल ज्ञात होता है, तब कुछ मुनियों ने केवल लग्न कुण्डली से ही फल विचार की पद्धति क्यों कही है? मेरे मन में उत्पन्न इस संशय को आप कृपया हटाएँ।

सुदर्शन चक्र : कब देखें :–

पृथग्भगौ यदाऽर्केन्दू लग्नादन्यत्र संस्थितौ।। 20।।
तदा सुदर्शनाच्चक्रात् फलं वाच्यं विचक्षणैः।
एकभे द्वौ त्रयो वा चेत् तदा लग्नात्फलं वदेत्।। 21।।

यदि सूर्य, चन्द्रमा अलग–अलग व लग्न भाव से अन्यत्र स्थित हों, तब सुदर्शन चक्र से फलादेश करना चाहिए।

यदि लग्न, सूर्य व चन्द्रमा में दो या तीनों तत्त्व लग्न भाव में ही हों तो लग्न से फल कहना चाहिए।

अर्थात् लग्नादि तीनों तत्त्वों में से अधिक तत्त्व एकत्र रहने पर भी तथा अलग–अलग रहने पर भी सुदर्शन विचार करें। वास्तव में जन्म लग्न तीन हैं। उदय लग्न, चन्द्र लग्न व सूर्य लग्न। इन तीनों पर समवेत विचार करना ही सुदर्शन चक्र विचार है।

सुदर्शन चक्र में दशान्तर्दशा :–

अथ विप्र ! प्रवक्ष्येऽहं प्रतिवर्षादिजं फलम्।
अस्मात् सुदर्शनादेव दशान्तरदशावशात्।। 22।।
तन्वाद्यैर्वर्षमासार्धद्विकघस्रान् प्रवर्तयेत्।
भावेशादि द्वादशानां दशावर्षेषु कल्पयेत्।। 23।।
तदाद्यन्तर्दशास्तद्वन्मासादौ तद्बलैः फलम्।
तं तं भावं प्रकल्याङ्गं तत्तत्तन्वादिकं द्विज !।। 24।।

अब सुदर्शन चक्र से वार्षिक व मासिक फल का विचार बता रहा हूँ। प्रत्येक भाव की दशान्तर्दशा का विचार करना चाहिए।

प्रत्येक भाव की 1–1 वर्ष की दशा समझें। एक वर्ष में पुनः 1–1 मास की अन्तर्दशा। पुनः तृतीयावृत्ति में ढाई–ढाई दिन की प्रत्यन्तर्दशा समझनी चाहिए।

जिस भाव में आयु वर्ष पड़े, उसी भाव को लग्न मानें। वहीं से गणना कर क्रमशः भावों की अन्तर्दशा समझें। प्रत्येक अन्तर्दशा में, अन्तर्दशा वाले भाव से गिनकर प्रत्यन्तर्दशा का विचार करें।

बार–बार लग्न से प्रथम, द्वितीयादि आयु वर्षों की गिनती करते हुए वार्षिक कुण्डली व वार्षिक दशा जान लें। पहले भाव में 1.13.25.37.49.61.73वें आदि वर्ष पड़ेंगे। गणना जन्म लग्न से ही करना अधिक उपयुक्त है। यह वार्षिक दशा का विचार है। इसके 120 वर्ष पूरे हो जाएँगे।

हमारे उदाहरण में तृतीय भाव में क्रमशः 3.15.27.39.51.63 आदि वर्ष पड़ेंगे।

तृतीय भाव में गुरु विशेष शुभ ही है। इससे केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह युक्त राहु पड़ता है। अतः इन वर्षों में कष्ट होगा। सात केन्द्र में शुक्र, षष्ठ में सूर्य, बुध, शुक्र। अष्टम ग्रह रहित, द्वादश में गुरु शुक्र होने से परम

अनिष्ट या विशेष हानि नहीं होगी। कष्ट अवश्य होगा। साथ ही राहु कारक ग्रह मंगलादि से युक्त भी है, अतः शुभाशुभ फल मिलेंगे। इन वर्षों में सारे वर्ष में से कब फलोदय होगा, एतदर्थ अन्तर्दशा का विचार तृतीय भाव से ही शुरू होगा। उदाहरणार्थ तृतीय भाव प्रथम मास, द्वितीय मास चतुर्थ भाव इत्यादि।

।। सुदर्शन चक्र ।। (उदा.) वर्ष (27.39.51आदि)

राशि लग्नादि भाव	कन्या III	तुला IV	वृश्चिक V	धनु VI	मक. VII	कुम्भ VIII	मीन IX	मेष X	वृष XI	मिथु. XII	कर्क I	सिंह II
मास	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
25 जनवरी 94	25.2.94	25.3.94	25.4.94	25.5.94	25.6.94	25.7.94	25.8.94	25.9.94	25.10.94	25.11.94	25.12.94	25.1.94

जब-जब राहु युक्त, पापयुक्त या गुरु की राशि की अन्तर्दशा होगी, तब-तब कष्ट सम्भव होगा। माना मीनान्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा देखी तो 2 दिन 30 घड़ी की एक प्रत्यन्तर्दशा है।

।। मीनान्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा ।। (उदा.)

दशेश	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिं	कन्या	तु.	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ
दिन घंटे	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12	2 12
सूर्य 3.11.15	3.13.45	3.16.15	3.18.45	3.23 .15	3.25.45	3.27.15	4.00.45	4.2.15	4.2.45	4.5.15	4.7.45	4.10.45

प्रत्यन्तर समाप्ति में कुछ कलाओं का अन्तर सम्भाव्य है। यदि आप चाहें तो सौर वर्ष प्रवेश के समय को रखते हुए दिन, तिथि व समय घंटा मिनट का भी निर्देश कर सकते हैं। उक्तोदाहरण में अनिष्ट फल बताते समय, गुरु प्रत्यन्तर, राहु या पाप युक्त राशि का प्रत्यन्तर एवं तत्कालीन गोचर व अष्टकवर्ग का समन्वय करके फलादेश करें।

दशा फल विचार :–

तत्तल्लग्नात्केन्द्रकोणाष्टमे सौम्याः शुभप्रदाः ।
यत्र भावे भवेद् राहुस्तद्भावस्य नाशकृत् ।। 25 ।।
पापा वा यत्र बहवस्तत्तद्भावविनाशनम् ।
विरिःफारि शुभैः पापैस्त्रिषडायस्थितैः शुभम् ।। 26 ।।
एवं प्रत्यब्दमासादौ भावानां फलचिन्तनम् ।
द्वादशानां दशावृत्या दशाश्चायुषि चिन्तयेत् ।। 27 ।।

दशा प्रवेश के लग्न से अर्थात् सुदर्शन कुण्डली गत भाव से 1.4.5.7.9.8.10 में शुभ ग्रह शुभ तथा पाप ग्रह कष्टप्रद होते हैं। जिस भाव में राहु हो, उस भाव की हानि होती है। जिस भाव में बहुत से पाप ग्रह हों, उस भाव की भी हानि होती है।

6–12 भाव में शुभ ग्रह होने से उस वर्ष-मासादि में कष्ट तथा 6–12 के अतिरिक्त केन्द्र, कोण या अष्टमादि में या 3.6.11 में शुभ ग्रह होने से शुभ होता है।

इस प्रकार प्रत्येक वर्ष का फल सुदर्शन चक्र से देखें। विचारणीय वर्ष में मासादि का फल तथा भावफल भी जानें।

बारहों भावों की दस आवृत्ति से सम्पूर्ण आयु वर्ष 120 वर्ष पूर्ण हो जाते हैं। पहले विचारित वर्षों में 6.12 में शुभ ग्रह, केन्द्र कोण में पाप ग्रह पड़ते हैं। अतः इन वर्षों में यथावसर गोचर, अष्टकवर्ग, दशान्तर्दशा (विंशोत्तरी) आदि का समन्वय करके अशुभ, अति अशुभ या महान् अशुभ फल कहना चाहिए।

फल निर्णय :–

एवं सुदर्शनाच्चक्राद् वर्षमासादिजं फलम् ।
ज्ञात्वा तथाष्टवर्गोत्थमुभाभ्यां फलनिर्णयः ।। 28 ।।
उभयत्र समत्वे हि सम्पूर्णं तत्फलं वदेत् ।
विषमत्वे यदाधिक्यं तत्फलं च बल क्रमात् ।। 29 ।।

इस तरह सुदर्शन चक्र व अष्टकवर्गादि के पूर्वोक्त विधानों द्वारा उस वर्ष में शुभाशुभ का अन्तिम निर्णय करें। यदि सब प्रकार या दोनों प्रकार से अशुभ आए तो पूर्ण अशुभ तथा दोनों प्रकारों में फल भेद दिखे तो जो अधिक हो, वही मिलता है। अर्थात् शुभाधिक्य दिखे तो शुभ तथा अशुभाधिक्य दिखे तो अशुभ फल होगा। सुदर्शन चक्र के निष्कर्षों को अष्टक वर्ग व गोचर से प्राप्त निष्कर्षों से मिलाकर देखने की अनिवार्यता बताई गई है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां सुदर्शन-चक्राध्यायः षट्सप्ततितमः ।। 76 ।।

77

।। अथ पंचमहापुरुषलक्षणाध्यायः ।।

पराशर उवाच–

अथ वक्ष्याम्यहं पंचमहापुरुषलक्षणम् ।
स्वभोच्चगतकेन्द्रस्थै–बलिभिश्च कुजादिभिः ।।1।।
क्रमशो रुचको भद्रो हंसो मालव्य एव च ।
शशश्चैते बुधै सर्वैर्महान्तः पुरुषाः स्मृताः ।। 2 ।।

पराशर बोले– अब मैं पंचमहापुरुषों के लक्षणों को कहता हूँ। यदि मंगलादि पाँच ताराग्रह बलवान् होकर, स्वोच्चगत या स्वक्षेत्री होकर केन्द्र में स्थित हों तो मंगल से रुचक, बुध से भद्र, गुरु से हंस, शुक्र से मालव्य एवं शनि से शश नामक महापुरुष योग बनता है। इन योगों में उत्पन्न सभी पुरुष महान् अर्थात् प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध आदि होते हैं।

रुचक लक्षण :–

दीर्घाननो महोत्साहो स्वच्छकान्तिर्महाबलः ।
चारुभ्रूर्नीलकेशश्च सुरुचिश्च रणप्रियः ।। 3 ।।
रक्तश्यामोऽरिहन्ता च मन्त्रविच्चोग्रनायकः ।
क्रूरो भर्ता मनुष्याणां क्षामाऽङ्घ्रिर्द्विजपूजकः ।।4 ।।
वीणावज्रधनुः पाश वृष चक्राङ्कितः करे ।
मन्त्राभिचारकुशली दीर्घ्ये चैव शतांगुलः ।। 5 ।।

मुखं दैर्घ्यं समं मध्यं समं विज्ञैः प्रकीर्तितम् ।
तुल्यस्तुलासहस्रेण रुचको द्विजपुङ्गवः ।।6।।
भुनक्ति विन्ध्यसह्याद्रिप्रदेशं सप्तर्ति समाः ।
शस्त्रेण वह्निना वाऽपि स प्रयाति सुरालयम् ।।7।।

यदि मंगल केन्द्र में स्थित होकर बलवान् हो तथा स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो तो 'रुचक' महापुरुष योग होता है। रुचक योग में उत्पन्न व्यक्ति बड़े मुँह वाला, अधिक उत्साही, गोरी चमकदार त्वचा, कान्तिमान्, बलवान्, सुन्दर भौंह वाला, काले बालों वाला, सुन्दरता व कलात्मकता से प्रेम करने वाला, युद्धप्रिय अर्थात् आक्रामक, ताँबे जैसी रंगत (रक्तश्याम) वाला, शत्रुओं को परास्त करने वाला, मन्त्रों का जानकार, दबंग व कठोर नायक, (प्रशासक) कठोर स्वभाव, लोगों का पालन–पोषण करने वाला, पतली पिण्डली व जाँघों वाला, ब्राह्मणों का सत्कारकर्ता, हाथ में वीणा, वज्र, धनु, पाश, वृष या चक्र के निशान वाला, मन्त्र प्रयोग में कुशल, अपनी अंगुली की नाप से 100 अंगुल ऊँचा। मुँह की लम्बाई–चौड़ाई समान सी अर्थात् चौकोर सा मुँह, कमर चौड़ी, शरीर का वजन 1000 तुला होता है। आयु का मान 70 वर्ष, विन्ध्य व सह्यांचल (नीलगिरि) का राजा या उन प्रदेशों से लाभ कमाने वाला, हथियार की चोट या अग्नि से देहान्त पाने वाला होत्ता है।

इस विषय में विशेष विवेचन, पाँचों योगों की प्रस्तुति के बाद अध्यायान्त में किया जाएगा। आगे केवल विषय प्रस्तुति मात्र की जा रही है।

भद्र लक्षण :–

शार्दूलप्रतिमः पीनवक्षा गजगतिः पुमान् ।
पीनाजानुभुजः प्राज्ञश्चतुरस्रश्च योगवित् ।।8।।
सात्विकः शोभनांघ्रिश्च शोभनश्मश्रुसंयुतः ।
कामी शंखगदाचक्रशरकुंजर चिह्नकैः ।।9।।
ध्वजलांगलचिह्नश्च चिह्नितांघ्रिकराम्बुजः ।
सुनासश्शास्त्रविद्धीरः कृष्णाकुंजितकेशभृत् ।।10।।
स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनप्रीणनक्षमः ।
ऐश्वर्यं भुज्यते चास्य नित्यं मित्रजनैः परैः ।।11।।
तुलया तुलितो भारप्रमितः स्त्रीसुतान्वितः ।
सक्षेमो भूपतिः पाति मध्यदेशं शतं समाः ।।12।।

बुध यदि केन्द्र में बली होकर उच्चादिगत हो तो 'भद्र' नामक योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति चीते की तरह फुर्तीला, चौड़ी छाती, हाथी जैसी मस्तानी चाल, मोटे अर्थात् मजबूत व घुटनों तक लम्बे हाथ, बुद्धिमान्, चौकोर-सा शरीर, मनोबल से युक्त या योगशास्त्र का जानकार, सात्त्विक आचार–विचार वाला, सुन्दर पैरों वाला, सुन्दर व कोमल मूंछों व दाढ़ी वाला, कामुक स्वभाव, हाथ में (शंख–चक्र–बाण, सिंह) के चिन्ह वाला, अथवा (झंडा, हल) के चिन्हों से युक्त हाथ–पैरों वाला। सुन्दर नाक वाला, शास्त्रों का जानकार, धैर्यशाली, काले व घुँघराले बालों वाला, सब कामों में स्वतन्त्र रूप से आचरण करने वाला अर्थात् स्वयं निर्णायक शक्ति से युक्त, अपने लोगों को प्रसन्न करने में समर्थ, मित्र व दूसरे लोगों को ऐश कराने वाला, वजन में 1 भार या 20 तुला के बराबर, स्त्री व पुत्रों से युक्त, कुशलतापूर्वक रहने वाला, राजा, मध्य देश पर शासन करने वाला, सौ वर्ष की आयु वाला होता है।

हंस लक्षण :–

हंसो हंसस्वरो गौरः सुमुखोन्नतनासिकः।
श्लेष्मलो मधुपिङ्गाक्षो रक्तवर्णनखः सुधीः।। 13।।
पीनगण्डस्थलो वृत्तशिराः सुचरणो नृपः।
मत्स्याऽङ्कुशधनुःशंखकंजखट्वाङ्गचिह्नकैः। 14।।
चिह्नितांघ्रिकरः स्त्रीषु कामार्तो नैति तुष्टताम्।
षण्णवत्यङ्गुलो दैर्घ्ये जलक्रीडारतः सुखी।।15।।
गङ्गायमुनयोर्मध्यदेशं पाति शतं समाः।
वनान्ते निधनं याति भुक्त्वा सर्वसुखं भुवि।। 16।।

गुरु की पूर्वोक्त प्रकार से स्थिति हो तो 'हंस' नामक महापुरुष योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति हंस के समान आवाज वाला, सुन्दर मुखाकृति वाला, ऊँची नाक वाला, गौर वर्ण वाला, कफ प्रधान प्रकृति वाला, सुनहरी सी आँखों वाला, लाल नाखूनों वाला, विद्वान् व बुद्धिमान्, भरे हुए गालों वाला, गोलाकार मस्तक वाला, सुन्दर पैरों वाला, राजा होता है।

उसके हाथ पैरों में मछली, अकुंश, धनुष, शंख, कमल, ढाल (युद्ध सामग्री) के चिह्न होते हैं। अत्यधिक कामुक स्वभाव वाला, 96 अगुंल लम्बाई वाला, पानी में क्रीड़ादि करने में रुचि रखने वाला, सुखी, गंगा-यमुना के बीच के प्रदेश में 100 वर्ष तक सुखपूर्वक जीवन बिताने वाला या इस प्रदेश का

राजा, जंगल प्रदेश या बस्ती से दूर के प्रदेशों में देहान्त पाने वाला तथा संसार में सब प्रकार के सुख भोगने वाला होता है।

मालव्य पुरुष लक्षण :–

समौष्ठः कृशमध्यश्च चन्द्रकान्तिरुचिः पुमान्।
सुगन्धो नातिरक्ताङ्गो न ह्रस्वो नातिदीर्घकः।। 17।।
समस्वच्छरदो हस्तिनादआजानुबाहुधृक्।
मुखं विश्वाङ्गुल दैर्घ्ये विस्तारे दशाङ्गुलम्।। 18।।
मालवो मालवाख्यं च देशं पाति ससिन्धुकम्।
सुखं सप्तति वर्षान्तं भुक्त्वा याति सुरालयम्।। 19।।

शुक्रकृत महापुरुष योग मालव्य में बराबर आकार वाले होंठ, पतली कमर, चन्द्रमा के समान लावण्यमयी कान्ति, सुगन्धित शरीर वाला, अधिक लालिमा न रखने वाला, मध्यम कद, न बहुत लम्बा या नाटा, बराबर व साफ दाँतों वाला, हाथी के समान आवाज वाला, घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला, पतले व अण्डाकार मुख वाला, लम्बाई व चौड़ाई में 2:1 के अनुपात वाला, लम्बाई बीस अंगुल तो चौड़ाई 10 अंगुल, मालव देश (उज्जैन आदि) व सिन्ध का शासक, 70 वर्षो तक भूमि पर सुख भोगकर स्वर्ग सिधारने वाला होता है।

शश पुरुष लक्षणम् :–

तनुद्विजमुखः शूरो नातिह्रस्वः कृशोदरः।
मध्ये क्षामः सुजंघश्च मतिमान् पररन्ध्रवित्।। 20।।
शक्तो वनादि दुर्गेषु सेनानिर्दन्तुरः शशः।
चंचलो धातुवादी च स्त्रीसक्तोऽन्यधनान्वितः।। 21।।
मालावीणामृदङ्गऽस्त्र–रेखाङ्कितकरांघ्रिकः।
भूपोऽयं वसुधां पाति जीवं रवाद्रिसमाः सुखी।। 22।।

शनि द्वारा बनाए गए शश महापुरुष नामक योग में मनुष्य छोटे दाँतों वाला, छोटे मुँह वाला, शूरवीर, अधिक नाटा नहीं, पतली कमर, पतला पेट (तोंद विहीन) मजबूत जाँघें व पिण्डलियाँ, बुद्धिमान्, दूसरों के दोषों को जानने वाला, वन्य व पर्वतीय प्रदेशों में विशेष रमने वाला, दुर्गम प्रदेशों व किले आदि का प्रेमी, सेनापति के लक्षणों से युक्त, चंचल स्वभाव, धातुओं का व्यवसाय करने वाला (चिकित्सक, औषध निर्माता, सर्राफ, रत्न विक्रेता आदि), स्त्रियों पर विशेष रूप से आसक्त, दूसरों का धन पाने वाला होता है।

इस व्यक्ति के हाथ या पैर में माला, वीणा, मृदंग, अस्त्र आदि के सदृश रेखा होती है। यह राजा या राजतुल्य, साधिकार होता है। इसकी आयु 70 वर्ष होती है।

वराहमिहिर की बृहत्संहिता, सभी मानव आचार्यों द्वारा रचित ग्रन्थों में सबसे पुरानी है। उसमें भी अध्याय संख्या 69 में इस विषय का संग्रह किया है। वराहमिहिर सम्भवतः इसे होरा की अपेक्षा संहिता में पुरुषलक्षण प्रसंग में रखना अधिक उपयुक्त समझते होंगे। इसका विस्तृत व शास्त्रीय विवेचन हम अन्यत्र कभी करेंगे। सम्प्रति पंच महापुरुषों के विषय में वक्तव्य है।

(i) महापुरूष का तात्पर्य अच्छे तन व मन वाले, उत्तम भाग्य वाले पुरुषों से है। योगकारक ग्रह बलाबल के तारतम्य से अपना फल देंगे।

(ii) किसी–किसी ग्रन्थ में 1.4.7.10 भावों में से 4.7.10 भावों का ही ग्रहण है। हमारे विचार से 1.4.7.10 चारों लग्न केन्द्रों में कहीं भी मंगलादि ग्रह बली हों तथा उच्चगत या स्वक्षेत्री हों तो उक्त योग बनेंगे।

(iii) लग्न से केन्द्र में उक्त ग्रह उच्चगत या स्वक्षेत्री हों तथा स्थानदिक्कालचेष्टादि बलों से युक्त हों तो प्रथम श्रेणी का योग होगा।

(iv) चन्द्र से केन्द्र में उक्त ग्रह रहने पर भी उक्त योगों के फल मिलते हैं, लेकिन योग द्वितीय श्रेणी का रहेगा।

(v) योगकारक ग्रह सूर्य के साथ या चन्द्रमा के साथ नहीं होने चाहिए। अर्थात् अस्तंगतत्व व समागम से रहित तथा युद्ध में विजयी हों। वैसे षड्बली कहने से इन सब बातों का समावेश स्वयमेव हो ही जाता है।

(vi) सूर्य चन्द्र के साथ न होना मुख्य शर्त है। इसका उल्लेख सारावली में है। यदि योगकारक ग्रह सूर्य चन्द्र में किसी एक से युक्त हो, तब भी मनुष्य महान् न होकर स्त्री, पुत्र, धन से युक्त होता ही है।

अब योग के फलों में प्रोक्त कुछ शब्दों की व्याख्या की जाती है।

चतुरस्र :– चौकोर। दोनों हाथ फैलाकर खड़े होने से दायीं बीच की अंगुली से बायीं बीच की मध्यमा बड़ी अंगुली तक नापने से जितनी चौड़ाई हो, लगभग उतनी या उतनी ही लम्बाई (पैर के अंगूठे से कपाल तक) हो तो यह मान चतुरस्र कहलाता है। अर्थात् लम्बाई व चौड़ाई में समानता सी हो।

धातुवादी :– सोना चाँदी आदि। क्रियामूल या शब्द मूल पद, पठ, वद्, लिख् आदि। रक्त, अस्थि, वसा, मज्जा, वीर्य आदि शरीर धातु। इनसे सम्बन्धित बातों का व्याख्याता, वक्ता या प्रयोगकर्ता।

तुला :– प्राचीन काल की ठोस वस्तु (SOLID) को तोलने की माप। सामान्य अर्थ तराजू। पहले अष्टकवर्ग के प्रसंग में कह चुके हैं कि 4 कर्ष = 1 पल है। अर्थात् 64 ग्राम के लगभग 1 पल होता है। अतः एक कर्ष 16 ग्राम के बराबर हो गया। 100 पल = 1 तुला है। पल के मान में कुछ मतान्तर हैं। 4 तोला या 48 ग्राम का पल तिथितत्व में कहा गया है। अतः 6400 ग्राम = 1 तुला या 4800 ग्राम की 1 तुला है। यदि कम वाला मान भी लें तो 4 किलो 800 ग्राम × 1000 = 4800 किलो वजन का आदमी भला कहीं होता है। अतः महर्षि के युग में कुछ अन्य मान होता होगा। वराह ने 1 तुला मान कहा है। वह भी विचारणीय है। अमर कोष 100 पल की एक तुला कहता है। 1 कर्ष = 1 तोला, 4 तोला = 1 पल, 100 पल = 1 तुला वाला मान अधिक प्रसिद्ध है। अतः 400 तोला या 4800 ग्राम ही 1 तुला होती है। तब पाँच किलो व पाँच हजार किलो के बीच में कोई युक्तिसंगत मान मानना पड़ेगा। लीलावती में 1 कर्ष = 16 मासा माना है। 5 रत्ती = 1 मासा मानकर 80 रत्ती का 1 कर्ष। हमारे विचार से सन्तुलित शरीर भार से थोड़ा अधिक भार मानने से कार्य सिद्ध हो जाता है।

भार :– 20 तुला का 1 भार। भार का सामान्य अर्थ वजन। पुराने जमाने में पंसेरी या 5 सेर वजन एक बार में रखकर हाथ की तराजू से तोला जाता था। अतः 1 तुला = 5 सेर लगभग पौने 5 किलो। और 20 तुला = 100 सेर या 96 किलो के लगभग 1 भार हुआ। यह विश्वसनीय है व पुराने मानों से मेल भी खाता है। यह मनुष्य द्वारा एक बार में उठाए जाने योग्य भार है। अतः इसे मानव भार कहेंगे। इसी तरह 1 गाड़ी या शकट से उठाए जाने योग्य भार शाकटभार होता था। इन सभी प्राचीन तुला मानों में क्षेत्र तथा समय भेद से भेद होता रहता था।

(i) इन महापुरुष योगों में परम उच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र में फल में अवश्य तारतम्य रहेगा।

(ii) इसी तरह केन्द्रों में भी उत्तरोत्तर बलवत्ता होने से दशम केन्द्र में बनने वाला योग सबसे श्रेष्ठ होगा।

(iii) इन योगकारक ग्रहों पर दृष्टि व योग करने वाले ग्रहों का प्रभाव भी होगा।

सामान्यतः मंगलादि ग्रह बलवान् होने पर व केन्द्रादि में न रहने पर भी उक्त प्रकृति शील आदि लोक में देख जाता है। इस विषय में विशेष कभी वराह की 'बृहत्संहिता' में लिखेंगे।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां पंच–
महापुरुषलक्षणाध्यायः सप्तसप्ततितमः ।। 77 ।।

।। अथ पंचमहाभूतफलाध्याय: ।।

पराशर उवाच–

अथ पंचमहाभूतच्छाया ज्ञानं वदामि ते ।

ज्ञायते येन खेटानां वर्तमानदशा बुधैः ।। 1 ।।

पराशर बोले– अब मैं पंचमहाभूत (पृथ्वी. जल, वायु, तेज व आकाश) की छाया का ज्ञान बताता हूँ। इससे मनुष्य की वर्तमान दशा, ग्रह प्रभाव व तत्त्व प्रधानता का अनुमान लगाया जाता है ।

शिखिभूखाम्बुवातानामधिपामङ्गलादयः ।

तत्तद्बलवशाज्ज्ञेयं तत्तद्भूतभवं फलम् ।। 2 ।।

मंगल– अग्नि । बुध–पृथ्वी । गुरु–आकाश । शुक्र–जल । शनि–वायु । इस प्रकार मंगलादि ग्रहों का तत्त्वों पर आधिपत्य होता है । जो ग्रह जन्म समय में बली हो या जिसकी दशा हो, उसी के तत्त्व की स्पष्ट अनुभूति जातक में होती है ।

सबले मंगले वह्निस्वभावो जायते नरः ।

बुधे महीस्वभावः स्यादाकाशप्रकृतिर्गुरौ ।। 3 ।।

शुक्रे जलस्वभावश्च मारुतप्रकृतिः शनौ ।

मिश्रैर्मिश्रस्वभावश्च विज्ञेयो द्विजसत्तम! ।। 4 ।।

यदि मंगल बलवान् हो तो पुरुष अग्नि स्वभाव, बुध से पृथ्वी स्वभाव, गुरु से आकाश स्वभाव, शुक्र से जल प्रकृति व शनि से वात प्रकृति होता है । कई ग्रह प्रधान हों तो सब प्रधान ग्रहों का मिश्रित प्रभाव आता है । इनके लक्षण आगे बताए जा रहे हैं ।

सूर्ये वह्निस्वभावश्च जलप्रकृतिको विधौ ।

स्वदशायां ग्रहाश्छायां व्यंजयन्ति स्वभूतजाम् ।। 5 ।।

सूर्य प्रधान बली होने से भी अग्नि स्वभाव एवं चन्द्र प्रधान होने से जल स्वभाव होता है । अपनी–अपनी दशा में ग्रह अपने तत्त्व की प्रधानता दिखाते हैं ।

वह्निस्वभाव पुरुष का लक्षण :–

क्षुधार्तश्चपलः शूरः कृशः प्राज्ञोऽतिभक्षणः ।

तीक्ष्णो गौरतनुर्मानी वह्निप्रकृतिको नरः ।। 6 ।।

अग्नि तत्त्व प्रधान जातक अधिक भूख वाला, चंचल व फुर्तीला, निडर, पतला, बुद्धिमान्, अधिक खाने वाला, तीखा स्वभाव, गोरा रंग व स्वाभिमानी स्वभाव वाला होता है।

भूमिस्वभाव पुरुष का लक्षण :–

कर्पूरोत्पलगन्धाढ्यो भोगी स्थिरसुखी बली।

क्षमावान् सिंहनादश्च महीप्रकृतिको नरः।। 7।।

भूमि स्वभाव जातक के शरीर से स्वाभाविक गन्ध आती है। कपूर व कमल की खुशबू वाला, भोग भोगने वाला, सदैव सुखी, बलवान्, क्षमाभाव से युक्त, शेर की तरह दबंग आवाज का धनी होता है।

आकाशस्वभाव पुरुष का लक्षण :–

शब्दार्थवित् सुनीतिज्ञो प्रगल्भो ज्ञानसंयुतः।

विवृतास्योऽतिदीर्घश्च व्योमप्रकृतिसम्भवः।। 8।।

आकाश स्वभाव व्यक्ति शब्दार्थ को जानने वाला, अर्थात् बातों के गूढ़ार्थ को समझने वाला, नीति विशारद, ज्ञानी, प्रगल्भ (स्पष्टवादी व खरा), बड़े मुँह वाला, लम्बा होता है।

जलस्वभाव पुरुष का लक्षण :–

कान्तिमान् भारवाही च प्रियवाक्पृथिवीपतिः।

बहुमित्रो मृदुर्विद्वान् जलप्रकृतिसम्भवः।। 9।।

जल स्वभाव व्यक्ति कान्तियुक्त, बहुत भार (उत्तरायित्व) वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, राजा, अनेक मित्रों वाला, कोमल स्वभाव, विद्वान् होता है।

वायुप्रकृति पुरुष का लक्षण :–

वायुतत्वाधिको दाता क्रोधी गौरोऽटनप्रियः।

भूपतिश्च दुराधर्षः कृशाङ्गो जायते जनः।। 10।।

वायु तत्त्व प्रधान व्यक्ति दानी स्वभाव वाला, क्रोधी, गौर वर्ण, घूमने का शौकीन, राजा, न दबने वाला, पतले शरीर वाला होता है।

अग्नितत्व की छाया :–

स्वर्णदीप्तिः शुभा दृष्टिः सर्वकार्यार्थसिद्धिता।

विजयो धनलाभश्च वह्निमायां प्रजायते।। 11।।

जब वह्नि तत्त्व की छाया का उदय हो तब शरीर में सोने के समान चमक, शुभ व आकर्षक दृष्टि, सब कामों में सफलता व धन लाभ होता है।

भूमितत्व की छाया :–

इष्टगन्धः शरीरे स्यात् सुस्निग्धनखदन्तता।
धर्मार्थसुखलाभश्च भूमिच्छाया यदा भवेत्।। 12।।

भूमि तत्त्व की छाया का उदय हो तो शरीर में सुन्दर गन्ध का उदय, त्वचा में कान्ति, दाँतों व नाखूनों में विशेष चमक, धर्म व अर्थ का लाभ, सुख लाभ होता है।

आकाशच्छाया लक्षण :–

स्वच्छा गगनजाच्छाया वाक्पटुत्वप्रदा भवेत्।
सुशब्दश्रवणोद्भूतं सुखं तत्र प्रजायते।। 13।।

आकाश छाया का उदय हो तो वाक्पटुता, सुन्दर व मनोहर बातों को सुनने के अवसर मिलते हैं।

जलछाया लक्षण :–

मृदुता स्वस्थता देहे जलच्छाया यदा भवेत्।
तदऽभीष्ट रसास्वादसुखं भवति देहिनः।। 14।।

जल छाया का उदय हो तो शरीर में कोमलता, स्वस्थता, अभीष्ट व मनोरथानुकूल भोजन आदि प्राप्त होने के अवसर होते हैं।

वायुतत्व छाया लक्षणम् :–

मालिन्यं मूढ़ता दैन्यं रोगाश्च पवनोद्भवाः।
तदा च शोकसन्तापौ वायुच्छाया यदा भवेत्।। 15।।

वायु तत्त्व की छाया का उदय हो तो मन में मलिनता, विचारों में दृढ़ता व तीव्रता की कमी, निर्णय करने में भूल, वायु रोग, शोक व सन्ताप होते हैं।

एवं फलं बुधैर्ज्ञेयं सबलेषु कुजादिषु।
निर्बलेषु तथा तेषु वक्तव्यं व्यत्ययाद् द्विज !।। 16।।

इस प्रकार विद्वानों को मंगलादि ग्रहों की बलवत्ता देखकर उक्त प्रकार से फलादेश करना चाहिए। यदि मंगलादि ग्रह निर्बल हों तो बलानुसार कम फल होता है।

नीचशत्रुभगैश्चापि विपरीतं फलं वदेत्।

फलाप्तिरबलैः खेटैः स्वप्नचिन्तासु जायते।। 17।।

इसी प्रकार उक्त ग्रहों की नीच स्थिति या शत्रु राशिगतत्व होने पर भी विपरीत फल कहें। निर्बल ग्रह होने पर उक्त फलों की प्राप्ति केवल कल्पना लोक में या स्वप्नादि में होती है।

तद्दुष्टफलशान्त्यर्थमपि चाज्ञातजन्मनाम्।

फलपक्त्या दशा ज्ञेया वर्तमान नभः सदाम्।। 18।।

जिनका जन्म समय अज्ञात होने से दशान्तर्दशादि का ज्ञान न हो, उनके शरीर में उदित तत्त्व छाया को देखकर, विद्वान् लोग वर्तमान दशा का ज्ञान कर लें, तथा दुष्ट दशाफल की शान्ति के लिए दशाध्याय में प्रोक्त शान्ति विधान करें।

इस विषय में बृहत्संहिता का पुरुषलक्षणाध्याय व सारावली का सम्बद्ध अध्याय भी देखना चाहिए।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
पंचमहाभूतफलाध्यायोऽष्ट सप्ततितमः।। 78।।

79

।। अथ सत्वादिगुणाध्यायः।।

पराशर उवाच–

अथो गुणवशेनाहं कथयामि फलं द्विज!।

सत्व ग्रहोदयो जातो भवेत् सत्वाधिकः सुधीः।। 1।।

रजः खेटोदये विज्ञो रजोगुणसमन्वितः।

तमः खेटोदये मूर्खो भवेज्जातस्तमोधिकः।। 2।।

गुणसाम्ययुतो जातो गुणसाम्य खगोदये।

एवं चतुर्विधा विप्र! जायन्ते जन्तवो भुवि।। 3।।

उत्तमो मध्यमो नीच उदासीन इति क्रमात्।

तेषां गुणानहं वक्ष्ये नारदादिप्रभाषितान्।। 4।।

पराशर बोले– अब मैं सत्त्व, रजस्, तमस् गुणों के आधार पर फल कथन करता हूँ। सत्त्वप्रकृति ग्रह का उदय हो अर्थात् बलवान् हो या उसकी दशादि हो तो मनुष्य सत्त्वगुण युक्त होता है।

इसी तरह रजःप्रकृति ग्रह से मनुष्य रजोगुण की अधिकता वाला हो जाता है। तमोगुणी ग्रह के उदय से मनुष्य मूर्ख व तमोगुण की अधिकता से युक्त होता है।

यदि तीनों गुणों से युक्त ग्रहोदय हो तो मनुष्य तीनों गुणों के सम्मिश्रण से युक्त स्वभाव वाला होता है।

इस प्रकार सत्त्वगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी व समगुणी प्रकार से चार प्रकार के लोग होते हैं। ग्रहों के गुणों का निर्देश पीछे ग्रहगुणाध्याय में कह चुके हैं।

इन्हें क्रमशः उत्तम, मध्यम, अधम व उदासीन भी कहते हैं। अब मैं इन मानवभेदों के गुणों का स्पष्टीकरण करता हूँ।

उत्तम पुरुषों के गुण :–

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
अलोभः सत्यवादित्वं जने सत्वाधिके गुणाः।। 5।।

सतोगुणी मनुष्य में इन्द्रियों का वश में होना (शम), मन का नियन्त्रण (दम), आचरण व शरीर की पवित्रता, क्षमाभाव, सरलता, लोभ न करना, सत्य बोलना ये गुण होते हैं।

मध्यम पुरुषों के गुण :–

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाऽप्यपलायनम्।
साधूनां रक्षणं चेति गुणा ज्ञेया रजोधिके।। 6।।

मध्यम प्रकृति लोग शूरवीर, तेजस्वी, धैर्यशाली, कार्यकुशल, पीछे न हटने वाले, सज्जनों के रक्षक अर्थात् व्यर्थ विवाद न करने वाले, लेकिन उच्च या महत् कार्य के लिए दृढ़ साहसी होते हैं।

अधम पुरुषों के गुण :–

लोभश्चासत्यवादित्वं जाड्यमालस्यमेव च।
सेवाकर्मपटुत्वं च गुणा एते तमोऽधिके।। 7।।

अधम प्रकृति लोग असत्यवादी, लालची, जड़, आलसी, सेवाकार्य अर्थात् सेवा टहल करने में कुशल होते हैं।

उदासीन पुरुषों के लक्षण :–

कृषिकर्मणि वाणिज्ये पटुत्वं पशुपालने ।

सत्यऽसत्यप्रभाषित्वं गुणसाम्ये गुणा इमे ।। 8 ।।

समप्रकृति लोग कृषि या व्यापार या पशुपालन (आज के युग में धनप्रद व्यवसाय) करने में कुशल, कभी सत्य, कभी असत्य बोलने वाले होते हैं।

एतैश्च लक्षणैर्लक्ष्य उत्तमो मध्यमोऽधमः ।

उदासीनश्च विप्रेन्द्र ! तं तत्कर्मणि योजयेत् ।। 9 ।।

इस प्रकार व्यक्ति को गुणानुसार पहचान कर, तदनुकूल कार्यों में कुशल दैवज्ञ को लगाना चाहिए। अर्थात् प्रकृति के अनुकूल कार्यों में व्यक्ति रुचि ले तो सफलता मिलती है।

द्वाभ्यामेकोऽधिको यश्च तस्याधिक्यं निगद्यते ।

अन्यथा गुणसाम्यं च विज्ञेयं द्विजसत्तम ! ।। 10 ।।

यदि दो तीन गुणों के लक्षण एकत्र मिलते हों तो जिस गुण की प्रधानता हो, उसी के अनुसार निर्णय करें। यदि प्रधानता न दिखे तो समगुणी समझकर जातक के कार्य क्षेत्र, व्यवसायादि का निर्णय करें।

गुणों का प्रयोजन :–

सेव्यसेवकयोरेवं कन्यकावरयोरपि ।

गुणैः सदृशयोरेव प्रीतिर्भवति निश्चला ।। 11 ।।

इस प्रकार कन्या व वर या मालिक या नौकर अथवा साझेदारों के परस्पर गुणमिलान करके उनकी सफलता, परस्पर प्रेम भाव, व स्नेह का निश्चय करना चाहिए।

उदासीनोऽधमस्यैवमुदासीनस्य मध्यमः ।

मध्यमस्योत्तमो विप्र! प्रभवत्याश्रयो मुदे ।। 12 ।।

उदासीन स्वामी व अधम सेवक, इसी तरह मध्यम व उदासीन, मध्यम व उत्तम प्रकृति लोगों का भी परस्पर सम्बन्ध प्रसन्नतादायक होता है। अर्थात् वर, स्वामी या बड़ा साझेदार उच्च प्रकृति व उससे एक कक्ष्या कम वाला आश्रित हो तो भी ठीक है।

अतोऽवरा वरात् कन्या सेव्यतः सेवको नरः ।

गुणैस्ततः सुखोत्पत्तिरन्यथा हानिरेव हि ।। 13 ।।

अतः वर श्रेष्ठ प्रकृति व कन्या उसके निकटस्थ प्रकृति, सेव्य (स्वामी) व सेवक में भी देखें। इस तरह सम्बन्ध रखने से सुख मिलता है। अन्यथा हानि होती है।

गुणों का कारण :–

वीर्यं क्षेत्रं प्रसूतेश्च समयः सङ्गतिस्तथा ।

उत्तमादि गुणै हेतुर्बलवानुत्तरोत्तरम् । ।14 । ।

मनुष्य में गुणों का उदय पिता (वीर्य) माता (क्षेत्र) जन्मसमय व संगति से होता है। इनमें उत्तरोत्तर बलवत्ता होती है। अतः सबसे अधिक बली संगति, उससे कम प्रसूति समय, उससे कम माता–पिता के गुण होते हैं। उत्तम बीज को भी समुचित भूमि मिलने पर भी, उत्तम जलवायु न मिले तो उत्तम उत्पत्ति नहीं होती।

अतः प्रसूतिकालस्य सदृशो जातके गुणः ।

जायते तं परीक्ष्यैव फलं वाच्यं विचक्षणैः । । 15 । ।

अतएव जन्म समय के अनुसार जातक में अपने निजी गुणों का उदय होता है। जन्मसमयानुसार गुणादि की परीक्षा करके जातक का फलादेश करना चाहिए।

कालः सृजति भूतानि पात्यथो संहरत्यपि ।

ईश्वरः सर्वलोकानामत्ययो भगवान् विभुः । । 16 । ।

काल अर्थात् अव्यक्त महाकाल (स्वयं ईश्वर) ही प्राणियों की उत्पत्ति, पालन व संहार का कारण है। समस्त जड़ जंगम संसार का स्वरूप ईश्वर से ही उद्भूत है।

तच्छक्तिः प्रकृतिः प्रोक्ता मुनिभिस्त्रिगुणात्मिका ।

तथा विभक्तोऽव्यक्तोऽपि व्यक्तो भवति देहिनाम् । । 17 । ।

उसी ईश्वर की शक्ति प्रकृति है। वह प्रकृति सत्त्वरजस्तमस् भेद से त्रिगुणात्मक है। इसी आधार पर अव्यक्त या निराकार सर्वशक्तिमान् व परमसत्त्व तत्त्व प्राणियों में व्यक्त या प्रकट होता है।

चतुर्थाऽवयवास्तस्य स्वगुणैश्च चतुर्विधः ।

जायन्ते ह्युत्तमो मध्य उदासीनोऽधमः क्रमात् । ।18 । ।

वह काल पुरुष भी अपनी प्रकृति के गुणों के अनुसार, उत्तम, मध्यम, अधम व उदासीन भेद से चार प्रकार का होता है। उसी कारण जन्तु भी चतुर्विध होते हैं।

उत्तमे तूत्तमो जन्तुर्मध्येऽङ्गे च मध्यमः ।

उदासीने ह्युदासीनो जायते चाऽधमेऽधमः ।। 19 ।।

कालपुरुष के उत्तमांग (सिर) में उत्तम जन्तु, मध्यमांग (छाती) में मध्यम, जंघादि में उदासीन व पादादि में अधम जन्तु स्थित रहते हैं ।

उत्तमाङ्गं–शिरस्तस्यमध्यमाङ्गंमुरःस्थलम् ।

जंघाद्वयमुदासीनमधमं पदमुच्यते ।। 20 ।।

उत्तमांग सिर, मध्यमांग छाती प्रदेश, दोनों जांघें उदासीन व पैर अधमांग होते हैं ।

एवं गुणवशादेव कालभेदः प्रजायते ।

जातिभेदस्तु तद्भेदाज्जायतेऽत्र चराऽचरे ।। 21 ।।

इस प्रकार गुणानुसार काल पुरुष का अंग विभाग है । तदनुसार ही गुण व प्रकृति तथा कर्मानुसार संसार में जाति विभाग कहा है ।

एवं भगवता सृष्टं विभुना स्वगुणैः समम् ।

चतुर्विधेन कालेन जगदेतच्चतुर्विधम् ।। 22 ।।

इस प्रकार स्वयंभू ईश्वर ने अपने गुणों के आधार पर ही समस्त संसार को बनाया है । इसके चार भेद होते हैं ।

इसी विषय को यजुर्वेद के पुरुष सूक्त तथा भगवद्गीता में कहा गया है । भारतीय शास्त्रचिन्तन की यह विशेषता है कि वह किसी भी अवस्था में चरम परिणति के समय दार्शनिकता की ओर अग्रसर हो जाता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां सत्त्वादिगुणाध्याय एकोनाशीतितमः ।। 79 ।।

80

।। अथ नष्टजातकाध्यायः ।।

मैत्रेय उवाच–

जन्मकालवशादेवं फलं प्रोक्तं त्वया मुने! ।

यज्जन्मसमयोऽज्ञातो ज्ञेयं तस्य फलं कथम् ।। 1 ।।

शुभं वाप्यशुभं वापि मनुजस्य पुराकृतम् ।

अस्ति कश्चिदुपायश्चेत् तं भवान् वक्तुमर्हति ।। 2 ।।

मैत्रेय ने पूछा– हे महर्षे ! अभी तक आपने जितना भी फलादेश बताया है, उसका आधार जन्म लग्न या जन्म समयादि ही है। यदि किसी व्यक्ति का जन्म काल या आधान काल अज्ञात हो तो उसका पूर्व कर्मानुसार फलाफल जानने का कोई मार्ग हो तो कृपया आप कहें।

पराशर उवाच–

साधु पृष्टं त्वया विप्र ! लोकानुग्रहमानसा ।
कथयामि तव स्नेहात् फलमज्ञातजन्मनाम् ।। 3 ।।
वर्षायनर्तुमासार्धतिथिनक्षत्रभादिषु ।
यदज्ञातं च तज्ज्ञानं ज्ञायते प्रश्नलग्नतः ।। 4 ।।

हे मैत्रेय ! आपने लोक कल्याणार्थ बहुत उपयोगी प्रश्न पूछा है। तुम पर मेरा विशेष स्नेह है, अतः मैं तुम्हें अज्ञात जन्म समय वाले लोगों का फलादेश करने की विधि कहता हूँ।

जिस व्यक्ति का जन्म वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र राशि आदि कुछ भी ज्ञात न हो तो उसका निर्णय प्रश्न लग्न से करना चाहिए।

प्रश्न लग्न से जन्म वर्ष :–

प्रश्नांग द्वादशांशर्क्षस्थिते जन्म वदेद्गुरौ ।
अयनं लग्नपूर्वार्धे सौम्यं याम्यं परार्धके ।। 5 ।।

प्रश्न लग्न में जिस द्वादशांश में बृहस्पति स्थित हो, उसी राशि में जन्म समय में बृहस्पति होना चाहिए।

गुरु बारह राशियों का भ्रमण 12 वर्षों में पूरा करता है। अतः सामने बैठे व्यक्ति की अनुमानतः उम्र पूछ कर तदनुसार गुरु की द्वादशांश राशि से जन्म संवत् का समन्वय करना चाहिए।

प्रश्न लग्न में यदि प्रथम होरा 0°–15° हो तो उत्तरायण व दूसरी होरा हो तो दक्षिणायन समझना चाहिए।

इस विषय की विस्तृत व्याख्या हम अपने बृहज्जातक अभिनव भाष्य में कर चुके हैं। यहाँ संक्षेप में ही कहेंगे।

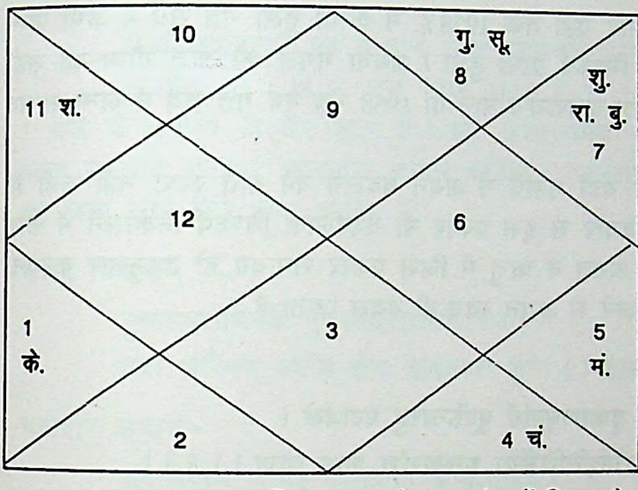
जन्म ऋतु का ज्ञान :–

ऋतुर्लग्नदृकाणर्क्षस्वामिभिःशिशिरादयः ।
शनिशुक्रकुजेन्दुज्ञजीवैर्ग्रीष्मस्तु भानुना ।।6 ।।

प्रश्न लग्न में जिस राशि का द्रेष्काण हो, उस द्रेष्काणेश से शिशिरादि ऋतु जाननी चाहिए । शनि का द्रेष्काण हो तो शिशिर, शुक्र से वसन्त, मंगल से ग्रीष्म, चन्द्र से वर्षा, बुध से शरद, गुरु से हेमन्त तथा सूर्य से ग्रीष्म ही समझनी चाहिए ।

इस विषय को एक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं । दि. 23.11.94 को प्रातः 9.30 कोई व्यक्ति प्रश्न करता है । उसे अपने जन्म समय का ज्ञान नहीं है

। । प्रश्न लग्न (उदा.) । ।



समय–9.30 A.M.
तिथि–23.11.94
लग्न–8.18°
अनुमानतः
अवस्था– 35 वर्ष
गुरु–
धनुद्वादशांश

(i) प्रश्न समय में गुरु धनु के द्वादशांश में स्थित है । अतः प्रश्नकर्ता के जन्म समय बृहस्पति धनु राशि में होना चाहिए । अभी नवम्बर 94 में गुरु वृश्चिक में आया है ।

अतः अभी तक गुरु के तीन भगण या 36 वर्ष प्रायः समाप्त हो रहे होंगे । 1 वर्ष = गुरु की 1 राशि मानकर चलने से 1994–36 = 1958 ई. में कभी जन्म प्रतीत होता है । तथापि यह अन्तिम निर्णय नहीं है ।

(ii) प्रश्न लग्न में दूसरी होरा विद्यमान है । अतः जन्म समय में दक्षिणायन होना चाहिए ।

(iii) प्रश्न समय में मेष राशि या मंगल का द्रेष्काण है । अतः गर्मी की ऋतु में जन्म होना चाहिए ।

दक्षिणायन में गर्मी नहीं होती, यह विरोध उपस्थित हुआ । इस परिस्थिति में क्या हो ? इसका उपाय अगले श्लोक में बताया जा रहा है ।

अयन व ऋतु में विरोध :–

अयनर्तुविरोधे तु परिवर्त्याः परस्परम् ।
बुधचन्द्रसुराचार्याःकुजशुक्रशनैश्चरैः ।।7।।

यदि अयन व ऋतु में विरोध आ जाए तो बुध के स्थान पर मंगल, चन्द्र के स्थान पर शुक्र, गुरु के स्थान पर शनि मानकर ऋतु जानें। अयन पहले वाला ही रखें। अथवा अयन को ही पूर्व प्राप्त ऋतु के अनुसार बदल लें। यह वैकल्पिक अर्थ है।

हमारे उदाहरण में मगंल की ऋतु के स्थान पर बुध की ऋतु शरद ले ली। तदनुसार यहाँ तक 1958 ई. में कन्या तुला गत सूर्य में कभी जन्म हुआ था, ऐसा निष्कर्ष प्राप्त हुआ। अथवा मंगल की ऋतु ग्रीष्म को सही मानकर तदनुसार उत्तरायण मानें तो 1958 मेष वृष गत सूर्य में जन्म सम्भव है।

यद्यपि यहाँ महर्षि ने अयन बदलने की बात स्पष्ट नहीं कही है, लेकिन हमारे विचार से इस प्रकार भी वैकल्पिक निष्कर्ष निकालने में कोई हानि नहीं है। अयन व ऋतु में जिस प्रकार समन्वय हो तदनुसार कल्पना करें। ऋतु बदलने से अयन स्वयं ही बदल जाता है।

मास का ज्ञान :–

मासो दृकाणपूर्वार्धे पूर्वोऽन्यस्तु परार्धके ।
अनुपातात्तिथिर्ज्ञेया भास्करांश समा द्विज ।। 8 ।।

यदि द्रेष्काण का पूर्वार्ध हो तो ऋतु का पहला मास तथा उत्तरार्ध हो तो दूसरा मास समझें। प्रश्न समय में सूर्य के गतांशों से अनुपात द्वारा द्रेष्काण के पूर्वापरार्ध से जन्मतिथि का निर्णय करें।

हमारे प्रश्न लग्न में द्रेष्काण का उत्तरार्ध उदित है। $10^\circ = 1$ द्रेष्काण तो 15 अंश तक दूसरे द्रेष्काण का पूर्वार्ध तथा आगे उत्तरार्ध ही है। अतः तुला मास 15 अक्तूबर से 15 नवम्बर के मध्य या वृष मास 14 मई से 14 जून के मध्य जन्म होना चाहिए।

प्रश्नकर्त्ता को किसी प्रकार से यह बात याद है कि उसका जन्म गर्मी में ही हुआ था। अतः यहाँ से हम गर्मी का जन्म मानकर चलेंगे, क्योंकि कोई एक निष्कर्ष तो अन्तिम माना ही जाएगा।

उदाहरण में द्रेष्काण के उत्तरार्ध 3° या $180'$ कला व्यतीत हैं। तब अनुपात करेंगे कि द्रेष्काण का अर्धभाग 5° या $300'$ कला $=$ 30 तिथि या सूर्य गतांश तो 180° कला में कितने गतांश ?

तब $30^\circ \times 18^\circ \div 10 = \frac{180}{10}$ या 18 अंश पर सूर्य रहने पर कमी हुआ। तदनुसार उसकी जन्ततिथि 3 जून 1958 प्रतीत होती है।

जन्म समय का ज्ञान :–

तद्वशादिष्टकालो यो जन्मकालसमो हि सः।
तत्र ग्रहांश्च भावांश्च ज्ञात्वा तस्य फलं वदेत्।। 9।।

पूर्व प्रकार से प्राप्त स्पष्ट सूर्य की राशि अंश कला के आधार पर जन्मसमय जानना सुगम है। अर्थात् वह सूर्य स्पष्ट जिस समय हो, वही जन्म समय होगा।

जन्मसमयानुसार ग्रह व भाव स्पष्ट जानकर फल कहना चाहिए।

उदाहरण में 1.18°.0′ सूर्य स्पष्ट 1958 ई. में 2 जून को दोपहर 1 बजे के लगभग ही आ जाता है। इसे जन्म समय मानकर तदनुसार जन्म लग्नादि बनाकर फलादेश करना चाहिए। तदनुसार इस प्रश्नकर्ता का जन्म लग्न सिंह होना चाहिए।

मैत्रेय उवाच–

गुरुर्द्वादशभिर्वर्षैः पुनस्तद्राशिगो भवेत्।
तदा कस्मिन् पर्याये ज्ञेयः संवत्सरो मुने!।। 10।।

पराशर उवाच–

संवत्सरस्य सन्देहे प्रश्नकर्तुः द्विजोत्तम!।
वयोऽनुमानतस्तत्र द्वादश द्वादश क्षिपेत्।। 11।।

मैत्रेय ने पूछा– हे महर्षे! बृहस्पति 12 राशियों का भोग करने में 12 वर्ष लगाता है, अतः प्रत्येक बारह वर्षो के भ्रमण के बाद गुरु पुनः उसी राशि में आ जाएगा। तब गुरु के कौन से भगण (परिक्रमा) में जन्म हुआ था, ऐसा निश्चय कैसे करेंगे?

पराशर बोले– यदि जन्म संवत्सर में सन्देह हो तो प्रश्न कर्ता की लगभग उम्र उसके शरीर व आकृति से या उसी से पूछकर ज्ञात कर लें। पूर्व प्राप्त गुरु की राशि से ज्ञात संवत्सर में तब तक 12-12 वर्ष जोड़ते घटाते जाएँ जब तक संवत्सर व प्रत्यक्ष दिख रही अवस्था में समन्वय न हो जाए।

तत्रापि संशये जाते गुरुर्लग्नत्रिकोणगः।
कल्प्यो वयोऽनुमानेन वत्सरः पूर्ववत् ततः।। 12।।

यदि 12 वर्षों का संस्कार करने पर भी अन्तर दिखे तो प्रश्न लग्न या पूर्व ज्ञात राशि से 1.5.9 राशियों में बृहस्पति को मानकर तदनुसार जन्मसंवत् की कल्पना करें।

इष्ट काल की अन्य विधि :-

ज्ञात्वा मासं ससूर्यांशकालज्ञानं कथं भवेत्।
भगवन्निति मे ब्रूहि लोकानुग्रहचेतसा।। 13।।

पूर्वोक्त प्रकार से सूर्य के गतांशादि जानकर विशेष प्रकार से जन्म समय या जन्मेष्ट का ज्ञान किस प्रकार से होगा ? इस विषय को लोक कल्याणार्थ कृपया कहें।

पराशर उवाच-

संक्रान्तेरिष्टसूर्यांशतुल्येऽह्निद्विजसत्तम।
रविरौदयिकः साध्यस्तस्येष्टार्कस्य चान्तरम्।। 14।।
कलीकृत्य स्वषण्निघ्नं स्फुटार्कगति भाजितम्।
लब्धं घट्यादि मानं यत् तावान् सूर्योदयात्परम्।। 15।।
पूर्वं जन्मेष्टकालो हि क्रमाज्ज्ञेयो विपश्चिता।
साधितौदयिकादर्कादिष्टेऽर्केऽधिकहीनके।। 16।।

पराशर बोले- सूर्य के पूर्व प्राप्त गतांश से पहले मासानुसार संक्रान्ति की राशि रखें। जैसे हमारे उदाहरण में वृषार्क गतांश 18 हैं।

उस दिन का सूर्योदय कालिक अर्थात् औदयिक सूर्य स्पष्ट करें। तब औदयिक सूर्य व स्पष्ट सूर्य के अन्तर को कलादि बनाएँ।

कलादि सूर्यान्तर को 60 से गुणा कर उसमें सूर्य की गति कला से भाग दें। जितनी घड़ी मिलें, उतना ही सूर्योदयादिष्ट जन्म समय होगा।

यदि इष्ट सूर्य औदयिक सूर्य से कम हो तो सूर्योदय से उतनी घड़ी पहले तथा इष्ट सूर्य अधिक हो तो उतनी घड़ी बाद में जन्म होता है।

कुल मिलाकर बात यह है कि पूर्व प्रकार से प्राप्त सूर्य स्पष्ट के गतांशादि जिस समय होते दिखें, उसी समय जन्म होता है।

इस विषय का विस्तृत विवेचन हम बृहज्जातक में कर चुके हैं। पुनश्च जब जन्म वर्ष, मास दिनादि ज्ञात न हो तब इस प्रकार से ज्ञात कुण्डली से या प्रश्न कुण्डली से जातकवत् फलादेश करें। इस प्रकार से ज्ञात कुण्डली वास्तविक जन्म कुण्डली ही हो, यह आवश्यक नहीं है। इस विषय में विभिन्न आचार्यों ने अलग-अलग विधियाँ भी कही हैं। वराह ने

अन्त में कहा कि जिस विधि से प्राप्त कुण्डली से फलादेश मिले, उसे ही सही मानना चाहिए। उक्त प्रकार से ज्ञातसूर्य निरयण होता है या सायन? इसी का पक्का निर्णय हो जाए तो भी जन्मकालीन सूर्य राशि से भी फलादेश कर सकते हैं। इसी उदाहरण में उक्त सूर्य 1.8′ को। सायन मान लें तो 1958 में निरयण 0.25° सूर्य पर जन्म आएगा। तदनुसार 9-10 मई 58 जन्मतिथि होगी। हमारे विचार से ऋतु प्रारम्भ व समाप्ति सायन सूर्य से होती है। अयनारम्भ सायन सूर्य से होता है, तब उक्त विधि से प्राप्त सूर्य भी सायन ही होना चाहिए। तब पाश्चात्य विधि से वृष राशि मानकर गोचर व प्रश्न से फलादेश किया जा सकता है। पुनश्च पूर्वप्राप्त लग्न व चन्द्रमा से जातक के स्वरूप, गुण, प्रकृति, महाभूत छाया आदि का समन्वय भी करना आवश्यक होगा।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
नष्टजातकाध्यायोऽशीतितमः ।। 80 ।।

81

।। अथ नक्षत्रजातकाध्यायः ।।

अश्विनीभरणी नक्षत्र फल :–

विज्ञानवानरोगो भिषक्प्रदातार्थभृत्यवनितेशः ।
दक्षः क्षितिपतिसेवी जातः स्यादाश्विने शूरः ।। 1 ।।
धीरः क्रूरोऽनृतवाक् परवित्तहरो नरश्चपलबुद्धिः ।
बहुशत्रुपुत्रभृत्यो प्रियमांसमद्यश्च ।। 2 ।।

अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न विज्ञानी, नीरोग, वैद्य, दाता, धनी, सेवक व स्त्री से युक्त, चतुर राज सेवक, शूर होता है।

भरणी में उत्पन्न जातक धीर, क्रूर, झूठ बोलने वाला, दूसरों के धन का लोभ, चचंल बुद्धि, अनेक शत्रुओं वाला, अनेक पुत्रों व भृत्यों वाला, मांस व मदिरा का प्रेमी होता है।

कृत्तिका रोहिणी फल–

धर्ममतिर्बहुवित्तःस्वाध्यायाभिजनरूपसम्पन्नः ।
अकृपणमतिः शशियुते जातः स्यादग्निदैवत्ये ।। 3 ।।
सुतधनपशुमान् विद्वान् दाताधीरोऽल्पवाक्स्थिरमतिश्च ।
वृषभगतिस्तेजस्वी प्राजापत्ये नरो जातः ।। 4 ।।

कृत्तिका में धार्मिक बुद्धि, अधिक धनिक, स्वाध्यायशील, कुलीन रूपयुक्त, अकृपण होता है।

रोहिणी में उत्पन्न व्यक्ति, पुत्र, धन, पशु सम्पत्ति से युक्त, विद्वान्, दानी, धैर्यशाली, कम बोलने वाला, स्थिर बुद्धि, वृषभ की तरह दबंग चलने वाला, तेजस्वी होता है।

मृगशिरा–आर्द्रा जन्म फल :–

अतिशीलरूपदृष्टः सौम्यमतिः सोद्यमः श्रुतिरहस्यः।
चपलमतिः सुविनीतो जातः स्यादिन्दुदैवत्ये ।। 5 ।।
रौद्रःक्रूरःक्रोधीपरदारार्थापहारशीलश्च ।
वाग्निष्ठुरोऽतिधीरो जातः स्याद् रुद्रदैवत्ये ।। 6 ।।

मृगशिरोत्पन्न जातक शीलवान्, रूपवान्, सौम्य विचार, परिश्रमी, वेदज्ञ, चंचल बुद्धि, विनीत होता है।।

आर्द्रा में उत्पन्न व्यक्ति क्रोधी, क्रूर, दबंग, परद्रव्य व पर स्त्री की ओर आकृष्ट होने वाला, कठोर भाषी, बहुत धैर्य वाला होता है।

पुनर्वसु पुष्य श्लेषा फल :–

क्षयवृद्धिभावनायां यशांसि विदिशो भवन्ति कृच्छ्राणि ।
व्याधिबहुलोबहुसुतः पुनर्वसौ जायते मनुजः ।। 7 ।।
द्युतिकान्तिसत्त्वयुक्तो बहुश्रुतोदारदासधनचेष्टः ।
विपुलकुलवंशकर्ता वक्ता पुष्ये नरो जातः ।। 8 ।।
स्वल्पगतिजिह्माक्षःक्रूरःक्रोधीनरःसदामर्षः ।
दाता हन्ता भोक्ता सार्पे जातो बहुव्यसनः ।। 9 ।।

पुनर्वसु में जातक का यश घटता बढ़ता रहता है। वह रोगग्रस्त, कई पुत्रों वाला होता है। पुष्य में उत्पन्न जातक कान्तिमान्, सत्त्वगुण युक्त, बहुत अध्ययनशील, स्त्री, सेवक व धन से युक्त, बड़े परिवार वाला या बड़े कार्य करने वाला, वक्ता होता है।

श्लेषा में धीरे चलने वाला या क्रियाहीन, चपटी आँखों वाला, क्रूर, क्रोधी, सदाजलता-भुनता-सा, दानी, मर्दन करने वाला, भोगी व अनेक आदतों (शौक) वाला होता है।

मघा पू.फा. फल :–

पितृभक्तः क्रोधवशो मात्रा पितृयज्ञसत्रयाजी च ।
द्विचतुष्पदमित्राढ्यो बह्वरिमित्रो नरः पित्र्ये ।। 10 ।।

बहुभाग्योऽल्पापत्यः सुभगः प्रियदर्शनो नरोऽल्पधनः ।

नातिप्रबुद्धबुद्धिः परभाग्यविभुर्भवति भाग्ये ।। 11 ।।

मघा में माता–पिता का भक्त, माता से क्रोध के वशीभूत रहने वाला, पिता के साथ कार्य करने वाला या पिता के कामों को आगे बढ़ाने वाला, अनेक मनुष्य व पशुओं से मित्रता रखने वाला, अनेक मित्रों व शत्रुओं वाला होता है ।

पू. फा. में उत्पन्न जातक बहुत भाग्यशाली, कम सन्तति वाला, सौभाग्यशील, आकर्षक व्यक्तित्त्व, कम धनी, बहुत तीव्र बुद्धि से रहित, दूसरों के भाग्य से उन्नति करने वाला होता है ।

उ. फा. हस्त फल :–

हयगजरथप्रयायी दाता भोक्ता विहाररतिशीलः ।

मृदुवाग्गीतरतिः स्यादार्यम्णे मानवो विद्वान् ।। 12 ।।

उपचितकरचरणभुजो बहुविधधनधान्यताग्रणीः सेर्ष्यः ।

धर्मार्थकामभागी हस्ते सुतवान् नरो जातः ।। 13 ।।

उ. फा. में हाथी घोड़ों पर सवारी करने वाला, दानी, भोगी, घूमने का शौकीन, कोमल भाषी, गीत–संगीत व आमोद–प्रमोद से प्रेम करने वाला, विद्वान् होता है ।

हस्त में उत्पन्न व्यक्ति भारी या बड़े हाथ पैरों वाला व अनेक प्रकार के धन धान्य रखने वाला, ईर्ष्याभावयुक्त, धर्म व अर्थ व काम का भोग करने वाला, पुत्रयुक्त होता है ।

चित्रा स्वाति नक्षत्र फल :–

वेदार्थशास्त्रकुशलः पशुमानत्यन्त शिल्पकर्मा च ।

चित्राक्षश्चित्रायां सुभगश्च नरस्त्रिपुत्रश्च ।। 14 ।।

बहुजनभर्ता वक्ता त्रिवर्गभोक्ता प्रियो महोत्साहः ।

वामाचारोऽल्परिपुः स्वातौ जातः कुलाग्रयश्च ।। 15 ।।

चित्रा में वेदों के अर्थों को जानने वाला, शास्त्रों का जानकार, पशुधन से युक्त, तकनीकी कार्य करने वाला, अनोखी आँखों वाला, सौभाग्यशील, तीन पुत्रों वाला होता है ।

स्वाति नक्षत्र में अनेक लोगों का पालक, वक्ता, धर्मार्थकाम पाने वाला, प्रिय, उत्साही, लोकविरुद्ध या लीक से हटकर काम करने वाला, कम शत्रुओं वाला, कुल में अग्रगण्य होता है ।

विशाखा–अनुराधा फल :–

श्रीमान् इज्याभिरतः प्राज्ञोऽनुपसाधुकृत् कृतार्थपतिः ।
तीक्ष्णोऽभिमानयुक्तश्चन्द्राग्नौ ख्यातकीर्तिश्च ।।16।।
स्थिरमित्रस्तेजस्वी सुतवानत्यन्त सौख्यभागी च ।
ज्ञातिष्वग्रयोऽर्थपरो जातः स्यान् मित्रदैवत्ये ।।17।।

विशाखा नक्षत्र में पुरुष श्रीमान्, यज्ञादिकर्ता, विद्वान्, धनी, विरोधियों से भी मृदु व्यवहार करने वाला, तीखा, अभिमानी, प्रसिद्ध होता है।

अनुराधा में पक्की दोस्ती वाला, तेजस्वी, पुत्रयुक्त, बहुत सुखी, अपने वर्ग में अग्रगण्य, धन का लोभी होता है।

ज्येष्ठा मूल नक्षत्र फल :–

ज्ञातिषु गुणेषु राजसु पूजां प्राप्नोति नाशयति शत्रून् ।
तेजोऽधिकोऽर्थभागी जातः स्यादिन्द्रदै वत्ये ।।18।।
धनधान्याढ्यो दाता परवित्तहरो नरः कलहशीलः ।
क्रूरः परोपतापी मूले मूलोपजीवी च ।।19।।

ज्येष्ठा में अपने वर्ग में, गुणों द्वारा राजा द्वारा भी सम्मान पाता है तथा शत्रुनाशक, तेजस्वी, धनी होता है।

मूल नक्षत्र में धनधान्यपति, दानी, दूसरों का पैसा पाने वाला, कलहशील, क्रूर, शत्रुसन्तापकर्ता, मूल (वृक्ष, चर्म आदि) से जीविका चलाने वाला होता है।

पू. षा. उ. षा. नक्षत्र फल :–

सलिलपथकर्मसिद्धः क्लेशसहिष्णुः परस्य दारेच्छुः ।
नित्यमकल्यशरीरः प्रियमद्यः पूर्वाषाढासु ।।20।।
यानोद्यानवनरतिः प्रवाससुरतीर्थसाधुसेवी च ।
बहुशिल्पार्थः प्रियवाक् जातः स्याद् वैश्वदैवत्ये ।।21।।

पूर्वाषाढ नक्षत्र में जलमार्ग से जीविका करने वाला, क्लेश सहने वाला, परस्त्री का इच्छुक, नाजुक शरीर, शराब का शौकीन होता है।

उ. षा. में भ्रमणशील, उद्यान व वन आदि में भ्रमण का शौकीन, प्रवासी, देवता व तीर्थ व साधुओं का सेवक, अनेक कलाओं से युक्त, प्रियभाषी होता है।

श्रवण धनिष्ठा नक्षत्र फल :–

ज्ञातिश्रेष्ठो धनवान् दानरुचिर्भवति दक्षिणो दक्षः।
नित्यमरोगशरीरः श्रवणे हृतशत्रुपक्षश्च ।। 22 ।।
धनधान्यसंचयानामीशः स्यान्नृपतिसत्कृतो यज्वा।
अक्लेशभाक् जितरिपुः श्रविष्ठयऽभीष्टतारश्च ।। 23 ।।

श्रवण नक्षत्र में जातक अपनी जाति या वर्ग में श्रेष्ठ, धनी, दान की भावना वाला, उदार, कुशल, नीरोग, शत्रुहीन होता है।

धनिष्ठा में धनधान्य की बहुतायत वाला, राजा द्वारा सम्मानित, यज्ञकर्ता, सुखी, शत्रुहीन, संगीतादि का प्रेमी होता है।

शतभिषा पू. भा. फल :–

परदारमद्यसेवी क्लेशसहो वारुणे नरो धीरः।
स्थिरसंचयः स्थिरसुहृद्भिषक्क्रिया पंडितो रोगी ।।24 ।।
दारुणकर्माक्रोधीनिशाचरस्तीक्ष्णविक्रमश्चपलः।
विषमः प्रसह्य हन्ता प्राक्प्रोष्ठपदे भवति जातः ।। 25 ।।

शतभिषा में परस्त्री व मद्य का सेवन करने वाला, क्लेशसहिष्णु, धीर, बचत करने में कुशल, पक्के मित्रों वाला, वैद्य, लेकिन स्वयं रोगी होता है।

पू. भा. में भयंकर काम करने वाला, क्रोधी, रात में विशेष प्रभावशाली, तीखे स्वभाव वाला, पराक्रमी, चंचल, खुरदरे स्वभाव वाला, डटकर मुकाबला करने वाला होता है।

उ. भा. रेवती फल :–

नृपसत्कृतो बहुसुतः प्रदानशीलो जले सततभीरुः।
इज्याध्ययनरतिः स्यादाहिर्बुध्न्ये नरो जातः ।। 26 ।।
सर्वार्थभुक् प्रदाता प्रवासनिरतो विशुद्धकुलशीलः।
गोमाननल्पपुत्रः पौष्णे विद्वान् नरो जातः ।। 27 ।।

उ. भा. नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति राजा से सम्मानित, अनेक पुत्रों वाला, दानवृत्ति वाला, पानी से डरने वाला, यज्ञादि व अध्ययन में रुचि युक्त, होता है।

रेवती नक्षत्र में सब सम्पत्तियों का भोग करने वाला, दानशील, भ्रमणशील, प्रसिद्ध या शुद्ध वंश में उत्पन्न, पशुधन युक्त, कम पुत्रों वाला विद्वान् होता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां नक्षत्र-जातकाध्याय एकाशीतितमः ।। 81 ।।

82

।। अथ प्रव्रज्यायोगाध्यायः ।।

पराशर उवाच–

अथ विप्र प्रवक्ष्यामि योगे प्रव्रज्यकाभिधम् ।
प्रव्रजन्ति जना येन सम्प्रदायान्तरं गृहात् ।। 1 ।।

पराशर बोले– हे मैत्रेय ! अब मैं प्रव्रज्या योगों (परिव्रजन या गृहत्याग या संयास) को कहता हूँ। ऐसा योग होने पर मनुष्य घर त्याग कर किसी सम्प्रदाय में दीक्षित हो जाते हैं।

चतुरादिभिरेकस्थैः प्रव्रज्या बलिभिः समाः ।
रव्यादिभिस्तपस्वी च कपाली रक्तवस्त्रभृत् ।। 2 ।।
एकदण्डीयतिश्चक्रधरोनिर्ग्रन्थिकःक्रमात् ।
ज्ञेया वीर्याधिकस्यैव सुबलेषु बहुष्वपि ।। 3 ।।

यदि किसी एक राशि में 4.5.6 ग्रह निकटस्थ स्थित हों अर्थात् अंशों में नगण्य अन्तर हो तथा वे बलवान् हों तो प्रव्रज्या योग होता है।

यदि प्रव्रज्या योग होने पर योगकारक ग्रहों में सूर्य अधिक बली हो तो मनुष्य तपस्वी अर्थात् अनुशासित जीवन वाला, व्रत नियम वाला, कन्दमूलादि खाने वाला एकान्तवासी होता है।

चन्द्रमा बलवान् हो तो कपाली, कपाल धारण करने वाला, श्मशानादि में साधना करने वाला अघोरी होता है।

मंगल बली हो तो लाल कपड़ों वाला साधु होता है। बुध बलवान् हो तो यती अर्थात् योगी, शुक्र हो तो चक्रादि मुद्रा धारण करने वाले सम्प्रदाय में दीक्षित व शनि बली हो तो निर्ग्रन्थ (नागा साधु या जैन साधु) दिगम्बर होता है।

कई ग्रह बलवान् होने पर भी सर्वबली ग्रह से निर्णय करना चाहिए। इसकी सोदाहरण व्याख्या के लिए हमारा बृहज्जातक प्रव्रज्याध्याय का अभिनव भाष्य देखें।

निर्बल संयास योग :–

सूर्येणास्तंगतास्ते चेदपि वीर्यसमन्विताः।
अदीक्षितास्तदा ज्ञेया जनास्तद्गतभक्तयः।। 4।।

यदि योग कारकग्रह बलवान् हों, लेकिन सूर्य के साथ अस्त हो गए हों तो मनुष्य पूर्वोक्त सम्प्रदायों में रुचि व श्रद्धा रखता है, वास्तव में दीक्षितसन्यासी नहीं होता है। इस योग में प्रव्रजित (गृहत्यागी) हो सकता है।

अस्तंगता निर्बलाश्चेत् सबलश्च रविर्यदा।
तदा रविभवा ज्ञेया प्रव्रज्या द्विजसत्तम !।। 5।।

यदि योगकारक ग्रह अस्त व बलहीन हों तथा सूर्य बलवान् हो तो सूर्य के अनुसार तपस्वी होना सिद्ध होता है।

जन्मभेशोऽन्यखेटैश्चेददृष्टः शनिमीक्षते।
तयोर्बलवशात्तत्र प्रव्रज्यामाप्नुयान्नरः।।6।।
निर्बलो जन्मभेशश्चेत् केवलेनार्किणेक्षितः।
तदा शनिभवामेव प्रव्रज्यामाप्नुयान्नरः।। 7।।

यदि जन्म राशीश अन्य ग्रहों से दृष्ट न हो तथा वह शनि को देखे तो जन्म राशीश व शनि में से जो बलवान् हो, उसके अनुसार प्रव्रज्या होती है।

जन्मराशीश निर्बल हो तथा केवल शनि उसे देखे तो शनि के अनुसार निर्ग्रन्थ संयासादि होता है।

शनिदृक्काणसंस्थे च शनिभौमनवांशके।
शनि दृष्टे विधौ ज्ञेया प्रव्रज्या शनिसम्भवा।। 8।।
कुजादिषु जयी शुक्रः सौम्यगो याम्यगोऽपि वा।
जयी सौम्यगतश्चान्यः परस्परयुतो भवेत्।। 9।।
प्रव्रज्याकारकः खेटो यद्यन्येन पराजितः।
तदा लब्ध्वा परिव्रज्यां परित्यजति तां पुनः।। 10।।

(i) यदि चन्द्रमा शनि के द्रेष्काण में या शनि मंगल के नवांश में हो तथा चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो तो शनि के अनुसार दिगम्बरादि संयासी होता है।

(ii) मंगलादि पाँच ताराग्रहों में जब समान राशि अंश हो तो युद्ध समझा जाता है।

शुक्र उत्तर या दक्षिण में कहीं भी स्थित हो वह विजयी ही माना जाता है। शेष मंगल, बुध, गुरु, शनि उत्तरस्थ रहने पर विजयी होते हैं।

(iii) प्रव्रज्याकारक ग्रह यदि युद्ध में पराजित हो तो मनुष्य परिव्रज्या ग्रहण करके उसे बाद में छोड़ देता है।

मैत्रेय उवाच :–

बहवो जन्मकाले चेत् प्रव्रज्याकारकाः ग्रहाः ।
बलतुल्यास्तदा तत्र प्रवज्या कतमा भवेत् ? ।। 11 ।।

पराशर उवाच :–

बहवो बलिनश्चेत् स्युः प्रव्रज्याकार का फ्रहाः ।
तदा प्राप्नोति सर्वेषां तेषां प्रव्रज्यकां ध्रुवम् ।। 12 ।।
तत्तद्ग्रहदशाकाले प्रव्रज्यां याति तद्भवाम् ।
त्यक्त्वा गृहीतपूर्वां तामन्यां प्राप्नोति मानवः ।। 13 ।।

मैत्रेय ने पूछा– हे महर्षे ! यदि प्रव्रज्या कारक ग्रहों में सबका बल समान हो तो किस ग्रह के अनुसार प्रव्रज्या कहनी चाहिए।

पराशर बोले– यदि बहुत ग्रह बलवान् हों तो सब ग्रहों की प्रव्रज्या मनुष्य को प्राप्त होती है।

जब जिस प्रव्रज्या योग कारक ग्रह की दशा आएगी, तब उसी ग्रह से सम्बन्धित प्रव्रज्या होगी। दूसरे योग कारक की दशा आने पर पहले वाली प्रव्रज्या को छोड़कर, दूसरे ग्रह की प्रव्रज्या को मनुष्य प्राप्त करता है।

अन्य प्रव्रज्या योगः–

दृष्टेष्विन्द्विज्य लग्नेषु शनिना नवमे गुरुः ।
राजयोगेऽत्र जातोऽसौ तीर्थकृन्नात्र संशयः ।। 14 ।।
धर्मस्थानगते मन्दे ग्रहदृष्टिविवर्जिते ।
राजयोगेऽत्र यो जातः स राजा दीक्षितो भवेत् ।। 15 ।।

(i) नवम स्थान में गुरु हो तथा शनि लग्न, चन्द्रमा व गुरु तीनों पर दृष्टि रखे तब प्रव्रज्या होती है। यदि इसी योग के साथ राजयोग भी पड़ जाएँ तो मनुष्य सन्यासी होकर तीर्थकृत् अर्थात् शास्त्रकार, सम्प्रदाय प्रवर्तक, युग प्रवर्तक मुनि या संयासी होता है।

(ii) नवम स्थान में शनि हो तथा शनि को कोई भी ग्रह न देखता हो तब राजयोग भी पड़ने पर व्यक्ति राजा के पद पर प्रतिष्ठित होकर बाद में सन्यास धारण करता है। यदि राजयोग न हो तो उक्त दोनों योगों में सन्यासी मात्र होता है।

इस विषय में सोदाहरण व वास्तविक कुण्डलियों में लक्षण योगों का प्रदर्शन हम अपने बृहज्जातक अभिनव भाष्य में कर चुके हैं।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां प्रव्रज्या-योगाध्यायो द्व्यशीतितमः ।। 82 ।।

83

।। अथ स्त्रीजातकाध्यायः ।।

मैत्रेय उवाच–

बहुधा भवता प्रोक्तं तज्जातकफलं मुने !।
तन्नारीणां कथं ज्ञेयमिति मे कथयाधुना ।। 1 ।।

पराशर उवाच–

साधु पृष्टं त्वया विप्र ! तदपि प्रवदाम्यहम्।
स्त्रीणां पुंभि समं ज्ञेयं फलमुक्तं विपश्चिता ।। 2 ।।

मैत्रेय ने पूछा– हे मुने ! आपने यहाँ तक जातक फल के अनेक प्रकार, रूप, विधि व पद्धतियाँ कहीं हैं। लेकिन स्त्रियों की कुण्डली में उन सबका उपयोग कैसे होगा ?

पराशर बोले– हे मैत्रेय ! उस विषय में भी कहता हूँ। सामान्यतः पुरुष व स्त्री जातक के नियम समान ही हैं। अर्थात् जो–जो योगायोग पुरुष जातक में कहे हैं, वे ही स्त्री जातक में भी विचारणीय हैं। जो–जो बातें स्त्रियों में असम्भव हों, वे सब बातें स्त्रियों के पति को प्राप्त होती हैं।

विशेष फलादेश के नियम :–

विशेषस्तत्र यो दृष्टः संक्षेपात् कथयामि तत्।
लग्ने देहफलं तस्याः पंचमे प्रसवस्तथा ।। 3 ।।
सप्तमे पतिसौभाग्यं वैधव्यं निधने द्विज !।
स्त्रीणामसम्भवं यद्यत् तत्फलं तत्पतौ वदेत् ।। 4 ।।

विशेषतया स्त्रियों की कुण्डली में ही देखे जाने योग्य योग संक्षेप में कहता हूँ। स्त्रियों की कुण्डली में लग्न से नारी का स्वास्थ्य व सौन्दर्य, पचंम स्थान से सन्तानोत्पत्ति, सप्तम से पति का प्रेम व साथ (सुहाग) व अष्टम स्थान से पति की आयु (वैधव्य) का विचार करें।

स्त्री में असम्भव फल (प्रसंगवशात् राजयोग, तस्करपतित्व, व्यापारादि) उनके पतियों को प्राप्त होता है। यदि स्त्री स्वयं इन कार्यों में लिप्त हो तो उसी को फल मिलता है।

स्त्री का स्वरूप :–

लग्नेन्दू समभे यस्याः सा नारी प्रकृतिस्थिता।
कन्योचितगुणोपेता सुशीला शुभलक्षणा।। 5।।
शुभेक्षितौ सुरूपा सा सदादेहसुखान्विता।
विषमे पुरुषाकारा दुःशीला पापवीक्षितौ।। 6।।
पापाढ्यौ च गुणैर्हीना मिश्रे मिश्रफलं वदेत्।
लग्नेन्द्वोर्यो बली तस्य फलं तत्र विशेषतः।। 7।।

(i) लग्न व चन्द्रमा दोनों ही सम राशि (EVEN) में हों तो स्त्री लज्जा, नम्रता, विनय, स्नेह, दयादि स्त्रियोचित गुणों से युक्त तथा स्त्रियोचित आकृति वाली कोमल शरीर वाली होती है। अर्थात् ऐसी स्त्री उत्तम होती हैं।

(ii) यदि समराशिगत लग्न व चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों या योग करें तो सदैव स्वस्थ व सुन्दर बनी रहती है।

(iii) यदि लग्न व चन्द्रमा विषम राशि (ODD) गत हों तो पुरुषोचित स्वरूप वाली, ऊँचा कद, दबंग व कठोर स्वभाव वाली होती है।

(iv) यदि विषम राशिगत लग्न चन्द्र को पापग्रह देखें या योग करें तो दुःशील वाली अर्थात् अप्रिय आचरण, समन्वय भाव से रहित तथा स्वयं प्रभु होती है। पापयुक्त रहने पर प्रायः स्त्रियोचित गुणों से रहित होती है।

(v) यदि मिश्रग्रहों (शुभाशुभ) से युक्त या दृष्ट लग्न चन्द्र हों तो मिश्रित स्वभाव वाली होती है। लग्न व चन्द्रमा में से जो अधिक बलवान् हो, उसी के अनुसार विशेष फल कहना चाहिए।

त्रिंशांश से स्त्री फल :–

लग्नेन्द्वोर्यो बली विप्र ! त्रिंशांशैस्तदधिष्ठितैः।
ग्रहराशिवशाद् वाच्यं फलं स्त्रीणां विशेषतः।। 8।।

लग्न व चन्द्रमा में से जो बलवान् हो, वह जिस ग्रह की राशि व त्रिशाश में हो, उसके आधार पर स्त्रियों का विशेष फल कहना चाहिए।

यह फल बहुत सटीक बैठता है, जिज्ञासु लोग स्वयं परीक्षा करें। वराहमिहिर ने इसी के आधार पर बृहज्जातक में स्त्री जातकाध्याय लिखा है।

कन्यैवारगृहे दुष्टा भौमत्रिंशांशकं भवेत्।
कुचरित्रा तथा शौक्रे समाया बोधने स्मृता।।9।।
जैवे साध्वी शनौ दासी ज्ञर्क्षे कौजे छलान्विता।
शौक्रे प्रकीर्णकामा स्यात् बौधेऽंशे च गुणान्विता।।10।।
क्लीबष्ठ्यर्क्यंशे सती जैवे कौजे दुष्टा सितर्क्षके।
शौक्रे ख्यातगुणा बौधे कलासु निपुणा भवेत्।।11।।
जैवे गुणवती मान्दे पुनर्भूश्चन्द्रभे ततः।
स्वतन्त्रा कुजत्रिंशाशे शौक्रे च कुलपासना।।12।।

(i) लग्न या चन्द्रमा में से जो बलवान् हो वह यदि मेष वृश्चिक राशि में होकर मंगल के त्रिंशांश में हो तो कुमारी अवस्था में ही पुरुष संसर्ग करने वाली होती है। शुक्र के त्रिंशांश में हो तो विवाह के बाद चरित्र से शिथिल होती है। बुध का त्रिशांश हो तो मायाविनी, खप्पर करने वाली होती है। गुरु के त्रिशांश में हो तो सती साध्वी, शनि के त्रिशांश में हो तो दासी भाव से युक्त होती है।

(ii) बलवान् लग्न या चन्द्रमा मिथुन कन्या राशि में हो और मंगल के त्रिशांश में हो तो छल कपट से युक्त, शुक्र के त्रिंशांश में हो तो बहुत अधिक कामुक स्वभाव वाली, बुध के त्रिंशाश में हो तो अनेक गुणों से युक्त, शनि के त्रिंशांश में हो तो आकार या प्रकृति (रजोदर्शन, सन्तानोत्पत्ति) से नपुंसक, गुरु के त्रिंशांश में हो तो सती होती है।

(iii) बली लग्न या चन्द्रमा वृष तुला राशि में हो तथा मंगल के त्रिशांश में हो तो दुष्ट स्वभाव वाली, शुक्र के त्रिशांश में हो तो प्रसिद्ध गुणों वाली, बुध के त्रिंशांश में हो तो कलाओं में निपुण, गुरु के त्रिंशांश में हो तो गुणवती तथा शनि के त्रिशांश में हो तो पुनर्विवाह करने वाली होती है।

(iv) कर्कराशि गत बली लग्न या चन्द्र हो और मंगल का त्रिंशांश हो तो स्वतन्त्रता चाहने वाली, शुक्र का त्रिंशांश हो तो कुल को बदनाम करने वाली होती है।

बौधे शिल्पकलाभिज्ञा जैवे बहुगुणा शनौ ।
पतिघ्नी चार्कभे कौजे वाचाला भार्गवे सती ।। 13 ।।
बौधे पुंश्चेष्टिता जैवे दासी मान्दे कुलच्युता ।
कौजे बहुगुणाऽर्यर्क्षे शौक्रे चाप्यसती द्विज ! ।। 14 ।।
बौधे विज्ञानसंयुक्ता जैवेऽनेक गुणान्विता ।
मान्दे चाल्परतिः प्रोक्ता दासी कौजे तथाऽर्किभे ।। 15 ।।
सुप्रज्ञा च भवेच्छौक्रे बौधे दुःस्था तथा खला ।
जैवे पतिव्रता प्रोक्ता मान्दे नीचजनानुगा ।। 16 ।।

(i) कर्क राशिगत लग्न या चन्द्रमा में बुध का त्रिशांश हो तो शिल्प कलाओं को जानने वाली, गुरु के त्रिशांश में बहुत गुणों से युक्त, शनि के त्रिशांश में पतिघातिनी होती है ।

(ii) सिंह लग्न या राशि में मंगल का त्रिंशांश हो तो बहुत बोलने वाली, शुक्र के त्रिशांश में सती, बुध के त्रिशांश में पुरुषों के समान आचरण करने वाली, गुरु के त्रिंशांश में रानी, शनि के त्रिशांश में कुल में भ्रष्ट, त्यक्त यां उपेक्षित होती है ।

(iii) धनु मीन लग्न या राशि में मंगल का त्रिंशांश हो तो अनेक गुणों वाली, शुक्र के त्रिशांश में दुश्चरित्रा, बुध के त्रिंशांश में विशिष्ट ज्ञान वाली, गुरु के त्रिशांश में अनेक गुणों वाली, शनि के त्रिंशांश में सम्भोगादि में कम रुचि रखने वाली होती है ।

(iv) मकर कुम्भ लग्न या राशि में मंगल का त्रिंशांश हो तो दासी, शुक्र के त्रिंशांश में बुद्धिमान्, बुध के त्रिंशांश में दुष्टा व दुराचार करने वाली, गुरु के त्रिशांश में पतिव्रता, शनि के त्रिंशांश में नीच जनों में अनुराग रखने वाली होती है ।

पति विचार :–

मदे शून्ये शुभादृष्टे पतिः कापुरुषो भवेत् ।
चरभे च प्रवासी स्यात् क्लीबस्तत्र ज्ञमन्दयोः ।। 17 ।।
सूर्येऽस्तभे पतित्यक्ता बाल्ये च विधवा कुजे ।
शनावशुभसंदृष्टे याति कन्यैव वृद्धताम् ।। 18 ।।
विधवास्तगतैः पापैः सौम्यैस्तु सधवा सती ।
मिश्रखेटैः पुनर्भूः सा ज्ञेया मिश्रफलान्विता ।। 19 ।।

(i) स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव में कोई ग्रह न हो तथा सप्तम पर शुभ ग्रहों की दृष्टि भी न हो तो स्त्री का पति योग्य पुरुष नहीं होता अर्थात् डरपोक, आलसी, निखट्टू होता है।

(ii) सप्तम में चरराशि हो तो पति प्रवासी होता है। सप्तम में बुध शनि हों तो पति नपुंसक होता है।

(iii) सप्तम में सूर्य हो तो परित्यक्ता, तलाकशुदा होती है। सप्तमस्थ मंगल से कम अवस्था में ही विधवा, अशुभ ग्रहदृष्ट शनि हो तो विवाह के सुख से रहित, कुँवारी ही बूढ़ी हो जाती है।

(iv) सप्तम में कई पाप ग्रह हों तो विधवा तथा कई शुभ ग्रह हों तो सौभाग्यवती होती है। मिश्रित ग्रह हों तो पुनर्विवाह वाली होती है।

इन्हीं श्लोकों में प्रसिद्ध मंगलीक दोष छिपा हुआ है। स्त्री के7.8 भाव पर अधिक पाप प्रभाव बहुत हानिकर होता है।

पर पुरुषगमन योग :–

मिथोऽंशस्थौ सितारौ चेदन्यासक्ता तदांगना।

सप्तमे च स्थिते चन्द्रे तदा भर्तुरनुज्ञया।।20।।

यदि शुक्र के नवांश में मंगल व मंगल के नवांश में शुक्र हो तो स्त्री पर–पुरुष गमन करती है। यदि इस योग के साथ सप्तम भाव में चन्द्रमा भी हो तो पति की सहमति से ही पर–पुरुष गमन करती है।

शुक्रभे शनिभे वापि सेन्दुशुक्रे च लग्नगे।

मात्रा सह तदा नारी बन्धकी भवति ध्रुवम्।।21।।

मकर कुम्भ, वृष, तुला लग्न हो। (वराह ने वृष, तुला के स्थान पर मेष वृश्चिक कहा है) लग्न में शुक्र व चन्द्रमा स्थित हों तथा उन्हें पाप ग्रह देखें या अन्य दुश्चरित्रयोग बनते हों तो स्त्री व उसकी माता दोनों ही पर–पुरुष के साथ रमण करती हैं।

पति का स्वभाव :–

कुजर्क्षे वा तदंशेऽस्ते स्त्री लोलः क्रोधनः पतिः।

बौधर्क्षांशे तथा विद्वान् कलासु निपुणः सुधीः।।22।।

जैवे सर्वगुणोपेतः पतिरस्ते जितेन्द्रियः।

शौक्रे सौभाग्यसंयुक्तः कान्तः स्त्रीजनवल्लभः।।23।।

सौरर्क्षे वाथ सौरांशे वृद्धो मूर्खश्च सप्तमे।

अतीवामृदुरर्कांशे तदृक्षेवाति कर्मकृत्।।24।।

अस्ते कर्के तदंशे वा कान्तः कामी मृदुः पतिः ।

मिश्रे मिश्रफलं वाच्यं भांशयोश्च बलक्रमात् । । 25 । ।

सप्तम भाव में मंगल की राशि या नवांश हो तो स्त्री का पति क्रोधी व पर स्त्री का लोलुप होता है ।

बुध की राशि या नवांश हो तो विद्वान्, कलाओं में निपुण, विद्वान् होता है । गुरु की राशि या नवांश हो तो सब गुणों से युक्त जितेन्द्रिय होता है । शुक्र की राशि नवांश हो तो सौभाग्यशाली, सुन्दर व स्त्री का प्यारा होता है । शनि की राशि या नवांश हो तो अवस्था में अधिक या प्रौढ़ दिखने वाला, मूर्ख होता है । सूर्य का नवांश हो तो बहुत कठोर, सूर्य की राशि हो तो बहुत परिश्रमी होता है । सप्तम में कर्क राशि या नवांश हो तो पति सुन्दर, प्यारा, कामी, कोमल स्वभाव वाला होता है । यदि मिश्रित राशि व नवांश हो तो मिश्रित फल कहें, तथा राशि व नवांश के बलानुसार फल की प्रधानता कहें ।

अष्टमस्थान विचार :–

सूर्येऽष्टमगते जाता दुःखदारिद्र्य संयुता ।

क्षतांगी खेदसंयुक्ता भवेद्धर्मपराङ्मुखी । । 26 । ।

चन्द्रेऽष्टमगते नारी कुभगा कुस्तनी कुदृग् ।

वस्त्राभरणहीना च रोगिणी चातिगर्हिता । । 27 । ।

कुजेऽष्टमगते बाला कृशांगी रोगसंयुता ।

विधवा कान्तिहीना च शोकसन्तापदुःखिता । । 28 । ।

बुधेऽष्टमगते जाता धर्महीना भयातुरा ।

अभिमानधनैर्हीना निर्गुणा कलहप्रिया । । 29 । ।

स्त्री की कुण्डली में अष्टम में सूर्य हो तो स्त्री दुःख व दरिद्रता से युक्त, शरीर में विकार वाली, खिन्न रहने वाली व गृहस्थ धर्म में असावधान रहती है । अष्टम में चन्द्रमा हो तो स्तन, आँखें व योनि में दोष या आकार प्रकार से हीनता वाली, पहनने–ओढ़ने के सुख में कमी वाली, रोगी व निन्दित होती है । अष्टम में मंगल हो तो कमजोर, रोगी, विधवा, कान्तिहीन व शोक प्राप्त करने वाली दुःखी होती है ।

अष्टम में बुध हो तो धर्महीन (गृहस्थ धर्म से रहित) भयमीत रहने वाली, स्वाभिमान व धन से रहित, गुणहीन व कलहप्रिय होती है ।

गुरावष्टमगे बाला विशीला स्वल्पसन्ततिः ।

पृथुपादकरा त्यक्ता पत्या बह्वशना भवेत् । । 30 । ।

शुक्रेऽष्टमगते जाता प्रमत्ता धनवर्जिता ।

निर्दया धर्महीना च मलिना कपटान्विता ।। 31 ।।

शनावष्टमगे जाता दुःस्वभावा मलिम्लुचा ।

प्रवंचनपरा नारी भवेत् पति सुखोज्झिता ।। 32 ।।

राहावष्टमभावस्थे कुरूपा पतिवर्जिता ।

कठोर ह्रदया रोगैर्युक्ता च व्यभिचारिणी ।। 33 ।।

अष्टम में बृहस्पति हो तो कम सन्तान वाली, विकृत आचरण वाली, बड़े हाथ–पैरों वाली, पति से त्यक्त व अधिक खाने वाली होती है।

अष्टम में शुक्र हो तो घमण्डी या असावधान, धन से रहित, निर्दयस्वभाव, मलिन रहने वाली, कपटी होती है।

अष्टम में शनि हो तो बुरे स्वभाव वाली, मैली–कुचैली रहने वाली, धोखेबाज, पतिसुख से रहित होती है।

अष्टम भाव में राहु हो तो कुरूप, पति का प्यार न पाने वाली, कठोर स्वभाव वाली, रोगिणी व व्यभिचारिणी होती है।

वन्ध्या योग :–

शशिशुक्रौ यदा लग्ने मन्दाराभ्यां युतौ यदा ।

वन्ध्या भवति सा नारी सुतभेपापदृग्युते ।। 34 ।।

लग्न में शुक्र चन्द्रमा हों तथा शनि मंगल से युक्त हों और पंचम भाव में पाप ग्रह की दृष्टि या योग हो तो स्त्री बाँझ होती है, अर्थात् सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ रहती है।

स्त्री रोग योग :–

कुजांशेऽस्तगते सौरिदृष्टे नारी सरुग्भगा ।

शुभांशे सप्तमे ज्ञेया सुभगा पतिवल्लभा ।। 35 ।।

सप्तम भाव में मंगल या किसी पाप ग्रह का नवांश हो तथा सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि हो तो स्त्री को योनि से सम्बन्धित रोग होता है। रजोदोष, धातुक्षय, प्रदर, सफेद पानी जाना, मासिक धर्म की अनियमितता आदि रोग होते हैं। मंगल के नवांश से अधिक व अन्य पापग्रहों के नवांश से कम मात्रा में होता है।

सप्तम भाव में शुभ ग्रह का नवांश हो तो स्त्री पति की प्यारी व रोग से रहित होती है।

पिता के घर में सुख योग :–

बुधभे लग्नगे सूतौ चन्द्र शुक्र युते द्विज ! ।

ज्ञेया पितृगृहे नारी सा सर्वसुखसंयुता ।। 36 ।।

बुध की राशि (मिथुन या कन्या) में लग्न में चन्द्रमा व शुक्र हो तो स्त्री को पिता के घर में ही सुख व आराम मिलते हैं। अर्थात् पति के घर में विशेष सुख नहीं मिलता है।

बहुसुख योग :–

लग्नेचन्द्रज्ञशुक्रेषुबहुसौख्यगुणान्विता ।

जीवे तत्रातिसम्पन्ना पुत्रवित्तसुखान्विता ।। 37 ।।

लग्न में चन्द्र, बुध व शुक्र हों तो स्त्री को बहुत सुख (पति सुख, पुत्र सुख, धन व ऐश्वर्य का सुख) मिलता है।

लग्न में यदि बृहस्पति अकेला या शुभ ग्रह से युक्त हो तो बहुत ऐश्वर्यवाली, धन व पुत्रों का सुख पाने वाली होती है।

सन्तान बाधा योग :–

लग्नादष्टमगौ स्यातां चन्द्रार्कौ स्वर्क्षगौ यदि ।

वन्ध्याऽथ काकवन्ध्या चेदेवं चन्द्रबुधौ यदा ।। 38 ।।

शनिमंगलभे लग्ने चन्द्रभार्गवसंयुते ।

पापदृष्टे च सा नारी वन्ध्या भवति निश्चयात् ।। 39 ।।

सराहौ सप्तमे सूर्ये पंचमे पापसंयुते ।

शुक्रेज्यराहवो मृत्यौ मृतापत्या च सा भवेत् ।। 40 ।।

शुक्रेज्यावष्टमे सारौ सप्तमे वा कुजो भवेत् ।

शनिना दृग्युतो नारी गलद्गर्भा प्रकीर्तिता ।। 41 ।।

(i) लग्न से अष्टम भाव में कर्क या सिंह राशि में सूर्य चन्द्रमा इकठ्ठे हों तो स्त्री बाँझ होती है। इसी तरह अष्टम में मिथुन, कन्या या कर्क में चन्द्र बुध हों तो स्त्री को केवल एक बार ही गर्भ धारण होता है।

(ii) 1.8.10.11 लग्न में चन्द्र व शुक्र हों तथा उन्हें पाप ग्रह देखें तो स्त्री निश्चय से बाँझ होती है।

(iii) सप्तम में राहु व सूर्य तथा पंचम में पाप ग्रह हो अथवा अष्टम में शुक्र, गुरु, राहु हो तो स्त्री की सनतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है।

(iv) अष्टम स्थान में शुक्र, गुरु, मंगल हों या मंगल सप्तम में शनि से दृष्ट हो तो स्त्री को गर्भपात होते रहते हैं।

कुलनाशक योग :–

पापकर्तरिके लग्ने चन्द्रे जाता च कन्यका ।

समस्तं पितृवंशं सा पतिवंशं निहन्ति सा ।। 42 ।।

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न या चन्द्रमा पाप ग्रहों की कर्तरी में हो अर्थात् द्वितीय में वक्री पाप व द्वादश में मार्गी पाप ग्रह हो तो ऐसी स्त्री के पितृकुल व पतिकुल दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। कदाचित् भाई व पुत्र से रहित होती है।

विषकन्या योग :–

ससर्पाग्निजलेशर्क्षे भानुमन्दारवासरे ।

भद्रातिथौ जनुर्यस्याः सा विषाख्या कुमारिका ।। 43 ।।

श्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा नक्षत्र व रविवार, मंगलवार या शनिवार को भद्रातिथि (2.7.12) हो तो इस दिन उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है।

सपापश्च शुभो लग्ने द्वौ पापौ शत्रुभस्थितौ ।

यस्या जनुषि सा कन्या विषाख्या परिकीर्तिता ।। 44 ।।

जिस स्त्री के जन्म लग्न में एक पाप व एक शुभ ग्रह हो तथा दो पाप ग्रह शत्रु क्षेत्री या षष्ठ स्थान में हों तो वह विषकन्या कहलाती है।

विषकन्या योगों का सोदाहरण विवेचन हम अपने जातकालंकार शुक सूत्र व जातकतत्त्व में कर चुके हैं।

विषकन्या योग का फल :–

विषयोगे समुत्पन्ना मृतवत्सा च दुर्भगा ।

वस्त्राभरणहीना च शोकसन्तप्तमानसा ।। 45 ।।

विषयोग में उत्पन्न कन्या, सन्तान, सौभाग्य, शरीर सुख, धन, वस्त्र, आभूषणों से रहित व सदैव शोक का अनुभव करने वाली दुर्भाग्यशीला होती है।

विषयोग भंग :–

सप्तमेशः शुभो वापि सप्तमे लग्नतोऽथवा ।

चन्द्रतो वा विषं योगं विनिहन्ति न संशयः ।। 46 ।।

लग्न या चन्द्रमा से सप्तम में सप्तमेश या कोई शुभ ग्रह हो और सप्तमेश बलवान् हो तो विषयोग का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

पति सुख हीन योग :–

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वाष्टमे कुजे ।
शुभ दृग्योगहीने च पतिं हन्ति न संशयः ।। 47 ।।

लग्न से 1.12.4.7.8 भाव में मंगल किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि या योग से रहित हो तो इस योग में उत्पन्न स्त्री को पति सुख में अन्य योगायोगों के बलाबलानुसार कमी रहती है। यही प्रसिद्ध मंगलीक योग है। प्रसिद्ध योग में केवल मंगल की भाव स्थिति का विचार करते हैं जबकि पूर्वोक्त योगों के परिप्रेक्ष्य में 1.7.8 भावों में मंगल रहने से तथा शुभ दृग्योग हीन होने पर, सप्तमेश के निर्बल होने पर ही उत्कट अशुभ वैधव्यादि फल होते हैं। मंगलीक योग, यह नामकरण महर्षि ने नहीं किया था। इसका विस्तृत विवेचन हमारी **उलझे प्रश्न : सुलझे उत्तर** नामक पुस्तक में देखें।

कुयोग होने पर विवाह निर्णय :–

यस्मिन् योगे समुत्पन्ना पतिं हन्ति कुमारिका ।
तस्मिन् योगे समुत्पन्नो पत्नीं हन्ति नरोऽपि च ।। 48 ।।
स्त्री हन्त्रा परिणीता चेत् पतिहन्त्री कुमारिका ।
तदा वैधव्ययोगस्य भंगो भवति निश्चयात् ।। 49 ।।

जिन योगों में पति सुख की कमी या हीनता कही है, उन्हीं योगों में उत्पन्न लड़के को स्त्री सुख में कमी होती है। अतः समान कुयोग वाले वर से ऐसी कन्या का विवाह करने पर अनिष्ट नहीं होता है।

यह बात विषकन्या योगों में भी लागू है। ध्यान रहे लग्नगत मंगल के दोष का निवारण लग्नगत मंगल से ही विशेष होता है। 7.8 भावगत मंगलादि पापयोग का निराकरण 7.8 गत पाप ग्रह से ही होगा।

समलैंगिक योग :–

मिथोऽशस्थौ मिथो दृष्टौ सितार्की च सितर्क्षके ।
घटांशे लग्नगे नार्याः प्रदीप्तं मदनानलम् ।। 50 ।।
सा शान्ति नयति स्त्रीभिः सखीभिर्मदनातुरा ।
पराभिः पुरुषाकारस्थिताभिर्द्विजसत्तम ! ।। 51 ।।

शुक्र व शनि नवांश कुण्डली में एक दूसरे की राशि में हों अथवा 2.7 लग्न में कुम्भ का नवांश हो तो स्त्री की कामाग्नि बहुत उत्कट होती है। उसे केवल पुरुष संयोग से ही संतुष्टि नहीं मिलती।

ऐसी स्त्री अपनी सहेलियों या रहस्य सखियों के साथ पुरुषोचित रति अर्थात् स्त्री ही स्त्री से रति क्रिया करती है। अथवा ऐसी स्त्री बनावटी पुरुषागों द्वारा अपनी कामाग्नि शान्त करती है।

विदेशों में पुरुष व स्त्री के कृत्रिम संभोगांग उपलब्ध हैं तथा सम लैंगिकता संसार में अनेक देशों में एक भीषण समस्या है।

वेदशास्त्रज्ञ स्त्री :–

कुजज्ञगुरुशुक्रैश्च बलिभिः समभे तनौ।

कुशलानेकशास्त्रेषु सा नारी ब्रह्मवादिनी।। 52।।

समराशि लग्न में जन्म हो और मंगल, बुध, गुरु, शुक्र बलवान् हों तो ऐसी स्त्री अनेक शास्त्रों में कुशल, वेदार्थ को जानने वाली विदुषी होती है।

संयास योग :–

क्रूरे सप्तमगे कश्चित् खेचरो नवमे भवेत्।

साप्रव्रज्यां तदाप्नोति पापखेचरसम्भवाम्।। 53।।

सप्तम भाव में कोई पाप ग्रह व नवम में कोई भी ग्रह हो तो स्त्री पाप ग्रह से पूर्व निर्दिष्ट (प्रव्रज्यायोगाध्याय) संयास धारण करती है।

पति से पहले मृत्यु योग :–

विलग्नादष्टमे सौम्ये पापदृग्योगवर्जिते।

मृत्युः प्रागेव विज्ञेयस्तस्या पत्युर्नसंशयः।। 54।।

अष्टमे शुभपापौ चेत् स्यातां तुल्यबलौ यदा।

सहभर्त्रा तदा मृत्युं प्राप्त्वा स्वर्याति निश्चयात्।। 55।।

अष्टम स्थान में शुभ ग्रह हो तथा उससे पाप ग्रह दृष्टि या योग न करें तो पति से पहले ही ऐसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है।

अष्टम में शुभ व पाप ग्रह हों तथा दोनों बराबर बलवान् हों तो पति पत्नी की साथ–साथ अर्थात् मामूली समय के अन्तर से मृत्यु होती है। यह दुर्घटना या अपमृत्यु का योग नहीं है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां

स्त्री–जातकाध्यायस्त्र्यशीतितमः।। 83।।

84

।। अथ स्त्रीलक्षणाध्यायः ।।

मैत्रेय उवाच–

बहुधा भवता प्रोक्तं जन्मकालात् शुभाशुभम् ।
श्रोतुमिच्छामि नारीणामंगचिह्नैः फलं मुने ! ।। 1 ।।

पराशर उवाच–

शृणु विप्र ! प्रवक्ष्यामि नारीणामंगलक्षणम् ।
फलं यदाह पार्वत्यै भगवान् शंकरस्तथा ।। 2 ।।

मैत्रेय ने पूछा– हे महर्षे ! आपने जन्मकाल पर आधारित पुरुष स्त्री जातक फल विस्तार से कहा, लेकिन मैं स्त्रियों के शरीरांगों के लक्षणों से विशेष फल जानना चाहता हूँ।

पराशर बोले– हे मैत्रेय ! जैसा शंकर जी ने कभी पूर्वकाल में पार्वती जी से कहा था, वही शरीरांग लक्षण फल मैं तुम्हें कहता हूँ।

स्त्रियों का पादतल (तलुवा) :–

स्निग्धं पादतलं स्त्रीणां मृदुलं मांसलं समम् ।
रक्तमस्वेदमुष्णं च बहुभोगप्रदायकम् ।। 3 ।।
विवर्णं परुषं रूक्षं खण्डितं विषमं तथा ।
सूर्पाकारं च सूक्ष्मं च दुःखदौर्भाग्यदायकम् ।। 4 ।।

पैर का तलुवा (SOLE) कोमल, चिकना, मांसल, न बहुत बड़ा न बहुत छोटा अर्थात् सम, लाल रंग, पसीना न आता हो और छूने पर गर्माहट अनुभव हो तो ऐसी स्त्री को (पुरुष को भी) बहुत सांसारिक सुख भोग अर्थात् धन, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, वाहन, सेवक, मान आदि प्राप्त होते हैं।

इसके विपरीत कान्तिहीन, छूने पर रूक्ष मालूम हो, कड़ा, स्वाभाविक रूप से जिसमें एड़ी आदि फटती हों, टेढ़ा अर्थात् बाहर या भीतर की ओर झुका हुआ, छाज (सूप) के आकार का अर्थात् आगे बहुत चौड़ा, बहुत पतला या छोटा तलुवा दुःख व दुर्भाग्यदाता होता है।

यद्यपि शरीर लक्षणों के विषय में अलग से कभी विस्तृत रूप में हम लिखेंगे, तथापि यहाँ ग्रन्थानुरोध से इतना अवश्य कहना चाहेंगे कि शरीर लक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों को हमने अपने अनुभव में बहुत सटीक पाया है।

शरीर लक्षणों की परीक्षा सदैव प्रातःकाल करने का प्रयत्न करें तथा वयस्क हो जाने पर, स्वस्थ रहने पर, मानसिक रूप से शान्त हों तभी करें।

तलुवे में चिन्ह :–

शंखस्वस्तिकचक्राब्जध्वजमीनऽऽतपत्रवत्।

यस्याः पादतले चिह्नं सा ज्ञेया क्षितिपांगना।।5।।

भवेत् समस्त भोगाय तथा दीर्घोर्ध्वरेखिका।

रेखाः सर्पाऽऽखुका कामा दुःखदारिद्र्यसूचकाः।।6।।

(i) पैर के तलुवे पर यदि शंख, स्वस्तिक, चक्र, कमल, ध्वज, मछली, छतरी के मसान रेखाएँ हों तो वह नारी अवश्य ही किसी राजा (धनी, प्रसिद्ध व अधिकारयुक्त, शक्तिसम्पन्न व्यक्ति) की पत्नी होती है।

(ii) पैर में यदि एड़ी से आगे से शुरू होकर अंगुलियों तक ऊर्ध्वरेखा हो तो भी स्त्री या (पुरुष को भी) जीवन में समस्त सुख मिलते हैं।

(iii) पादतल में साँप की तरह की रेखा, चूहे के समान रेखा हो तो बहुत दुःख व दरिद्रता की द्योतक है।

पैर के नाखून :–

रक्ताः समुन्नताः स्निग्धा वृत्ताः पादनखाः शुभाः।

स्फुटिताः कृष्णवर्णाश्च ज्ञेया अशुभसूचकाः।।7।।

पैर के नाखून लाल, ऊँचे अर्थात् चपटे (FLAT) नहीं हों, चिकने, चमकदार, गोलाई लिए हुए, जिनका अग्रभाग स्वाभाविक रूप से गोल हो तो शुभ होते हैं।

इसके विपरीत स्वयं बिना किसी दोष के फटने या टूटने वाले, कालिमा से युक्त हों तो अशुभ फलदायक होते हैं।

पैर का अंगूठा :–

उन्नतो मांसलोऽगुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः।

वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटो दुःखदारिद्र्यसूचकः।।8।।

पैर का अंगूठा ऊँचा, मांसल अर्थात् पुष्ट, गोलाई लिए हुए हो तो अतुल भोगदायक होता है।

टेढ़ा, चपटा, छोटा, दबा हुआ सा हो तो दुःख व दरिद्रता देता है।

पैर की अंगुलियाँ :–

मृदवोऽङ्गुलयः शस्ता घना वृत्ताश्च मांसलाः ।

दीर्घाङ्गुलीभिः कुलटा, कृशाभिर्धनवर्जिता ।।9 ।।

पैर की अंगुलियाँ कोमल, घनी अर्थात् सटी हुई सी, छिताई हुई न हों, मांसल हों तो उत्तम फल देती हैं ।

लम्बी अंगुलियों वाली कुल का नाम डुबोने वाली व पतली, दुबली सी अंगुलियों से धन की कमी रहती है ।

भवेद्ध्रस्वाभिरल्पायुर्विषमाभिश्चकुट्टनी ।

चिपिटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिश्च निर्धना ।। 10 ।।

यस्याः मिथः समारुढाः पादांगुल्यो भवन्ति हि ।

बहूनपि पतीन् हत्वा परप्रेष्या च सा भवेत् ।। 11 ।।

(i) पैर की अंगुलियाँ बहुत छोटी हों तो अल्पायु, अंगुलियाँ छोटी बड़ी हों तो स्त्री चरित्र से शिथिल होती है । छोटी–बड़ी से तात्पर्य अस्वाभाविक अन्तर होता है । चपटी होने से दासकर्म, चाकरी करने वाली व बहुत खुली रहने से धनहीन होती है ।

(ii) जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ एक के ऊपर एक चढ़ी हों तो वह अनेक पुरुषों के साथ बारी–बारी से क्रमशः विवाह या सम्बन्ध करती है । अर्थात् एक के न रहने पर दूसरे के साथ, फिर दूसरे के न रहने पर तीसरे इत्यादि के साथ, अर्थात् बार–बार विधवा विवाह करती है ।

मध्यमाऽनामिका चापि यस्या भूमिं न संस्पृशेत् ।

पतिहीना च सा नारी विज्ञेया द्विजसत्तम ! ।। 12 ।।

प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठाद् व्यतिरेकिणी ।

कन्यैव दूषिता सा स्यात् कुलटा च तदग्रतः ।। 13 ।।

जिस स्त्री की मध्यमा व अनामिका व कनिष्ठा भूमि का स्पर्श न करे तो वह पतिहीन होती है । इनमें दो अंगुलियाँ भूमि स्पर्श न करें तब भी विवाह प्रायः सपना ही रह जाता है । जिसके पैर की तर्जनी (FOREFINGER) अंगूठे से आगे निकल जाए तो वह लड़की कुँवारेपन में ही पराए पुरुष के द्वारा स्पृष्ट, छुई हुई (यथावसर कुल के वातावरण से अनुमेय) प्रेम प्रंसग, इच्छा–अनिच्छा से पुरुष द्वारा स्पृष्ट होती है ।

यस्याः पथि चलन्त्याश्च रजो भूमेः समुच्छलेत् ।

सा पांसुला भवेन्नारी कुलद्वयविघातिनी ।। 14 ।।

यस्याः कनिष्ठिका भूमिं गच्छन्त्या न परिस्पृशेत् ।

सा हि पूर्वपतिं हित्वा द्वितीयं कुरुते पतिम् ।। 15 ।।

जिस स्त्री के चलते समय पैर से मिट्टी हटती हो अर्थात् जो पैर घसीटकर चले, या सामान्यतया पैर उठते समय एडी के साथ ही मिट्टी उठे गिरे तो वह स्त्री कुल की हानि करने वाली होती है। उसका पितृकुल व पतिकुल भी पीड़ित होता है। जिसके पैर की कनिष्ठा अंगुली (सबसे छोटी) चलते समय जमीन न छुए तो वह पहले पति को त्यागकर या विधवा होकर, दूसरे पति को प्राप्त होती है।

पैर का ऊपरी भाग :–

उन्नतं पादपृष्ठं चेत् तदा राज्ञी भवेद् ध्रुवम् ।

अस्वेदमशिराढ्यं च मांसलं मसृणं मृदुम् ।। 16 ।।

अन्यथा धनहीना च शिरालं चेत्तदाध्वगा ।

रोमाढ्यं चेद् भवेद्दासी निर्मांसं यदि दुर्भगा ।। 17 ।।

जिस स्त्री के पैर का ऊपरी भाग, कुछ उठान लिए, पसीने से रहित, नसें न दिखती हों अर्थात् उभरी नसें न हों, मांसल हो, कोमल हो तो वह रानी होती है।

यदि इसके विपरीत उभरी नसों वाला, कठोर हो तो धनहीन व खूब घूमने वाली होती है। यदि पैर पर रोम (बाल) हों तो दासी, मांस रहित हो तो दुर्भाग्य का सूचक है।

पैर की एड़ी (पार्ष्णि) के लक्षण :–

सुभगा समपार्ष्णिः स्त्री पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ।

कुलटोन्नतपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिश्च दुःखिता ।। 18 ।।

पैर की एड़ी सम अर्थात् न बहुत छोटी न बहुत बड़ी व चौड़ी न हो तो स्त्री सुभगा अर्थात् सौभाग्ययुक्त होती है। चौड़ी व बड़ी एडी से दुर्भाग्ययुक्त होती है। बहुत ऊँची अर्थात् उठी हुई हो, पैर के टखने से नीचे अपनी चार अंगुल से अधिक जगह हो तो कुलटा अर्थात् पर पुरुष की अभिलाषिणी या गामिनी होती है।

बहुत बड़ी अर्थात् मोटी व चौड़ी हो तो दुःख पाने वाली होती है।

पिण्डली का लक्षण :–

अरोमे च समे स्निग्धे यस्या जङ्घेसुवर्तुले ।

विसिरे च सुरम्ये सा राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ।। 19 ।।

जिसकी पिंडली पर बाल न हों, दोनों पिण्डलियाँ समान आकार की हों, गोलाई लिए हुए, नसें न दिखती हों तथा दिखने में आकर्षक हों तो वह स्त्री अवश्य ही राजपत्नी होती है।

इसके विपरीत लक्षणों से धन व अधिकारहीन समझना चाहिए।

घुटने का लक्षण :-

वर्तुलं मांसलं स्निग्धं जानुयुग्मं शुभप्रदम्।
निर्मांसं स्वैरचारिण्या निर्धनायाश्च विश्लथम्।। 20।।

स्त्री के घुटने गोल अर्थात् लम्बोतरे न हों, चिकने, मांस से ढके हुए हों तो बहुत शुभ हैं।

उभरे हुए, मांस से रहित हों तो स्वेच्छाचारिणी व घुटने लम्बोतरे ढीलेढाले लटके हुए से हों तो निर्धन होती है।

जाँघ (उरु) का लक्षण :-

घनौ करिकराकारौ वर्तुलौ मृदुलौ शुभौ।
यस्या ऊरू शिराहीनौ सा राज्ञी भवति ध्रुवम्।। 21।।
चिपिटौ रोमशौ यस्या विधवा दुर्भगा च सा।

हाथी की सूँड के समान आनुपातिक रूप से ऊपर से अधिक गोल व नीचे आते आते कम गोलाई, लेकिन सन्तुलित हों, गोल, कोमल हों तथा नसें न दिखती हों तो वह स्त्री अवश्य ही रानी होती है। चपटी, बालों से युक्त जाँघें हों तो विधवा या दुर्भगा (पति का घर न पाने वाली) होती है।

कमर का लक्षण :-

चतुर्भि विंशतियुतैरङ्गुलैश्च समा कटिः।
समुन्नतनितम्बाढ्या प्रशस्ता स्यात् मृगीदृशाम्।। 22।।
विनता चिपिटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः।
ह्रस्वा रौमैः समायुक्ता दुःखवैधव्यसूचका।। 23।।

अपनी अंगुलियों के नाप से 24 अंगुल नाप वाली कमर हो तो वह सम कटि है अर्थात् यह औसत नाप है। इसके लगभग कमर की गोलाई हो तथा ऊँचे नितम्ब हों तो ऐसी कमर उत्तम स्त्रियों की होती है।

आगे की ओर झुकाव लिए हुए, चपटी, लम्बी, मांसहीन कमर हो तो अशुभ है। उक्त नाप से कुछ अधिक कम नापवाली (साधारण न्यूनाधिक्य नहीं) रोमों से युक्त हो तो दुःख व वैधव्य की सूचिका है।

नितम्ब (HIPS) लक्षण :–

नितम्बः शुभदः स्त्रीणामुन्नतो मांसलः पृथुः ।

सुखसौभाग्यदः प्रोक्तो ज्ञेयो दुःखप्रदोऽन्यथा ।। 24 ।।

नितम्ब भाग ऊँचा, उठा हुआ, मांसल, पुष्ट (थुलथुल नहीं हो) बड़ा हो तो सुख व सौभाग्य का सूचक होता है।

इसके विपरीत दबे हुए, मांस हीन, हिलते–डुलते से, कमर की चौड़ाई से चौड़े न हों तो दुःखदायक होते हैं।

योनि लक्षण :–

स्त्रीणां गूढमणिस्तुङ्गो रक्ताभो मृदुरोमकः ।

भगः कमठपृष्ठाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः ।। 25 ।।

स्त्री की योनि अर्थात् गुप्तांग का लक्षण कहा जा रहा है। ऊँचा भग, मणि न दिखे, मणि नोक, भगनासा को कहते हैं। लालिमा लिए हुए, कोमल बाल हों, कछुवे की पीठ के समान गोलाई में उठी हुई योनि हो तो शुभ है। योनि का आकार पीपल के पत्ते के समान हो तो भी शुभ है।

कुरंगखुररूपोयश्चुल्लिक़ोदरसन्निभः ।

रोमशो दृश्यनासश्च विवृतास्योऽशुभप्रदः ।। 26 ।।

जिस स्त्री की योनि हिरन के खुर के समान अर्थात् बड़ी दरार से युक्त, सम्मुख भाग में अधिक फैलाव युक्त, भगनासा दिखती हो तथा खूब बाल हों, खुला मुहँ हो तो अशुभ फल देने वाली होती है।

वामोन्नतस्तु कन्याजः पुत्रजो दक्षिणोन्नतः ।

शंखावर्तो भगो यस्याः सा विगर्भांगना मता ।। 27 ।।

योनि का बायाँ भाग ऊँचा हो तो कन्याओं की अधिकता होती है। दक्षिण भाग ऊँचा हो तो पुत्र होते हैं।

यदि योनि का घुमाव, आवर्त, भँवरी शंख के समान हो तो स्त्री को प्रायः गर्भ धारण नहीं होता।

शरीर लक्षणों के विभिन्न मत मतान्तरों की प्रस्तुति व निर्भ्रान्त मत की स्थापना करते हुए अन्यत्र कमी स्वतन्त्र रूप से लिखेंगे। यहाँ केवल इतना ही कहना अभीष्ट है कि शरीर लक्षणों का संसार बड़ा विचित्र व अलबेला है। लाक्षणिक होकर ज्योतिषी का ज्ञान विशेष शोभा पाता है।

बस्ति (पेडू) लक्षण :–

मृद्वी बस्तिः प्रशस्ता स्यात् विपुलाल्पसमुन्नता ।

रोमाढ्या च शिराला च रेखांका न शुभप्रदा ।। 28 ।।

बस्ति नाभि से नीचे के भाग को कहते हैं। सामान्यतः नाभि से शुरू कर नीचे चार अंगुल तक क्षेत्र बस्ति कहलाता है। स्त्री का वह भाग कोमल अर्थात् कड़ा न हो, फैला हुआ, मामूली ऊँचा हो तो उत्तम होता है।

इसके विपरीत रोमों से युक्त, नसें उभरी हुई हों तथा उस भाग पर रेखाएँ हों तो अच्छा नहीं होता है।

नाभि लक्षण :-

गम्भीरा दक्षिणावर्ता नाभिः सर्वसुखप्रदा।
व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्ता न शोभना।। 29।।

नाभि थोड़ी गहरी, घुमाव बाँयी ओर हो तो अच्छा, सब सुख देने वाला होता है। वामावर्त (बाँयीं ओर घुमाव होना) बीच की गाँठ उभरी हुई हो या बहुत उठी हुई नाभि शुभ नहीं होती है। स्त्रियों के विषय विवाह, पति, सन्तान व घरेलू प्रतिष्ठा को दृष्टि में रखकर लक्षण कहे गए हैं। अशुभ लक्षणों से सामान्यतः असफल जीवन की कल्पना ही न कर लें।

कुक्षि (कोख) लक्षण:-

पृथुकुक्षिशुभानारी सूते सा च बहून् सुतान्।
भूपतिं जनयेत् पुत्रं मण्डूकाभेन कुक्षिणा।। 30।।

कुक्षि (कोख) अर्थात् नाभि से ऊपर का भाग, पेट फैला हुआ सा हो तो वह बहुत से पुत्रों को जन्म देती है।

यदि मेंढ़क के पेट के समान पेट (कोख) हो तो स्त्री राजा को उत्पन्न करती है। अर्थात् उसका पुत्र राजा होता है।

उन्नतेन वलीभाजा सावर्तेन च कुक्षिणा।
वन्ध्या सन्यासिनी दासी जायते क्रमशोऽबला।। 31।।

ऊँची कोख से बाँझ, बल पड़ते हों तो वैराग्य युक्त, सन्यासिनी, आवर्त या भँवर पड़ती हो तो दासी होती है।

पार्श्व लक्षण:-

समे समांसे मृदुले पार्श्वे स्त्रीणां शुभप्रदे।
उन्नते रोमसंयुक्ते शिराले चाशुभप्रदे।। 32।।

पार्श्व भाग पेट का किनारा, जहाँ पसलियाँ खत्म होती हैं तथा बायाँ दायाँ बगल वाला भाग होता है।

यदि उक्त भाग समान, माँस से भरा हुआ, कोमल हो तो शुभ होता है। बहुत उठा हुआ, रोयों से युक्त, नसें उभरी हों तो अशुभ होता है।

हृदय लक्षण :–

निर्लोमं हृदयं स्त्रीणां समं सर्वसुखप्रदम् ।
विस्तीर्णं च सलोमं च विज्ञेयमशुभप्रदम् ।। 33 ।।

बाँयी ओर छाती पर, हृदय प्रदेश पर बाल अर्थात् बड़े दृश्य रोम न होना सुखप्रद है। रोमों से युक्त व बहुत फैलाव वाला हो तो अशुभ होता है।

स्तन लक्षण :–

समौ पीनौ घनौ वृतौ दृढ़ौ शस्तौ पयोधरौ ।
स्थूलाग्रौ विरलौ शुष्कौ स्त्रीणां नैव शुभप्रदौ ।। 34 ।।

दोनों स्तन लगभग समान, स्वस्थ, परस्पर अधिक सटे हुए, मजबूत हों तो बहुत उत्तम हैं। अग्रभाग मोटा हो अर्थात् जड़ से पतले व आगे मोटे हों, बीच में अधिक अन्तर हो, सूखे दिखें तो अच्छे नहीं होते हैं।

दक्षिणोन्नतवक्षोजा नारी पुत्रवती मता ।
वामोन्नतस्तनी कन्याप्रजा प्रोक्ता पुरातनैः ।। 35 ।।

जिस स्त्री का दायाँ स्तन मामूली बड़ा हो तो उसे अधिक पुत्र होते हैं। यदि बायाँ स्तन बड़ा हो तो कन्याएँ अधिक होती हैं, ऐसा पुराने महर्षियों ने कहा है।

स्तनाग्र (NIPPLE) लक्षण :–

नारीणां चूचुके शस्ते श्यामवर्णे सुवर्तुले ।
अन्तर्भग्ने च दीर्घे च कृशे चापि न शोभने ।। 36 ।।

स्तनाग्र अर्थात् चूचुक काले, गोल होना अच्छा है। भीतर को धँसे हुए, बड़े, बहुत पतले अच्छे नहीं होते हैं।

कन्धों का लक्षण :–

स्त्रीणां स्कन्धौ समौ पुष्टौ गूढसन्धी शुभप्रदौ ।
रोमाढ्यावुन्नतौ वक्रौ निर्मांसावशुभौ स्मृतौ ।। 37 ।।

स्त्रियों के कन्धे समान, मजबूत व गांढें (हँसली Collorbone के सिरे) न दिखें तो शुभ हैं। उस स्थान पर रोम (बाल) होना, उठे हुए होना, टेढ़े होना, मांसरहित होना अशुभ होता है।

बगल (काँख) लक्षण–

सुसूक्ष्मरोमनारीणां पुष्टे स्निग्धे शुभप्रदे ।
कक्षे शिरालेगम्भीरे न शुभे स्वेदभेदुरे ।। 38 ।।

स्त्रियों की बगलें सूक्ष्म अर्थात् बहुत छोटे व मुलायम बालों से युक्त, मजबूत अर्थात् हथेली से ढ़कने पर हथेली भरी भरी सी लगे तो शुभ होते हैं ।

नसें दिखती हों, खूब गहरे, गढ्ढे दार, पसीना खूब आता हो तो शुभ नहीं होते ।

भुजाओं का लक्षण :–

गूढास्थी कोमलग्रन्थी विशिरौ च विरोमकौ ।
सरलौ सुवर्तुलौ चैव भुजौ शस्तौ मृगीदृशाम् ।। 39 ।।
निर्मांसौ स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ चैव शिराततौ ।
वक्रौ भुजौ च नारीणां क्लेशाय परिकीर्तितौ ।। 40 ।।

कलाई की गाँठ व कुहनी की हड्डी मांस में छिपी हुई हो तथा उभरी हुई न हो, नसें व रोम न दिखते हों, सीधे, गोलाई लिए हुए हों तो बहुत शुभ होते हैं ।

मांसहीन, दिखने योग्य साँवले व खड़े रोमों से युक्त हों, सामान्य नाप से कुछ छोटे हों, मोटी नसें दिखाई पड़ती हों, टेढ़े हों अर्थात् बहुत बाहर या बहुत अन्दर की ओर झुके हों तो क्लेशदायक होते हैं ।

हाथ के अँगूठे का लक्षण :–

सरोजमुकुलाकारौ करांगुष्ठौ मृगीदृशाम् ।
सर्वसौख्यप्रदौ प्रोक्तौ कृशौ वक्रौ च दुःखदौ ।। 41 ।।

हाथ के अँगूठे पुष्ट, बन्द कमल की कली के समान हों तो शुभफलप्रद एवं सब सुख प्रदान करने वाले होते हैं ।

इसके विपरीत पतले, कमजोर, बीच से पतले, टेढ़े, दिखने में मध्यमा अँगुली के बराबर से ही मोटे लगें तो दुःखप्रद होते हैं ।

हथेली का लक्षण :–

स्त्रीणां करतलं रक्तं मध्योन्नतमरन्ध्रकम् ।
मृदुलं चाल्परेखाढ्यं ज्ञेयं सर्वसुखप्रदम् ।। 42 ।।
विधवा बहुरेखेण रेखाहीनेन निर्धना ।
भिक्षुका च शिराढ्येन नारी करतलेन हि ।। 43 ।।

हथेली लाल, बीच में गढ्ढा न हो, मुलायम, कम रेखाओं वाली, अंगुलियाँ मिलाकर बीच में स्थान न बचे तो सब सुख प्राप्त होते हैं।

अधिक रेखाएँ होना पति के लिए अनिष्टकारक, बिल्कुल कम रेखाएँ हों तो निर्धन, हथेली में भी नसें उभरी दिखें तो भिक्षुका होती है।

करपृष्ठ लक्षण :–

पाणिपृष्ठं शुभं स्त्रीणां पुष्टं मृदुविरोमकम्।

शिरालं रोमशं निम्नं दुःखदारिद्र्यसूचकम्।।44।।

हथेली का पिछला हिस्सा, मजबूत, उठा हुआ, समान (ऊँची–नीचा न हो) भरा–भरा सा, कोमल व रोम रहित हो तो शुभ होता है।

खूब नसें दिखें, नीचा हो, बालों से युक्त हो तो दुःख व दारिद्र्य देता है।

हथेली की रेखाओं का विचार :–

यस्याः करतले रेखा व्यक्ता रक्ता च वर्तुला।

स्निग्धा पूर्णा च गम्भीरा सा सर्वसुखभागिनी।।45।।

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन धनान्विता।

राजपत्नी सरोजेन जननी पृथिवीपतेः।।46।।

सार्वभौमप्रिया पाणौ नन्द्यावर्ते प्रदक्षिणे।

शंखातपत्रकमठैर्भूपस्य जननी भवेत्।।47।।

हथेली में गोल, स्पष्ट, चिकनी, पूरी व गहरी सी रेखा (सामान्यतः ऊर्ध्व रेखा) हो तो सब प्रकार के सुख मिलते हैं।

मछली का आकार बने तो सौभाग्यवती, स्वस्तिक चिन्ह हो तो धनी, कमलाकृति बने तो राजा की पत्नी व राजा को पैदा करने वाली होती है।

दक्षिणावर्त शंख का चिन्ह हो तो सकल भूमण्डल के सम्राट् की प्रिया अर्थात् रानी होती है। शंख, छत्र या कछुवे जैसी रेखाएँ हों तो ऐसी स्त्री के पुत्र समर्थ राजा या बहुत धनी होते हैं।

रेखा तुलाकृतिः पाणौ यस्याः सा हि वणिग्वधूः।

गजवाजिवृषाभा वा करे वामे मृगीदृशः।।48।।

हाथ में तराजू के समान रेखा हो तो व्यापारी की पत्नी होती है। अथवा हाथी, घोड़ा, बैल जैसी आकृति बने तथा हाथ में उक्त चिन्ह हों तब विशेषतया व्यापारी की पत्नी होती है।

रेखाप्रासादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम् ।
कृषीवलस्य पत्नी स्यात् शकटेन युगेन वा ।। 49 ।।
चामराङ्कुशचापैश्च राजपत्नी पतिव्रता ।
त्रिशूलासिगदाशक्तिदुन्दुभ्याकृतिरेखया ।। 50 ।।

हाथ में मकान या वज्र के समान रेखाएँ हों तो उसका पुत्र शास्त्रकार होता है । हाथ में शकट (गाड़ी) जैसा चिन्ह या जुआ का चिन्ह हो तो किसान की पत्नी होती है ।

चँवर, अंकुश या धनुष की आकृति हो तो रानी होती है ।

त्रिशूल, तलवार, गदा, भाला या दुन्दुभि के समान रेखा हो तो भी राजपत्नी होती है ।

अंगुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ।
सा नारी पतिहन्त्री स्यात् दूरतस्तां परित्यजेत् ।। 51 ।।
काकमण्डूकजाम्बूकवृकवृश्चिकभोगिनः ।
रासभोष्ट्रविडालाभा रेखादुःखप्रदाः स्त्रियः ।। 52 ।।

अँगूठे के मूल से निकलकर कनिष्ठा की जड़ तक यदि कोई रेखा जाए तो वह स्त्री पति घातिनी होती है, अतः ऐसी स्त्री को दूर से वर्जित करें ।

काक, मेंढ़क, गीदड़, भेड़िया, बिच्छू, साँप, गधा, ऊँट, बिलाव जैसी रेखाएँ दुःखप्रद होती हैं ।

अंगुलियों का लक्षण :–

मृदुलाश्च सुपर्वाणो दीर्घावृत्ताः क्रमात् कृशाः ।
अरोमकाः शुभाः स्त्रीणां अंगुल्यः परिकीर्तिताः ।। 53 ।।
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा सच्छिद्रा रोमसंयुताः ।
बहुपर्वयुता वापि पर्वहीनाश्च दुःखदाः ।। 54 ।।

अँगुलियाँ कोमल, सन्तुलित पर्व विभाजन वाली, लम्बी, गोलाई लिए हुए और क्रमशः पतली अर्थात् सुती हुई, सिरों की ओर क्रमशः पतली होती हुई, रोमों से रहित शुभ होती हैं ।

काफी छोटी, पतली अर्थात् कमजोर दिखने वाली, अंगुलियों के बीच में छेद हों, अंगुलियों के पिछले हिस्से में रोम हों या तीन से अधिक पर्वों वाली या कम पर्वों वाली होना दुःखदायी है ।

नाखून का लक्षण :–

रक्तवर्णा नखास्तुंगाः सशिखाश्च शुभप्रदाः ।
निम्ना विवर्णा पीता वा पुष्पिता दुःखदायिका ।। 55 ।।

नाखून लाल, मध्य भाग से उन्नत व किनारों की ओर ढालू, आगे की ओर क्रमशः कम चौड़े होते हुए, उत्तम होते हैं।

चपटे, गहरे, रंगहीन, पीले या सफेद धब्बों वाले नाखून दुःखदायक होते हैं।

कमर की हड्डी का लक्षण :–

अन्तर्निमग्नवंशास्थि पृष्ठं स्यान्मांसलं शुभम्।
सशिरं रोमयुक्तं वा वक्रं चाशुभदायकम्।। 56।।

कमर की हड्डी अर्थात् मेरुदण्ड, रीढ़ दिखती न हो, रीढ़ के दोनों ओर उठा हुआ मांस हो तथा रीढ़ छिपी हुई सी हो तो शुभ लक्षण है।

कमर पर नसें दिखें रोम या बाल हों, कमर की वंशास्थि झुकाव लिए हुए हो तो अशुभ फलदायक होती है।

गले का लक्षण :–

स्त्रीणां कण्ठस्त्रिरेखाङ्कव्यक्तास्थिश्च वर्तुलः।
मांसलो मृदुलश्चैव प्रशस्तफलदायकः।। 57।।

गले में साफ दिखने वाली तीन रेखाएँ हों, गले की हड्डी अर्थात् कण्ठास्थि (टेंटुआ) दिखता न हो तथा गर्दन गोलाई लिए हुए हो, मांस से भरी हुई, कोमल हो तो शुभ व प्रशंसनीय फल देती है।

स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किंकरी।
वन्ध्या च चिपिटग्रीवा लघुग्रीवा च निःसुता।। 58।।

मोटी गर्दन वाली स्त्री विधवा, टेढ़ी गर्दन वाली दासकर्म करने वाली, चपटी अर्थात् बैठी सी गर्दन वाली निःसन्तान व छोटी गर्दन वाली पुत्रहीन होती है।

गले का लक्षण :–

श्रेष्ठा कृकाटिका ऋज्वी समांसा च समुन्नता।
शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिलाऽशुभा।। 59।।

कण्ठ के बीच का उठा हिस्सा (घंटी या घेंटुवा) सीधा, मांस में दबा हुआ, मामूली उभार वाला शुभ होता है। सूखा, नसें दिखती हों, रोम प्रकट हों, आकार में बड़ा या टेढ़ा होना अशुभ है।

चिबुक (ठुड्डी) का लक्षण :–

अरुणं मृदुलं पुष्टं प्रशस्तं चिबुकं स्त्रियाः।
आयतं रोमशं स्थूले द्विधाभक्तमशोभनम्।। 60।।

रेखाप्रासादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम् ।
कृषीवलस्य पत्नी स्यात् शकटेन युगेन वा ।। 49 ।।
चामराङ्कुशचापैश्च राजपत्नी पतिव्रता ।
त्रिशूलासिगदाशक्तिदुन्दुभ्याकृतिरेखया ।। 50 ।।

हाथ में मकान या वज्र के समान रेखाएँ हों तो उसका पुत्र शास्त्रकार होता है । हाथ में शकट (गाड़ी) जैसा चिन्ह या जुआ का चिन्ह हो तो किसान की पत्नी होती है ।

चँवर, अंकुश या धनुष की आकृति हो तो रानी होती है ।

त्रिशूल, तलवार, गदा, भाला या दुन्दुभि के समान रेखा हो तो भी राजपत्नी होती है ।

अंगुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ।
सा नारी पतिहन्त्री स्यात् दूरतस्तां परित्यजेत् ।। 51 ।।
काकमण्डूकजाम्बूकवृकवृश्चिकभोगिनः ।
रासभोष्ट्रविडालाभा रेखादुःखप्रदाः स्त्रियः ।। 52 ।।

अँगूठे के मूल से निकलकर कनिष्ठा की जड़ तक यदि कोई रेखा जाए तो वह स्त्री पति घातिनी होती है, अतः ऐसी स्त्री को दूर से वर्जित करें ।

काक, मेंढक, गीदड़, भेड़िया, बिच्छू, साँप, गधा, ऊँट, बिलाव जैसी रेखाएँ दुःखप्रद होती हैं ।

अंगुलियों का लक्षण :–

मृदुलाश्च सुपर्वाणो दीर्घावृत्ताः क्रमात् कृशाः ।
अरोमकाः शुभाः स्त्रीणां अंगुल्यः परिकीर्तिताः ।। 53 ।।
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा सच्छिद्रा रोमसंयुताः ।
बहुपर्वयुता वापि पर्वहीनाश्च दुःखदाः ।। 54 ।।

अँगुलियाँ कोमल, सन्तुलित पर्व विभाजन वाली, लम्बी, गोलाई लिए हुए और क्रमशः पतली अर्थात् सुती हुई, सिरों की ओर क्रमशः पतली होती हुई, रोमों से रहित शुभ होती हैं ।

काफी छोटी, पतली अर्थात् कमजोर दिखने वाली, अंगुलियों के बीच में छेद हों, अंगुलियों के पिछले हिस्से में रोम हों या तीन से अधिक पर्वो वाली या कम पर्वो वाली होना दुःखदायी है ।

नाखून का लक्षण :–

रक्तवर्णा नखास्तुंगाः सशिखाश्च शुभप्रदाः ।
निम्ना विवर्णा पीता वा पुष्पिता दुःखदायिका ।। 55 ।।

नाखून लाल, मध्य भाग से उन्नत व किनारों की ओर ढालू, आगे की ओर क्रमशः कम चौड़े होते हुए, उत्तम होते हैं।

चपटे, गहरे, रंगहीन, पीले या सफेद धब्बों वाले नाखून दुःखदायक होते हैं।

कमर की हड्डी का लक्षण :–

अन्तर्निमग्नवंशास्थि पृष्ठं स्यान्मांसलं शुभम्।
सशिरं रोमयुक्तं वा वक्रं चाशुभदायकम्।। 56।।

कमर की हड्डी अर्थात् मेरुदण्ड, रीढ़ दिखती न हो, रीढ़ के दोनों ओर उठा हुआ मांस हो तथा रीढ़ छिपी हुई सी हो तो शुभ लक्षण है।

कमर पर नसें दिखें रोम या बाल हों, कमर की वंशास्थि झुकाव लिए हुए हो तो अशुभ फलदायक होती है।

गले का लक्षण :–

स्त्रीणां कण्ठस्त्रिरेखाङ्कव्यक्तास्थिश्च वर्तुलः।
मांसलो मृदुलश्चैव प्रशस्तफलदायकः।। 57।।

गले में साफ दिखने वाली तीन रेखाएँ हों, गले की हड्डी अर्थात् कण्ठास्थि (टेंटुआ) दिखता न हो तथा गर्दन गोलाई लिए हुए हो, मांस से भरी हुई, कोमल हो तो शुभ व प्रशंसनीय फल देती है।

स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किंकरी।
वन्ध्या च चिपिटग्रीवा लघुग्रीवा च निःसुता।। 58।।

मोटी गर्दन वाली स्त्री विधवा, टेढ़ी गर्दन वाली दासकर्म करने वाली, चपटी अर्थात् बैठी सी गर्दन वाली निःसन्तान व छोटी गर्दन वाली पुत्रहीन होती है।

गले का लक्षण :–

श्रेष्ठा कृकाटिका ऋज्वी समांसा च समुन्नता।
शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिलाऽशुभा।। 59।।

कण्ठ के बीच का उठा हिस्सा (घंटी या घेंटुवा) सीधा, मांस में दबा हुआ, मामूली उभार वाला शुभ होता है। सूखा, नसें दिखती हों, रोम प्रकट हों, आकार में बड़ा या टेढ़ा होना अशुभ है।

चिबुक (ठुड्डी) का लक्षण :–

अरुणं मृदुलं पुष्टं प्रशस्तं चिबुकं स्त्रियाः।
आयतं रोमशं स्थूले द्विधाभक्तमशोभनम्।। 60।।

लाल, कोमल, मजबूत (लटकती सी ढीली न दिखे) ठुड्डी अच्छी शुभ होती है। इसके विपरीत बड़ी, दिखते रोमों वाली, मोटी व बीच में पड़ी लकीरनुमा गड्ढे के कारण दो भाग में बँटी हो तो अशुभ होती है।

कपोल का लक्षण :–

कपोलावुन्नतौ स्त्रीणां पीनौ वृत्तौ शुभप्रदौ ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसौ चाशुभप्रदौ ।। 61 ।।

ऊँचे, गद्देदार, गोलाई लिए हुए गाल स्त्रियों के सन्दर्भ में शुभ होते हैं। इसके विपरीत खूब दिखते हों, कठोर, गड्ढेदार, मांसहीन गाल अशुभ होते हैं।

मुँह का लक्षण :–

स्त्रीणां मुखं समं पुष्टं वर्तुलं च सुगन्धितम् ।
सुस्निग्धं च मनोहारि सुखसौभाग्यसूचकम् ।। 62 ।।

मुँह (MOUTH) न बहुत बड़ा न बहुत छोटा, पुष्ट अर्थात् ढीले-ढाले लटकते से होंठ आदि न हों, कुछ गोलाई लिए हुए, लार आदि की कमी से सूखा प्रतीत न हो, दिखने में मन को अच्छा लगे तो उत्तम होता है।

निचले होंठ का लक्षण :–

वर्तुलः पाटलः स्निग्धो रेखाभूषितमध्यभूः ।
मनोहरोऽधरो यस्याः सा भवेद् राजवल्लभा ।। 63 ।।
निर्मांसः स्फुटितो लम्बो रुक्षो वा श्यामवर्णकः ।
स्थूलोऽधरश्च नारीणां वैधव्यक्लेशसूचकः ।। 64 ।।

अधर अर्थात् निचला होंठ लालिमा लिए हुए, गोलाई युक्त, चिकना, बीच में रेखा से युक्त, मनोहर हो तो स्त्री रानी होती है, अर्थात् उसे समस्त भौतिक सुख व अधिकार प्राप्त होते हैं।

मांसहीन, अकारण फटने वाला, लम्बा, रूखा, कालिमायुक्त, मोटा हो तो वैधव्य व क्लेश का सूचक है।

उत्तरोष्ठ लक्षण :–

रक्तोत्पलनिभः स्निग्ध उत्तरोष्ठो मृगीदृशाम् ।
किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमा सुखसौभाग्यदो भवेत् ।। 65 ।।

कमल की पखुंड़ी के समान लाल, चिकना, बीच में से थोड़ा उठा हुआ, रोमहीन उत्तरोष्ठ अर्थात् ऊपर वाला होंठ सुख व सौभाग्यदायक होता है।

दाँतों का लक्षण :–

स्निग्धा, दुग्धनिभाः स्त्रीणां द्वात्रिंशद्दशनाः शुभाः।
अधस्तादुपरिष्टाच्च समाः स्तोकसमुन्नताः।। 66।।
अधस्तादधिकाः पीताः श्यामा दीर्घा द्विपंक्तयः।
विकटा विरलाश्चापि दशना न शुभाः स्मृताः।। 67।।

चिकने, चमकदार, दूध के समान रंगतवाले, ऊपर–नीचे समान संख्या वाले, ऊपर के दाँत थोड़े ऊँचे, अच्छे होते हैं।

निचला जबड़ा थोड़ा आगे हो, पीली रंगत या साँवली रंगत, आकार में बड़े, दो पंक्तियों वाले, दिखने में कुरूप, खुले–खुले दाँत शुभ नहीं होते हैं।

जीभ का लक्षण :–

शोणा मृद्वी शुभा जिह्वा स्त्रीणामतुलभोगदा।
दुःखदा मध्यसंकीर्णा पुरोभागेऽतिविस्तरा।। 68।।

लाल, कोमल, पतली नोक वाली जीभ, बहुत भोग देने वाली होती है। इसके विपरीत बीच में या आगे से चौड़ी जीभ, कड़ी व लाल से अलग रंगत वाली अशुभ होती है।

जीभ की रंगत का फल :–

सितया मरणं तोये श्यामया कलहप्रिया।
मांसलया धनैर्हीना लम्बयाऽभक्ष्यभक्षिणी।। 69।।
प्रमाद सहिता नारी जिह्वया विशालया।

सफेद जीभ से जल से मृत्यु, काली जीभ से कलहप्रिया, मोटी मांसल जीभ से निर्धन व लम्बी जीभ से अभक्ष्य खाने वाली, बड़ी चौड़ी जीभ से आलसी व असावधान स्त्री होती है।

तालु का लक्षण :–

सुस्निग्धं पाटलं स्त्रीणां कोमलं तालु शोभनम्।। 70।।
श्वेते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत्।
कृष्णे सन्ततिहीना स्याद् रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी।। 71।।

जीभ को मुहँ के भीतर लम्बवत् खड़ी करने पर जिस स्थान का स्पर्श हो, वह तालु कहलाता है। स्त्रियों का तालु कोमल, लाल व चिकना शुभ होता है। सफेद तालु पति को अल्पायु, पीला तालु हो तो गृह त्यागने वाली, काला तालु हो तो सन्तानहीन व रूखा तालु हो तो बड़े परिवार वाली होती है।

हास्य का लक्षण :–

अलक्षितरदं स्त्रीणां किंचित्फुल्लकपोलकम्।
स्मितं शुभप्रदं ज्ञेयं किंचिल्लक्ष्यरदं तथा।। 72।।
सुस्थिरांशशिरस्कं च रम्यं स्त्रीणां शुभावहम्।

हँसते या मुस्कराते समय बिल्कुल दाँत न दिखें या मामूली दिखें, थोड़े से गाल फूल जाएँ, हँसते समय कन्धा व सिर न हिले, हँसी आकर्षक व मनोहर हो तो शुभ फलप्रद होती है।

नासिका का लक्षण :–

समवृत्तपुटानासा लघुच्छिद्रा शुभप्रदा।।73।।
स्थूलाग्रामध्यनिम्ना वा न प्रशस्ता मृगीदृशाम्।
रक्ताग्रा कुंचिताग्रा वा नासा वैधव्यकारिणी।। 74।।
दासी सा चिपिटा यस्या ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया।

दोनों नथुने समानाकार, गोल, छोटे छेद वाली नाक शुभ होती है। आगे से मोटी या बीच में से दबी हुई नाक शुभ नहीं होती।

अग्रभाग या नोक लाल हो या थोड़ी दबी हुई सी हो तो वैधव्य कारक, चपटी हो तो दासी व नाक बहुत छोटी या बड़ी हो तो झगड़ालू होती है।

नेत्र विचार :–

शुभे विलोचने स्त्रीणां रक्तान्ते कृष्णतारके।। 75।।
गोक्षीरवर्णे विशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी।
रमणी मधुपिंगाक्षी सुखसौभाग्यभागिनी।। 76।।
उन्नताक्षी न दीर्घायुर्वृताक्षी कुलटा भवेत्।
पुंश्चली वामकाणाक्षी वन्ध्या दक्षिणकाणिका।। 77।।

पारावताक्षी दुःशीला गजाक्षी नैव शोभना।

दिखने में आकर्षक, कोनों में लाली लिए हुए, काली पुतली वाले, गाय के दूध के समान भूरे रंग वाले, बड़े, चिकने व काले पलकों वाले नेत्र शुभ होते हैं।

शहद के समान रंगत वाली आँखों से सुख व सौभाग्य मिलता है।

बहुत उठी हुई, बाहर को निकली हुई सी आँखों से स्त्री अल्पायु, गोल आँखों से कुलटा, बायीं आँख छोटी या स्वाभाविक रूप से दबती हो तो पुंश्चली, दायीं आँख दबती हो तो बाँझ होती है।

कबूतर के समान खुले-खुले पलकों वाली व छोटी आँखें दुश्चरित्र की सूचक हैं। जबकि हाथी के समान चिपड़ी सी आँखें शुभ नहीं होती हैं।

पलक विचार :-

मृदुभिः पक्ष्मभिः कृष्णैर्घनैः सूक्ष्मैः सुभाग्ययुक्।
विरलैः कपिलैः स्थूलैर्भामिनी दुःखभागिनी।। 78।।

कोमल, काले, घने, मुलायम, पतले पलक सौभाग्यदायक तथा खुले खुले, भूरे रंग वाले, मोटे पलक दुःखदायक होते हैं।

भ्रू लक्षण :-

वर्तुलौ कार्मुकाकारौ स्निग्धे कृष्णे असंहते।
सुभ्रुवौ मृदुरोमाणौ सुभ्रुवां सुखकीर्तिदौ।। 79।।

गोल, धनुषाकार, चिकनी, काली, परस्पर न सटी हुई, कोमल रोम वाली भौंहें सुख व कीर्ति देती हैं।

कानों का विचार :-

कर्णौ दीर्घौ शुभावर्तौ सुतसौभाग्यदायकौ।
शष्कुलीरहितौ निन्द्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ।। 80।।

बड़े कान व सुन्दर घुमाव हो तो पुत्र व सौभाग्य मिलता है। कनपटी से सटे से प्रतीत हों या घुमावहीन हो, नसें दिखती हों, टेढ़े हों तथा पतले से लगें तो ऐसे कान अशुभ होते हैं।

ललाट लक्षण :-

शिराविरहितो भालः निर्लोमोऽर्धशशिप्रभः।
अनिम्नस्त्र्यङ्गुलस्त्रीणांसुत सौभाग्यसौख्यदः।।81।।

स्पष्टस्वस्तिक चिह्नश्च भालोराज्यप्रदो स्त्रियाः ।
प्रलम्बो रोमशश्चैव प्रांशुश्च दुःखदः स्मृतः ।। 82 ।।

माथे पर नसें न दिखें, रोम न हों, आधे चन्द्र के समान आकार हो, गड्ढेदार न हो, अपनी अंगुली से तीन अंगुल या उससे मामूली अधिक माथा हो तो सुत व सौभाग्यदायक होता है ।

जिस माथे पर स्पष्ट स्वस्तिक चिन्ह दिखे तो राज्य मिलता है। लम्बोतरा, रोमयुक्त, बहुत ऊँचा माथा दुःखदायक होता है ।

मूर्धा लक्षण :–

उन्नतो गजकुम्भाभो वृत्तो मूर्धा शुभः स्त्रियः ।
स्थूलो दीर्घोऽथवा वक्रो दुःखदौर्भाग्यसूचकः ।। 83 ।।

माँग भरने की जगह, बालों का प्रारम्भ स्थान, उठा हुआ, हाथी के मस्तक के समान गोलाई लिए हुए, बीच में थोड़ा बँट सा दिखे तो शुभ है ।

मोटी, बड़ी टेढ़ी मूर्धा दुःख व दरिद्रता देती है । टेढ़ी से तात्पर्य है कि बालों का आरम्भ स्थान गोल वृत्तखण्ड चाप न बनाए तो अशुभ है ।

बालों का लक्षण :–

कुन्तलाः कोमलाः कृष्णाः सूक्ष्मा दीर्घाश्च शोभनाः ।
पिंगलाः परुषा रूक्षा विरला लघवोऽशुभाः ।। 84 ।।
पिंगला गौरवर्णायाः श्यामायाः श्यामलाः शुभाः ।
नारी लक्षणतश्चैव नराणां सम्भवं वदेत् ।। 85 ।।

कोमल, काले, पतले, लम्बे वाल शुभ होते हैं । भूरे, रूखे, कठोर, खुले, छोटे बाल अशुभ होते हैं ।

अत्यन्त गोरी स्त्री के कुछ भूरे बाल तथा साँवली स्त्री के बिल्कुल काले बाल भी शुभ होते हैं ।

अर्थात् बहुत गोरी स्त्री के बहुत काले व बहुत साँवली स्त्री के भूरापन लिए बाल शुभ नहीं होते हैं ।

स्त्री लक्षणों में से जो जो पुरुषों में सम्भव हों, उन्हें पुरुषों के सन्दर्भ में भी कहें ।

छींक विचार :–

सकृत् क्षुतं भोगवतां द्विर्धनाय चिरायुषे ।
चतुः स्याद् भोगनाशाय परमं स्यान्न शोभनम् ।। 86 ।।

एक बार छींक होती हो तो सुखी, दो छींकें होती हों तो धनी व दीर्घायु, चार छींकें हों तो सुखनाशक व इससे अधिक छीकें शुभ नहीं होती हैं।

कद काठी विचार :–

उच्छ्रायः परिणाहस्तु यस्य तुल्यं शरीरिणः ।
स नरः पार्थिवो ज्ञेयो न्यग्रोधपरिमण्डलः ।। 87 ।।

दोनों हाथ फैलाकर जितनी चौड़ाई हो, उतनी ही ऊचाँई मनुष्य की हो तो वह मनुष्य राजा होता है या वटवृक्ष की तरह पूजनीय होता है।

पंचदीर्घश्चतुर्ह्रस्वः पंचसूक्ष्मः षडुन्नतः ।
पंचरक्तस्त्रिविस्तीर्णस्त्रिगभीरः प्रशस्यते ।। 88 ।।

पाँच अंग बड़े, चार छोटे, पाँच पतले, छह ऊँचे, पाँच लाल, तीन विस्तृत, तीन गहरे हों तो बहुत शुभ हैं।

(i) भुजा, दोनों आँखों का मध्य भाग, दोनों हनू (गालों का उठा प्रदेश), अण्डकोष व छाती बड़ी होनी चाहिए।

(ii) गर्दन, लिंग, नितम्ब, पिंडली ये चार छोटे हों।

(iii) अंगुलियों के पर्व पतले, दाँत, रोम, त्वचा, नाखून पतले हलके हों।

(iv) काँख (बगल) मुँह, पीठ, गले की कण्ठनासा (घेंटुँवा) छाती, नख ये छह अंग ऊँचे उठे हुए हों।

(v) हाथ व पैर, मुख, नेत्र, नाखून, स्तन ये 5 अंग लाल हों।

(vi) छाती, मुँह, ललाट फैले हुए हों।

(vi) नाभि, स्वर व सत्त्व (सुख दुःख में अविचलित रहना) गम्भीर हों। ऐसे मनुष्य महान् होते हैं। विस्तार से शरीर लक्षण सम्बन्धी ग्रन्थ में कभी लिखेंगे।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
स्त्रीलक्षणाध्यायश्चतुरशीतितमः ।। 84 ।।

। । अथ तिलादिचिह्नाध्यायः । ।

पराशर उवाच–

अथाहं देहजातानां लांछनानां फलं ब्रुवे ।
आवर्तानां तिलानां च मशकानां च विशेषतः । । 1 । ।

अब मैं नर–नारियों के शरीर पर पाए जाने तिल मस्से व आवर्त (भौंरी) का फल विशेषतया कहता हूँ।

तिल विचार :–

अंगनानां च वामांगे दक्षिणांगे शुभं नृणाम् ।
रक्ताभं तिलकाभं वा लोम्नां चक्रमथापि वा । । 2 । ।
तिलादि लांछनं स्त्रीणां हृदि सौभाग्यसूचकम् ।
यस्या दक्षिणवक्षोजे रक्ते तिलकलांछने । । 3 । ।
सा सन्ततिं सूते सुखसौभाग्यसंयुताम् ।

स्त्रियों के बायें भाग में व पुरुषों के दायें भाग में चिन्ह होना, लाल या काला तिल, निशान, बालों से बना चक्र (भवँर) उत्तम होता है।

स्त्रियों के वाम स्तन पर तिलादि चिन्ह सौभाग्य का सूचक है। जिस स्त्री के दाएँ स्तन पर लाल या काला तिल मस्सा हो तो वह अधिक भाग्यशाली सन्तानों की जननी होती है।

रक्ताभं तिलकं यस्याः स्त्रिया वामस्तने भवेत् । । 4 । ।
एक एव सुतस्तस्या भवतीति विदो विदुः ।
पुत्रीपुत्रयुता ज्ञेया तिलके दक्षिणस्तने । । 5 । ।

बायें स्तन पर लाल रंगत वाला या भूरा तिल हो तो उसे एक ही पुत्र पैदा होता है। यदि वैसा ही चिन्ह दायें स्तन पर हो तो कई पुत्र–पुत्रियाँ होती हैं।

ललाटस्थ तिल विचार :–

भ्रुवोर्मध्ये ललाटे वा लांछनं राजसूचकम् ।
कपोले मशको रक्तो नित्यं मिष्ठान्नदायकः । । 6 । ।

दोनों भौहों के बीच या ललाट पर तिलादि लक्ष्य हो तो राजयोग कारक होता है। गाल पर लाल रंग का तिल या मस्सा सदैव उत्तम भोजन

दिलाता है, अर्थात् ऐसी स्त्री के घर में खाने–पीने की कमी नहीं रहती। गाल पर काला मस्सा भोजन की कमी को द्योतित करता है, यह अन्यथा प्रतीत होता है।

गुप्तांगगत चिन्ह :–

भगस्य दक्षिणे भागे लांछनं यदि योषितः।
सा हि पृथ्वीपतेः पत्नी सूते वा भूपतिं सुतम्।। 7।।

स्त्री के गुप्त प्रदेश में दायीं ओर चिन्ह (तिलादि) होना राजा की पत्नी या राजा की माता होना सूचित करता है।

नासाग्रे लांछनं रक्तं राजपत्न्याः प्रजायते।
कृष्ण वर्णं तु यस्याः सा पुंश्चली विधवाथवा।। 8।।

नाक की नोक पर लाल तिलादि हो तो वह राजपत्नी होती है। इसके विपरीत काला चिन्ह पुंश्चली या विधवा को होता है।

नाभेरधो नृणां स्त्रीणां लांछनं च शुभप्रदम्।
कर्णे गण्डे करे वापि कण्ठे वाप्यथ लांछनम्।। 9।।
प्राग् गर्भे पुत्रदं ज्ञेयं सुखसौभाग्यदं तथा।
तिलादि लांछनं विप्र ! गुल्फदेशे तु दुःखदम्।।। 10।।

नाभि के नीचे स्त्री–पुरुषों को चिन्ह होना शुभ है। कान, गाल, हाथ, गले में तिल हो तो पहली सन्तान पुत्र होती है। साथ ही ऐसी स्त्री सुखी व सौभाग्यवती होती है।

टखने के प्रदेश में तिलादि चिन्ह किसी भी रंग का हो, वह दुःखदायी होता है।

त्रिशूलाकृति चिह्नं च ललाटे यदि जायते।
नारी राजप्रिया ज्ञेया भूपतिश्च नरो भवेत्।। 11।।

मस्तक पर त्रिशूल के समान चिन्ह हो तो स्त्री रानी व पुरुष राजा होता है।

रोमावर्त (भँवरी) फल :–

लोम्नां प्रदक्षिणावर्तो हृदि नाभौ करे श्रुतौ।
दक्षपृष्ठे शुभो बस्तौ वामावर्तोऽशुभप्रदः।। 12।।

बाएँ से दायीं ओर घूमती बालों या रोमों की भँवरी सदैव शुभ है। वामावर्त अशुभ होती है। हृदय, नाभि, हाथ, कान, कमर का दायाँ भाग, बस्ती में विशेष शुभ होता है।

कट्यां गुह्येऽथवावर्तो स्त्रीणां दौर्भाग्यसूचकः ।
उदरे हन्ति भर्तारं मध्यपृष्ठे च पुंश्चली ।। 13 ।।
कण्ठे ललाटे सीमन्ते मध्यभागे च मूर्धनि ।
आवर्तो न शुभो स्त्रीणां पुंसां वापि द्विजोत्तम ! ।। 14 ।।

कटि प्रदेश (तगड़ी का स्थान) गुप्तांग, पेट, कमर के बीच में भँवर दुर्भाग्य की सूचक होती है ।

पेट पर भँवर हो तो पति का नाश, कमर के बीच में हो तो चरित्रहीन, गले में, ललाट पर या माँग भरने के स्थान पर, माथे के बीच में आवर्त पुरुष व स्त्री, किसी को भी शुभ नहीं होता है ।

सुलक्षणाः सुचरिता अपि मन्दायुषं पतिम् ।
दीर्घायुषं प्रकुर्वन्ति प्रमदाश्च मुदास्पदम् ।। 15 ।।

शुभ लक्षण व चेष्टा वाली स्त्री, भाग्य व आयु से निर्बल पति को भी सौभाग्यशाली व दीर्घायु सुखी बना देती है ।

इस विषय में विशेष ऊहापोह के साथ भविष्य में स्वतन्त्र पुस्तक में विस्तार से लिखेंगे ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां तिलादिचिह्नाध्यायः पंचाशीतितमः ।। 85 ।।

86

।। अथ पूर्वशापफलाध्यायः ।।

मैत्रेय उवाच–

महर्षे ! भवता प्रोक्तं फलं स्त्रीणां नृणां पृथक् ।
अधुना श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो वेदविदांवर ।। 1 ।।
अपुत्रस्य गति नास्ति शास्त्रेषु श्रूयते मुने ! ।
अपुत्रः केन पापेन भवतीति वद प्रभो ! ।। 2 ।।
जन्मलग्नाच्च तज्ज्ञानं कथं दैवविदां भवेत् ।
अपुत्रस्य सुतप्राप्तेरुपायं कृपयोच्यताम् ।। 3 ।।

मैत्रेय ने पूछा– आपने पुरुषों व स्त्रियों का अलग–अलग फल कह दिया है । अब मैं आपसे पुत्रहीनता का कारण व उसकी निवृति के उपाय जानना चाहता हूँ । पुत्रहीन व्यक्ति को सद्गति नहीं मिलती, ऐसा

शास्त्रों में कहा गया है। अतः कृपया कहें कि पुत्रहीनता किस पाप के कारण होती है।

जन्म कुण्डली से उस पूर्वकृत पापादि का ज्ञान कैसे होगा ? तथा बाधा जानकर उसकी शान्ति कैसे होगी, इत्यादि आप कृपा करके मुझे कहें।

पराशर उवाच–

साधु पृष्टं त्वया विप्र ! कथ्यते हि तथा मया।
यथोमया हि पृष्टेन शिवेन कथितं पुरा।। 4।।

पराशर बोले– हे मैत्रेय ! तुमने बहुत ही उत्तम प्रश्न पूछा है। पहले पार्वती जी के पूछने पर भगवान् शंकर ने जो कहा था, वही मैं यथावत् तुम्हें कहता हूँ।

पार्वत्युवाच–

केन योगेन पापेन जायतेऽपत्यनाशनम्।
तेषां च रक्षणोपायं कृपया नाथ ! मे वद।। 5।।

शंकर उवाच–

साधु पृष्टं त्वया देवि ! कथयामि तवाधुना।
सन्तानहानियोगांश्च तद्रक्षोपाय संयुतान्।। 6।।

पार्वती जी बोलीं– प्रभो ! किस पाप या किस योग में सन्तान हानि या सन्तान नाश होता है। सन्तान रक्षा के लिए कृपया उपाय भी कहें।

शंकर जी बोले– देवि ! मैं तुम्हें सन्तान–हानि के योग व दुर्योगों के फल से बचने के उपाय कहता हूँ।

सन्तान हानि योग :–

गुरुलग्नेशदारेश पुत्रस्थानाधिपेषु च।
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता।। 7।।
रव्याररराहुशनयः सबलाः पुत्रभावगाः।
तदाऽनपत्यता ज्ञेया दुर्बलाः पुत्रकारकाः।। 8।।

(i) गुरु, लग्नेश, सप्तमेश, पंचमेश ये सारे ही बलहीन हों तो सन्तान नहीं होती है।

(ii) सूर्य, मंगल, राहु, शनि यदि बलवान् होकर पुत्रभाव अर्थात् पंचम में गए हों तो सन्तान हानि करते हैं। यदि ये ग्रह निर्बल होकर पंचमस्थ हों तो सन्तानदायक होते हैं।

शापादि का ज्ञान :–

पुत्रस्थानगते राहौ कुजेन च निरीक्षिते ।
कुजक्षेत्रगते वापि सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 9 ।।
पुत्रेशे राहुसंयुक्ते पुत्रस्थे भानुनन्दने ।
चन्द्रेण संयुते दृष्टे सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 10 ।।
कारके राहुसंयुक्ते पुत्रेशे बलवर्जिते ।
लग्नेशे कुजसंयुक्ते सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 11 ।।
कारके भौमसंयुक्ते लग्ने च राहु संयुते ।
पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 12 ।।

निम्नलिखित योगों में सर्पराज के शाप अर्थात् पूर्व जन्म या इस जन्म में जाने अनजाने ढंग से सर्पहत्या जनित दोष से सन्तान हानि होती है–

(i) पंचम में स्थित राहु को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखे। अथवा राहु मेष या वृश्चिक में हो।

(ii) पंचमेश राहु के साथ कहीं भी हो तथा पंचम में शनि हो और शनि को या मंगल को चन्द्रमा देखे या योग करे।

(iii) सन्तानकारक अर्थात् पंचम कारक गुरु राहु के साथ हो और पंचमेश निर्बल हो, लग्नेश व मंगल साथ–साथ हों।

(iv) गुरु व मंगल एक साथ हों, लग्न में राहु स्थित हो, पंचमेश 6.8.12 में हो। ये सब सर्प शाप के योग हैं।

भौमांशे भौमसंयुक्ते पुत्रेशे सोमनन्दने ।
राहुमान्दियुते लग्ने सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 13 ।।
पुत्रभावे कुजक्षेत्रे पुत्रेशे राहुसंयुते ।
सौम्यदृष्टे युते वापि सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 14 ।।
पुत्रस्था भानुमन्दाराः स्वर्भानुशशिजोऽङ्गिराः ।
निर्बलौ पुत्रलग्नेशौ सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 15 ।।
लग्नेशे राहुसंयुक्ते पुत्रेशे भौमसंयुते ।
कारके राहुयुक्ते वा सर्पशापात् सुतक्षयः ।। 16 ।।

(i) पंचम में 3.6 राशि हों, मंगल अपने ही नवांश में हो, लग्न में राहु व गुलिक हो।

(ii) पंचम में 1.8 राशि हों, पंचमेश मंगल राहु के साथ हो अथवा पंचमेश मंगल से बुध की दृष्टि या योग हो।

(iii) पंचम में सूर्य, मंगल, शनि या राहु बुध गुरु एकत्र हों और लग्नेश व पंचमेश निर्बल हों।

(iv) लग्नेश व राहु एक साथ हों, पंचमेश व मंगल भी एक साथ हों और गुरु व राहु एक साथ हों।

इन योगों में भी सर्पशाप के दोष से सन्तान नहीं होती अथवा जीवित नहीं रहती।

उक्त दोष का शान्ति विधान :–

ग्रहयोगवशेनैवं नृणां ज्ञात्वाऽनपत्यता।
तद्दोषपरिहारार्थं नागपूजां च कारयेत्।। 17।।
स्वगृह्योक्तविधानेन प्रतिष्ठां कारयेत् सुधीः।
नागमूर्ति सुवर्णेन कृत्वा पूजां समाचरेत्।। 18।।
गोभूतिलहिरण्यादि दद्याद् वित्तानुसारतः।
एवं कृते तु नागेन्द्र प्रसादाद् वर्धते कुलम्।। 19।।

सर्पशाप की निवृत्ति के लिए नागपूजा अपने अपने वेद व गृह्यसूत्र से अर्थात् कुल परम्परानुसार करें। नागराज की मूर्ति की प्रतिष्ठा करें। अथवा सोने की नागराज की मूर्ति बनवाकर प्रतिदिन पूजा करें। तत्पश्चात् गोदान, भूमिदान, तिलदान, सुवर्णदान अपनी सामर्थ्य से करें। तब नागराज की प्रसन्नता से वंश चल पड़ता है।

पूजा का मन्त्र इस प्रकार है :–

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। इसका कम से कम 10 हजार जप भी करें।

पितृशाप से सुतहानि :–

पुत्रस्थानं गते भानौ नीचे मन्दांशकस्थिते।
पार्श्वयोः क्रूरसम्बन्धे पितृशापात्सुतक्षयः।। 20।।
पुत्रस्थानाधिपे भानौ त्रिकोणे पापसंयुते।
क्रूरान्तरे पापदृष्टे पितृशापात्सुतक्षयः।। 21।।
भानुराशिस्थिते जीवे पुत्रेशे भानुसंयुते।
पुत्रे लग्ने च पापाढ्ये पितृशापात् सुतक्षयः।। 22।।

लग्नेशे दुर्बले पुत्रे पुत्रेशे भानुसंयुते ।

पुत्रे लग्ने पापयुते पितृशापात् सुतक्षयः ।। 23 ।।

(i) पंचम में सूर्य, तुला राशि में मकर कुम्भ नवांश में हो तथा पंचम भाव के दोनों ओर पाप ग्रह हों ।

(ii) पंचम में सिंह राशि हो 5 या 9 में सूर्य व पाप ग्रह हों तथा सूर्य पापदृष्ट या पाप मध्य में हो ।

(iii) सिंहगत गुरु हो तथा पंचमेश व सूर्य साथ हों । 1.5 भाव में पाप ग्रह हों ।

(iv) लग्नेश दुर्बल होकर पंचम में हो, पंचमेश सूर्ययुत हो तथा 1.5 भाव पापयुत हों ।

इन सब योगों में पितृशाप से (पितृदोष) अर्थात् कुल के किसी मृत पुरुष के दोष के कारण सन्तान हानि होती है ।

पितृस्थानाधिपो भौमः पुत्रेशेन समन्वितः ।

लग्ने पुत्रे पितृस्थाने पापे सन्ततिनाशनम् ।। 24 ।।

पितृस्थानाधिपे दुःस्थे कारके पापराशिगे ।

सपापौ पुत्रलग्नेशौ पितृशापात् सुतक्षयः ।। 25 ।।

पितृस्थानाधिपे पुत्रे पुत्रेशे वापि कर्मगे ।

पुत्रे लग्ने च पापाढ्ये पितृशापात् सुतक्षयः ।। 26 ।।

लग्नपंचमभावस्था भानुभौमशनैश्चराः ।

रन्ध्रे रिःफे राहुजीवौ पितृशापात् सुतक्षयः ।। 27 ।।

(i) दशमेश होकर मंगल, पंचमेश से युक्त हो तथा 1.5.10 में पाप ग्रह हों ।

(ii) दशमेश 6.8.12 में हो तथा सन्तानकारक गुरु पाप ग्रह की राशि में हो और 1.5 भावेश पापयुक्त हों ।

(iii) दशमेश पंचम में या पंचमेश दशम में हो तथा 1.5 भाव पापयुक्त हों ।

(iv) 1.5 भाव में किसी भी प्रकार से सूर्य, मंगल व शनि स्थित हों तथा 8.12 में राहु गुरु हों ।

इन चारों योगों में भी पितृशाप से सन्तानहीनता होती है ।

लग्नादष्टमगे भानौ पुत्रस्थे भानुनन्दने ।

पुत्रेशे राहुसंयुक्ते लग्ने पापे सुतक्षयः ।। 28 ।।

व्ययेशे लग्नभावस्थे रन्ध्रेशे पुत्रराशिगे ।
पितृस्थानाधिपे रन्ध्रे पितृशापात् सुतक्षयः ।। 29 ।।
रोगेशे पुत्रभावस्थे पितृस्थानाधिपे रिपौ ।
कारके राहुसंयुक्ते पितृशापात् सुतक्षयः ।। 30 ।।

(i) अष्टम भाव में सूर्य, पंचम में शनि व पंचमेश राहु के साथ और लग्न में पाप ग्रह हों ।

(ii) द्वादशेश लग्न में, अष्टमेश पंचम में, दशमेश अष्टम में हो ।

(iii) षष्ठेश पंचम में हो, दशमेश षष्ठ में हो तथा गुरु राहु साथ हों ।

इन तीनों योगों में भी अर्थात् कुल 11 योगों में पितृशाप से सन्तान–हानि होती है ।

पितृशापशान्ति का उपाय :–

तद्दोषपरिहारार्थं गयाश्राद्धं च कारयेत् ।
ब्राह्मणान् भोजयेदत्र सहस्रमयुतं किमु ।। 31 ।।
अथवा कन्यकादानं गोदानं च समाचरेत् ।
एवं कृते पितुः शापान्मुच्यते नात्रसंशयः ।। 32 ।।
वर्धते च कुलं तस्य पुत्रपौत्रादिभिः सदा ।
ग्रहयोगवशादेवं फलं ब्रूयाद् विचक्षणः ।। 33 ।।

(i) पितृदोष निवारण हेतु गयाश्राद्ध (बिहारस्थित तीर्थस्थल) करें तथा एक हजार या दस हजार ब्राह्मणों को वहाँ भोजन कराएँ ।

(iii) उक्त विधान में असामर्थ्य हो तो कन्यादान करें व गोदान करें ।

इस तरह विधानपूर्वक शान्ति करने से पितृशाप से मुक्ति होती है तथा पुत्र–पौत्रादि से वंश की वृद्धि होती है ।

मातृशाप से सन्तान हानि :–

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे नीचे वा पापमध्यगे ।
हिबुके पंचमे पापे मातृशापात् सुतक्षयः ।। 34 ।।
लाभे मन्दसमायुक्ते मातृस्थाने शुभेतरे ।
नीचे पंचमगे चन्द्रे मातृशापात् सुतक्षयः ।। 35 ।।
पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे लग्नेशे नीचराशिगे ।
चन्द्रे च पापसंयुक्ते मातृशापात् सुतक्षयः ।। 36 ।।

पुत्रेशेऽष्टारिरिःफस्थे चन्द्रे पापांशसंगते ।

लग्ने पुत्रे च पापाढ्ये मातृशापात् सुतक्षयः ।। 37 ।।

पुत्रस्थानाधिपेचन्द्रेमन्दराह्वारसंयुते ।

भाग्ये वा पुत्रभावे वा मातृशापात् सुतक्षयः ।। 38 ।।

इन योगों में मातृ दोष या शाप से सन्तान हानि होती है–

(i) पंचम में कर्क राशि हो और चन्द्रमा भी नीचगत या पापमध्य में हो और 4.5 भाव में पापग्रह हों ।

(ii) एकादश स्थान में शनि हो, चतुर्थ में पापग्रह हो, पंचम में नीचगत चन्द्रमा हो ।

(iii) पंचमेश 6.8.12 में हो, लग्नेश नीचगत हो, चन्द्रमा पापयुक्त हो ।

(iv) पंचमेश 6.8.12 में हो, चन्द्रमा पाप नवांश में हो, 1.5 भाव में पापग्रह हों ।

(v) पंचम में कर्क राशि हो, चन्द्रमा शनि, राहु व मंगल से युक्त हो, 5 या 9 भाव में उक्त चन्द्रमा हो ।

इन पाँचों योगों में मातृशाप से सन्ततिहीनता होती है ।

मातृस्थानाधिपे भौमे शनि राहु समन्विते ।

चन्द्रभानु युते पुत्रे लग्ने वा सन्ततिक्षयः ।। 39 ।।

लग्नात्मजेशौशत्रुस्थौ रन्ध्रेमात्रधिपः स्थितः ।

पितृनाशाधिपौ लग्ने मातृशापात् सुतक्षयः ।। 40 ।।

षष्ठाष्टमेशौ लग्नस्थौ व्यये मात्रधिपः युते ।

चन्द्रजीवौ पापयुक्तौ मातृशापात्सुतक्षयः ।। 41 ।।

पापमध्यगते लग्ने क्षीणे चन्द्रे च सप्तमे ।

मातृपुत्रे राहुमन्दौ मातृशापात् सुतक्षयः ।। 42 ।।

(i) पंचम में मंगल की राशि हो तथा मंगल शनि व राहु एक साथ हों, 1 या 5 भाव में चन्द्र व सूर्य हों तो सन्तान हानि होती है ।

(ii) 1.5 भावेश षष्ठ में हों, चतुर्थेश अष्टम में हो व 8.10 भावेश लग्न में हों ।

(iii) 6.8 भावेश लग्न में हो, चतुर्थेश 12 में हो, पंचम में चन्द्र गुरु पापयुक्त हों ।

(iv) लग्न पाप ग्रहों के मध्य में गया हो, क्षीण चन्द्रमा सप्तम में हो, राहु व शनि 4.5 भाव में एकत्र हों ।

इन योगों में भी मातृशाप से सुतक्षय होता है ।

नाशस्थानाधिपे पुत्रे पुत्रेशे नाशराशिगे ।

चन्द्रमातृपतौ दुःस्थे मातृशापात् सुतक्षयः ।। 43 ।।

चन्द्रक्षेत्रे यदा लग्ने कुजराहुसमन्विते ।

चन्द्रमन्दौ पुत्रसंस्थौ मातृशापात् सुतक्षयः ।। 44 ।।

लग्ने पुत्रे मृतौरिःफे कुजोराहू रविः शनिः ।

मातृलग्नाधिपौ दुःस्थौ मातृशापात् सुतक्षयः ।। 45 ।।

नाशस्थानं गते जीवे कुजराहुसमन्विते ।

पुत्रस्थाने मन्दचन्द्रौ मातृशापात् सुतक्षयः ।। 46 ।।

(i) अष्टमेश पंचम में हो, पंचमेश अष्टम में हो, चन्द्रमा व चतुर्थेश 6.8.12 में हों ।

(ii) कर्क लग्न में मंगल व राहु साथ हों, चन्द्रमा व शनि पंचम में हों ।

(iii) लग्न या पंचम या अष्टम या द्वादश में मंगल, राहु, सूर्य, शनि किसी भी प्रकार से हों । 1.4 भावेश 6.8.12 में हों ।

(iv) बृहस्पति अष्टम में हो तथा मंगल राहु साथ हों, पंचम में शनि व चन्द्रमा हो । इन सब योगों में भी मातृशाप से सुतक्षय होता है ।

मातृशाप का निवारण :–

एवं योगं बुधैर्दृष्ट्वा विज्ञेया त्वनपत्यता ।

ततः सन्तानरक्षार्थं कर्त्तव्या शान्तिरुत्तमा ।। 47 ।।

सेतुस्नानं प्रकर्त्तव्यं गायत्री लक्षसंख्यका ।

रौप्यपात्रे पयः पीत्वा ग्रहदानं समाचरेत् ।। 48 ।।

ब्राह्मणान् भोजयेत् तद्वदश्वत्थस्य प्रदक्षिणम् ।

कर्त्तव्यं भक्तियुक्तेन चाष्टोत्तरसहस्रकम् ।। 49 ।।

एवं कृते महादेवि ! शापान्मोक्षो भविष्यति ।

सुपुत्रं लभते पश्चात् कुलवृद्धिश्च जायते ।। 50 ।।

इन मातृशाप योगों में सन्तान की रक्षा हेतु शान्ति करनी चाहिए । रामेश्वरम् में स्नान, अथवा एक लाख गायत्री जप करके चाँदी के पात्र में प्रतिदिन दूध पिएँ । तत्पश्चात् ग्रहों का दान करें एवं ब्राह्मण भोजन कराएँ ।

अथवा 1008 बार पीपल की विष्णुरूप में पूजा करके परिक्रमा करें । इस प्रकार करने से हे पार्वति ! शापमोक्ष होकर सुपुत्र की प्राप्ति होती है तथा कुल–वृद्धि होती है ।

भ्रातृशाप का ज्ञान :–

अथो योगान् प्रवक्ष्यामि भ्रातृशापसमुद्भवान् ।
यज्ज्ञात्वापत्यरक्षार्थं यत्नं कुर्याद् विचक्षणः ।। 51 ।।
भ्रातृस्थानाधिपे पुत्रे कुजराहुसमन्विते ।
पुत्रलग्नेश्वरौ रन्ध्रे भ्रातृशापात् सुतक्षयः ।। 52 ।।
लग्ने सुते कुजे मन्दे भ्रातृपे भाग्यराशिगे ।
कारके नाशभावस्थे भ्रातृशापात् सुतक्षयः ।। 53 ।।
भ्रातृस्थाने गुरुर्नीचे मन्दः पंचमगो यदि ।
नाशस्थाने तु चन्द्रारौ भ्रातृशापात्सुतक्षयः ।। 54 ।।

अब मैं भ्रातृशाप से सन्तानहीनता कहता हूँ । इन योगों में प्रयत्न–पूर्वक शान्ति करनी चाहिए ।

(i) तृतीयेश पंचम में मंगल व राहु के साथ हो, 1.5 भावेश अष्टम में हों ।

(ii) 1.5 भाव में मंगल व शनि हों तथा नवम में तृतीयेश हो और गुरु अष्टम में हो ।

(iii) तृतीय में गुरु नीचगत हो, पंचम में शनि, अष्टम में चन्द्र मंगल हों ।

इन योगों में भ्रातृ शाप से सन्तान (पुत्रादि) नहीं होती है ।

पापमध्यगते लग्ने पापमध्येसुतेऽपि च ।
लग्नेशपुत्रपौ दुःस्थौ भ्रातृशापात् सुतक्षयः ।। 55 ।।
तनुस्थानाधिपे रिःफे भौमः पंचमगो यदि ।
रन्ध्रे सपापपुत्रेशे भ्रातृशापात् सुतक्षयः ।। 56 ।।
कर्मेशे भ्रातृभावस्थे पापयुक्ते तथा शुभे ।
पुत्रगे कुजसंयुक्ते भ्रातृशापात् सुतक्षयः ।। 57 ।।
पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे शनिराहुसमन्विते ।
रिःफे विदारौ विज्ञेयौ भ्रातृशापात् सुतक्षयः ।। 58 ।।

(i) लग्न के दोनों ओर पाप ग्रह हों, पंचम भाव भी पापमध्य में हो । 1.5 भावेश अष्टम में हों ।

(ii) लग्नेश अष्टम में हो, पंचम में मंगल व अष्टम में पापयुक्त पंचमेश हो ।

(iii) दशमेश तृतीय में हो, नवम भाव में पापग्रह हो, पंचम में मंगल हो ।

(iv) पंचम में मिथुन या कन्या राशि हो तथा पंचम में शनि राहु हों। द्वादश में बुध मंगल हों।

इन योगों में भ्रातृशाप से पुत्रहीनता होती है।

लग्नेशे भ्रातृभावस्थे भ्रातृस्थानाधिपे सुते।
लग्नभ्रातृसुते पापे भ्रातृशापात् सुतक्षयः।। 59।।
भ्रात्रीशे मृत्युभावस्थे पुत्रस्थे कारके तथा।
राहुमन्दयुते दृष्टे भ्रातृशापात् सुतक्षयः।। 60।।
नाशस्थानाधिपे पुत्रे भ्रातृनाथेन संयुते।
रन्ध्रे आरार्किसंयुक्ते भ्रातृशापात् सुतक्षयः।। 61।।

(i) लग्नेश तृतीय में, तृतीयेश पंचम में व 1.5.3 भावों में पापग्रह हों।

(ii) तृतीयेश अष्टम में, पंचम में गुरु हो तथा बृहस्पति राहु शनि से युत दृष्ट हो।

(iii) अष्टमेश पंचम में, तृतीयेश के साथ हो तथा अष्टम में शनि व मंगल हों तो भ्रातृशाप से पुत्र नहीं होता है।

शापमुक्ति का उपाय :–

भ्रातृशापविमोक्षार्थं वंशस्य श्रवणं हरेः।
चान्द्रायणं चरेत् पश्चात् कावेय्‌र्या विष्णुसन्निधौ।। 62।।
अश्वत्थस्थापनं कुर्याद् दशधेनूंश्च दापयेत्।
पत्नीहस्तेन पुत्रेच्छुर्भूमिं दद्यात् फलान्विताम्।। 63।।
एवं यः कुरुते भक्त्या धर्मपत्न्या समन्वितः।
ध्रुवं तस्य भवेत् पुत्रः कुलवृद्धिश्च जायते।। 64।।

भ्रातृशाप से मुक्त होने के लिए हरिवंश पुराण का श्रवण शालग्राम के सामने चान्द्रायण व्रत करें।

अथवा पीपल के वृक्ष की स्थापना व पूजा करें तथा दस गायों या दशमहाधेनु का दान करें। साथ ही पुत्रेच्छुक व्यक्ति पत्नी के हाथ से भूमि का दान करें।

इस प्रकार धर्मपत्नी सहित जो उक्त उपायों को करता है, उसे अवश्य ही पुत्र होता है उसकी वंशवृद्धि होती है।

चान्द्रायणव्रत– एक समय के भोजन के 16 भाग का मान जानें। कृष्ण प्रतिपदा से $\frac{1}{16}$ वाँ भाग प्रतिदिन घटाकर दोपहर में भोजन करें।

अमावस्या को केवल $\frac{1}{16}$ वाँ भाग ग्रहण करें । शुक्ल पक्ष में एक एक भाग बढाएँ । यह एक मास का पूर्णिमा तक का व्रत है । अथवा तिथि संख्यानुसार भाग की ह्रास वृद्धि करें । अथवा 8 पिण्ड (1 पिण्ड = मोर के 1 अण्डे के समान लगभग आधी रोटी या 1 मुठठी बने चावल) प्रतिदिन के हिसाब से 4 पिण्ड प्रातः व 4 पिण्ड सायं सूर्योस्त से पहले या एक ही बार 8 पिण्ड पूर्ववत् घटाते बढ़ाते चलें । कुल पिण्ड 240 होंगे । सात्विक भोजन, जितेन्द्रिय रहना मुख्य शर्त है ।

दस महाधेनु– पीछे अष्टक वर्ग अध्याय भी देखें । गुड़, घी, तिल, जल, दूध, शहद, शक्कर, दही, रस व वास्तविक गाय इन दस चीजों का पीछे निर्दिष्ट मात्रा में दान करना दस महाधेनुदान व दस गयों का दान दस धेनु कहलाता है ।

मातुलशाप योग :–

पुत्रस्थाने बुधे जीवे कुजराहुसमन्विते ।
लग्ने मन्दे सुताभावो ज्ञेयो मातुलशापतः ।। 65 ।।
लग्नपुत्रेश्वरौ पुत्रे बुधभौमार्किसंयुतौ ।
ज्ञेयं मातुलशापत्वाज्जनस्यसन्ततिक्षयः ।। 66 ।।
लुप्ते पुत्राधिपे लग्ने सप्तमे भानुनन्दने ।
लग्नेशे बुधसंयुक्ते तस्यापि सन्ततिक्षयः ।। 67 ।।
ज्ञातिस्थानाधिपे लग्ने व्ययेशेन समन्विते ।
शशिसौम्यकुजे पुत्रे विज्ञेयः सन्ततिक्षयः ।। 68 ।।

(i) पंचम में बुध, गुरु मंगल व राहु की एकत्र स्थिति, लग्न में शनि हो ।

(ii) 1.5 भावेश पंचम में, बुध, मंगल, शनि सहित हों ।

(iii) पंचमेश अस्त हो, 1.7 भाव में शनि हो, लग्नेश व बुध साथ हों ।

(iv) चतुर्थेश लग्न में द्वादशेश के साथ हो, पंचम में चन्द्र, बुध व मंगल हों ।

इन योगों में मामा के शाप से पुत्र नहीं होता है ।

शापविमोचन का उपाय :–

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुस्थापनमाचरेत् ।
वापीकूपतडागादिखनने सेतुबन्धनम् ।। 69 ।।

पुत्रवृद्धिर्भवेत्तस्य सम्पद्वृद्धिः प्रजायते ।

इति योग वशादेवं शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः ।। 70 ।।

इस दोष की शान्ति के लिए विष्णु भगवान् की प्रतिमा की स्थापना करें। बावड़ी, कुआँ, तड़ागादि, (जल की प्याऊ आदि या सार्वजनिक जलस्थान) परोपकारार्थ पुल बनवाना चाहिए।

तब पुत्र व सम्पत्ति की वृद्धि होती है। उक्त प्रकार से ही विद्वान् व्यक्ति को शान्ति विधान करवाना चाहिए।

ब्रह्म (ब्राह्मण) शाप योग :–

बलगर्वेन यो मर्त्यो ब्राह्मणानवमन्यते ।

तद्दोषाद् ब्रह्मशापाच्च तस्य स्यात् सन्ततिक्षयः ।। 71 ।।

गुरुक्षेत्रे यदा राहुः पुत्रे जीवारभानुजाः ।

धर्मस्थानाधिपे नाशे ब्रह्मशापात् सुतक्षयः ।। 72 ।।

धर्मेशे पुत्रभावस्थे पुत्रेशे नाशराशिगे ।

जीवारराहुभिर्युक्ते ब्रह्मशापात् सुतक्षयः ।। 73 ।।

धर्मभावाधिपे नीचे व्ययेशे पुत्रभावगे ।

राहुयुक्तेक्षिते वापि ब्रह्मशापात् सुतक्षयः ।। 74 ।।

जीवे नीचगते राहौ लग्ने वा पुत्रराशिगे ।

पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे ब्रह्मशापात् सुतक्षयः ।। 75 ।।

जो व्यक्ति बल के गर्व से ब्राह्मणों का अपमान करता है, तब ब्रह्मशाप के कारण सन्तान नहीं होती।

(i) राहु 9.12 राशि में हो, पंचम में गुरु, मंगल व शनि हों, नवमेश अष्टम में हो।

(ii) नवमेश पंचम में, पंचमेश अष्टम में गुरु, मंगल व राहु के साथ हों।

(iii) नवमेश नीच में हो, द्वादशेश पंचम में हो, राहु से युक्त दृष्ट हो।

(iv) गुरु नीच में हो, राहु लग्न में या पंचम में हो, पंचमेश 6.8.12 में हो।

इन योगों में ब्रह्मशाप से सन्तान नहीं होती है।

पुत्रभावाधिपे जीवे रन्ध्रे पाप समन्विते ।

पुत्रेशे सार्क चन्द्रे वा ब्रह्मशापात् सुतक्षयः ।। 76 ।।

मन्दांशे मन्दसंयुक्ते जीवे भौमसमन्विते ।
पुत्रेशे व्ययराशिस्थे ब्रह्मशायात् सुतक्षयः ।। 77 ।।
लग्ने गुरुयुते मन्दे भाग्ये राहुसमन्विते ।
व्यये वा गुरुसंयुक्ते ब्रह्मशापात् सुतक्षयः ।। 78 ।।

(i) पंचमेश होकर गुरु अष्टंम में पापयुक्त हो अथवा पंचमेश सूर्य चन्द्र के साथ हो ।

(ii) शनि के नवांश में शनि के साथ गुरु व मंगल हों तथा पंचमेश द्वादश में हो ।

(iii) लग्न में शनि व गुरु हों, नवम में राहु हो, अथवा द्वादश में गुरु हो ।

इन योगों में ब्रह्मशाप से सन्तान (पुत्र) नहीं होती है ।

शापनिवारण विधि :-

तस्यदोषस्यशान्त्यर्थं कुर्याच्चान्द्रायणं नरः ।
ब्रह्मकूर्च त्रयं कृत्वा धेनुं दद्यात् सदक्षिणाम् ।। 79 ।।
पंचरत्नानि देयानि सुवर्णसहितानि च ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् यथाशक्ति द्विजोत्तम ! ।। 80 ।।
एवं कृते तु सत्पुत्रं लभते नात्र संशयः ।
मुक्तशापो विशुद्धात्मा स नरः सुखमेधते ।। 81 ।।

ब्रह्मशाप के निवारणार्थ चान्द्रायण व्रत करना चाहिए और पश्चात् तीन प्रायश्चित्त ब्रह्मकूर्च करके दक्षिणा सहित गोदान करें । साथ ही सुवर्ण व पंचरत्नों का दान, ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति करें ।

ऐसा करने से सत्पुत्र होता है तथा मनुष्य शापयुक्त होकर शुद्धात्मा व सुखी होता है ।

ब्रह्मकूर्च व्रत– पूर्णमासी को लगातार 24 घंटे का निरन्तर व्रत करके, अगले दिन प्रातः पंचगव्य पीकर व्रत खोलना 'ब्रह्मकूर्च व्रत' है ।

अहोरात्रोषितो भूत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः ।
पंचगव्यं पिबेत् प्रातर्ब्रह्मकूर्चविधिः स्मृतः ।। (जाबाल)

'प्रायश्चित तत्त्व' में इसके विकल्प के लिए पुराणों का दान भी कहा है । यह व्रत तीन पूर्णिमाओं को लगातार करने से 'ब्रह्मकूर्चत्रय' सम्पन्न होता है ।

अथवा पाठान्तर से 'ब्रह्मकृच्छ्र' पाठ मानने से इसका अर्थ सान्तपन होता है । तब इसका अर्थ इस प्रकार होगा ।

पहले दिन केवल गाय का दूध, दही, गाय का घी व कुशाओं का जल मिलाकर पी लें। अगले दिन निराहार व्रत रखें। तीसरे दिन प्रातः चुल्लू भर पंचगव्य पीकर व्रत की पारणा कर लें। ये व्रत पहले मास में चान्द्रायण पूरा करके अगले अगले तीन मासों में पूर्णमासी को करने अधिक उचित हैं।

पत्नीशाप के योग :–

दारेशे पुत्र भावस्थे दारेशस्यांशपे शनौ।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे पत्नीशापात्सुतक्षयः।। 82।।
नाशसंस्थे कलत्रेशे पुत्रेशे नाशराशिगे।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 83।।
पुत्रस्थानगते शुक्रे कामपे रन्ध्रमाश्रिते।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः।। 84।।
कुटुम्बे पापसंयुक्ते कामपे नाशराशिगे।
पुत्रे पापग्रहैर्युक्ते पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 85।।

(i) सप्तमेश पंचम में व सप्तमेश के नवांश में शनि हो, पंचमेश अष्टम में हो।

(ii) सप्तमेश अष्टम में, पंचमेश भी अष्टम में व गुरु पापयुक्त हो।

(iii) शुक्र पंचम में हो, सप्तमेश अष्टम में हो, गुरु पापयुक्त हो।

(iv) द्वितीय में कोई पाप ग्रह हो, सप्तमेश अष्टम में व पंचम में कई पाप ग्रह हों।

इन सब योगों में पत्नी के शाप से (पूर्व पत्नी या पूर्वजन्मकृत पत्नीदोष) सन्तानहीनता होती है।

भाग्यस्थानगते शुक्रे दारेशे नाशराशिगे।
लग्ने सुते च पापाढ्ये पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 86।।
भाग्यस्थानाधिपे शुक्रे पुत्रेशे शत्रुराशिगे।
गुरुलग्नेशदारेशा दुःस्थाश्चेत् सन्ततिक्षयः।। 87।।
पुत्रस्थाने भृगुक्षेत्रे राहुचन्द्रसमन्विते।
व्यये लग्ने धने पापे पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 88।।
सप्तमे मन्दशुक्रौ च रन्ध्रेशे पुत्रभे रवौ।
लग्ने राहुसमायुक्ते पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 89।।

(i) नवम में शुक्र, सप्तमेश अष्टम में, 1.5 में पाप ग्रह हों।

(ii) नवमेश शुक्र हो, पंचमेश षष्ठ स्थान में हो, गुरु, लग्नेश व सप्तमेश 6.8.12 में हों।

(iii) पंचम में शुक्र की राशि हो, राहु व चन्द्र पंचम में ही हों, 1.2.12 में पाप ग्रह हों।

(iv) सप्तम में शुक्र व शनि हों, अष्टमेश पंचम में, लग्न में सूर्य व राहु हों।

इन योगों में भी पत्नी के शाप से सन्तानहीनता होती है।

धने कुजे व्यये जीवे पुत्रस्थे भृगुनन्दने।
शनिराहुयुते दृष्टे पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 90।।
नाशस्थौ वित्तदारेशौ पुत्रे लग्ने कुजे शनौ।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 91।।
लग्नपंचमभाग्यस्था राहुमन्दकुजाः क्रमात्।
रन्ध्रस्थौ पुत्रदारेशौ पत्नीशापात् सुतक्षयः।। 92।।

(i) द्वितीय में मंगल, द्वादश में गुरु, पंचम में शुक्र हो तथा पंचम पर शनि राहु का योग या दृष्टि हो।

(ii) 2.7 भावेश अष्टम में हों, 1.5 में मंगल शनि हों व गुरु पापयुक्त हो।

(iii) 1.5.9 में राहु, शनि, मंगल क्रमशः हों, 5.7 भावेश अष्टम में हों।

इन योगों में भी पत्नी शाप से सन्तान नहीं होती है।

दोष निवारण का उपाय :–

शापमुक्त्यै च कन्याया सत्यांतद्दानमाचरेत्।
कन्याभावे च श्रीविष्णोमूर्ति लक्ष्मीसमन्विताम्।। 93।।
दद्यात् स्वर्णमयीं विप्र ! दशधेनुसमन्विताम्।
शय्यां च भूषणं वस्त्रं दम्पतिभ्यां द्विजन्मनाम्।। 94।।
ध्रुवं तस्य भवेत् पुत्रो भाग्यवृद्धिश्च जायते।

उक्त दोष का निवारण करने के लिए, कन्यादान करें। यदि कन्या न हो तो लक्ष्मी व विष्णु जी की सोने की मूर्ति, दस गाएँ, शय्या, आभूषण व वस्त्र किसी गरीब गृहस्थी ब्राह्मण को दान करें। ऐसा करने से निश्चय से सन्तान होती है व भाग्यवृद्धि होती है।

प्रेतादिशाप के योग :–

कर्मलोपे पितृणां च प्रेतत्वं तस्य जायते ।। 95 ।।
तस्य प्रेतस्य शापाच्च पुत्राभावः प्रजायते ।
अतोऽत्र तादृशान् योगान् जन्मलग्नात् प्रवच्म्हम् ।। 96 ।।
पुत्रस्थितौ मन्दसूर्यौ क्षीणचन्द्रश्च सप्तमे ।
लग्ने व्यये राहुजीवौ प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 97 ।।
पुत्रस्थानाधिपे मन्दे नाशस्थे लग्नगे कुजे ।
कारके नाशभावे च प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 98 ।।
लग्ने पापे व्यये भानौ सुते चारार्किसोमजाः ।
पुत्रेशे रन्ध्रभावस्थे प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 99 ।।
लग्ने स्वर्भानुनायुक्ते पुत्रस्थे भानुनन्दने ।
गुरौ च नाशराशिस्थे प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 100 ।।

पितृकार्य श्राद्ध तर्पणादि न करने से पितर प्रेत रूप को प्राप्त हो जाते हैं । तब उनके शाप से वंश नहीं चलता । जन्मलग्न में इन वक्ष्यमाण योगों को देखकर यह योग कहें ।

(i) पंचम में सूर्य व शनि, सप्तम में क्षीण चन्द्रमा, लग्न व द्वादश में राहु गुरु हों ।

(ii) पंचमेश शनि अष्टम में हो, लग्न में मंगल, गुरु अष्टम में हों ।

(iii) लग्न में पाप ग्रह, व्यय में सूर्य, पंचम में मंगल, बुध व शनि हों, पंचमेश अष्टम में गया हो ।

(iv) लग्न में राहु हो, पंचम में शनि हो, अष्टम में बृहस्पति हो ।

इन योगों में प्रेतशाप से सन्तान–हानि होती है ।

लग्ने राहौ सशुक्रेज्ये चन्द्रे मन्दयुते तथा ।
लग्नेशे मृत्युराशिस्थे प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 101 ।।
पुत्रस्थानाधिपे नीचे कारके नीचराशिगे ।
नीचस्थग्रहदृष्टे च प्रेतशापात्सुतक्षयः ।। 102 ।।
लग्ने मन्दे सुते राहौ रन्ध्रे भानुसमन्विते ।
व्यये भौमेन संयुक्ते प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 103 ।।
कामस्थानाधिपे दुःस्थे पुत्रे चन्द्रसमन्विते ।
मन्दमान्दियुते लग्ने प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 104 ।।

वधस्थानाधिपे पुत्रे शनिशुक्रसमन्विते ।

कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात् सुतक्षयः ।। 105 ।।

(i) लग्न में राहु, शुक्र व गुरु हों, चन्द्रमा व शनि साथ हों, लग्नेश अष्टम में हो ।

(ii) पंचमेश नीच में हो, गुरु भी नीच में हो, नीचस्थ ग्रह से गुरु दृष्ट हो ।

(iii) लग्न में शनि, पंचम में राहु, अष्टम में सूर्य हो, द्वादश में मंगल हो ।

(iv) सप्तमेश 6.8.12 में हो, पंचम में चन्द्रमा, लग्न में शनि व गुलिक हो ।

(v) अष्टमेश पंचम में शनि व शुक्र के साथ हो, गुरु अष्टम में हो ।

इन सब योगों में प्रेत शाप से सन्तान हानि होती है ।

दोष शान्ति के उपाय :–

अस्य दोषस्य शान्त्यर्थं गया श्राद्धं समाचरेत् ।

कुर्याद् रुद्राभिषेकं च ब्रह्ममूर्तिं प्रदापयेत् ।। 106 ।।

धेनुं रजतपात्रं च तथा नीलमणिं द्विज ! ।

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् तेभ्यश्च दक्षिणां दिशेत् ।। 107 ।।

एवं कृते मनुष्यस्य शापमोक्षः प्रजायते ।

पुत्रोत्पत्तिर्भवेत्तस्य कुलवृद्धिश्च जायते ।। 108 ।।

इस दोष की शान्ति के लिए गया श्राद्ध व रुद्राभिषेक करववाएँ । अथवा ब्रह्मा जी की सुवर्णमयी पूर्ति, गोदान, चाँदी का बर्तन, नीलम, दान करें व ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें ।

ऐसा करने से शाप मुक्ति होती है तथा पुत्रोत्पत्ति एवं वृद्धि होती है ।

ग्रह बाधा की शान्ति :–

तथाज्ञशुक्रजे दोषे पुत्राप्तिः शम्भुपूजनात् ।

जीवचन्द्रकृते विप्र ! मन्त्रयन्त्रौषधादितः ।। 109 ।।

राहुजे कन्यकादानात् सूर्यजे हरिकीर्तनात् ।

गोदानात् केतुजे दोषे रुद्रजापात् कुजार्किजे ।। 110 ।।

सर्वदोषविनाशाय शुभसन्तानलब्धये ।

हरिवंशकथा भक्त्या श्रोतव्या विधिना द्विज ! ।। 111 ।।

यदि उक्त योग पूरे न घटते हों तथा किसी भी प्रकार से योगायोग से सन्तानहीनता दिखे तो बुध शुक्र बाधक हों तो शिवपूजन करें।

गुरु चन्द्रकृत दोष हो तो मन्त्र, यन्त्र व औषधि प्रयोग करें। राहु बाधक हो तो कन्यादान करें। सूर्य का दोष हो तो विष्णु जी का जप या हरिवंश पुराण का श्रवण करें।

सामान्यतः अच्छी सन्तान प्राप्त करने के लिए व सब दोषों को दूर करने के लिए हरिवंश पुराण का भक्तिपूर्वक श्रवण करना चाहिए।

एक नियमानुसार ग्रह योग शान्ति उतनी ही बार करनी चाहिए, जितनी संख्यक राशि में बाधक ग्रह हो। यदि उससे पूर्व ही सफलता मिल जाए तो कोई हानि नहीं है।

ग्रहयोगों से निःसन्तान योग :-

पुत्रवित्तकलत्रेशा संयुक्ता नवभागपाः ।
पापांशकाः पापयुता अनपत्यत्वमादिशेत् ।। 112 ।।
व्ययेशसंयुतांशेशे मृत्युराशौ स्थिते यदि ।
पुत्रेशे क्रूरषष्ट्यंशे जायते पुत्रसंक्षयः ।। 113 ।।
लग्नपुत्रेश्वरौ दुःस्थे कारके नीचराशिगे ।
नपुसंकग्रहे पुत्रे ह्यनपत्यत्वमादिशेत् ।।114 ।।
क्रूरषष्ट्यंशके जीवे पुत्रस्थे नाशराशिपे ।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे वक्तव्या त्वनपत्यता ।। 115 ।।

(i) 2.5.7 भावेश पाप राशि में पापयुक्त एकत्र हों या इनके नवांशेश पापराशि के नवांश में पापयुक्त हों।

(ii) द्वादशेश का नवांशेश यदि अष्टम में हो, पंचमेश क्रूरषष्ट्यंश में हो।

(iii) 1.5 भावेश 6.8.12 में हो, गुरु नीचगत हो, पंचम में कोई नपुंसक ग्रह (बुध शनि) हों।

(iv) गुरु क्रूर षष्ट्यंश में हो, पंचमेश अष्टम में व अष्टमेश पंचम में हो।

इन सब योगों में सन्तान नहीं होती है। इस प्रकार के योगों में उक्त ग्रह शान्ति करनी चाहिए।

विलम्ब से पुत्र योग :-

लग्नाधिपे कुजे स्वोच्चे रन्ध्रे मन्दयुते रवौ ।
शुभदृष्टिसमायोगे चिरात्पुत्रमुपैति सः ।। 116 ।।

लग्ने मन्दे गुरौ रन्ध्रे व्यये भौमसमन्विते ।
शुभदृष्टे स्वतुंगे वा चिरात्पुत्रमुपैति सः ।। 117 ।।
पुत्रस्था मन्दजीवज्ञा लग्ने पुत्राधिपे शुभे ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः ।। 118 ।।
सुते राहवर्कशुक्रेज्याः शुभर्क्षे शुभवीक्षिते ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः ।। 119 ।।
लग्ने सौम्ये धने पापे तृतीये पापखेचरे ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः ।। 120 ।।

(i) लग्नेश होकर मंगल अपने उच्च में हो, अष्टम में सूर्य शनि हो तथा इन पर शुभ दृष्टि हो ।

(ii) लग्न में शनि, अष्टम में गुरु, द्वादश में मंगल, इनमें से कोई भी शुभ दृष्ट या उच्चगत हो ।

(iii) पंचम में शनि, बुध, गुरु हो, पंचमेश शुभ राशि लग्न में वा कहीं भी शुभ भाव में राशि हो ।

(iv) पंचम में राहु, सूर्य, शुक्र, गुरु, शुभ राशि में शुभ दृष्ट हों तथा पंचमेश भी शुभ ग्रह की राशि में गया हो ।

(v) लग्न में शुभ ग्रह, द्वितीय में पाप ग्रह, तृतीय में पाप ग्रह, पुत्रेश शुभ क्षेत्र में हो ।

इन पाँचों योगों में देर से पुत्र होता है ।

दत्तकपुत्र योग :–

पुत्रस्थाने कुजे मन्दे बुधक्षेत्रे विलग्नपे ।
बुधदृष्टे युते वापि तदा दत्ताः सुतादयः ।। 121 ।।
पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा भवेत् ।
मन्दमान्दियुते दृष्टे तदा दत्ताः सुतादयः ।। 122 ।।
पुत्रस्थाने बुध क्षेत्रे बुधसंस्थेक्षितेऽपि वा ।
लग्नाधिपे शनौ वापि दत्तपुत्रा भवन्ति हि ।। 123 ।।
दारेशे लाभभावस्थे पुत्रेशे शुभसंयुते ।
पुत्रे मन्दे बुधे वापि दत्तपुत्रा भवन्ति हि ।। 124 ।।
पुत्रेशे मन्दसंयुक्ते कुजे सौम्यनिरीक्षिते ।
लग्नाधिपे बुधांशे वा तदा दत्ताः सुतादयः ।। 125 ।।

पुत्रेशे भाग्यभावस्थे भाग्येशे कर्मराशिगे ।

पुत्रे मन्देन दृष्टे तु तदा दत्ताः सुतादयः ।। 126 ।।

इन योगों में दत्तक पुत्र (गोद लिया हुआ, कृत्रिम पुत्र) होता है–

(i) पंचम में मंगल व शनि हों, 3.6 लग्न हो, लग्न को बुध देखे या योग करे ।

(ii) पंचम में 3.6 राशि हो या 10.11 राशि हो, पंचम भाव शनि व गुलिक से युतदृष्ट हो ।

(iii) पंचम में 3.6 राशि हो, बुध पंचम भाव पर योग या दृष्टि रखे । अथवा 10.11 लग्न में बुध पंचम भाव पर योग दृष्टि करे ।

(iv) सप्तमेश एकादश में, पंचमेश शुभयुक्त एवं पंचम में बुध या शनि हो ।

(v) पंचमेश शनि युक्त हो, मंगल पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, लग्नेश बुध के नवांश में हो ।

(vi) पंचमेश नवम में, नवमेश दशम में हो व पंचम पर शनि की दृष्टि हो ।

इन योगों में दत्तक पुत्र होता है अर्थात् निजी पुत्र न होकर गोद लिया हुआ पुत्र होता है ।

लग्नाधिपे भृगौ स्वोच्चे पुत्रे मन्दसमन्विते ।

कारके बलसंयुक्ते दत्तपुत्रात्सुती भवेत् ।। 127 ।।

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे लग्ने पुत्रे शनैश्चरे ।

परिपूर्णबले जीवे दत्तपुत्रात्सुती भवेत् ।। 128 ।।

पुत्राधिपे रवौ लग्ने पुत्रस्थौ शनि सोमजौ ।

पुत्राधिपे बलयुते दत्तपुत्रात्सुती भवेत् ।। 129 ।।

लग्नाधिपे बुधे पुत्रे कुजदृष्टिसमन्विते ।

कारके लाभराशिस्थे दत्तपुत्रात्सुती भवेत् ।। 130 ।।

लग्नाधिपे गुरौ पुत्रे शनिदृष्टिसमन्विते ।

पुत्रेशे भौमराशिस्थे दत्तपुत्रा भवन्ति हि ।। 131 ।।

(i) 2.7 लग्न में जन्म हो, शुक्र उच्चगत हो, पंचम में शनि हो, गुरु बलवान् हो ।

(ii) पंचमेश चन्द्रमा हो, 1.5 में शनि हो, गुरु बली हो ।

(iii) पंचमेश सूर्य लग्न में हो, शनि बुध पंचम में हों, पंचमेश बली हो ।

(iv) लग्नेश होकर बुध पंचम में हो व मंगल से दृष्ट हो, गुरु एकादश भाव में हो।

(v) लग्नेश गुरु होकर पंचम में शनि दृष्ट हो, पंचमेश 1.8 राशि में हो।

इन सब योगों में भी दत्तक पुत्र होता है।

बहुपुत्र योग :–

पुत्रे स्वर्भानुभानुज्ञाः कारके शुभसंयुते।
शुभेन वीक्षिते वापि बहुपुत्रान् समादिशेत्।। 132।।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे शुभदृष्टिसमन्विते।
कारके केन्द्रभावस्थे बहुपुत्रं समादिशेत्।। 133।।
लग्नेशे पुत्रराशिस्थे पुत्रेशे लग्नमाश्रिते।
केन्द्रत्रिकोणगे जीवे बहुपुत्रं समादिशेत्।। 134।।
पुत्रस्थानगते राहौ मन्दांशकविवर्जिते।
बहुपुत्रं नरं विद्यात् शुभग्रहनिरीक्षते।। 135।।
पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नेशे शुभसंयुते।
कारके शुभसंयुक्ते बहुपुत्रं समादिशेत्।। 136।।
पुत्रस्थाने तदीशे वा गुरौ वा शुभवीक्षिते।
शुभेन सहिते वापि बहुपुत्रं समादिशेत्।। 137।।

इन योगों में व्यक्ति को कई पुत्र होते हैं। कई से तात्पर्य देश कालानुसार एकाधिक संख्या से है।

(i) पंचम में राहु, सूर्य, बुध हो, गुरु शुभ युक्त हो या शुभदृष्ट हो।

(ii) पंचमेश शुभ राशि में हो, शुभदृष्ट भी हो, गुरु केन्द्र में गया हो।

(iii) लग्नेश पंचम में हो, पंचमेश लग्न में हो, गुरु केन्द्र त्रिकोण में हो।

(iv) पंचम में राहु हो, लेकिन शनि के नवांश में न हो, राहु को शुभ ग्रह देखें।

(v) पंचमेश उच्च में हो, लग्नेश शुभयुक्त हो, गुरु भी शुभयुक्त दृष्ट हो।

(vi) पंचम में पंचमेश या बृहस्पति शुभदृष्ट हो या शुभयुक्त हो।
ये सब बहुपुत्र योग महर्षि ने कहे हैं।

परिपूर्णबले जीवे लग्नेशे पुत्रराशिगे ।
पुत्रेशे बलसंयुक्ते बहुपुत्रं समादिशेत् ।। 138 ।।
वर्गोत्तमांशगे जीवे लग्नेशस्यांशपे शुभे ।
पुत्रेशेन युते दृष्टे पुत्रयोगे समादिशेत् ।। 139 ।।
वित्तेशे पुत्रभावस्थे परिपूर्णबलान्वितः ।
वैशेषिकांशगे जीवे बहुपुत्रं समादिशेत् ।। 140 ।।
लग्नात्पुत्राधिपे स्वोच्चे परस्परमवेक्षिते ।
अन्योन्यस्थानगो वापि पुत्रयोगं वदेद्बुधः ।। 141 ।।
पुत्रस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभसंयुते ।
शुभेन वीक्षिते वापि पुत्रयोगा इमे स्मृताः ।। 142 ।।
लग्नपुत्राधिपौ केन्द्रे शुभग्रहसमन्विते ।
कुटुम्बेशे बलाढ्ये तु पुत्रयोगा इमे स्मृताः ।। 143 ।।

(i) गुरु पूर्ण बलवान् हो, लग्नेश पंचम में हो, पंचमेश भी बली हो ।

(ii) गुरु वर्गोत्तम नवांश में हो, लग्नेश शुभ ग्रह के नवांश में हो, इन पर पंचमेश की दृष्टि या योग हो ।

(iii) द्वितीयेश पंचम में हो, बलान् हो, गुरु वैशेषिकाश में गया हो ।

(iv) पंचमेश उच्चगत हो या लग्नेश व पंचमेश एक दूसरे की राशि में हों या एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टि रखें ।

(v) पंचमेश का नवांशेश शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो ।

(vi) लग्नेश व पंचमेश केन्द्र में शुभयुक्त हों, द्वितीयेश बलवान् हो ।
ये भी बहुपुत्र योग कहे गए हैं ।

लग्नेशे दारभावस्थे दारेशे लग्नमाश्रिते ।
द्वितीयेशे विलग्नस्थे पुत्रयोगा इमे स्मृताः ।। 144 ।।
दारेशे ग्रह संयुक्ते नवांशभवनाधिपे ।
पुत्रवित्तविलग्नेशे पुत्रयोगा इमे स्मृताः ।। 145 ।।

(i) लग्नेश सप्तम में, सप्तमेश लग्न में व द्वितीयेश लग्न में हो ।

(ii) सप्तमेश ग्रह युक्त हो, 1.2.5 भावेशों की स्थिति नवांश में स्वोच्चादि राशि में हो । ये सब बहुपुत्र योग हैं । बहुपुत्र योगों की आंशिक घटना होने पर भी पुत्रोत्पत्ति देखी जाती है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां पूर्वशाप-फलाध्यायः षडशीतितमः ।। 86 ।।

।। अथ ग्रहशान्तिविवेकाध्यायः ।।

मैत्रेय उवाच–

ग्रहाणां दोषशान्त्यर्थं तेषां पूजाविधिं वद ।

मानवानां हितार्थाय संक्षेपात् कृपया मुने ! ।। 1 ।।

पराशर उवाच–

ग्रहाः सूर्यादयः पूर्वं मया प्रोक्ता द्विजोत्तम ! ।

जगत्यां सर्वजन्तूनां तदधीनं सुखासुखम् ।। 2 ।।

तस्मात् सुशान्तिकामो वा श्रीकामो वा सुचेतसा ।

वृष्ट्यायुः पुष्टिकामो वा तेषां यज्ञं समाचरेत् ।। 3 ।।

मैत्रेय ने पूछा– ग्रहों के दोष की शान्ति के लिए क्या विधि होती है, हे मुने ! कृपया कहें । इससे मानवों का हित होगा ।

पराशर बोले– सूर्यादि ग्रहों के अधीन ही इस संसार के प्राणियों का समस्त सुख व दुःख है । इसीलिए शान्ति, लक्ष्मी, शोभा, वृष्टि, आयु, पुष्टि आदि शुभ फलों की कामना से सदैव नव ग्रहों का यज्ञादि करना चाहिए ।

मूर्ति की धातु :–

ताम्राच्च स्फटिकाद् रक्तचन्दनात् स्वर्णकादुभौ ।

रजतादयसः सीसात् कांस्यात् कार्याः क्रमाद् ग्रहाः ।। 4 ।।

पूर्वोक्तैः स्वस्ववर्णैर्वा पटे लेख्या द्विजोत्तमैः ।

स्वस्वोक्तदिग्विभागेषु गन्धाद्यैर्मण्डलेषु वा ।। 5 ।।

पूजा के लिए सूर्य की मूर्ति तांबे से, चन्द्रमा की स्फटिक पत्थर से, मंगल की लाल चन्दन से, बुध व गुरु की सोने से, शुक्र की चाँदी से, शनि की लोहे से, राहु की सीसा धातु से, व केतु की काँसे से मूर्ति बनवानी चाहिए ।

अथवा पूर्वोक्त ग्रहों के रंग वाले रेशमी वस्त्र (महीन वस्त्र) पर उनकी मूर्ति लिखें । यदि इसमें भी समर्थ न हों तो जिस ग्रह की जो दिशा पहले कही है, उसी दिशा में गन्ध (रोली, चन्दन आदि) से मण्डल (वेदी) में लिखें ।

ध्यान के लिए ग्रहों का स्वरूप :–

पद्मासनः पदमहस्तः पद्मपत्रसमद्युतिः ।
सप्ताश्वरथसंस्थश्च द्विभुजश्च दिवाकरः ।। 6 ।।

ध्यानार्थ या मूर्ति निर्माणार्थ सूर्य को कमलासन में स्थित, हाथ में कमल का पुष्प, कमल के समान कान्ति वाले, सात घोड़ों के रथ पर सवार दो हाथों वाला समझें ।

श्वेतः श्वेताम्बरो देवो दशाश्वः श्वेतभूषणः ।
गदाहस्तो द्विबाहवश्च द्विजोत्तम विधुर्द्विज ।। 7 ।।

श्वेत वर्ण, श्वेत वस्त्र, दस घोड़ों के रथ पर सवार, सफेद आभूषण, गदा धारण किए हुए, दो हाथ, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों (द्विजातियों) में श्रेष्ठ चन्द्रमा है ।

रक्तमाल्याम्बरधरो शक्तिशूलगदाधरः ।
वरदस्तु चतुर्बाहुर्मंगलो मेषवाहनः ।। 8 ।।

लाल माला, लाल वस्त्र, हाथ में माला, शूल, गदा धारण किए हुए, चार हाथों वाला, मेष पर सवार, वरद मुद्रा में अपना दायाँ हाथ उठाए हुए मंगल का स्वरूप है ।

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः ।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः ।। 9 ।।

पीली माला, पीला वस्त्र, पीले कनेर के फूल के समान रंगत, हाथ में ढाल, तलवार व गदा लिए हुए, चौथी भुजा को वरद मुद्रा में उठाए हुए, सिंह पर सवार, बुध का स्वरूप है ।

गुरुशुक्रौ क्रमात् पीतश्वेतवर्णौ चतुर्भुजौ ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलू ।। 10 ।।

गुरु पीतवर्ण, चतुर्भुज रूप, शुक्र सफेद वर्ण व चतुर्भुज, दोनों के हाथ में दण्ड, वरद मुद्रा, हाथ में अक्षमाला, जपमाला एवं कमण्डलु यह गुरु व शुक्र का स्वरूप है । गुरु पीतवर्ण व शुक्र श्वेत वर्ण हैं, शेष सब चीजें दोनों के स्वरूप में समान हैं ।

इन्द्रुनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः ।
बाणबाणासनधरो विज्ञेयोऽर्कसुतोद्विज ! ।। 11 ।।

नीलम की रंगत, हाथ में शूल, गिद्ध की सवारी, वरदमुद्रा, बाण व धनुष हाथ में लिए, शनि का स्वरूप समझना चाहिए ।

करालवदनः खड्गचर्मशूलीवरप्रदः ।

सिहंस्थो नीलवर्णश्च राहुरेवं प्रकल्प्यते ।। 12 ।।

डरावना मुख, हाथ में चमड़े की ढाल, तलवार, शेर पर सवार, काला नीला वर्ण राहु का स्वरूप है ।

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः ।

गृध्रासनागता नित्यंकेतवः स्युर्वरप्रदाः ।। 13 ।।

धुएँ के समान रंगत, दो हाथ, हाथ में गदा, बिगड़ा चेहरा, गिद्ध की सवारी, इस रूप में केतुओं का ध्यान या मूर्ति निर्माण वरदायक होता है ।

सर्वे किरीटिनः कार्या ग्रहा लोकहितप्रदाः ।

स्वांगुलेनोच्छ्रिता विज्ञैः शतमष्टोत्तरं सदा ।। 14 ।।

यथावर्ण प्रदेयानि पुष्पाणि वसनानि च ।

गन्धो दीपो बलिश्चैव धूमो देयश्च गुग्गुलुः ।। 15 ।।

यस्य ग्रहस्य यद्द्रव्यमन्नं यस्य च यत्प्रियम् ।

तच्च तस्मै प्रदातव्यं भक्तियुक्तेन चेतसा ।। 16 ।।

सभी ग्रहों को मुकुट धारण किए हुए समझना चाहिए । मूर्ति की ऊँचाई अपनी अंगुलियों के नाप से 108 अंगुल अधिकतम होनी चाहिए । यह नाप आदमकदमूर्ति का है । ऐसे नाप की मूर्तिया मन्दिर आदि में प्रतिष्ठा के लिए होती हैं । व्यक्तिगत पूजन के लिए अपनी आठ अंगुल ऊँची प्रतिमा का विधान है । जिस ग्रह की मूर्ति बनाएँ, उस ग्रह की मूर्ति के ही अंगुलों से नापकर 108 अगुंल की मूर्ति उत्तम होती है । इस विषय में शास्त्रीय प्रमाणानुसार बृहत्संहिता में कभी लिखेंगे ।

इसका सरल प्रकार यह है कि मूर्ति की समस्त ऊँचाई को बराबर 12 भागों में बाँट लें । प्रत्येक द्वादशांश को नौ नौ समान भागों में बाँटें । यह नवाँ भाग व मूर्ति की अंगुली की चौड़ाई समान होनी चाहिए, तब 108 अंगुल की मूर्ति उत्तम, 96 अंगुल की मूर्ति मध्यम, व 84 अंगुल की अधम होती है ।

सभी ग्रहों को पूजा में ग्रहों के रंग के अनुसार फूल चढ़ाएँ । उसी वर्ण का वस्त्र, फूल, ग्रह धातु के निर्मित आभूषण, गन्ध, दीप, गुग्गुलादि की धूप दें ।

जिस ग्रह का जो अन्न व वस्तु है, उसी का दान आदि करना चाहिए ।

ग्रहों की मन्त्र जप संख्या :–

सप्तरुद्रा दिशो नन्दा नवचन्द्रा नृपास्तथा ।

त्रिपक्षा अष्टचन्द्राश्च सप्तचन्द्रास्तथैव च ।। 17 ।।

इमाः संख्याः सहस्रघ्ना जपसंख्याः प्रकीर्तिताः ।

क्रमादर्कादिखेटानांप्रीत्यर्थद्विजपुङ्गव! ।। 18 ।।

सूर्य का मन्त्र 7000, चन्द्रमा का 11000, मंगल का 10,000 बुध का 9,000, गुरु का 19,000 शुक्र का 16,000 शनि का 23,000, राहु का 18,000, केतु का 17000 मन्त्र जप कराना चाहिए ।

यहाँ वक्तव्य है कि ग्रहों के मन्त्र अपने वेद के अनुसार या सम्प्रदायानुसार वैदिक, पौराणिक, तान्त्रिक लेने चाहिए । आजकल प्रचलित तान्त्रिक मन्त्रों का आधार भी अथर्ववेद ही है ।

ग्रहों की समिधाएँ :–

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गस्तु पिप्पलः ।

उदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात् ।। 19 ।।

होतव्यामधुसर्पिर्भ्यां दध्ना क्षीरेण वा युताः ।

एकैकस्य त्वष्टशतमष्टाविंशतिरेव वा ।। 20 ।।

सूर्य की आक, चन्द्रमा की ढाक, मंगल की खैर (कत्था या टेंट का झाड़) बुध की अपामार्ग (चरचिटा, चिरचिटा, चिरचिटी) इस पौधे को नेवला, साँप से युद्ध के उपरान्त खाता है । गुरु की पीपल, शुक्र की गूलर, शनि की शमी, राहु की दूर्वा (दूब, हरी घास) केतु की कुश (दर्भ, डाब आदि) समिधाएँ हैं । ग्रह हवन में इन्हें प्रयुक्त करें । हवनार्थ शहद व घी लगाकर अथवा दही दूध छिड़की हुई समिधाएँ प्रयोग करें । प्रत्येक ग्रह की 108 या 28-28 बार आहुति दें ।

भक्ष्य पदार्थ :–

गुडौदनं पायसं च हविष्य क्षीरषाष्ठिकम् ।

दध्योदनं हविश्चूर्णं तिलं चित्रान्नमेव च ।। 21 ।।

सूर्य के लिए गुड़ व भात (मीठे चावल), चन्द्र के लिए खीर, मंगल के श्यामाक, (चौलाई आदि) बुध के लिए दूध व चावल, गुरु के लिए दही चावल, शुक्र के लिए सुपाच्य अन्न रहित हविष्य, शनि के लिए उड़द या तिलमिश्रित, राहु केतु के लिए कई अनाज मिलाकर या तिल भुने हुए व उड़द की दाल की खिचड़ी आदि खाएँ या खिलाएँ ।

धेनुः शंखस्तथानड्वान् हेम वासो हयः क्रमात् ।

कृष्णा गौरायसं छाग एता रव्यादिदक्षिणाः ।। 22 ।।

सूर्य के लिए गोदान, चन्द्र के लिए शंखदान, मंगल के लिए वृषभदान, बुध के लिए सुवर्णदान, गुरु के लिए वस्त्र दान, शुक्र के लिए घोड़ा दान, शनि के लिए काली गाय, राहु के लिए लोहे की वस्तु, केतु के लिए बकरा या मेष का दान करना चाहिए ।

यस्य यश्च यदा दुःस्थः सतं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः 'पूजिताः पूजयिष्यथ' ।। 23 ।।

मानवानां ग्रहाधीना उच्छ्रायाः पतनानि च ।

भावाभावौ च जगतां तस्मात् पूज्यतमा ग्रहाः ।। 24 ।।

जिस मनुष्य की कुण्डली में जो ग्रह खराब, निर्बल व अशुभ फलदायक हो, अनिष्ट स्थान में गया हो, नीचादिगत हो तो उस ग्रह की पूजा करनी चाहिए ।

इन ग्रहों को ब्रह्मा जी ने वरदान दिया था कि जो इन्हें पूजेगा, ये उसे पूजित व सम्मानित बनाएँगे ।

मनुष्य की उन्नति अवनति, हानि लाभ आदि, ग्रहाधीन है, अतः ग्रहों की पूजा अवश्य करनी चाहिए ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
ग्रहशान्तिविवेकाध्यायः सप्ताशीतितमः ।। 87 ।।

88

।। अथाशुभजन्मकथनाध्यायः ।।

पराशर उवाच :–

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि सुलग्ने सुग्रहेष्वपि ।

यदन्य कारणेनापि भवेज्जन्माशुभप्रदम् ।। 1 ।।

दर्शे कृष्ण चतुर्दश्यां विष्ट्यां सोदरभे तथा ।

पितृभे सूर्यसंक्रान्तौ पातेऽर्केन्दुग्रहे तथा ।।2 ।।

व्यतीपातादिदुर्योगे गण्डान्ते त्रिविधेऽपि वा ।

यमघण्टेऽवमे दग्धयोगेत्रीतर जन्म च ।।3 ।।

प्रसवस्य विकारेऽपि ज्ञेयं जन्माशुभप्रदम् ।

तुलाऽर्के सार्पशीर्षे च नृणां जन्माशुभप्रदम् ।। 4 ।।

शान्त्या भवति कल्याणं तदुपायं च वच्म्यहम् ।

अकृत्वा नास्तिको लोभादश्नुते बहुसंकटान् ।। 5 ।।

पराशर बोले– शुभ लग्न व शुभ ग्रह योगों में उत्पन्न होने पर भी जातक वक्ष्यमाण कारणों से अशुभ फल पाता है, अर्थात् ये अशुभ जन्म समझने उपयुक्त हैं ।

1. अमावस्या, 2. कृष्ण चतुर्दशी, 3. भद्रा करण, 4. भाई या पिता का एक नक्षत्र, 5. संक्रान्ति, 6. क्रान्तिसाम्य या महापात, 7. सूर्यग्रहण, 8. चन्द्रग्रहण, 9. व्यतिपातादि दुर्योग, 10. त्रिविध गण्डान्त, 11. यमघण्ट योग, 12. तिथिक्षय, 13. दग्धादि योग, 14. त्रिखल जन्म, 15. विकृत या न्यूनाधिक समय प्रसव, 16. तुलामास, 17. सार्पशीर्ष ।

इत्यादि वेलाओं में मनुष्य का जन्म हो तो बहुत से शुभ योग भी उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार नीबू की एक बूंद ही दूध को विकृत कर देती है ।

यह वेला या मुहूर्त्त का विषय है । जन्म में भी शुभाशुभ मुहूर्त्त या वेला का विचार परमावश्यक है, ऐसा महर्षि ने स्पष्ट संकेत किया है ।

क्रान्ति साम्य (महापात)– क्रान्तिसाम्य का विचार विस्तृत गणित प्रक्रिया से करना योग्य है । अच्छे पंचांगों में क्रान्तिसाम्य का आरम्भ व अन्त आजकल दिया जाता है । सूर्य व चन्द्रमा की क्रान्ति समान होने पर महादोष होता है, यह विवाह, जन्म व यात्रादि सभी शुभ कार्यों में वर्जित है ।

स्थूल मान से मुहूर्तचिन्तामणि में कहा गया है कि 1.5, 2.10, 7.11, 6.12, 4.8, 3.9 राशियों के जोड़े में एक साथ जब सूर्य व चन्द्रमा हो तो क्रान्तिसाम्य होता है । इसका आरम्भ व अन्त सदैव सिद्धान्त गणितीय प्रक्रिया से प्राप्त करना ही अनिवार्य है ।

सार्पशीर्ष– सूर्य चन्द्र के योग के समय (अमावस्या) यदि अनुराधा नक्षत्र हो तो अनुराधा का तृतीय व चतुर्थ चरण 'सार्पशीर्ष' कहलाता है ।

चन्द्रार्कयोगे मैत्रान्त्यदलं स्यात्सार्पमस्तकम् ।।

व्यतिपातादि दुर्योग :–व्यतिपात, क्रान्तिसाम्य को भी कहते हैं । लेकिन यहाँ प्रसंगवशात् दुर्मुहूर्त्तों का परिगणन किया गया है । क्रकच, दग्धा तिथि, कुलिक, यमघण्टादि योगों का विचार तिथि, नक्षत्र व मुहूर्त्तादि के मिश्रण से होता है ।

रातदिन की 60 घड़ियों में 32 मुहूर्त अर्थात् लगभग 2 घड़ी का एक मुहूर्त होता है । दिनमान को 16 से भाग देने पर एक मुहूर्त का मान

आ जाता है। प्रत्येक वार को कौन–सा मुहूर्त (16 वाँ भाग) यम घण्ट होता है, यह आगे निर्दिष्ट है: रविवार–10, सोमवार–8, मंगलवार–6, बुधवार–4, गुरुवार–2,शुक्रवार–14, शनिवार–12।

इसे जानने का सुगम उपाय यह है कि स्थानीय दिनमान को 16 से भाग देकर जो घट्यादि लब्धि हो, उसे अभीष्ट वार के सामने लिखे अंक से गुणा कर दें। जब उतना इष्टकाल होगा, तब यमघण्ट योग समाप्त होगा। समाप्ति काल में से षोडशांश घटाने पर आरम्भ काल आ जाएगा।

वैधृति व व्यतिपात, पातों के ही नाम हैं। ये जन्म में बहुत अनिष्ट कारक हैं।

शूल, वैधृति, व्यतिपात, परिघ, व्याघात, गण्ड, तिथि क्षय, भद्रा, वज्र, यमघण्ट, मृत्युयोग, दग्धयोग, ये 12 योग जन्म में अनिष्टप्रद हैं। ऐसा उत्तरगार्ग्य ने कहा है।

इनमें शूल, परिघ, व्याघात आदि दुष्ट योग हैं तथा वैधृति व व्यातिपात महापात गणित द्वारा साध्य हैं। इनका उल्लेख उत्तम पंचांगों में किया होता है। यमघण्ट मुहूर्त व यमघण्ट योग अलग–अलग हैं–

यमघण्ट योग : रविवार को मघा, सोमवार–विशाखा, मंगलवार–आर्द्रा, बुधवार–मूल, गुरुवार– कृत्तिका, शुक्रवार–रोहिणी, शनिवार–हस्त नक्षत्र हो तो यमघण्ट योग होता है।

दग्धयोग : रविवार–द्वादशी, सोमवार–11, मंगलार–5, बुधवार–3, गुरुवार–6,शुक्रवार–8, शनिवार–9। उक्त तिथि वार साथ पड़ें तो दग्धयोग होता है।

व्यतिपात वैधृति : इनका बोध क्रान्तिसाम्य दोष से ही हो जाता है। महापात के ये विभिन्न नाम हैं। सूर्य व चन्द्र की क्रान्तियाँ समान होने पर, यदि दोनों एक अयन में हों तो वैधृति व भिन्न अयनों में हों तो व्यतिपात होता है।

अशुभ काल जन्म का यह प्रकरण बहुत से ऋषियों जैसे गर्ग, नारद, शौनक, वशिष्ठ, उत्तरगार्ग्य या वृद्धगार्ग्य, मनु महाराज आदि ने कहा है। इनकी शान्ति का विधान भी किया है। तब पराशर जैसे त्रिकालदर्शी महर्षि इसे क्यों न कहते ? अतः शान्तिविधान पाराशर होरा का ही अंग है, कुछ लोगों ने शान्ति प्रकरण पर आक्षेप करके इसे होराशास्त्र से बाहर बताया है, वह उनका विचारदारिद्र्य ही है। शौनक, नारद, मनु, गर्ग व पराशर ये सब ज्योतिष के प्रवर्तक हैं। सबने इसका उल्लेख किया है, तब सर्वांग पूर्ण पाराशरहोरा में ऐसा विषय होना अपरिहार्य ही है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्याया–
मशभजन्मकथनाध्यायोऽष्टाशीतितमः ॥ 88 ॥

89

।। अथ दर्शशान्तिविचाराध्यायः ।।

पराशर उवाच :–

मैत्रेय ! दर्शजातानां मातापित्रोर्दरिद्रता ।

तद्दोषपरिहाराय शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः ।। 1 ।।

कलशस्थापनं कृत्वा प्रथमं विधिपूर्वकम् ।

उदुम्बरवटाश्वत्थ–चूतानां पल्लवांस्तथा ।। 2 ।।

सनिम्बानां च मूलानि त्वचस्तत्र विनिक्षिपेत् ।

पंचरत्नानि निक्षिप्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ।। 3 ।।

दर्श अमावस्या को कहते हैं । अमावस्या में जन्म हो तो माता–पिता व स्वयं की दरिद्रता वित्त, पुत्र, यश आदि धनों की कमी होती है । इसमें भी कुहु अर्थात् सर्वथा चन्द्र रहित अमावस्या में हो तो सब प्रकार के दोष होते हैं ।

अतः इस दोष के निराकरणार्थ बुद्धिमान् व्यक्ति को शान्ति विधान करना चाहिए ।

सर्वप्रथम कलश स्थापन की विधि से कलश स्थापित करें । कलश में द्रव्य, दूध, दही, घी आदि भी डालें । कलश पर गूलर, बड़, पीपल, पिलखन, आम के पत्ते, नीम के पत्ते, नीम की छाल व जड़ भी डालें । पंच रत्न डालकर उसे दो वस्त्रों से लपेट कर अग्नि कोण (SOUTH-EAST) में स्थापित करें ।

कलश स्थापन की विधि सामान्यतः पुरोहित पंडित लोग जानते ही हैं । भूमि स्पर्श, धान्य निक्षेप, जलपूरण, कलश विधान, तब उसमें यथावसर सारी निर्दिष्ट वस्तुएँ डालकर प्रतिष्ठित करने का नाम कलश स्थापन है ।

पंचरत्नों के स्थान पर यथाशक्ति द्रव्य (धन) डालें । सभी पल्लव मिलें तो बहुत उत्तम, अन्यथा यथा प्राप्त उपचारों से पूजनादि करने में भी कोई हानि नहीं है । दो वस्त्र से लपटने का तात्पर्य जोड़ा वस्त्र (लाल व सफेद) से सारे कलश को लपेटें, केवल नारियल को ही नहीं लपेटें ।

पंचरत्नों के नाम सोना, हीरा, नीलम, पुखराज, मोती हैं । कहा गया है–

अभावे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत् ।।

अतः हेम (सोना) या उसका प्रचलित मूल्य कलश में रखने से सुविधा व शस्त्ररक्षा दोनों ही होती हैं।

सर्वे समुद्र इति चाऽऽपोहिष्ठादित्र्यृचेन च।

आमन्त्र्य कलशे तच्च स्थापयेद् वह्निकोणके।। 4।।

दर्शस्य देवतायाश्च सोमसूर्यस्वरूपकाः।

प्रतिमां स्वर्णजां नित्यं राजतीं ताम्रजां तथा।। 5।।

इसके बाद कलश में सभी तीर्थो, समुद्रों का आवाहन करें। इसका पौराणिक मन्त्र इस प्रकार है–

'सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।

आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः।।' इत्यादि।

पुनः निम्न मन्त्रों से कलश पर जल छिड़कें। आपोहिष्ठामयो भुवः। तानऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः। तस्य भाजयते हनः। उशतीरिवमातरः। तस्माद अरंग मामव। यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

इस प्रकार कलश को अग्निकोण में स्थापित करें। कलश पर अमावस्या के देवता सूर्य व चन्द्रमा की क्रमशः सोने व चाँदी की मूर्ति या ताम्र व चाँदी की मूर्ति बनवाकर अग्न्युत्तारण व प्राणप्रतिष्ठा करके स्थापित करें।

'आप्यायस्वेति, मन्त्रेण 'सविता' पश्चात्तमेव च।

उपचारैः समाराध्य ततो होमं समाचरेत्।। 6।।

समिधश्च चरुं विद्वान् क्रमेण जुहुयाद् व्रती।

भक्त्यासवितृमन्त्रेण सोमोधेनुश्च मन्त्रतः।। 7।।

अष्टोत्तर शतं वापि अष्टाविंशतिरेव वा।

त्रैयम्बकेन मन्त्रेण तिलान् व्याहृतिभिर्हुनेत्।। 8।।

शंकरस्याभिषेकं च कुर्यादाज्यावलोकनम्।

अभिषेकं तथा कुर्यात् दम्पत्योश्च सुपुत्रयोः।। 9।।

हिरण्यं रजतं चैव कृष्णाधेनुश्च दक्षिणाः।

ब्राह्मणान् भोजयेत् शक्त्या ततः क्षेममवाप्नुयात्।। 10।।

इसके बाद अमावस्या देवों की पूजा षोडशोपचार या कम से कम पंचोपचार से करें। पूजा मन्त्र इस प्रकार कहे गए हैं:–

(i) आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः।

भवा नः सम्प्रथस्तमः सखाष्वृधे।।

(ii) सविता पश्चात्तात् सविता पुरस्तात् । सवितोत्तरात्तात् ।

सविताधरात्तात् सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः । ।

इसके बाद शुद्ध चरु व सामग्री का भक्तिपूर्वक हवन करना चाहिए । हवन के मन्त्र इस प्रकार हैं–

(i) **आकृष्णेन रजसा** इत्यादि प्रसिद्ध सूर्यमन्त्र अथवा पूर्वोक्त पूजामन्त्र से सूर्य का हवन करें ।

(ii) सोमो धेनुः सोमोऽअर्व्वन्तमाशुः सोमोव्वीरङ्कर्म्मणण्यन्ददाति ।

सादन्यंव्विदत्थ्यः सभेयम्पितृश्रवर्णैय्यो ददाशदस्मै । ।

इस मन्त्र से चन्द्रमा या सोम का हवन करें ।

(iii) पश्चात् 'त्र्यम्बकं यजामहे' इत्यादि से तिल की आहुति दें ।

(iv) पश्चात् 'ॐ भूर्भुवः स्वः' इन व्याहृतियों से तिलों का हवन करें । प्रत्येक मन्त्र की 108 या 28-28 आहुतियाँ दें ।

हवन के बाद शंकर का अभिषेक (रुद्रसूक्त या नमक चमक द्वारा रुद्राभिषेक) करके, घी से छाया पात्र का दान कराएँ ।

तत्पश्चात् दम्पती व पुत्र का संयुक्त अभिषेक करें तथा स्विष्टकृत् आहुति दें । ब्राह्मण द्वारा उक्त सारी विधि कुशलतापूर्वक की जाएगी । योग्य विद्वान् ब्राह्मण द्वारा कराएँ, स्वयं विज्ञ व मन्त्रोच्चार कुशल हों तो स्वयं करें । दक्षिणा (दान) में काली गौ, सोना, चाँदी, दें । ब्राह्मणों को यथा शक्ति भोजन कराएँ । इस प्रकार अनिष्ट दूर होकर कल्याण होता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
दर्शशान्तिविचाराध्याय एकोननवतितमः । । 89 । ।

90

। । अथ कृष्णचतुर्दशीजन्माध्यायः । ।

पराशर उवाच–

कृष्णपक्ष चतुर्दश्याः षड्भागेषु फलं क्रमात् ।
जन्म चेत् प्रथमे भागे तदा ज्ञेयं शुभं द्विज ! । । 1 । ।
द्वितीये पितरं हन्ति मातरं च तृतीयके ।
चतुर्थे मातुलं हन्ति पंचमे वंशनाशनम् । । 2 । ।
षष्ठेतु धननाशः स्यादात्मनो नाश एव वा ।

तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिं कुर्यात् प्रयत्नतः ।। 3 ।।

पराशर बोले– कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के समस्त मान तिथि भोग को 6 से भाग दें। पहले षष्ठांश में जन्म हो तो शुभ है।

जातक दूसरे षष्ठांश में पिता को, तीसरे में माता को, चौथे में मामा को, पंचम में वंश को, छठे में धन या स्वयं को नष्ट करता है।

इसकी शान्ति विधानपूर्वक करनी चाहिए।

पूज्य देवता :–

शिवस्य प्रतिमां कुर्यात् सौवर्णीं कर्षसम्मिताम् ।

तदर्धार्धमितं वापि यथावित्तं मनोहराम् ।। 4 ।।

बालचन्द्रकिरीटां च श्वेतमाल्याम्बरान्विताम् ।

त्रिनेत्रां च वृषासीनां वराभयकरामथ ।। 5 ।।

पूजा के लिए शिवजी की सोने की मूर्ति बनवाएँ। 1 कर्ष, आधा कर्ष या चौथाई कर्ष अर्थात् 3 माशा तोल की मूर्ति बनाएँ। सिर पर बाल चन्द्रमा, सफेद माला व श्वेत वस्त्र धारण किए, तीन नेत्रों वाली, बैल पर आसीन, वर और अभय मुद्रा धारण किए हुए मूर्ति बनाएँ।

पूजा विधान :–

त्र्यम्बकं चेति मन्त्रेण पूजां कुर्यादतन्द्रितः ।

आवाह्य वारुणैर्मन्त्रैराचार्यो मन्त्रतत्त्ववित् ।।6 ।।

इमं मे वरुणेत्येवं तत्वायामीतिमन्त्रकैः ।

त्वन्नो अग्ने इत्यनया सत्वं नो इत्यृचापि च ।। 7 ।।

आग्नेयं कुम्भमारम्भ्य पूजयेत् भक्तितः क्रमात् ।

आनो भद्रेति सूक्तं च भद्रा अग्नेश्च सूक्तकम् ।। 8 ।।

जपत्वा पुरुषसूक्तं च कद्रुद्रेति तथा जपेत् ।

शंकरस्याभिषेकं च ग्रहपूजां च कारयेत् ।। 9 ।।

चारों दिशाओं में चार कलश स्थापित करें। अग्नि कोण में अलग से पाँचवाँ रुद्रकुम्भ स्थापित करें। कलश स्थापन की विधि से कलश रखें। तब अग्नि कोण के कलश से आरम्भ कर बारी–बारी से प्रदक्षिण क्रम से (बाएँ से दाएँ) चलते हुए **वारुण मन्त्रों** से आवाहन करें।

पश्चात् 'त्र्यम्बकं यजामहे' इत्यादि मन्त्र त्र्यम्बक मन्त्र से भक्तिभाव से शिव की पूजा करें।

पुनः 'इमं मे वरुण' 'तत्त्वायामी इत्यादि' मन्त्रों से, 'त्वन्नो अग्ने व 'सत्वन्नो अग्ने' मन्त्रों से सभी कलशों में पूजा आवाहन करें।

पश्चात् 'आनोभद्रा' अथवा 'भद्राअग्ने' व पुरुषसूक्त का पाठ करें। पश्चात् 'कद्रुद्र' इत्यादि सूक्त का पाठ करें।

पश्चात् शिवजी का रुद्रसूक्त से अभिषेक व ग्रहों की यथाविधि पूजा करें।

वरुण मन्त्र :-

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशं स मा नऽआयुः प्रमोषीः ।।

वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्क्कम्भसर्ज्जनी स्त्थो व्वरुणस्यऽ-ऋतसदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद ।

त्र्यम्बक मन्त्र :-

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।।

अन्य मन्त्र- (i) **इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामव-स्युराचके ।**

(ii) **त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ट्ठाः ।**

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ऽंसि प्रमुमुग्ध्यस्म्मत् ।

(iii) **भद्रा अग्नेर्वध्र्यश्वस्य संदृशो वामी प्रणीतिः सुरणा उपेतयः ।**

यदी सुमित्रा विशो अग्ने इन्धते घृतेनाहुतो जरते दविद्युतत् ।।

(iv) स त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टठो ऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ ।

अवयक्ष्व नो व्वरुण ँ रराणो व्वीहि मृडीकः सुह्वो नऽएधि ।।

पुरुष सूक्तः- रुद्राष्टाध्यायी का अध्याय 2, सहस्रशीर्षा इत्यादि 16 मन्त्र ।

आनोभद्राइत्यादिः- प्रसिद्ध स्वस्तिवाचन मन्त्र सब को विदित ही हैं। कुद्रुद्रेति मन्त्र इस प्रकार है-

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीह्वुष्टतमाय तव्यसे । वोचेम शंतमं ह्रदे ।

हवन की विधि :-

समिदाज्यचरूश्चैव तिलमाषाश्च सर्षपान् ।

अश्वत्थप्लक्षपालाश खदिराः समिधः शुभाः ।। 10 ।।

अष्टोत्तरशतं वह्नौ जुहुयाद् विधिपूर्वकम् ।

अष्टाविंशतिसंख्या वा होमं कुर्यात् पृथक् पृथक् ।। 11 ।।

मन्त्रेण त्र्यम्बकेनाथ तिलान् व्याहृतिभिस्तथा ।

ग्रहहोमं च विधिवत् कुर्यात् क्षेमं ततो भवेत् ।। 12 ।।

अभिषेकं च जातस्य तत्पित्रोश्चापि मन्त्रवित् ।

कुर्यात्ततो यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ।।13 ।।

समिधा, घी व चरु, तिल, काले उड़द, सरसों से आहुतियाँ दें। पीपल, प्लक्ष (पिलखन) ढाक, खैर की लकड़ी हवन में प्रयुक्त करें। 108 या 28 आहुतियाँ सब मन्त्रों की अलग–अलग दें। बाद में त्रम्बक मन्त्र से व तीनों व्याहृतियों (भूर्भुवःस्वः) से भी तिलों का हवन करें। सब ग्रहों के लिए भी विहित ढंग से हवन करें। तब कल्याण होता है। माता–पिता व जातक का अभिषेक, ब्राह्मण भोजन, छायापात्र दान आदि सब यथाविधि करें। सब विधि किसी योग्य मन्त्रवेत्ता ब्राह्मण से सम्पन्न कराएँ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
कृष्णचतुर्दशी–जन्माध्यायो नवतितमः ।। 90 ।।

91

। अथ भद्रादिदुर्योगजन्मशान्त्यध्यायः ।

पराशर उवाच–

अथाहं सम्प्रवक्ष्यामि भद्रायामवमे तथा ।

व्यतीपातादि दुर्योगे यमघण्टादिके च यत् ।। 1 ।।

जन्माशुभफलं प्रोक्तं तस्य शान्ति विधिं द्विज ! ।

प्राप्ते प्रसूतिदुर्योगे शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः ।। 2 ।।

दैवज्ञैर्दर्शिते वापि सुलग्ने सुदिने गृही ।

पूजनं देवतानां च ग्रहाणां यजनं तथा ।। 3 ।।

पराशर बोले– अब मैं भद्रा (विष्टिकरण) तिथिक्षय, व्यतीपात आदि पूर्वोक्त दुर्योगों में जन्म होने के अशुभ फल की निवृत्ति हेतु शान्ति विधि कहता हूँ।

ऐसे योगों में जन्म होने पर बुद्धिमान् दैवज्ञ को शान्ति विधान के लिए अवश्य बताना चाहिए।

शान्ति के लिए शुभ दिन, शुभ लग्न में देव पूजन व ग्रहों का यज्ञ करना चाहिए।

वैधृति, व्यतिपात आदि क्रान्तिसाम्य योगों व संक्रान्ति जन्म में शान्ति की विधि विशेषतया अगले अध्याय में बताई जा रही है।

दीपं शिवालये भक्त्या गोघृतेन प्रदापयेत्।

शंकरस्याभिषेकं च अश्वत्थस्य प्रदक्षिणम्।। 4।।

गाणपत्यं पुरुषसूक्तं सौरं मृत्युंजयं शुभम्।

शान्तिजाप्यं पुनश्चैव कृत्वा मृत्युंजयी भवेत्।। 5।।

हवनं विष्णुमन्त्रेण शतमष्टोत्तरं सुधीः।

ब्राह्मणान् भोजयेत् भक्त्या ततः कल्याणमाप्नुयात्।। 6।।

मूले वा सार्पगण्डे वा कुर्यादेतत् प्रयत्नतः।

आयुर्वृद्धिफलार्थाय गण्डदोषप्रशान्तये।। 7।।

भद्रा, तिथिक्षय व अन्य दुर्योगों (कुलिक, मृत्यु आदि) योगों में गाय के घी से शिवालय में दीपदान करें। शंकरजी का अभिषेक, पीपल के वृक्ष की पूजा के बाद 108 प्रदक्षिणाएँ पुनः गणपति सूक्त, पुरुषसूक्त, सूर्य सूक्त, मृत्युंजय मन्त्र का यथाशक्ति जप करके शान्ति पाठ करें, तब मृत्यु का निवारण होता है।

पश्चात् विष्णु भगवान् के मन्त्र से 108 आहुतियाँ दें। यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराएँ।

यदि उक्त दुर्योगों के साथ गण्ड नक्षत्र, लग्न गण्ड, तिथिगण्ड या मूल श्लेषा नक्षत्र भी पड़ें तो विशेष शान्ति करानी चाहिए। अर्थात् मूल शान्ति के साथ ही यह शान्ति विधान भी करें।

गाणपत्य सूक्त में **'गणानां त्वा गणपति हवामहे'** इत्यादि गणेश मन्त्रों एवं **'नमो गणेभ्यो** आदि का पाठ करें।

पुरुष सूक्त रुद्राष्टाध्यायी का द्वितीय अध्याय है। मृत्युंजयमन्त्र पहले कह चुके हैं। शान्ति पाठ में **'द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः'** इत्यादि शान्ति पाठ या रुद्री का शान्त्यध्याय पढ़ें।

सौरसूक्त रुद्राष्टाध्यायी का **'विभ्राड् बृहत्पिबतु'** इत्यादि अध्याय है। इसमें 14 मन्त्र हैं। अथवा ऋग्वेदीय **'सवितृ सूक्त'** का पाठ करें।

विष्णु मन्त्र **'इदं विष्णुविचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्'** इत्यादि मन्त्र या **'विष्णो रराटमसि विष्णो'** इत्यादि हैं।

रुद्राभिषेक में **'नमस्ते रुद्र मन्यव'** इत्यादि 16 यजुः मन्त्रों का प्रयोग करें। रुद्रीय पंचमाध्याय में ये मन्त्र हैं। इन्हीं का नाम रुद्रसूक्त भी है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां भद्रादिदुर्योग–शान्त्यध्याय एकनवतितमः।। 91।।

।।अथ संक्रान्तिजन्मशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच–

कुमारजन्म काले तु व्यतीपातश्च वैधृतिः ।
संक्रान्तिश्च रवेस्तत्र जातो दारिद्र्यकारकः ।।1।।
नवग्रह मखं कुर्यात् तस्य दोषोपशान्तये ।
शान्ति कर्मणि संजाते तत्र दोषो न कश्चन ।।2।।
घोराध्वांक्षी महोदर्यो मन्दामन्दाकिनी तथा ।
मिश्रा च राक्षसी सूर्य संक्रान्तिः सूर्यवासरात् ।।3।।
संक्रान्तौ च नरो जातः दुःख दारिद्र्यभाक् भवेत् ।
अश्रियं मृत्युमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।।4।।

पराशर बोले– बालक के जन्मसमय व्यतीपात, वैधृति सक्रान्ति हो तो परम अशुभ हैं। संक्रान्ति से ठीक संक्रान्ति समय से 16 घड़ी (6 घंटे 24 मिनट) पहले व इतनी ही घड़ियाँ, बाद तक समझें।

संक्रान्ति शान्ति में नवग्रहों का यज्ञ करके शान्ति विधान करें, तब कुछ भी दोष नहीं होता। अन्यथा दारिद्र्य की अधिकता होती है। रविवारादि क्रम से जिस वार को संक्रान्ति हो, तब उस संक्रान्ति के नाम क्रमशः घोरा, ध्वांक्षी, महोदरी, मन्दा, मन्दाकिनी, मिश्रा, राक्षसी होते हैं। इनमें भयंकर नाम वाली संक्रान्ति विशेष दोषदायिनी है।

संक्रान्ति समय में उत्पन्न जातक दुःख व दरिद्रता का भागी होता है। सर्वत्र अलक्ष्मी व अश्री को प्राप्त करके मृत्यु जैसे परम अनिष्ट का भागी भी हो सकता है।

संक्रान्ति का जो समय पंचांग में दिया रहता है, वह सूर्य केन्द्र का अगली राशि में जाने का समय है। इसके आस–पास अधिक कुप्रभाव समझें। इस केन्द्रस्पर्श समय में 6.24 घंटे घटाने से संक्रान्ति का आरम्भ व इतने ही घंटे जोड़ने से समाप्ति काल आता है। इसी आधार पर पुण्यकाल का निश्चय किया जाता है।

गृहस्य पूर्वदिग्भागे गोमयेनानुलिप्य च ।
स्वलंकृतप्रदेशे तु ब्रीहिराशिं प्रकल्पयेत् ।।5।।

पंचद्रोणमितं धान्यैस्तदर्धं तण्डुलैस्तथा ।

तदर्धं च तिलैः कुर्याद्राशिं च द्विजसत्तम ! । । 6 । ।

पृथक् त्रितयराशौ तु लिखेदष्टदलं बुधः ।

पुण्याहं वाचयित्वा तु आचार्यं वृणुयात् पुरा । । 7 । ।

धर्मज्ञं मन्त्रतत्त्वज्ञं शान्तिकर्मणि कोविदम् ।

पंचांगं भूषणं दद्यात् पट्टवस्त्रांगुलीयकम् । । 8 । ।

घर में पूर्व दिशा में गोबर से लीपकर, सुसज्जित मण्डप में पाँच द्रोण तोल से धान, $2\frac{1}{2}$ द्रोण तिल से तीन ढेर बनाएँ ।

इन पर पृथक् तीन अष्टदल कमल बनाकर, पुण्याहवाचन करके, आचार्य का ववरण करें । आचार्य, धर्मज्ञ, मन्त्रशास्त्री व शान्ति कार्य का विशेषज्ञ होना चाहिए ।

आचार्य को वरण में पाँच वस्त्र या पाँच भूषण, रेशमी वस्त्र व अगूँठी अवश्य दें ।

चौथा वारुण कलश अलग से ईशान कोण में स्थापित करें ।

घटस्थापन विधि :–

राशिषु स्थापयेत् कुम्भान् अव्रणान् सुमनोहरान् ।

तीर्थोदकेन सम्पूर्य समृदौषधपल्लवम् । । 9 । ।

पंचगव्यं क्षिपेत् तत्र वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ।

कुम्भोपरि न्यसेत् पात्रं सूक्ष्मवस्त्रसमन्वितम् । । 10 । ।

प्रतिमां स्थापयेत्तत्र साधिप्रत्यधिदैवतम् ।

अधिदेवो भवेत् सूर्यश्चन्द्रः प्रत्यधिदेवता । । 11 । ।

इन तीनों धान्य राशियों पर बिना छेद के सुन्दर कलश स्थापित करें । उनमें तीर्थजल, मृत्तिका, औषाधियाँ, पंच रत्न, पंचगव्य, पल्लव आदि लगाकर जोड़ा वस्त्रों से लपटें ।

कलश के ऊपर बारीक वस्त्र से लपेटकर एक–एक पात्र भी रखें । उन पात्रों में वक्ष्यमाण देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित करें ।

सूर्य को अधिदेव के रूप में व चन्द्रमा की मूर्ति प्रत्यधिदेव के रूप में स्थापित करें ।

चन्द्रादित्याकृती पार्श्वे मध्ये संक्रान्तिमर्चयेत् ।

प्रतिमापूजनं पूर्वं वस्त्रयुग्मं निवेदयेत् । । 12 । ।

कुल तीन स्थापित कलशों में अगल–बगल के दो कलशों पर सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति रखकर पूजें तथा मध्य कलश में संक्रान्ति का पूजन करें। पूजन के उपरान्त उन्हें यथाशक्ति 2-2 वस्त्र भेंट करें या रक्त सूत्र, कलावे से ही वस्त्र युग्मों को अर्पण करें। सभी शान्तिकार्यों में सामर्थ्य होने पर लोभ करना अनुचित है तथा कार्य साधन की हानि होती है।

ततोव्याहृति पूर्वेण तत्तन्मन्त्रेण पूजयेत्।
त्रैयम्बकेन मन्त्रेण प्रधानप्रतिमां यजेत्।। 13।।
'उत्सूर्य' इति मन्त्रेण सूर्यपूजां समाचरेत्।
आप्यायस्वेति मन्त्रेण सोमपूजां समाचरेत्।। 14।।
उपचारैः षोडशभिर्यद्वा पंचोपचारकैः।
अर्चितं गन्धपुष्पाद्यैर्गुडनैवेद्यमर्पयेत्।। 15।।
मृत्यंजयेन मन्त्रेण प्रधानप्रतिमां स्पृशन्।
अष्टोत्तर सहस्रं वा अष्टोत्तरशतं तु वा।। 16।।
अष्टाविंशति वा चाथ प्रजप्याथ स्वशक्तितः।
आनोभद्रेति सूक्तं च भद्रा अग्नेश्च सूक्तकम्।। 17।।
जपेच्च पौरुषं सूक्तं त्रैयम्बकमतः परम्।
कुम्भं स्पृष्ट्वा चतुर्दिक्षु जपं कुर्युस्त्वथर्त्विजः।। 18।।
कुम्भस्य पश्चिमे देशे स्थण्डिलेऽग्निं प्रकल्पयेत्।
त्रैयम्बकेन मन्त्रेण समिदाज्यचरून् हुनेत्।। 19।।
पूर्वोक्तसंख्यया होमं कुर्याच्छक्त्या द्विजोत्तम!।
मृत्युंजयेन मन्त्रेण तिलहोमं समाचरेत्।। 20।।

(i) सूर्य, चन्द्रमा के मन्त्रों से व्याहृति पूर्वक (ॐ भूर्भुवःस्वः) अर्थात् तीनों व्याहृतियों से युक्त अपने अपने मन्त्रों से पूजा करें।

(ii) प्रधान प्रतिमा की पूजा 'त्र्यम्बकं यजामहे' इत्यादि मन्त्र से करें। सूर्य की पूजा के लिए 'उत्सूर्य' इत्यादि मन्त्र का प्रयोग करें। चन्द्रमा की पूजा में पूर्वोक्त आप्यायस्व' इत्यादि मन्त्र का प्रयोग करें।

सब पूजा षोडशोपचार या पंचोपचार से करें। नैवेद्य गुड़ युक्त समर्पित करें। तत्पश्चात् प्रधानदेव की पूजा हेतु उसकी प्रतिमा को स्पर्श करते हुए 'त्र्मम्बकं यजामहे' मन्त्र का 1008 या 108 या 28 बार जप करें।

(iii) पश्चात् 'आनोभद्राःक्रतवो' इत्यादि भद्रसूक्त एवं 'भद्रा अग्ने' इत्यादि पूर्वोक्त मन्त्र का जप करें।

(iv) तत्पश्चात् पुरुष सूक्त का जप करके पुनः त्र्यम्बक मन्त्र का जप करें। अथवा चार ब्राह्मण चारों दिशाओं में बैठकर कलशों का स्पर्श करते हुए बारी–बारी से या समवेत रूप से कर लें।

(v) कलशों से पश्चिम में स्थण्डिल (रेत की वेदी) पर अग्नि प्रज्वलित करें। तब सब देवताओं के मन्त्रों से 108 या 28 घी की आहुतियाँ दें। मृत्युंजय मन्त्र के हवन में तिल की आहुतियाँ दें।

सूर्य मन्त्र :–

उत्सूर्यो बृहदर्चींष्यश्रेत् पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम्।
समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्॥

समुद्रज्येष्ठाः सूक्तेन चापोहिष्ठा ऋचेन च।
अक्षिभ्यामिति सूक्तेन पावमानीभिरेव च॥ 21॥
त्रैयम्बकेन उत्सूर्य आप्यायस्वेतिमन्त्रतः।
सुरास्त्वामितिमन्त्रेण त्वभिषेकं समाचरेत्॥ 22॥
यजमानः स्त्रियायुक्त आज्यावेक्षणमाचरेत्।
गोदानं वस्त्रदानं च स्वर्णदानं विशेषतः॥ 23॥
ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या मिष्टान्नैः शतसंख्यया।
एवं यः कुरुते मर्त्यो नैवदुःखमवाप्नुयात्॥ 24॥

इसके बाद **'समुद्रज्येष्ठाः'** इत्यादि सूक्त से, **'आपोहिष्ठामयो भुवः'** इत्यादि तीन ऋचाओं से, **'अक्षिभ्यामित्यादि** सूक्त से 'पवमान सूक्त' से त्र्यम्बक, मन्त्र से **'उत्सूर्य'** इत्यादि मन्त्र से **आप्यायस्व'** इत्यादि मन्त्र से, **'सुरास्त्वामभिषिंचतु'** इत्यादि पौराणिक मन्त्रों से यजमान का सपत्नीक अभिषेक करें।

छायापात्र दान घी से करें। गोदान, वस्त्रदान, सुवर्णदान, 100 ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराएँ।

इस प्रकार शान्ति विधान करने से मनुष्य सब प्रकार के दोष से मुक्त होता है।

पावमान सूक्त– ॐ पवमानः सुवर्जनः। पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोतासपुनातु मा।

पुनन्तु मा देवजनाः। पुनन्तु मनवो धिया। पुनन्तु विश्व आयवः। जातवेदः पुनीहिमा। इत्यादि 6 मन्त्र पवमान सूक्त कहलाते हैं। मन्त्रज्ञ ब्राह्मण इन्हें जानते ही हैं।

समुद्र ज्येष्ठा –

सलिलस्य मध्यात् पुनानायन्त्यनिविशमानाः ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिहमामवन्तु ।।

अक्षिभ्यामिति–

अक्षिभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छु(चु) बुकादधि ।
यक्ष्मशीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहामि ते ।।
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहुभ्यां विवृहमिते ।।
हृदयात्ते परिक्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम् ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीहनो यक्तस्ते विवृहामसि ।।
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशनेर्नाभ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्
यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदं भंससो विवृहामिते ।।
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो विंवृहामिते ।।
मेहनाद् वनंकरणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्त्तमिदं विवृहामिते ।
अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्त्तमिदं विवृहामि ते ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां संक्रान्ति–जन्माध्यायो द्विनवतितमः ।।92।।

93

।। अथ एकनक्षत्रजन्मशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच–

अथ यद्यैकनक्षत्रे भ्रात्रोर्वा पितृपुत्रयोः ।
प्रसूतिश्च तयोर्मृत्युरथवैकस्य निश्चयः ।। 1 ।।

तत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि गर्गादिमुनिभाषिताम् ।

सुदिने शुभनक्षत्रे चन्द्रताराबलान्विते ।। 2 ।।

रिक्ताविष्टिविवर्ज्ये तु समये शान्तिमाचरेत् ।।

यदि पिता व पुत्र पुत्री या माता व सन्तान अथवा दो भाइयों या भाई–बहनों का एक नक्षत्र में ही जन्म हो तो उनमें से एक को मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु होती है ।

गर्गाचार्यादि द्वारा प्रोक्त शान्ति विधान कहता हूँ। शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, चन्द्रबल व ताराबल देखकर, रिक्ता तिथि के अतिरिक्त तिथियों में, भद्रा करण के अतिरिक्त समय में शान्ति विधान करना चाहिए ।

भ्रात्रोः व पितृपुत्रयोः में द्वन्द्व समास की सामर्थ्य में स्त्रीलिंग पुल्लिंग की अपेक्षा न रखते हुए माता–पिता व सन्तान अर्थ लेना बहुमत सिद्ध व शिष्ट सम्प्रदाय है ।

अग्नेरीशान दिग्भागे नक्षत्रप्रतिमां शुभाम् ।। 3 ।।

तन्नक्षत्रोक्त मन्त्रेण पूजयेत् कलशोपरि ।

रक्तवस्त्रेण संच्छाद्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ।। 4 ।।

स्वस्वशाखोक्तमार्गेण कुर्यादग्निमुखं ततः ।

पुनस्तेनैव मन्त्रेण हुनेदष्टोत्तरं शतम् ।। 5 ।।

प्रत्येकं समिदन्नाज्यैः प्रायश्चित्तान्तमेव च ।

अभिषेकं ततः कुर्यादाचार्यश्च द्वयोरपि ।। 6 ।।

ईशान कोण में कलशस्थापन करके उस पर नक्षत्र देवता की प्रतिमा सोने या चाँदी से निर्मित करके रखें। नक्षत्र के देवता के मन्त्र से वहाँ पर पूजा करें। तब लाल कपड़े से मूर्ति को लपेटकर सम्पूर्ण कलश को दो वस्त्रों में लपेट लें। पश्चात् वैदिक विधि से अग्नि प्रज्ज्वलित करके, नक्षत्र मन्त्र से 108 आहुतियाँ दें। समिधा, अन्न (चरू) आदि से हवन करें। पश्चात् प्रायश्चित्ताहुति, स्विष्टकृत आहुति दें। तब आचार्य एक नक्षत्र जात दोनों का अभिषेक करें।

पंचवारुण होम 'त्वन्नोऽग्ने' इत्यादि पांच आहुति, व्याहृतिहोम करें, अभिषेक से पहले पुनः करें। यही प्रायश्चित्त होम है ।

ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यादाचार्याय विशेषतः ।

भोजयेद् ब्राह्मणान् भक्त्या वित्तशाठ्यविवर्जितः ।।7 ।।

देवताप्रतिमादानं धान्यवस्त्रादिभिः सह ।

यानशय्यासनादींश्च दद्यात्तद्दोषशान्तये ।।8 ।।

ऋत्विकों (कर्मकर्त्ता ब्राह्मणों) को दक्षिणा दें । आचार्य को विशेष दक्षिणा दें । लोभ न करते हुए ब्राह्मणों को भोजन कराएँ । देवता (नक्षत्र देवता) की प्रतिमा का दान करें । अनाज व वस्त्र का दान करें । साथ ही सामर्थ्य होने पर वाहन, बिस्तर, कुर्सी आसन आदि का भी दान करें ।

नक्षत्र के देवता का वैदिक मन्त्र ही नक्षत्र मन्त्र कहलाता है । सब नक्षत्रों के मन्त्र दिए जा रहे हैं । सभी शान्ति कार्यो में उल्लेख न होने पर सामान्यतः गणेशाम्बिका, ग्रहपूजनादि सर्वत्र विहित समझें ।

1. **अश्विनी**—अश्विना तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वतीवीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्रायदद्युरिन्द्रयम् ।

2. **भरणी**—यमाय त्वांगिरस्यते पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे ।

3. **कृत्तिका**—अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्यामयम् । अपा ँ रेता ँ सिजिन्वतिः ।

4. **रोहिणी**— ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमः सुरुचे वेनआयवः सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विधः ।

5. **मृगशिरा**—इमं देवा असपत्नं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय इममुष्यैपुत्रममुष्यै विश एषवोऽमीराजा सोमो—ऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ।

6. **आर्द्रा**—नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः ।

7. **पुनर्वसु**—अदिति द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिः माता स पिता स पुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदिति जातिमादितिर्जनित्वम् ।

8. **पुष्य**—बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यदीदयच्छ वस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

9. **श्लेषा**—नमोऽस्तु सर्वेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ।

10. **मघा**—पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । प्रतिपतामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्न पित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।

11. **पू. फा.** भगप्रणोतभर्गसत्यराधो भगेमाधियमुदवाददन्न भगये प्रणोजनयगोभि रश्वैर्भयप्रनृभिर्नृवनस्याम ।

12. **उ. फा.**—देवावध्वर्यूश्चागतस्थेन सूर्यात्वचा मध्वायणं समंजाथो तं प्रत्नया यं वेनाश्चित्रं देवानाम् ।

13. **हस्त**—विभ्राड् बृहत् पिबतु सौम्य मध्यायुर्दध यज्ञ पतिं च विह्रुतम् । वातजूतो यो अभिरक्षतुत्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ।

14. **चित्रा**–त्वष्टा तुरीयोअद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धनम् । द्विपदा छन्दऽइन्द्रियमुक्षा गौत्रवयोदधः ।

15. **स्वाति**–वयो ये ते सहस्रिणो स्था सस्ते त्रिरागदि नियुत्वाम सोम पीतये ।

16. **विशाखा**–इन्द्राग्नी आगत सुतं गीमिनेमो वरेणयभूः । अस्य पातं धियेषिता ।

17. **अनुराधा**–नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश सत् ।

18. **ज्येष्ठा**–त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव । शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रः ँ स्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्रः ।

19. **मूल**–मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि ँ स्वेयोनावमारुषा । तां विश्वदेवर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुंचतु ।

20. **पू. षा.**–अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः । अपाम्मार्ग त्वमस्मदन्दुस्वपय ँ सुवः ।

21. **उ. षा.**–विश्वेदेवा श्रृणुतेम हव मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टम् । अग्नि–जिह्वा उतवाय जत्रा आसद्यास्मिन्वा मादयध्वम् ।

22. **श्रवण**–विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नपत्रस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोः धुवोसि वैष्णवमसि विष्ण्वे त्वा ।

23. **धनिष्ठा**–वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ।

24. **शतभिषा**–वरुण स्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ।

25. **पू. भा.**–उतनोऽहिर्बुध्न्य नृणोत्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवाना स्तुता मन्त्रा कविशस्ता अवन्तु ।

26. **उ. भा.**–शिवोनामासि स्वधिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामहि सीः नवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।

27. **रेवती** – पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ।

अभिजित नक्षत्र का स्वामी ब्रह्मा है, अतः रोहिणी वाला मन्त्र ही अभिजित का भी मन्त्र है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्या-यामे कनक्षत्रजन्मशान्त्यध्यायस्त्रिनवतितमः ।। 93 ।।

।। अथ ग्रहणजन्मशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच–

सूर्येन्दुग्रहणे काले येषां जन्म भवेद्द्विज! ।
व्याधिः कष्टं च दारिद्र्यं तेषां मृत्युभयं भवेत् ।। 1 ।।
अथ शान्तिं प्रवक्ष्यामि नराणां हितकाम्यया ।
सूर्योन्द्वोश्च ग्रहणे हि यस्मिन्नृक्षे प्रजायते ।। 2 ।।
तन्नक्षत्रपते रूपं सुवर्णेन प्रकल्पयेत् ।
सूर्यग्रहे सूर्यरूपं सुवर्णेन स्वशक्तितः ।। 3 ।।
चन्द्रग्रहेचन्द्ररूपंरजतेनतथैवच ।
राहुरूपं प्रकुर्वीत सीसकेन विचक्षणः ।। 4 ।।

पराशर बोले– सूर्य व चन्द्र ग्रहण के समय जिनका जन्म हो, उन्हें व्याधि, कष्ट, दरिद्रता और मृत्युभय होता है । लोकहितार्थ मैं उसकी शान्ति कहता हूँ । सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो सूर्य की सुवर्णमयी व चन्द्रग्रहण हो तो चन्द्रमा की चाँदी की मूर्ति बनाएँ ।

साथ ही राहु की मूर्ति सीसे (काँसा आदि) से बनाएँ । इस प्रकार नक्षत्रनाथ, राहु व सूर्य या चन्द्र की, कुल तीन मूर्तियाँ बनाना आवश्यक है ।

शुचौ देशे समं स्थानं गोमयेन प्रलेपयेत् ।
तत्र च स्थापयेद् वस्त्रं नूतनं सुमनोहरम् ।। 5 ।।
त्रयाणां चैव रूपाणां स्थापनं तत्र कारयेत् ।
रक्ताक्षतं रक्तगन्धं रक्तपुष्पाम्बराणि च ।। 6 ।।
सूर्यग्रहे प्रदातव्यं सूर्यप्रीतिकरं च यत् ।
चन्द्रग्रहे प्रदातव्यं चन्द्रप्रीतिकरं च यत् ।। 7 ।।
श्वेतवस्त्रं श्वेतमाल्यं श्वेतगन्धाक्षतादिभिः ।
राहवे चैव दातव्यं कृष्णपुष्पाम्बराणि च ।। 8 ।।
दद्यान्नक्षत्र नाथाय श्वेतगन्धानुलेपनम् ।

पवित्र स्थान गोबर से लीपकर वहाँ पर सुन्दर कपड़ा बिछाएँ । कपड़े पर तीनों पूर्वोक्त मूर्तियाँ रखें ।

सूर्य पर रोली से रंगे लाल चावल, लाल चन्दनादि गन्ध, लाल फूल व सूर्य की प्रसन्नतार्थ गेहूँ, गुड़, लाल कपड़ा, ताँबा आदि भी रखें।

चन्द्रमा पर सफेद अक्षत, सफेद फूल, सफेद चन्दन आदि व चन्द्रमा के दान की वस्तुएँ चावल, बूरा, सफेद वस्त्र, मोती आदि रखें। राहु की पूजा काले फूल व काले वस्त्र से करें। यहाँ काला व नीला दोनों ग्रहण हैं।

नक्षत्रपति को सफेद चावल गन्धादि चढ़ाएँ। गन्ध में मूल रूप से चन्दन का ग्रहण है। उसके अभाव में गंगारज या गोपी चन्दन आदि चढ़ा सकते हैं।

पूजा मन्त्र :–

सूर्यं सम्पूजयेद् धीमानाकृष्णेति च मन्त्रतः।। 9।।
तथा चन्द्रं इमं देवा इति मन्त्रेण भक्तितः।
दूर्वाभिः पूजयेद् राहुं कयान इति मन्त्रतः।। 10।।
नक्षत्र नाथमन्त्रेण नक्षत्रेशं प्रपूजयेत्।

सूर्य पूजा में 'आकृष्णेन रजसा' आदि मन्त्र, चन्द्र के लिए 'इमं देवा' आदि मन्त्र, राहु के लिए दूर्वा चढ़ाते समय 'कयानश्चित्रा' आदि मन्त्र पढें। ये मन्त्र प्रसिद्ध ही हैं।

नक्षत्र स्वामी के पूर्वोक्त मन्त्र से नक्षत्रेश की पूजा करें।

हवन की समिधा :–

सूर्येन्द्वोरर्कपलाशैः समिद्भिर्जुहुयाद्बुधः।। 11।।
तथा च राहोः प्रीत्यर्थं दूर्वाभिः संहुनेत् क्रमात्।
ब्रह्मवृक्षसमिद्भिश्च भेशाय जुहुयात् पुनः।। 12।।
आज्येन चरुणा चैव तिलैश्च जुहुयात्ततः।
अभिषेकं ततः कुर्याज्जातस्य कलशोदकैः।। 13।।

हवन में सूर्य के लिए आक, चन्द्रमा के लिए ढाक, राहु के लिए दूब से हवन करें। नक्षत्र के लिए पीपल या बड़ (ब्रह्म वृक्ष) की समिधा लें। घी, सामग्री व तिलों से हवन करके, कलश जल से यजमान व बालक का अभिषेक करें।

आचार्यं पूजयेद्भक्त्या सुशान्तो विजितेन्द्रियः।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु प्रणिपत्य क्षमापयेत्।। 14।।
अनेन विधिना शान्तिं कृत्वा सम्यग् विशेषतः।
सर्वविघ्नं विनिर्जित्य सौभाग्यं लभते नरः।। 15।।

इत्थं ग्रहणजातानां सर्वारिष्टविनाशनम् ।

कथितं भार्गवेणेदं शौनकाय महात्मने ।। 16 ।।

पश्चात् स्थिर चित्त से आचार्य का सत्कार पूजनादि करके, अपनी सामर्थ्यानुसार ब्राह्मणों को भोजन कराएँ । ब्राह्मणों को प्रणाम करके क्षमा याचना करें । इस विधि से शान्ति करने पर मनुष्य के सब अरिष्ट दूर होते हैं और सौभाग्य बढ़ता है । यह शान्ति विधान भृगुजी ने शौनक को कहा था ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां ग्रहणजन्मशान्त्यध्यायश्चतुर्नवतितमः ।। 94 ।।

95

।। अथ गण्डान्तशान्त्यध्यायः ।।

गण्डान्त लक्षण :–

तिथिनक्षत्रलग्नानां गण्डान्तं त्रिविधं मतम् ।

जन्मयात्राविवाहादौ भवेत् तन्निधनप्रदम् ।। 1 ।।

पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथ्योः सन्धौ नाडीचतुष्टयम् ।

अत ऊर्ध्वं च मैत्रेय ! तिथिगण्डान्तमुच्यते ।। 2 ।।

रेवतीदास्रयोः सार्पमघयोः शाक्रमूलयोः ।

सन्धौ नक्षत्रगण्डान्तमेवं नाडी चतुष्टयम् ।। 3 ।।

मीनाजयोः कर्किहर्योर्लग्नयोरलिचापयोः ।

सन्धौ च लग्नगण्डान्तमत ऊर्ध्वं घटीमितम् ।। 4 ।।

एषुचाभुक्तमूलाख्यं महाविघ्नप्रदं भवेत् ।

इन्द्रराक्षसयोः सन्धौ पंचाष्टघटिकाः क्रमात् ।।5 ।।

तिथि, नक्षत्र व लग्न के भेद से तीन प्रकार का गण्डान्त होता है । इस गण्डान्तकाल का जन्म, यात्रा व विवाह में परम अनिष्टकारक फल होता है ।

(i) पूर्णा तिथि (5.10.15) व नन्दा (1.6.11) तिथियों की सन्धि अर्थात् पूर्णा के अन्त की 2 घड़ी व नन्दा के आरम्भ की 2 घड़ियाँ, कुल 4 घड़ी का (48-48 मिनट) तिथिगण्डान्त है ।

(ii) रेवती व अश्विनी, ज्येष्ठा व मूल, श्लेषा व मघा की सन्धि की चार घड़ियाँ (48-48 मिनट) नक्षत्रगण्डान्त होती हैं ।

(iii) मीन व मेष लग्न, कर्क व सिंह लग्न, वृश्चिक व धनु लग्न की कुल 1 घड़ी अर्थात् सन्धि में आधी–आधी घड़ी या 12-12 मिनट 'लग्न गण्डान्त' कहलाती है ।

(v) इन गण्डान्तो में भी ज्येष्ठा के अन्त की 5 घड़ी व मूल के आरम्भ की 8 घड़ी कुल 13 घड़ी का समय 'अमुक्त मूल' कहलाता है । यह सविशेष कष्टप्रद व हानिकारक होता है ।

तिथि गण्डान्त शान्ति विधान :–

अथगण्डान्त जातस्य शिशोः शान्ति विधिं ब्रुवे ।
अभुक्तेतर जातस्य सूतकान्त्यदिने पिता ।। 6 ।।
शान्तिं शुभेऽह्नि वा कुर्यात् पश्येत्तावन्न तं शिशुम् ।
तिथिगण्डे वृषं दद्यात् धेनुं नक्षत्र गण्डके ।। 7 ।।
कांचनं लग्नगण्डान्ते दद्याद्दोषापनुत्तये ।
आद्यभागे शिशोः कुर्यात् पितश्चाप्यभिषेचनम् ।। 8 ।।
अपरत्र शिशोः मातुरभिषेकं च कारयेत् ।
कुर्याच्छान्तिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजां बुधः ।। 9 ।।
नक्षत्राधिपते रूपं कृत्वा वस्त्रद्वयान्वितम् ।। 10 ।।

(i) तिथि या लग्न गण्डान्त में जन्म होने पर (अभुक्तमूल की अवधि के अतिरिक्त) सूतक निबट जाने पर शुभ दिन में पिता गण्डान्त शान्ति करे । शान्ति से पहले पिता पुत्र का मुख न देखे ।

(ii) तिथि गण्ड में बैल का दान, नक्षत्र में गोदान, लग्नगण्डान्त में सोने का दान करने से दोष निवारण होता है ।

(iii) गण्डान्त के पूर्व भाग में जन्म हो तो पिता व पुत्र का इकट्ठे अभिषेक करें । द्वितीय भाग में जन्म हो तो माता व पुत्र का अभिषेक करें ।

(iv) नक्षत्र के आकार की प्रतिमा बनाकर, दो वस्त्र समर्पित करके पूजन करें ।

आगे वक्ष्यमाण मूलादि नक्षत्र शान्ति में से जिसका प्रसंग हो, वह शान्ति तो होगी ही, तदतिरिक्त गण्डान्तशान्ति भी करेंगे । गण्डान्त के पूर्वापर भाग भेद से पिता पुत्र या माता पुत्र का अभिषेक करते समय इनकी

प्रधानता रहेगी। गौण अभिषेक माता व पिता का भी क्रमशः होगा। ज्योतिर्निबन्ध में तीनों का ही अभिषेक कहा गया है।

सुवर्णेन तदर्धेन यथावित्तं द्विजोतम ! ।
तिथिभेशादि रूपं च कृत्वा स्वस्त्ययनादितः ।। 11 ।।
उपचारैस्तु होमान्तं पूजयेत कलशोपरि ।
पूजान्ते समिदन्नाज्यैर्होमं कुर्याद् यथाविधि ।। 12 ।।
ततः पूर्णाहुतिं हुत्वा श्रोत्रियाय तपस्विने ।
यथोक्तं तिथयत्रादि दद्याद् दोषस्य शान्तये ।। 13 ।।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चादेवं दोषात्प्रमुच्यते ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सम्प्राप्नोति दिने दिने ।। 14 ।।

नक्षत्र मूर्ति के लिए 16 मासा या 8 मासे की मूर्ति या सामर्थ्यानुसार कम अधिक तोल की मूर्ति बनाएँ। तिथिगण्ड में तिथि स्वामी की व लग्न गण्ड में राशि स्वामी की मूर्ति रखें। तब स्वस्तिवाचनादि कार्य यथाविधि करके 16 उपचारों से पूजा, हवन आदि सब कार्य होगा। समिधा, अन्न (जौ, तिल या खील) व घी का हवन, पूर्णाहुति होम होगा।

पश्चात् विद्वान् ब्राह्मण को तिलपात्र आदि दान करें। ब्राह्मण भोजन भी कराएँ। इस प्रकार करने से दोष का निवारण होता है तथा आयु, आरोग्य व ऐश्वर्य बढ़ते हैं।

नक्षत्र गण्डान्त शान्ति :–

कांस्य पात्रं प्रकुर्वीत पलैर्षोडशभिर्नवम् ।
तदर्धाधेन वा कुर्यात् श्रद्दधानस्तु शोभनम् ।। 15 ।।
तन्मध्ये पायसं कृत्वा शंखे नवनीतपूरिते ।
राजतं चन्द्रदेवं च पूजयेन्मतिमान्नरः ।। 16 ।।
सोमोऽहमिति संचिन्त्य जपेत् साहस्रकं नरः ।
आप्यायस्वेतिमन्त्रेण पूजां कुर्यादयथाविधि ।। 17 ।।
अन्यं विधिं यथाशक्ति लग्नगण्डान्तवच्चरेत् ।
न दोषैर्लिप्यते नूनं पद्मपत्रमिवाम्भसा ।। 18 ।।

नक्षत्र गण्डान्त में 16 पल के काँसे के बर्तन में अथवा 8 या 4 पल के बर्तन में खीर रखें। शंख व मक्खन भी रखें। चाँदी की चन्द्र प्रतिमा बनाकर विधिपूर्वक पूजन करें। यह विधि मूलशान्ति के अतिरिक्त होगी।

पूर्वोक्त चन्द्रमा के मन्त्र का 1000 बार जप करें। 'आप्यायस्व' इत्यादि मन्त्र से पूजन करें। शेष समस्तविधि लग्नगण्डान्तादि की तरह होगी। ऐसा करने से दोष शान्ति होकर सब प्रकार से कल्याण होता है। जिस प्रकार पानी में रहकर भी कमल का पत्ता गीला नहीं होता, उसी प्रकार दोष काल में जन्म होने पर भी शान्ति करने से मनुष्य दोष का भागी नहीं होता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
गण्डान्तशान्त्यध्यायः पंचनवतितमः ।। 95 ।।

96

।। अथ मूलशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच–

मूलाद्यंशे पितुर्नाशो द्वितीये मातुरेव च।
तृतीये धनधान्यादि नाशस्तुर्येंधनागमः ।। 1 ।।
वत्सरात् पितरं हन्ति मातरंतुत्रिवर्षतः।
धनं वर्षद्वयेनैव स्वात्मानं वत्सरात्तथा ।। 2 ।।
तस्माच्छान्तिं प्रकुर्वीत् प्रयत्नाद्विधिपूर्वकम्।
अनिमित्तकृता शान्ति निमित्तायोपजायते ।। 3 ।।
तस्मात्तुर्येऽपिकर्त्तव्या शान्तिःकल्याणमिच्छता।

पराशर बोले–मूल के प्रथम चरण में पिता का, दूसरे चरण में माता का, तीसरे चरण में धन–धान्य का नाश होता है। चौथे चरण में धन लाभ (लेकिन मतान्तर से मित्रों का नाश) होता है।

पिता का अनिष्ट 1 वर्ष के भीतर, माता का अनिष्ट 3 वर्षो के भीतर, धन नाश 2 वर्षो के भीतर तथा 1 वर्ष के भीतर स्वयं की हानि होती है! इसीलिए चारों चरणों में ही विधिपूर्वक शान्ति करनी चाहिए। दोष प्रतीति न होने पर भी मूलादि नक्षत्रों की शान्ति से हानि न होकर लाभ ही होता है। इसीलिए चौथे चरण में भी शान्ति करनी ही चाहिए।

शान्ति का समय :–

जन्मतोद्वादशाहे वा तदृक्षे वा शुभेदिने ।। 4 ।।
जातस्यवाष्टमे वर्षे शान्तिं कुर्याद् विधानतः ।।

जन्म से 12वें दिन, या 27वें दिन उसी नक्षत्र में या किसी भी शुभ दिन में, जन्म से 8 वर्षों के भीतर विधानपूर्वक शान्ति कार्य करना आवश्यक है।

शान्ति की विधि :–

यदेव शान्तिकं कार्यं कर्म तत्तत प्रचक्ष्महे ।। 5 ।।
सुसमे च शुभे स्थाने गोमयेनोपलेपिते ।।
मण्डपं स्वगृहात्प्राच्यामुदीच्यां वा प्रकल्पयेत् ।। 6 ।।
मण्डपं स्वाष्टभिर्हस्तैश्चतुर्भिर्वा समन्ततः ।
चतुर्द्वारसमायुक्तं तोरणाद्यैरलंकृतम् ।। 7 ।।
कुण्डं च तद्बहिः कुर्याद् ग्रहयज्ञोक्तमार्गतः ।

अब शान्ति की विधि कहता हूँ। समतल भूमि पर शुभ स्थान में, गोबर से लीपकर मण्डल बनाएँ। घर से पूर्व या उत्तर दिशा में मण्डप बनाएं। मण्डप का नाप पिता के हाथ से 8 हाथ या 4 हाथ वर्गाकार बनाएँ। चारों तरफ द्वार, केले के खम्भे, तोरण आदि बनाएँ। मण्डप के बाहर हवन कुण्ड या स्थण्डिल बनाएँ। कुण्ड निर्माण में यज्ञीयशास्त्र की विधि का पालन करें।

पूजन विधि :–

चत्वारः कलशाः स्थाप्यश्चतुर्दिक्षु च पंचमम् ।। 8 ।।
रुद्रकुम्भं तु ऐशान्यांमन्यं छिद्रशतात्मकम् ।
कलशस्थापनरीत्या स्थापयेन्मतिमान् द्विजः ।। 9 ।।
सुवर्णेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः ।
नक्षत्र देवतारूपं कुर्याद् वित्तानुसारतः ।। 10 ।।
श्यामवर्ण महोग्रं च द्विशिरस्कं वृकाननम् ।
खड्गचर्मधरं तद्वद् ध्येयं कुणपवाहनम् ।। 11 ।।
सुवर्णस्य च मूल्यं वा स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ।
सुवर्ण सर्वदैवत्यं यतः शास्त्रेषु निश्चितम् ।। 12 ।।

चारों दिशाओं में चार कलश, पाँचवाँ रुद्र कलश ईशान कोण में व एक और कलश सौ छेदों वाला रखें। कलश स्थापन की विधि से पाँचों कलश स्थापित करें। पूर्वोक्त प्रकार से 16 माशे या 8 या 4 माशे की नक्षत्र देवता की मूर्ति बनाएँ। अथवा सामर्थ्यानुसार मूर्ति बनाएँ। मूल नक्षत्र के अधिपति राक्षस नैऋति की मूर्ति दो सिर वाली, काला रंग, भेड़िये जैसा मुख,

तलवार व ढाल हाथ में, दिखने में भयानक व राक्षस की सवारी वाली बनाएँ। अथवा मूर्ति का मूल्य रखकर पूजें। सोने में सब देवताओं का निवास है। अन्य गण्ड नक्षत्रों में उसी नक्षत्र के देवता की मूर्ति का निर्माण होगा।

आचार्यं वरयेत् पश्चात् स्वस्तिवाचनपूर्वकम्।
पंचगव्यादिक क्षेप्यं कलशे तीर्थवारि च।। 13।।
शतौषध्यादिकं तत्र शतच्छिद्रे घटे क्षिपेत्।
वंशपात्रं च संस्थाप्य तत्र वै पश्चिमामुखम्।। 14।।
अर्चयेन्निऋतिं धीमान् शुक्लवस्त्राक्षतादिभिः।
इन्द्रं तदधिदेवं च जलं प्रत्यधिदैवतम्।। 15।।
स्वस्वशाखोक्तमन्त्रेण प्रधानादीन् प्रपूजयेत्।
देवाधिदेव प्रीत्यर्थं होमं कुर्याद् यथाविधि।। 16।।
अष्टोत्तरसहस्रं वा शतं वा नियतेन्द्रियः।
मृत्युप्रशमनार्थं च मन्त्रं त्रैयम्बकं जपेत्।। 17।।
हविर्गृहीत्वा विधिवन्नैऋत्वां च ऋचा हुनेत्।
मोषुणः परापरेति यत्तदेवेति वा पुनः।। 18।।
पायसं घृतसम्मिश्रं हुनेदष्टोत्तरं शतम्।
अधिदैवतयोश्चैव जुहयात् स्वस्वमन्त्रतः।। 19।।
नक्षत्र देवताभ्यश्च पायसेन तु होमयेत्।
गायत्र्याजातवेदेति त्र्यम्बकमिति क्रमात्।।20।।
सीरायुंजन्ति तामग्नि बास्तोष्पत्यग्निमेव च।
क्षेत्रस्यपतिना गृणानाग्निदूतं तथैव च।। 21।।
श्रीसूक्तेन तथा विद्वान् समिदाज्यचरून् हुनेत्।
स्रुवेण जुहुयादाज्यं या ते रुद्रेति मन्त्रतः।। 22।।
महाव्याहृतिभिर्हुत्वा पश्चात् स्विष्टकृतं हुनेत्।।

इसके बाद स्वस्ति वाचन, आचार्य वरण, कलशस्थापन करें। कलशों में तीर्थो का जल, पंचगव्य, शतौषधी (अदरक, तुलसी, सतावर, आँवला) सौ छेद वाले घडे में रखें।

पश्चिम दिशा में एक बाँस की टोकरी रखें। सफेद वस्त्र, अक्षत आदि से नैऋति देव की पूजा करें।

अधिदेव के रूप में इन्द्र की, प्रत्याधिदेव के रूप में जल की पूजा करें। अपनी परम्परानुसार सभी देवों का पूजन करें।

पश्चात् प्रधान देव व महादेव जी की प्रीत्यर्थ हवन करें। हवन में 108 या 1008 आहुतियाँ दें। मृत्यु निवारण हेतु त्र्यम्बक मन्त्र का जप व हवन भी करें।

नैऋति के लिए हविष्य (हवन सामग्री) की आहुति नैऋत्य कोण में अग्नि में दें। **'मोषुणः परापर'** इत्यादि या **'यत्तदेवेति'** मन्त्र से पूजा व हवन करें। नैऋति के लिए घी व खीर की 108 आहुति दें। अधिदेव व प्रत्यधि देवों की भी आहुतियाँ उन्हीं के मन्त्रों से दें।

पश्चात् **'जातवेदसे सुनवाम'** मन्त्र या गायत्री मन्त्र, त्र्यम्बक मन्त्र, **'सीरायुजन्ति' 'तामग्निवर्णां**, मन्त्र, **'वास्तोष्पते'** मन्त्र, **'क्षेत्रस्यपतिना' गृणाना** मन्त्र, **'अग्निदूतं पुरोदधे मन्त्र से श्री सूक्त से** घी व चरू की आहुतियां दें।

बाद में **'या ते रुद्र शिव'** मन्त्र से स्रुवा भरकर घी की आहुति दें। बाद में महाव्याहृतियों का व स्विष्टकृत हवन करें। मन्त्र इस प्रकार है–

(i) मोषुणः परावरा निऋतिर्दुहिणावदी तरतृष्णः तृष्णया सह।

(ii) जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।

(iii) सीरायुंजन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक् धीरा देवेषु सुम्नया सुतरसितरसे।

(iv) तामग्निवर्णा तपसाज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्ये।

(v) क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि गामश्वं पोषयित्वा स नो मृडाती दृशे।

(vi) गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोमभृता वृधा।

शेष उल्लिखित मन्त्र प्रसिद्ध ही हैं, अतः ग्रन्थ विस्तार भय से नहीं दिए गए हैं।

भद्रासनोपविष्टस्य सस्त्रीपुत्रस्य मन्त्रवित्॥ 23॥
आचार्यो यजमानस्य कुर्यात् प्रीत्याभिषेचनम्।
वस्त्रान्तरितकुम्भाभ्यां स्नापयेत्तदनन्तरम्॥ 24॥
अक्षीभ्यामिति सूक्तेन पावमानीभिरेव च।
धेनुं पयस्विनीं दद्यादाचार्याय च शक्तितः॥ 25॥

ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्याद् ब्राह्मणांश्चापि भोजयेत् ।।
यत्पापं यच्च मे दौःस्थ्यं सर्वगात्रेष्वस्थितम् ।। 26 ।।
तत्सर्वं भक्षयाज्यत्वं लक्ष्मीं पुष्टिंविवर्धय ।।
अनेन मन्त्रेणाज्येतु छायां सम्यग् विलोकयेत् ।। 27 ।।
सर्वशान्तेश्च पठनं ब्राह्मणैराशिषस्तथा ।
मूलगण्डोद्भवस्यैवं सर्वपापं प्रणश्यति ।। 28 ।।

बाद में उत्तम आसन या लकड़ी की पटरी, चौकी आदि पर बैठकर पिता माता व पुत्र का मन्त्रवेत्ता आचार्य प्रसन्नतापूर्वक अभिषेक करें।

बाद में कपड़े से घड़े को लपेटकर शतछिद्र कलश में शतौषधी जल डालते हुए यजमान को स्नान कराएँ। स्नान कराते समय **'अक्षीभ्यामित्यादि'** सूक्त व **'पावमानीऋचाओं**का पाठ करें।

आचार्य को दुधारु गाय का दान करें। अन्य ब्राह्मणों को भी दक्षिणा दें व ब्राह्मण भोजन कराएँ।

यत्पापं यच्च मे दौःस्थ्यं सर्वगात्रेष्वस्थितम् ।
तत्सर्वं भक्षयाज्यत्वं लक्ष्मीपुष्टिं विवर्धय ।।

इस श्लोक को बोलते हुए घी से छाया पात्र का दान करें। पश्चात् शान्त्यध्याय या शान्ति पाठ करके, ब्राह्मणों से आशीर्वाद लें। इस तरह शान्ति विधान करने से मूल दोष का सर्वथा नाश हो जाता है।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां मूलशान्त्यध्यायः षण्णवतितमः ।। 96 ।।

97

।। अथ ज्येष्ठादिगण्डशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच –

ज्येष्ठागण्डान्तजातस्तु पितुः स्वस्य च नाशकः ।
तस्य शान्तिविधिं वक्ष्ये सर्वविघ्नहरीं द्विज ! ।। 1 ।।
मूलशान्तिसमं सर्वमत्रापि मण्डपादिकम् ।
इन्द्रोऽत्रदेवता तद्वदधिदेवोऽनलस्तथा ।। 2 ।।

विज्ञेयं च तथा विप्र ! रक्षः प्रत्यधिदेवता ।

ज्येष्ठा गण्ड या गण्डान्त में उत्पन्न होने पर माता–पिता व स्वयं का नाश होता है । अतः सब दोषों के निवारणार्थ शान्तिविधान कहता हूँ ।

सभी गण्ड नक्षत्रों में मूलशान्ति की तरह ही मण्डपादि बनाना चाहिए । ज्येष्ठा में इन्द्र प्रधान देवता व अग्नि अधिदेवता है । राक्षस को प्रत्यधिदेवता समझें । इस प्रकार तीनों देवों का मूर्तिनिर्माण करके पूजन करना चाहिए ।

वज्रांङ्कुशधरं देवमैरावतगजान्वितम् ।।3।।
कुर्याच्छचीपतिं रम्यं देवेन्द्रं सुरनायकम् ।
यथाशक्ति सुवर्णेन वित्तशाठ्यं न कारयेत् ।।4।।
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते इति मन्त्रेण मन्त्रवित् ।
गन्धपुष्पैर्धूपदीपैर्नानाभक्ष्यनिवेदनैः ।।5।।
पूजयेद् विधिना विप्रो लोकपालसमन्वितम् ।
पूजयेद् वारुणैर्मन्त्रैः कुम्भान्धीमान्प्रयत्नतः ।।6।।
त्वं नो अग्ने जपेदादौ सत्वं नोपि द्वितीयकम् ।
समुद्रज्येष्ठा इति चेमम्मे गंगेति चतुर्थकम् ।।7।।
पूजयेद् वस्त्रयुग्माद्यैश्चतुरः कलशानपि ।
इन्द्रसूक्तं रुद्रजाप्यं जपं मृत्युंजयं ततः ।।8।।
सुसंकल्पविधानेन होमं कुर्यात्तु मूलवत् ।
अभिषेकं प्रकुर्वीत सूक्तैर्वारुणसंज्ञितैः ।।9।।

इन्द्र का स्वरुप वज्र व अंकुश धारण किए हुए, ऐरावत पर सवार, सुन्दर रूप में मूर्ति बनाएँ। सामर्थ्यानुसार सुवर्ण से मूर्ति बनाएँ। **'इन्द्रायेन्दोमरुत्वते'** मन्त्र से गन्धाक्षत पुष्पादि व भोज्य पदार्थों से लोकपाल समेत इन्द्रादि की पूजा करें। वारुण मन्त्रों से सर्वत्र कलश पूजन करें। पहले **'त्वं नो अग्ने'** पुनः **'सत्वं नो अग्ने'** मन्त्र, पुनः **'समुद्रज्येष्ठाः'** पुनः **'इयं मे गंगे'** मन्त्रों का पाठ कर कलशों की प्रतिष्ठा करें। दो–दो वस्त्र चढ़ाएँ।

बाद में इन्द्रसूक्त, रुद्रीय पाठ, मृत्युंजय मन्त्र का पाठ व संकल्पपूर्वक हवन करें। पश्चात् पूर्वोक्त मन्त्रों व वारुण मन्त्रों से अभिषेक करना चाहिए।

इन मन्त्रों का उल्लेख पहले कर चुके हैं। इन्द्र सूक्तादि ऋग्वेदोक्त लें। अथवा इन्द्र का प्रसिद्ध मन्त्र पीछे नक्षत्र देवता मन्त्र प्रसंग में कहा गया है, उसी का प्रयोग करें। पूर्वोक्त पूजन मन्त्र इस प्रकार है–

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्य मधुमत्तमः । ऋतस्य योनिमासदम् ।

अभिषेक निवृतो तु यजमानः समाहितः ।
शुक्लाम्बराणि धृत्वा च कुर्यादाज्यावलोकनम् ।। 10 ।।
रूपं रूपेति मन्त्रेण चित्रं तच्चक्षुरेव च ।
देवतापुरतः स्थित्वा पुनः पूजनमाचरेत् ।। 11 ।।
नमस्ते सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते ! ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गण्डदोषप्रशान्तये ।। 12 ।।
दानेनानेन देवेश गण्डदोषं विनाशय ।
स्वसामर्थ्यानुसारेण सद्यः श्रोत्रियभोजनम् ।।
गण्डदोषं विनिर्जित्य आयुष्मांजयते नरः ।। 13 ।।

अभिषेक के बाद यजमान सफेद वस्त्र पहनकर घृतपात्र दान करें। पुनः देवताओं का उत्तर पूजन करें। 'रूपं रूपं' इति मन्त्र से 'चित्र देवानाम्' मन्त्र से, 'तच्चक्षुर्देवहितां मन्त्रों का उच्चारण करें। देवता को विशेषार्घ्य समर्पण के समय यह श्लोक पढ़ें–

"नमस्ते सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गण्डदोषोपशान्तये ।।
दानेनानेन देवेश गण्डदोषविनाशय ।।"

पश्चात् सामर्थ्यानुसार दानकार्य तथा ब्राह्मण भोजन कराने से आयु की वृद्धि व गण्डदोष का नाश होता है।

मन्त्र–रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव ।तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।इन्द्रो मायाभिः पुरु रूप ईयते– युक्ता ह्यस्य हरयः शतादश ।।

अन्य नक्षत्र शान्ति :–

मूलर्क्षोक्त प्रकारेण कुम्भान् कृत्वा प्रपूजयेत् ।
तत्तद्भेशस्य प्रतिमाः नक्षत्रेशस्य मन्त्रतः ।। 14 ।।
मूल नक्षत्रवत् कुर्यात् सर्वां शान्तिं स्वनामतः ।। 15 ।।

अन्य श्लेषा, मघा, अश्विनी, रेवती आदि में भी मूल शान्ति की तरह कुम्भ स्थापन करके, सम्बन्धित नक्षत्र स्वामी की प्रतिमा नक्षत्र से ही पूजन करके, हवन, अभिषेक, दान, ब्राह्मणभोजनादि विधि तत्तत् नक्षत्र पति का नमोल्लेख करते हुए, मूल नक्षत्र की ही तरह करें।

ज्येष्ठानक्षत्रजा कन्या विनिहन्ति धवाग्रजम् ।
विशाखान्त्यपदोत्पन्ना कन्या देवरघतिनी ।। 16 ।।

आश्लेषान्त्यत्रिपादौत्थौ मूलाद्यत्रिपदोद्भवौ ।

कन्यासुतौ हतः श्वश्रुं श्वसुरं च यथाक्रमम् ।। 17 ।।

तयोर्विवाहकालेऽतः शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः ।

तत्तद्दोषविनाशाययथावित्तानुसारतः ।।

धवाग्रजाद्यभावे तु न दोषाय प्रजायते ।। 18 ।।

ज्येष्ठा नक्षत्रोत्पन्न कन्या जेठ (पति का बड़ा भाई) को, विशाखा के चतुर्थचरण में देवर को नष्ट करती है ! श्लेषा के 2-3-4 चरणों में व मूल के 1-2-3 चरणों में उत्पन्न लड़का व लड़की क्रमशः सास व ससुर को नष्ट करते हैं ।

अतः इनके विवाह के समय में भी कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को इनकी शान्ति करानी चाहिए । शान्ति का विस्तार आर्थिक स्थिति के अनुसार निश्चय करें । यदि देवर, जेठ, सास, ससुर न हों तब विवाह के समय शान्ति आवश्यक नहीं है ।

सामर्थ्य न होने पर शान्ति :–

अथवा शक्त्यभावे तु कुर्याद् गोदानमेव च ।

यतः समस्तभूदानाद्गोदानमतिरिच्यते ।। 19 ।।

मूलेन्द्राहि मघागण्डे जाते दद्याद् गवां त्रयम् ।

गोयुग्मं पौष्णदास्रोत्थे गण्डान्ते च द्विजन्मने ।। 20 ।।

अन्यगण्डे च दुर्योगे गामेकां हि प्रदापयेत् ।

गोरभावे च विप्राय दद्यात् तन्मूल्यमेव हि ।। 21 ।।

यदि सामर्थ्य न हो तो केवल गोदान ही करें । गोदान, समस्त भूमण्डल के दान से भी बढ़कर है ।

मूल, ज्येष्ठा, श्लेषा व मघा के दोष निवारणार्थ तीन गोदान, रेवती, व अश्विनी के दोषशमनार्थ दो गाय, अन्य गण्ड नक्षत्रों एवं दुर्योगों में केवल एक गाय का ही दान करें । गौ न होने पर गाय का मूल्य (क्रय मूल्य या श्रद्धया न्यूनाधिक) ही दें ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां ज्येष्ठादिगण्डशान्त्यध्यायः सप्तनवतितमः ।। 97 ।।

।। अथ त्रिखलजन्मशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच–

अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि जन्मदोषप्रदं शिशोः ।
सुतत्रये सुता जन्म तत्त्रये सुतजन्म चेत् ।। 1 ।।
तदारिष्टभयं ज्ञेयं पितृमातृ कुलद्वये ।
तत्र शान्तिविधिं कुर्याद् वित्तशाठ्यविवर्जितः ।। 2 ।।

पराशर बोले–– अब मैं अन्य दोषप्रद जन्म के लक्षण कहता हूँ। तीन पुत्रों के बाद पुत्री का या तीन पुत्रियों के बाद पुत्र का जन्म हो तो त्रिखल जन्म या त्रीतर जन्म (त्रि–3 इतर–दूसरा) कहलाता है। ऐसी स्थिति में पिता व माता के कुल में अरिष्ट का भय होता है। अतः ऐसा योग होने पर कंजूसी न करते हुए शान्ति विधान करना चाहिए।

सूतकान्तेऽथवा शुद्धे समये च शुभे दिने ।
आचार्यमृत्विजो वृत्वा ग्रहयज्ञपुरस्सरम् ।। 3 ।।
ब्रह्मविष्णुमहेशेन्द्र प्रतिमाः स्वर्णजाः शुभाः ।
पूजयेद् धान्यराशिस्थ कलशोपरि भक्तितः ।। 4 ।।

शान्ति हेतु सूतक निवृत्ति के बाद शुभ समय व दिन (चन्द्र तारा बलयुक्त) में आचार्य व अन्य पण्डितों का वरण करके ग्रह यज्ञ करते हुए शान्ति करें।

चारों दिशाओं में चार कलशों पर पूर्व में ब्रह्म, दक्षिण में विष्णु, उत्तर में महेश व पश्चिम में इन्द्र की सोने की प्रतिमा स्थापित करके पूजा करें। कलश स्थापन विधि से अनाज के ढेर पर कलश स्थापित करें। गणेश, नवग्रह, क्षेत्रपाल, योगिनी आदि का पूजन व सूर्य भगवान् की विशेष पूजा सर्वत्र विहित ही है।

चत्वारिरुद्रसूक्तानिशान्तिसूक्तानिसर्वशः ।
विप्र एको जपेद् होमकाले च शुचिसंयतः ।। 5 ।।
आचार्यो जुहुयात्तत्र समिदाज्यतिलांश्चरुन् ।
अष्टोत्तर सहस्रं वा शतं वाष्टौ च विंशतिम् ।। 6 ।।
ब्रह्मादि सर्वदेवेभ्यः स्वस्वगृह्योक्तमन्त्रतः ।
ततः स्विष्ट कृतं हुत्वा बलिं पूर्णाहुतिं ततः ।। 7 ।।

अभिषेकं च जातस्य सकुटुम्बस्य कारयेत् ।
ऋत्विगयो दक्षिणां दद्याद् ब्राह्मणाश्चापि भोजयेत् ।।8।।
कांस्याज्यवीक्षणं कृत्वा दीनानाथा श्च तर्पयेत् ।
एवं शान्त्या च मैत्रेय ! सर्वारिष्टं विलीयते ।।9।।

तत्पश्चात् चार रुद्र सूक्त व शान्ति (शान्तिमन्त्र, शान्त्यध्यायोक्त) पढ़ें ।

आचार्य तत्तत् देवों का हवन करता है तथा प्रत्येक कलश पर प्रधान देव की स्थापना करते हुए, एक एक ब्राह्मण उस देवता का जप करता रहे ।

आचार्य घी, तिल व चरु का हवन करें । आहुतियों की संख्या 1008 या 108 या 28 यथावसर रखें ।

ब्रह्मा आदि सब देवताओं के मन्त्र अपने अपने वेदानुसार लें । हवन के पश्चात् स्विष्टकृत आहुति, बलिदान (दिक्पाल, क्षेत्रपाल बलि) एवं पूर्णाहुति दें ।

तत्पश्चात् सपरिवार शिशु का अभिषेक करें । सब ब्राह्मणों व आचार्यो को दक्षिणा दें । पश्चात् कांसे के बर्तन में घी से छाया पात्र दान करें । बाद में दीनों, अनाथों को भी अन्नादि (तीन अन्न, तीन प्रकार के वस्त्र, तीन धातु) का यथाशक्ति दान करें ।

हे मैत्रेय ! इस प्रकार शान्ति करने से सब प्रकार के अरिष्ट दूर हो जाते हैं ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां त्रिखलजन्म-शान्त्यध्यायोऽष्टनवतितमः ।।98।।

99

।। अथ प्रसवविकारशान्त्यध्यायः ।।

पराशर उवाच-

अथाहं सम्प्रवक्ष्यामि विकारं प्रसवोद्भवम् ।।
येनारिष्टं समस्तस्य ग्रामस्य च कुलस्य च ।।1।।
अत्यल्पे बाधिके काले प्रसवो यदि जायते ।
हीनांगो वाधिकांगो वा विशिरा द्विशिरास्तथा ।।2।।

नार्या पश्वाकृतिर्वापि पशुष्वपि नराकृतिः ।

प्रसवस्य विकारोऽयं विनाशायोपजायते ।। 3 ।।

वडवाहस्तिनी गौर्वा यदि युग्मं प्रसूयते ।

विजात्यं वा विकारं वा मासैः षड्भिर्नृपक्षयः ।। 4 ।।

पराशर बोले–अब मैं प्रसव विकार से उत्पन्न अरिष्ट के विषय में कहता हूँ। प्रसव विकार अर्थात् विकृत प्रसव होने पर उस कुल व ग्राम का अरिष्ट होता है।

समय से पूर्व या बाद में, कम अंग वाला या अधिक अंग वाला, सिर विहीन, दो सिर वाला, स्त्री में पशु जैसी आकृति वाला या पशु में मानव सदृश आकृति वाला प्रसव हो तो प्रसव विकार होता है। इससे विनाश की सूचना मिलती है। घोड़ी, हथिनी या गाय भैंस जुड़वाँ बच्चों को जन्म दें या विजातीय प्रसव हो तो प्रसव विकार होता है। ऐसा होने पर 6 मास के भीतर राजा या स्वामी का क्षय होता है।

यस्य स्त्रिया पशूनां वा विकारः प्रसवोद्भवः ।

अनिष्टं भवने तस्य कुलेऽपि च महद्भवेत् ।। 5 ।।

तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिः कार्या प्रयत्नतः ।

अकृत्वा नास्तिकोलोभादश्नुते बहुसंकटान् ।। 6 ।।

जिस घर में स्त्री या पशु को विकृत प्रसव हो उस कुल में महत् अनिष्ट होता है। उस दोष की शान्ति के लिए शान्ति विधान भक्तिभाव से करें। यदि नास्तिक बुद्धि से या लोभ से शान्ति नहीं की जाए तो महान् संकट उपस्थित होता है।

गवादीनां विकारे ताः परित्याज्या हितार्थिना ।

निर्धनाय प्रदातव्या परदेशेषु शान्तये ।। 7 ।।

गाय भैंस का विकृत प्रसव हो तो उस गाय भैंस आदि पशु को परदेश में छोड़ देना चाहिए या किसी गरीब व्यक्ति को दान कर देना चाहिए।

स्त्री विकृत प्रसव शान्ति :–

त्यक्त्वा दिवाशनं होमं पूर्ववत्कारयेज्जपम् ।

प्राजापत्येन मन्त्रेण समिदाज्यचरुं हुनेत् ।। 8 ।।

ब्रह्मविष्णुमहेशानां ग्रहाणां चैव पूजनम् ।

सर्वहोमादिकं कार्यं त्रिखलोक्तं द्विजोत्तम ! ।। 9 ।।

द्विजान्सन्तर्पयेदन्नैरभिषेकादि पूर्ववत् ।

एवं यः कुरुते सम्यक् सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। 10 ।।

स्त्री को प्रसव विकार हो तो दिनभर व्रत रखकर (रात दिन) अगले दिन रुद्रसूक्त व शान्ति सूक्त का पाठ करवाएँ । बाद में प्राजापत्य विधि से हवन करें । ब्रह्मा, विष्णु, महेश का व ग्रहों का पूजन करें तथा सारा हवन त्रिखल शान्ति अध्याय में बताई गई विधि से करें ।

बाद में ब्राह्मणों या याचकों को दानादि से सन्तुष्ट करें । तब मनुष्य सब प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है ।

ऋषियों ने विकृत प्रसव होने पर स्त्री का भी परित्याग लिखा है । यह अमानवीय ही है, अतः शान्ति विधान ही उत्तम मार्ग है ।

कार्तिक प्रसवादि शान्ति :–

भानौ सिंहगते चैव यस्य गौः सम्प्रसूयते ।

मरणं तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्द्विजोत्तम ! ।। 11 ।।

माघे बुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा ।

तदारिष्टं भवेच्छान्तिमाचरेद्दोषशान्तये ।। 12 ।।

सिंहार्क गत सूर्य में (सौर भाद्रपद) यदि गाय को प्रसव हो तो 6 मास के भीतर स्वामी का अनिष्ट होता है ।

माघ मास (सौर) व बुधवार को भैंस का प्रसव तथा श्रावण में दिन में घोड़ी को प्रसव हो तो भी यह प्रसव विकार कहलाता है ।

तब दोष निवारणार्थ शान्ति विधान करना चाहिए, अथवा उन पशुओं को त्याग देना चाहिए ।

गवादीनां परित्यागः कर्त्तव्यः शुभकांक्षया ।

ततो होमं प्रकुर्वीत घृताक्तैः राजसर्षपैः ।। 13 ।।

महाव्याहृतिभिर्होमःप्रोक्तोह्ययुतसंख्यया ।

सोपवासमयत्नेन दद्याद् विप्राय दक्षिणाम् ।। 14 ।।

गाय आदि पशुओं का दान या त्याग करना युक्त है तथा शान्ति मध्यम मार्ग है । ऐसा होने पर घी व सरसों का हवन व्याहृतियों द्वारा करना चाहिए । 10000 आहुतियाँ हवन में दें तथा व्रत रखकर यथाशक्ति ब्राह्मण को दक्षिणा दें । तब शान्ति होती है ।

तुलायां दशमे भागे स्थिते कमलबोधने ।

सहस्रं राजयोगानां नाशयत्याशु जन्मनि ।। 15 ।।

सौराद्द्विगुणतो भौमो बुधस्तस्माच्चतुर्गुणः ।
ततो जीवस्ततः शुक्र स्तस्माच्चन्द्रो बलाधिकः ।। 16 ।।
बुधादष्टगुणोजीवस्तस्मादष्टाधिको भृगुः ।
शुक्रात्कलाधिकश्चन्द्रस्तस्माद्भानुर्बलाधिकः ।। 17 ।।
नीचे नीचांशके चेन्दौ सर्वसौख्यं विनश्यति ।
एवंत्वरिष्टे सम्प्राप्ते नरः शान्तिं करोति यः ।। 18 ।।
सर्वान् कामानवाप्नोति चिरजीवी सुखी भवेत् ।।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां ग्रहाणां पूजनं तथा ।। 19 ।।
त्र्यम्बकरुद्रप्रीत्यर्थ पूजाहोमादिकं चरेत् ।
सर्वहोमादिकं कर्म कुर्यात् त्रिखलशान्तिवत् ।। 20 ।।

तुला राशि में परम नीचांश (6.10^0) पर सूर्य हो तो हजार राजयोगों को नष्ट करने वाला मानव प्रसव होता है ।

शनि से दुगुना मंगल, मंगल से दुगुना बुध, बुध से आठ गुना गुरु, गुरु से आठ गुना शुक्र, शुक्र से 16 गुना चन्द्रमा व चन्द्र से 32 गुना सूर्य बलवान् होता है । अतः परम नीच गत सूर्य या चन्द्र होने पर जातक भाग्य सुख, धन व स्वास्थ्य से रहित होता है । नीच राशि होने पर भी अनिष्ट होता ही है । अतः कल्याणेच्छुक व्यक्ति कार्तिक प्रसव व नीचगत चन्द्रमा की शान्ति करें । तब मनुष्य (जातक) सब प्रकार चिरजीवी होता है ।

ऐसी स्थिति में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र व ग्रहों का पूजन, चार कलशस्थापन त्र्यम्बक मन्त्र का जप व होम करना चाहिए । सारी शान्ति विधि त्रिखल–शान्ति की तरह करें । दान, होम, विप्रभोजन, सुवर्ण या रजत या ताम्र की सूर्य मूर्ति का दान तुलार्क में करें तथा वृश्चिक चन्द्र में शिवार्चन व सोमदान करें । जपादि करवाने से अधिक सुख मिलता है ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां
प्रसवविकारशान्त्यध्यायो नवनवतितमः ।। 99 ।।

100

।। अथ प्रश्नविचाराध्यायः ।।

मैत्रेय उवाच–

कृते युगे तु धर्मस्य पूर्णत्वात्तपसान्विताः ।
सर्वे जानन्ति भूतं च भवद्भावि द्विजोत्तम ! ।। 1 ।।
कलौ युगे तु धर्मस्य पादमात्र व्यवस्थितिः ।
तपः शक्त्या तु तज्ज्ञातुं न शक्ता मानवा भुवि ।। 2 ।।
कलौ युगे तु तज्ज्ञातुं मन्दानां तद् वदस्व मे
भगवन् प्रश्नशास्त्रं तु सूचकानां प्रकाशनम् ।। 3 ।।

मैत्रेय ने पूछा–हे महर्षे ! सतयुग में पूर्ण तपस्वी लोग तपोबल से ही समस्त ज्ञान प्राप्त करके भूत, वर्तमान, भविष्य का ज्ञान कर सकते थे। अब कलियुग में एक चरण धर्म शेष रहने से केवल तपस्या से शास्त्र ज्ञान नहीं हो सकता। अतः कलियुग में मन्द–बुद्धि मनुष्य भी किस प्रकार जन्म–पत्रादि के बिना तात्कालिक व निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं को जान सकता है, उस उपाय भूत प्रश्नशास्त्र को कृपा करके मुझे कहें।

पराशर उवाच –

तथात्र परमः शम्भुर्लोकानुग्रह कांक्षया ।
लक्षीकृत्य निजां शक्तिं विद्यामाधत्स ईश्वरः ।। 4 ।।
कलापि च विभक्तानां त्रिकाल ज्ञानदायिनी ।
वेदादि वाग्भवा गौरी वदद्वयमथोगिरिः ।। 5 ।।
परमैश्वर्य सिद्धमर्थं वाग्भवस्यादयं मनुः ।
सर्वज्ञेति पदं पूर्वं नाथ तं पार्वतीपते ।। 6 ।।
सर्वलोकगुरोः पश्चात् शिवेति द्वयमक्षरम् ।
शरणं तु पदं पश्चात्त्वां प्रपन्नोऽस्मितत्परम् ।। 7 ।।
पालयेति पदं ज्ञानं प्रदापय ततः परम् ।
सर्वज्ञश्च शिवोदेवो गायत्रीच्छन्द ईरितम् ।। 8 ।।

अनुष्टुप् च षडगं स्याद् वाग्भावे ह्रदयादि च ।

पराशर बोले–पूर्वकाल में भगवान् शंकर ने अपनी कला से लोकहितार्थ आदि शक्ति विद्या देवी को उत्पन्न किया था। वह त्रिकाल का ज्ञान देने वाली है।

अतः उसका मन्त्र जपने से मनुष्य त्रिकालज्ञ हो जाजा है। **'ॐऐं गौरि वद वद गिरिपरमैश्वर्य सिदि्धयर्थ एं'** यह शक्ति मन्त्र है। **ॐ सर्वज्ञ नाथ पार्वतीपते सर्वलोक गुरो शिव शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि पालय ज्ञानं प्रदापय'** यह शिवमन्त्र है।

मन्त्र विनियोग इस प्रकार है। **'अनयोः मन्त्रयोः दक्षिणामूर्ति ऋषिः गौरीपरमेश्वरी सर्वज्ञ शिवश्च देवते, गायत्र्यनुष्टुपौ छन्दसी ज्योतिः शास्त्र ज्ञान प्राप्तये जपे विनियोगः ।**

ध्यानविधि :–

उद्यानस्यैकवृक्षाधः परे हैमवते द्विज ! । । 9 । ।
क्रीडन्ती भूषितां गौरीं शुक्ल वर्णां शुचिस्मिताम् । ।
देवदारुवने तत्र ध्यानस्तिमितलोचनम् । । 10 । ।
चतुर्भुजं त्रिनेत्रं च जटिलं चन्द्रशेखरम् ।
शुक्लवर्णं महादेवं ध्यायेत्परममीश्वरम् । । 11 । ।
अनेनाभ्यां द्विजश्रेष्ठ ! बुद्धिः सुविमला भवेत् ।
जपमात्रेण सिदि्धश्च दैवज्ञत्वं प्रकाशते । । 12 । ।

कैलाश पर्वत पर स्थित उद्यान के एक वृक्ष के नीचे प्रसन्न मुद्रा वाली, सज्जित, शुक्ल वर्ण, पवित्र मुस्कान बिखेरती हुई गौरी का ध्यान करें।

देवदार के वन में ध्यानमग्न, मुंदे नयनों वाले, चतुर्मुज, त्रिनेत्र, जटा जूट धारी, चन्द्रशेखर, शुक्ल वर्ण, परमेश्वर महादेव का ध्यान करें।

इन दोनों गौरीपरमेश्वर का ध्यान करने से बुदि्ध विमल होती है तथा ध्यानानन्तर पूर्वोक्त मन्त्र का जप करने भर से ही मनुष्य दैवज्ञत्व को प्राप्त हो जाता है। अर्थात् उसकी वाणी में भविष्य कथन की शक्ति आ जाती है।

प्रश्नकर्त्ता का आचार :–

अलुब्धो नैष्ठिकः शुद्धो विनयप्रश्रयान्वितः :
रत्नं स्वर्णं धनं वस्त्रं पुष्पमूलफलानि च । । 13 । ।

दैवज्ञ पुरतो दत्त्वा पृच्छेदिष्टं प्रियान्वितः ।

प्रश्नकर्त्ता लोभी न हो, अनुशासित चरित्र वाला, शुद्ध भावों वाला, विनीत हो ।

दैवज्ञ के सामने रत्न, सोना, धन, वस्त्र या फल फूल आदि रखकर तब प्रसन्न मन से अपना प्रश्न रखे । अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार उक्त दक्षिणा रखने का आशय है ।

कुटिल चरित्रहीन, दुष्ट स्वभाव व भावनाओं वाला, चालाकी से प्रश्न करने वाला प्रश्नकर्त्ता हो तो उसके प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहिए, यह बात यहाँ अन्यथा सिद्ध है ।

दैवज्ञ का कर्त्तव्य :–

अथ प्राङ्मुख आसीनः शुचिर्दैवविदग्रतः ।। 14 ।।

तिर्यगूर्ध्वाश्चतस्रस्तु रेखा रज्जुसमालिखेत् ।

एकीकुर्यात्तु चत्वारि मध्यस्थानि पदानि च ।। 15 ।।

तत्र पद्मं लिखेद्रेखापद्ममध्यं संकीर्णिकम् ।

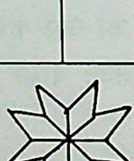
ईशानकोष्ठादारभ्य मीनादिराशयः क्रमात् ।। 16 ।।

ज्योतिषी पूर्व की ओर (या उत्तर की ओर भी) मुख करके पवित्र होकर बैठे । अपने सामने कागज, भूमि, स्लेट आदि पर यथावसर चार खाने खड़े व चार पड़े लिखे । उसके कोणों को आपस में मिला ले । मध्य में स्थित खाली वर्गाकार स्थान में कमल की आकृति लिखे । तब 12 खानों में ईशान कोण से आरम्भ करके मीनादि 12 राशियाँ क्रमशः लिखे । इस पद्धति से प्रश्न या आरूढलग्न लिखे ।

यहाँ महर्षि ने दक्षिण भारतीय शैली में राशि चक्र लिखने का निर्देश किया है । आप यथावसर किसी भी शैली में चक्र रचना कर सकते हैं ।

।। राशि चक्र प्रदर्शन ।।

12	1	2	3
11			4
10			5
9	8	7	6



वीथि ज्ञान :–

मेषवीथि वृषाद्यास्तु कौर्प्याद्यामिथुनस्य तु ।
वीथयो मीनमेषौ तु तुलाकन्ये वृषस्य च ।। 17 ।।

मेष वीथि में 2.3.4.5. राशियाँ, वृष वीथि में 12.1.6.7 राशियाँ व मिथुन वीथि में 8.9.10.11 राशियाँ समझें। ये सूर्य राशि से देखी जाती हैं। अर्थात् प्रश्न का सौरमास जिस वीथि पर पड़े वही वीथि राशि मानें।

इसी विषय का विस्तार प्रश्नमार्ग नामक दक्षिण भारतीय ग्रन्थ में किया गया है।

छत्रराशि विचार :–

आरूढ़ाद् वीथिभं यावत् तावच्छत्रं तु लग्नतः ।
आरूढराशि लग्नं चेच्छत्रं चापि भवेत्तथा ।। 18 ।।

आरूढ लग्न से जितनी राशि आगे वीथि की राशि हो, प्रश्न से उतना ही आगे छत्र राशि होती है।

यदि आरूढ़ व प्रश्न लग्न एक ही हो तो छत्र राशि भी वही होती है। आरूढ लग्न, वीथि व छत्र तथा प्रश्नकालीन उदय लग्न से प्रश्नविचार की विधि नितान्त दक्षिणभारतीय है, जो वहाँ आज भी प्रचलित है। **ज्ञान–प्रदीप प्रश्नानुष्ठान पद्धति, प्रश्नमार्ग कृष्णीयम्** आदि इस विषय के प्रामाणिक ग्रन्थ हैं।

प्रश्नशास्त्र का मूल नियम :–

जन्मलग्नं समासाद्य यद्यत्प्रोक्तं तु जातके ।
तत्सर्वं प्रश्नलग्नेन प्रश्नकालाद् वदेद् बुधः ।।19 ।।

जन्म लग्न विचार के जो शुभाशुभ योग पीछे कहे गए हैं, वे सब यथावत् प्रश्न लग्न में भी लागू होंगे। यह एक मौलिक नियम है तथा शुभयोग, राजयोग, धन, अरिष्ट, मृत्यु, विवाह, भाग्योदय, लाभहानि आदि सभी प्रश्नों में लागू होगा, इस विषय में सभी आचार्य व ऋषि एकमत हैं।

आरूढ आदि से आयु :–

आरूढराशि लग्नं चेच्छत्रं चापि भवेदगे ।
तेषां बलवता चापि निर्णयः स्वायुषः स्मृतः ।। 20 ।।
तुलारूढे धनुच्छत्रे भवेन् मृत्युर्नृणां न हि ।
विपरीते विलोमं स्यात्फलं रोगाद् द्विजोत्तम! ।। 21 ।।

लग्नारूढभयोर्विद्वान् षडष्टकस्थयोर्द्विज! ।
मृतौ चन्द्रे तु रोगी च म्रियते नात्र संशयः ।। 22 ।।
आरूढभंग्रहः पश्येत् संस्थितो वा विलग्नतः ।
अष्टमस्थस्तदा मृत्यू रुग्णत्वे जायते द्विज ! ।। 23 ।।

आयु कितनी शेष है ? यह प्रश्न हो और आरूढ, लग्न व छत्र तीनों या दो बलवान् होकर (स्वामिशुभदृष्टयुक्त) स्थित हों तो आयु शेष है, मृत्यु दूर है, ऐसा कहें ।

लेकिन आरूढ़ राशि तुला हो, छत्र धनु हो तो रोगी की मृत्यु नहीं होती है । इसके विपरीत धनु आरूढ राशि व तुला छत्र हो तो रोगी की मृत्यु होती है ।

यदि लग्न का आरूढ़ परस्पर षडष्टक में हों, अर्थात् एक दूसरे से छठे आठवें होती हों, चन्द्रमा अष्टम में हो तो रोगी की मृत्यु होती है ।

जो ग्रह आरूढ़ राशि को देखें या वहां स्थित हों, तथा वह ग्रह प्रश्न लग्न से अष्टम में हो तो रोगी की मृत्यु, स्वस्थ व्यक्ति की आयु में संशय होता है ।

ग्रह योगों से मृत्यु :–

सर्पकोलास्यद्रेक्काणे विलग्ने मृतिसंस्थिते ।
चन्द्रे मृत्युर्भवेत्सद्यः लग्ने पृष्ठोदये तथा ।। 24 ।।
व्ययाष्टमे च लग्ने च पापाः स्युर्यदि लग्नतः ।
धने धर्मे कुजे मन्दे रन्ध्रे चन्द्रे मृतिं वदेत् ।। 25 ।।

(i) लग्न में सर्वमुख, कोलमुख आदि दुष्ट द्रेष्काण हो तथा अष्टम में चन्द्र हो ।

(ii) पृष्ठोदय उदय लग्न हो तथा 1.8.12 भावों में पापग्रह हों ।

(iii) द्वितीय या नवम में शनि मंगल हो, अष्टम में चन्द्र हो ।

ये योग प्रश्न लग्न में बनें तो आयु शेष नहीं होती है । अर्थात् शीघ्र मृत्यु होगी ।

पापे दुरुधरे जाते लग्ने कामसुहृत्त्स्थिते ।
चन्द्रेऽर्के च विलग्नस्थे म्रियते व्याधिना भृशम् ।। 26 ।।
राहुकाल समायोगे मरणं निश्चितं भवेत् ।
द्वयोर्योगे तु मरणेमकस्मिन् व्याधिरुच्यते ।। 27 ।।

यदि लग्न या चन्द्रमा के दोनों ओर पाप ग्रह हों, 1.4.7 में चन्द्र व लग्न में सूर्य हो तो मृत्यु होती है।

राहु व काल के संयोग के समय (राहुकालम्) प्रश्न हो तो निश्चय से मृत्यु होती है। यदि प्रश्न समय केवल राहु या केवल काल का उदय हो तो व्याधि या अनिष्ट होता है।

अर्धप्रहर, कालपाश, खण्ड राहु आदि के समय का भी मुहूर्त्तशास्त्रोक्त दिषयानुसार निर्देश है। अनिष्ट वेला में प्रश्न का फल अशुभ होगा, यह नियम स्पष्ट हुआ।

उक्तेषु मृत्युयोगेषु धनयोगाः शुभा अपि।
राजयोगेषु सर्वेषु व्याधिस्तस्य नवापि वा।। 28।।

यदि प्रश्न समय मृत्यु योग के साथ धनप्रद योग, शुभ योग व राजयोगादि योग भी पड़ जाएँ, तब निश्चय से रोगोत्पत्ति या मृत्यु नहीं होती है। समस्त पूर्वापर विचार करके ही तब फलादेश करें।

नक्षत्र गोचर व मृत्यु :–

वैधृतौ च व्यतीपाते सार्पभेऽन्तिम संज्ञिते।
कुलीरे विषनाडीसु सूर्यदुष्टेषु पंचसु।। 29।।
पापयुक्ते च नक्षत्रे राशौ तत्संयुतेऽपि वा।
सन्धौ च मासशून्यर्क्ष तिथि राशिषु जन्मभे।। 30।।
व्ययाष्टमे च क्षीणेन्दौ शत्रुग्रहनिरीक्षिते।
ध्रुवं मृत्युर्भवेत्तस्य व्याधितस्य द्विजोत्तम!।। 31।।

यदि रोगी के स्वास्थ्य के विषय में प्रश्न हो तथा प्रश्न समय वैघृति या व्यतिपात नामक महापात योग हो, गण्डान्त लग्न हो, विषघड़ियाँ हों, मंगलादि पाँच ग्रहों में से अधिकांश अस्त हों, रोगी का जन्म नक्षत्र पापयुक्त हो, जन्म राशि पाप युक्त हो, तिथि सन्धि या लग्न सन्धि में प्रश्न लग्न हो, मास शून्य नक्षत्र 8.12 में क्षीण चन्द्रमा शत्रुग्रहों से देखा जाता हो तो इन सब योगों में रोगी की मृत्यु हो जाती है।

मास शून्य तिथि – भाद्रपद में 1, 2 श्रावण में 2.3 वैशाख में 12 पौष में 4.5, आश्विन में 10.11 मार्गशीर्ष में 7.8, चैत्र में 8.9 तिथियाँ दोनों पक्षों में शून्य तिथियाँ हैं।

कार्तिक कृष्ण 5, कार्तिक शुक्ल 14, आषाढ़ कृष्ण 4, फाल्गुन शुक्ल 2, ज्येष्ठा कृष्ण 14, ज्येष्ठ शुक्ल 13, माघकृष्ण 5, माघ शुक्ल 6 भी शून्य तिथियाँ हैं। इनमें मंगलकार्य नहीं होते हैं।

शून्य नक्षत्र– चैत्र में रोहिणी, अश्विनी। वैशाख में चित्रा, स्वाति। ज्येष्ठ में उ.षा., पुष्य। आषाढ़ में पूफा., घनिष्ठा। श्रावण में उ.षा. श्रवण। भाद्रपद में शतभिषा रेवती। अश्विन में पू. भा.। कार्तिक में मघा। मार्गशीर्ष में चित्रा विशाखा। पौष में आर्द्रा, अश्विनी, हस्त। माघ में श्रवण, मूल। फाल्गुन में भरणी, ज्येष्ठा। ये नक्षत्र शून्य होते हैं।

विषघटी– अश्विनी–50। भरणी–24। कृत्तिका 30। रोहिणी 40। मृगशिरा 14,आर्द्रा21। पुनर्वसु 30। पुष्य 20। श्लेषा 32। मघा 30। पूफा. 20। उ.फा. 18। हस्त 21। चित्रा 20। स्वाती 14। विशाखा 14। अनु० .10। ज्येष्ठा 14। मूल 56। पूषा. 24। उ.षा. 20। श्रवण 10। धनि. 10। शत 18। पू. भा. 16। उ. भा. 24। रेवती 30।

इन नक्षत्रों में उक्त घड़ियाँ बीत जाने पर 4-4 घड़ियाँ विषघटी कहलाती हैं। यदि नक्षत्र का सम्पूर्ण भोग 60 घड़ी से कम अधिक हो तो $\frac{\text{भभोगघटी} \times \text{उक्तघटी}}{60}$ करके जो घड़ियाँ मिलें, उतनी व्यतीत होने पर 'विषघटी' शुरू होगी, ऐसा समझें।

लग्न का उदयमान :–

सत्र्यंशाघटिकास्तिस्रो मेषानिमिषयोर्द्विज !।
चतस्रः कुम्भवृषयोस्तथा मकर युग्मयोः।। 32।।
वित्र्यंश पंच सत्र्यंशास्ताः कर्किधनुषोः स्मृताः।
सिंहवृश्चिकयोः षट् च अंशोनाः सप्तशेषयोः।। 33।।
नित्यं मानमिदं प्रोक्तं मेषादुदयराशिजम्।। 34।।

मेष मीन–3.20 घटी। वृष कुम्भ 4.0 घटी। मिथुन मकर 4.40 घटी। कर्क धनु 5.0। सिंह वृश्चिक 6.0। कन्या तुला 6.40 घटी। ये प्रतिदिन राशियों के लग्नोदय काल हैं। अर्थात् कथित अवधि तक प्रत्येक लग्न उदित होता है।

अंगस्पर्श से अनिष्ट :–

पादं पृष्ठं च जङ्घां च जानुं नाभिं च गुल्फके।
कर्णौ च चक्षुषी भालमास्यं कण्ठं स्पृशेद् यदा।। 35।।
व्याधिर्वा म्रियते तद्वत् मृतिं राशिं स्पृशेत्तु वा।
अष्टमर्क्ष स्पृशेद् यद्वा कलांशादिषु वा तथा।। 36।।

विपद वध प्रत्यृक्षे वैनाशं ऋक्षमेव वा ।

संस्पृशेत् प्रश्नकाले तु व्याधिर्वा तस्य वा मृतिः ।। 37 ।।

प्रश्नकर्त्ता प्रश्न के समय पैर, पीठ, पिण्डली, घुटना, नाभि, टखना, कान, आँख, माथा, मुँह, गला अंगों का स्पर्श करता हो तो स्वस्थ व्यक्ति को रोगोत्पत्ति और रोगी व्यक्ति की मृत्यु होती है। अथवा जन्म राशि से आठवीं राशि लग्न या आरूढ हो, तब भी मृत्यु होती है।

प्रश्न समय विपत्, वध, प्रत्यरि, वैनाशिक नक्षत्र तारा हो, या इन नक्षत्रों के अंगों का स्पर्श करे तो स्वस्थ व्यक्ति को रोगोत्पत्ति व रोगी व्यक्ति की मृत्यु होती है।

नक्षत्र विचार :–

शिरोललाटभ्रूनेत्रनासाकर्णकपोलकाः ।

ओष्ठं चिबुककण्ठमंसौ ह्रदयमेव च ।। 38 ।।

पार्श्वौ च वक्षः कुक्षिश्च नाभिश्च कटिरेव च ।

जघनं च नितम्बं च लिंगमण्डं च बस्ति च ।। 39 ।।

ऊरू च जानू जङ्घे च गुल्फाङ्घ्री चाश्विभात् क्रमात् ।

अंगों मे नक्षत्र की स्थापना का क्रम इस प्रकार है। सिर, माथा, भौंहें, आँखें, नाक, कान, गाल, होठ, ठोड़ी, गला, कन्धे, ह्रदय, बगलें, छाती, पेट, नाभि, कमर, जाँघ, नितम्ब, लिंग, अण्डकोष, पेडू, जाँघें, घुटने, पिण्डली, टखने, पैर, इन अंगों में क्रमशः अश्विनी आदि नक्षत्रों की स्थापना कर लेनी चाहिए।

1. अश्विनी–सिर	8. पुष्य–होंठ	15. स्वाति–पेट	22. श्रवण–पेडू
2. भरणी–माथा	9. श्लेषा–ठोड़ी	16. विशाखा–नाभि	23. घनिष्ठा–जाँघ
3.कृत्तिका–भौंह	10. मघा–गला	17. अनु.–कमर	24. शतभिषा–घुटने
4. रोहिणी–आँखें	11. पू.फा.–कन्धे	18. ज्ये.–जाँघ	25. पू.भा.–पिण्डली
5. मृगशिरा–नाक	12. उ.फा.–ह्रदय	19. मूल–नितम्ब	26. उ. भा.–टखने
6. आर्द्रा–कान	13. हस्त–बगलें	20. पू.षा.–लिंग	27. रेवती–पैर
7. पुनर्वसु–गाल	14. चित्रा–छाती	21. उ.षा.–अण्डकोष	

तैलाभ्यक्तोऽथवाऽशुद्धो जलगर्त समीपगः ।।

प्रष्टा दैवविदे वाऽथ मरणं तस्य निर्दिशेत् ।। 40 ।।

यदि प्रश्न समय पृच्छक तेल लगाए हुए, अशुद्ध (सूतकादि युक्त) पानी के गढ्ढे के पास खड़े होकर प्रश्न करे या ज्योतिषी स्वयं ही ऐसी स्थिति में हो तो पृच्छक या जिसके विषय में प्रश्न हो, उस कार्य की हानि

या नाश होता है। अर्थात् आयुप्रश्न में मृत्यु, धन प्रश्न में हानि, कार्यसिद्धि प्रश्न में असफलता आदि स्वकल्पना से समझें।

रोग शान्ति के योग :–

लग्नत्रिसुतकामारि धर्मकर्मायगाः शुभाः।
रोगशान्तिकरा नोचेद् रिपुनीचगृहस्थिताः।। 41।।
एषु पापाः मृतिकराः नोचेत् स्वर्क्षोच्चमित्रगाः।। 42।।

इन योगों में प्रश्न का विषय शुभ या सफल होता है–

(i) 1.3.5.6.7.9.10.11 में ही सारे शुभ ग्रह हों तथा शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र केन्द्र त्रिकोणेश) शत्रु क्षेत्री या नीचगत न हों तो रोगी को आराम, काम में सफलता, धन का लाभ, यात्रा की सिद्धि आदि होती है।

(ii) इसके विपरीत इन्हीं स्थानों में पाप ग्रह हों तथा वे स्वक्षेत्री, उच्चगत या मित्रक्षेत्री न हों तो सब कार्यो में हानि होती है।

समस्त प्रश्न विचार :–

यस्य यस्य शुभं वाथ रिःफाष्टमगताः शुभाः।
यद्वा केन्द्र त्रिकोणास्थास्तस्य तस्य शुभप्रदाः।। 43।।

जिस भाव सम्बन्धी प्रश्न हो, उसी भाव को लग्न समझकर, उससे 8.12 में शुभ ग्रह हों या कोई भी ग्रह न हों, उस भाव में शुभ ग्रह हो या स्वामी बैठा हो, अथवा उस भाव से केन्द्र व त्रिकोणों में शुभ ग्रह हों तो उस भाव सम्बन्धी प्रश्न के विषय में शुभ फल सफलता, सिद्धि आती होती है।

अंगविद्या से प्रश्न :–

तत्र देशे दिशः कालं व्याहारं द्रव्यदर्शनम्।
अंगप्रत्यंग संस्पर्श समीक्ष्य फलमादिशेत्।। 44।।

प्रश्नकर्त्ता के स्थान, दिशा, काल, चेष्टा, वस्तुदर्शन, अंगप्रत्यंग का स्पर्श देखकर विद्वान दैवज्ञ प्रश्न का फल कहे।

स्थान के विषय में पहले कह चुके हैं। काल के विषय में आगे कह रहे हैं

वेलाः सर्वाः प्रशस्यन्ते पूर्वाह्णे परिपृच्छताम्।
सन्ध्ययोरपराह्णेतु क्षपा यांतु विगर्हिताः।। 45।।

पूर्वान्ह में किया गया प्रश्न सफलता का द्योतक है, जबकि सन्ध्या, अपरान्ह व रात्रि में प्रश्न करना निन्दित होता है।

यात्राविधाने निर्दिष्टं निमित्तं यच्छुभाशुभम्।
तदेव दृष्ट्वा दैवज्ञो वांछासिदि्धं विनिर्दिशेत्।। 46।।

यात्रा के समय जो शकुन शुभ या अशुभ कहे हैं, वे ही शकुन प्रश्न के समय में भी शुभ व अशुभ ही होते हैं। इस विषय का विस्तृत

विवेचन संहिताग्रन्थों में देख सकते हैं । कमी सुयोग हुआ तो पाराशरसंहिता या बृहत्संहिता में विस्तार से लिखेंगे ।

अंगस्पर्श से प्रश्न फल :–

पादांगुष्ठे प्रचलयन् स्पृष्ट्वा वा यदि पृच्छति ।

चक्षूरोगं वदेद्धीमान् अंगुल्यां सन्तति क्षयः ।। 47 ।।

शिरोऽभिहन्यमाने तु प्रष्टुर्विघात् नृपाद्भयम् ।

उरः स्पृष्ट्वा विप्रयोगं स्वगात्राद्वस्त्रमुत्सृजेत् ।। 48 ।।

तस्यानर्थागमं पादं पादेन संस्पृशेत् फलम् ।

तमभिगृह्य वा पृच्छेद् विन्द्यात् प्रियसमागमम् ।। 49 ।।

पैर के अंगूठों के हिलाते हुए या छूते हुए प्रश्न हो तो नेत्ररोग का द्योतक है । पैर की अंगुलियों को छूकर प्रश्न हो तो सन्तान की हानि, सिर पर चोट करते हुए या ठक् ठक् करते हुए प्रश्न हो तो राजपक्ष से भय होता है ।

छाती का स्पर्श करते हुए प्रश्न हो तो वियोग की सूचना है । यदि कपड़े उतारते हुए प्रश्न करे तो अनर्थ होने वाला है ।

यदि पैर पर पैर रखकर व कपड़े को हाथ या पैर से छूते हुए प्रश्न हो तो प्रिय अर्थात् मनोनुकूल फल मिलता है ।

अंगुष्ठेन लिखेद् भूमिं क्षेत्रचिन्ता विचिन्तयेत् ।

हस्तेन पादौ कण्डूयेत् कुर्याद् दासी कृतांचताम् ।। 50 ।।

अंगूठे से भूमि कुरेदते हुए प्रश्न हो तो जमीन, खेत या अचल सम्पत्ति आदि की चिन्ता होती है ।

यदि हाथ से पैरों को खुजाते हुए प्रश्न करे तो सेविका, नौकरानी, अधीनस्थ कर्मचारी या दासी आदि की चिन्ता होती है ।

शरीर में नक्षत्रन्यास (अन्य विधि) :–

शशिचन्द्रानल हिमकरशशि युग गुण भूतचन्द्र वेद गुणः ।

मुख वाम नेत्र मस्तक दक्षिणहृत् कण्ठ हस्त पादेषु ।। 51 ।।

हृद्गलवाम कराङ्घ्रिषु नरस्य रणकांक्षिणोऽगांनि ।।52 ।।

युद्धादि का प्रश्न हो तो 1. 1. 3. 1. 1. 4. 3. 1. 4. 3 क्रम से अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों को क्रमशः मुँह, बायी आँख, मस्तक, दायाँ फेफड़ा, गला, दायाँ हाथ, दायाँ पैर, बायाँ फेफड़ा, गले का दायाँ भाग, बायाँ हाथ व पैर इन ग्यारह अंगों से न्यास करें ।

जिस अंग के नक्षत्र में अनिष्टकारी पाप ग्रह हो तो युद्ध, दुर्घटना आदि में उसी अंग में चोट लगे । रोग प्रश्न में वहीं रोग हो, ऐसा कहे ।

इसकी विशेष व्याख्या हमारे बृहज्जातक अभिनव भाष्य में देखें ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां प्रश्नविचाराध्याय एकशततमः ।। 100 ।।

101

।। अथ नाडीमुहूर्त्ताध्यायः ।।

पराशर उवाच–

नाडीद्वयं मुहूर्त्तः स्याद् विनाडीद्वयमेव च ।
अह्नः पंचदशो भागो मुहूर्त्तोऽथ तथा निशि ।। 1 ।।
रुद्राहिमित्रपितरोवस्वम्बुविश्वदेवताः ।
ब्रह्मसूर्येन्द्रव्हिनश्च नैऋतिवरुणौ तथा ।। 2 ।।
अर्यमा भग इत्येते दिवाधीशाः प्रकीर्तिताः ।
रात्रौ रुद्राजपादादेवाहिर्बुध्न्याहि क्रमात्ततः ।।3 ।।
पूषाश्वियमवन्ह्याख्याःधातुचन्द्रादितीज्यकाः ।
विष्णुः सूर्यश्च त्वष्टा च वायु देव इति स्मृताः ।। 4 ।।
नक्षत्रेशमिते काले नक्षत्रस्य फलं मतम् ।। 5 ।।

एक मुहूर्त्त का मान 2 घड़ी या 48 मिनट होता है । दिनमान व रात्रिमान में 15वें भाग के बराबर एक–एक मुहूर्त नक्षत्र के नाम से या नक्षत्र पति के नाम से समझा जाता है । दिन में रुद्र, सर्प, पितर, वसु, जल, विश्वेदेव, ब्रह्मा, सूर्य, इन्द्र, अग्नि, राक्षस, वरुण, अर्यमा व भग ये 15 मुहूर्त्त–पति होते हैं ।

रात में रुद्र, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, पूषा, अश्विनी कुमार, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्र, अदिति, गुरु, विष्णु, सूर्य, त्वष्टा, वायु ये मुहूर्त्तपति क्रमशः होते हैं ।

यह विषय वशिष्ठ संहिता व ज्योतिर्निबन्ध आदि ग्रन्थों में भी अपनाया गया है ।

इसका प्रयोजन यह है कि जैसे देवता का नक्षत्र मुहूर्त्त हो, तदनुसार ही जातक की प्रकृति आदि होती है । अथवा जिस नक्षत्र में जो कार्य करना कहा गया हो, तथा वह नक्षत्र न मिले तो उस नक्षत्र के मुहूर्त्त में वह कार्य करना चाहिए ।

शिवामुहूर्त्त :–

रौद्रं श्वेतं तथा मैत्र्यं चार्वटं च चतुर्थकम् ।
पंचमं जयदेवं च षष्ठं वैराचनं मतम् ।। 6 ।।
तुर्यादिकं सप्तमं च तथाष्टमाभिजिन्मतम् ।
रावणं नवमं प्रोक्तं दशमं बालवं तथा ।। 7 ।।

विभीषणं रुद्र संज्ञं द्वादशं च सुनन्दनम् ।।
याम्यं त्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं ज्ञेयं चतुर्दशम् ।। 8 ।।
भार्गवं तिथिसंज्ञं च सावित्र्यं षोडशं तथा ।।
उदयो रौद्रयादित्ये मैत्रे सोमे मुहूर्त्तकम् ।।9 ।।
जयदेवं भूमिपुत्रे तुरं देवं बुधे तथा ।
रावणं गुरुवारेण विभीषणं भृगुवासरे ।। 10 ।।
शनौ याम्यं मुहूर्त्तं च षोडशांशसमन्वितम् ।
शिवाविदितमित्येतत्सर्व ज्ञांत्वा शुभाशुभम् ।। 11 ।।

दिनमान व रात्रिमान का 16वाँ भाग जान लें । एक भाग तुल्य 1 मुहूर्त होता है । ये मुहूर्त पहले शिवजी ने पार्वती जी को कहे थे ।

रौद्र, श्वेत, मैत्र, आर्वट, जयदेव, वैराचन, तुर्यदेवत्, अभिजित्, रावण, बालव, विभीषण, सुनन्दन, याम्य, सौम्य, भार्गव, सवित्र ये मुहूर्त क्रमशः दो आवृत्तियों में दिन रात में उदित होते हैं ।

रविवार को रौद्र से, सोम को मैत्र से, मंगलवार को जयदेव से, बुधवार को तुर्वदैवत् से, गुरुवार को रावण से, शुक्रवार को विभीषण से, शनिवार को याम्य से आरम्भ होकर मुहूर्त्तों का उदय क्रमशः होता है ।

मुहूर्त्त जन्म फल :--

रौद्रे क्रूरस्तु श्वेते च गम्भीरो धनवांस्तथा ।
मैत्रे सर्वसुहृज्जातः चार्वटे कपटात्मकः ।। 12 ।।
जयदेवे कार्यहानिः प्रभुर्वैरोचने तमी ।
तुर्यो विद्वान् गृहे सौख्यं जायतेऽभिजिदाख्यके ।। 13 ।।
रावणे कुलनाशः स्यात् बालवे तु कलिप्रियः ।
भक्तो विभीषणे जाते नन्दने बहुनन्दनः ।। 14 ।।
याम्ये पापी च्युतो हीनः सौम्ये धनधान्य संयुतः ।
भगे परस्त्रीदासः स्यात् सवित्र्ये भूरि विद्यकः ।। 15 ।।

रौद्र में क्रूर स्वभाव वाला, श्वेत में धनवान् व गम्मीर, मैत्र में सबका मित्र, आर्वट में कपटाचरण करने वाला, जयदेव में आत्मकार्य नाशक, वैरोचन में समर्थ लेकिन तमोगुणी, तुर्यदेव में विद्वान्, अभिजित में घर में सब सुखों वाला, रावण में कुलनाशक, बालव में कलहप्रिय, विमीषण में भक्त, नन्दन में सबका प्यारा, याम्य में पापी, जातिच्युत, सौम्य में धनधान्य वाला, भग में परस्त्री लोलुप, सवित्र में बहुत विद्या वाला होता है ।

नाड्यंशों का फल :–

श्रीमान् रिक्तश्च मूर्खश्च कुशलो वंचने पटुः ।
स्त्रीसक्तो वेदविद्वीरो मन्दाग्निस्तीव्ररोषणः ।। 16 ।।
शूलरोगी च पिशुनः सदाटनपरोऽशुचिः ।
सेवाकरः सुभाषी च धनवांल्लोभसंयुतः ।। 17 ।।
प्रख्यातो विद्यया भीरुर्बुद्धिमान् श्रीमानपि ।
परदाररतः श्रीमान् सुशीलो बलवान् गुणी ।। 18 ।।
अध्वन्यो नियमव्यग्रः पातकी च तपोयुतः ।
परदाररतो जातोऽसत्फलवासनायुतः ।। 19 ।।
सिंहासनस्थो रिक्तश्च जटिलः कुलपांसनः ।
योगी बुद्धश्च संन्यासी सेनानीर्बुद्धिमान्सुखी ।। 20 ।।
कुष्ठीभूतकरः श्रीमान् एकपुत्रसमन्वितः ।
शास्त्रज्ञो दासकृत्यश्च चण्डरोषसमन्वितः ।। 21 ।।
परदाररतश्चोक्तो भृत्यो बहुरोगवान् ।
कुरुपश्चापि कुशलो जितारिः पुत्रवर्जितः ।। 22 ।।
शूरोवीरश्च चण्डश्च कुशलःकुक्षिरोगवान् ।
ग्रामणी विटपो धूर्तः सतीपतिररिन्दमः ।। 23 ।।
वन्ध्यापतिः सुरापायी दुष्टनारी पतिः सुखी ।
विजयी युद्धभीरुश्च चोरोऽमर्षी धनार्जकः ।। 24 ।।
धनार्जनाय सततमकृत्यशतकारकः ।
वृषलीपतिरिन्द्रश्च सेनानीः सत्यवाक्शुचिः ।। 25 ।।
शिरोरोगी च कुष्ठी च मेही च पिशुनः सुखी ।
जलवद्रोगसंयुक्तः कृतज्ञो निर्घृणो द्विज ! ।। 26 ।।
विवादशीलः सुमुखः क्रोधनः कामुकः पटुः ।
चलचित्तो धनी वाग्मी विद्यार्जन परः सुखी ।। 27 ।।
अपुत्रः कृषिकृद् वीरः परदाररतः शुचिः ।
विद्याहीनश्च मूर्खश्च बुद्धिमान् शास्त्रपारगः ।। 28 ।।
सदाभीरुर्जडो वाग्मी कृत्येषु कुशलः सुखी ।
नीतिज्ञो लेखको नीचजातिकृत्यरतः पटुः ।। 29 ।।
प्रेष्यो गोमयविक्रेता वदान्यो धनवंचकः ।
सेनानी क्षेत्रवान्वीरो लेखवृत्या च जीवति ।। 30 ।।

मूर्खो जितेन्द्रियो वाग्मी सदाकृत्यपरः सुखी ।
अन्नदाता च मिष्टाशी शिवभक्तो जितेन्द्रियः ।। 31 ।।
कुब्जो वक्र शरीरश्च जात्यन्धो बधिरः शठः ।
अमर्षीनर्तकः क्रुद्धो दुर्जनो वेदपारगः ।। 32 ।।
वक्ता च गायकः श्रीमान् सर्वदा च धनार्जकः ।
तालज्ञो विद्यया युक्तः शत पंचाशदुत्तरम् ।। 33 ।।
एतानाड्यः समाख्याताः सफला ब्रह्मणा पुराः ।
चरे क्रमात् स्थिरे वाममुभयेऽर्धपरादितः ।। 34 ।।

150 नाड्यंशों का फल कहा जा रहा है । चरराशि में क्रम से, स्थिर राशि में व्युत्क्रम से व द्विस्वभाव में आधे से (76 वें से) गिनना शुरू कर फल जानें ।

1. श्रीमान् 2. असफल (रिक्त) 3. मूर्ख 4. कुशल 5. धोखेबाज 6. चतुर 7. स्त्री मुग्ध, 8. वेदवेत्ता, 9. वीर 10. पाचन शक्ति से विकृत 11. अतिक्रोधी12. रोगी 13. चुगलखोर 14. घूमने वाला 15. अपवित्र आचरण वाला 16. सेवक 17. सुन्दर भाषी 18. धनी, 19. लोभी, 20. प्रसिद्ध विद्वान् 21. बुद्धिमान् 22. श्रीमान् 23. परस्त्री लोलुप 24. श्रीमान् 25. सुशील 26. बलवान् 27. गुणवान् 28. यात्री 29. अनुशासन का पक्का 30. पातकी 31. तपस्वी 32. परस्त्रीलोलुप 33. कुविचारों वाला 34. सिंहासनारूढ़ 35. रिक्त (खाली) 36. जटिल विचारों वाला या लम्बी जटाओं वाला 37. कुल को बद नाम करने वाला 38. योगी 39. जितेन्द्रिय या जाग्रत आत्मा वाला 40. सन्यासी, 41. सेनापति 42. बुद्धिमान् 43. सुखी 44. गले हाथों वाला 45. श्रीमान् 46. एक पुत्र वाला 47. शास्त्रों का जानकार 48. दासवृत्ति 49. महाक्रोधी50. परस्त्रीरत 51. नौकर 52. रोगी 53.कुरूप54. कुशल 55. शत्रुजित् 56. पुत्रहीन 57. शूर 58. वीर 59. आक्रामक स्वभाव 60. कुशल 61. उदररोगी 62. ग्रामपति 63. वेश्याओं से जीविका चलाने वाला 64. धूर्त 65. सती स्त्री का पति 66. शत्रुजेता 67. बाँझ स्त्री वाला 68. शराबी 69. दुष्ट पत्नी वाला 70. सुखी 71. विजयी 72. युद्ध से डरने वाला 73. चोर, 74. क्रोधी, 75. धनी 76. धन कमाने के लिए सैकड़ों उपाय करने वाला 77. शूद्रा का पति 78. राजा 79. सेनापति 80. सत्यवादी 81. पवित्र 82. सिररोगी 83. कोढ़युक्त 84. प्रमेह रोगी 85. चुगलखोर 86. सुखी 87. जल रोगी 88. कृतज्ञ 89.

निर्दय 90. विवादग्रस्त 91. सुन्दर मुख वाला 92. क्रोधी 93. कामुक 94. चतुर 95. चंचल मन वाला 96. धनी 97. वाक्कु शल 98. अध्ययनशील 99. सु खी 100. पुत्रहीन 101. कृषक 102. वीर 103. परस्त्रीरत 104. पवित्र 105. विद्याहीन 106. मूर्ख 107. बुद्धिमान् 108. शास्त्रों में पारंगत 109. डरपोक 110. मूर्ख 111. वाचाल 112. कार्यकुशल 113. सुखी 114. नीतिकुशल 115. लेखक, 116. नीच 117. जाति के अनुसार काम करने वाला 118. चतुर 119. नौकर 120. गोबर आदि बेचने वाला 121. उदार 122. धन का ठग 123. सेनापति 124. जमींदार 125. वीर (दबंग) 126. लेखक 127. मूर्ख 128. जितेन्द्रिय 129. वाचाल 130. सदैव काम में व्यस्त 131. सुखी 132. अन्नदाता 133. मधुरभोजी 134. शिव भक्त 135. जितेन्द्रिय 136. कुबड़ा 137. टेढ़े शरीर वाला 138. अन्धा 139. बहरा 140. धोखेबाज 141. क्रोधी 142. नर्तक 143. क्रोधी 144. दुर्जन 145. वेदज्ञ 146. भाषण कर्त्ता (प्रवक्ता) व गायक 147. धनी 148. धन कमाने वाला 149. संगीतज्ञ 150. विद्वान् या हुनरमन्द ।

एक नाड़ी एक राशि लग्न का 150वाँ अंश है। इसे आप पंचाशदुत्तरशतांश भी कह सकते हैं। एक नाड्यंश का मान 12 कला है। 1 राशि के 30 अंशों में 30 x 60 = 1800′ कला हैं। अतः 1800 ÷ 150 = 12′ कला का एक अंश है। सम्भवतः इसी प्रक्रिया को विस्तृत रूप देकर तथा नामकरण करके दक्षिण भारत में नाड़ी की कल्पना की गई है। षष्ट्यंश से ढाई गुना सूक्ष्म होने के कारण यह अब तक ज्ञात सूक्ष्मतम लग्न विभाग है। दक्षिण भारत में नाड़ी ग्रन्थों को बहुत आदर व विश्वास से देखा जाता है। लग्न का स्थानीय प्रारम्भ व अन्त समय जानकर कुल लग्नोदय काल का 150वाँ अंश निकाल लें। उस मिनट सेकेण्डात्मक समय को इष्ट तक बार–बार जोड़कर जितनी संख्या पर इष्ट पड़े, उससे फल जानें।

हमारे पूर्वोक्त उदाहरण में कर्क लग्न स्पष्ट 3.2°.48′ है। चर लग्न होने से क्रमशः गणना होगी। 2° : 48′ की कलाएँ 168 हुई। 168 ÷ 12 = 14 अंश बीत चुके हैं। 15वें अंश का फल अपवित्र आचरण करने वाला है। यह बात उदाहरण के व्यक्ति पर ठीक नहीं घटे तो इन नाड्यंशों से लग्नशोधन भी कर लेना चाहिए। ऐसा चन्द्र कला नाडीकार का कथन है।

नाडीफलमविज्ञाय न शक्यो लग्नो निर्णयः ।

इसी सिद्धान्त का प्रस्तार नाड़ी ग्रन्थों में देखें। प्रचलित व ज्ञात नाड़ी ग्रन्थों में एक–एक अंश का विस्तृत फल दिया गया है। नाड़ी ग्रन्थ बाद में लिखे गए हैं। नाडी ग्रन्थों में वराहादि के श्लोक व महर्षि प्रोक्त योग होने से यह बात सिद्ध हो जाती है।

षष्ट्यंश से विशेष फल :–

अध्यापकस्तु वेदानां सेवकः शास्त्रपाठकः।
अश्वसादीभसादी च लिपिलेखनतत्परः।। 35।।
मंदुरावन्धको नट्यो देशिको याज्ञिको गुरुः।
दानशीलस्तु तृणको ग्रामणीर्व्यसनाधिपः।। 36।।
आरामकरणीत्युक्तःपुष्पविक्रयतत्परः।
राजकार्यरतः सेनालता पुष्पफलक्रयी।। 37।।
नृत्यगीते च कुशलस्ताम्बूलफलविक्रयी।
निषिद्धविक्रयकरो ग्रामाणामधिकारकृत्।।38।।
बन्दी च देशिकः प्राज्ञो धूपकश्चौषधैपटुः।
कायस्थो बहुरूपेण भारकोःभाण्डविक्रयी।। 39।।
कृषिकृच्च वणिग्धातुचर्मकारी च कर्षकः।
शास्त्राधिकारी विज्ञानी तेजस्वी रंजको वणिक्।। 40।।
वेदवेदांगवेत्ता च शास्त्रज्ञो बन्दिपाठकः।
ग्रामणीरधिकारी च गणको दण्डकारकः।। 41।।
मारकश्चेन्धनाहारीफलमूलादिविक्रयी।
शान्तकृत् स्वर्णकारी च कृषिकृत्पलविक्रयी।। 42।।
याजकोऽध्यापकोऽध्यक्षः प्रतिग्रहपरः कली।
क्रमाद्व्युत्क्रमतश्चैव षष्टिः स्यादंशकेषु तु।।43।।

एक राशि में 30′ कला के बराबर एक षष्ट्यंश होता है। इससे भी पूर्ववत् क्रमानुसार चर राशियों में व व्युत्क्रमानुसार स्थिर राशियों में गिनें। द्विस्वभाव राशियों में पूर्वार्ध में स्थिरवत् व उत्तरार्ध में चरवत् अथवा 31 वें अंश से करें। 60 अंशों का फल क्रमशः इस प्रकार है।

1. वेदज्ञ अध्यापक 2. सेवक 3. शास्त्रों को पढ़ाने वाला 4. घुड़सवार 5. हाथीसवार 6. लिपिकर्त्ता (क्लर्क आदि) या टाइपिस्ट आदि। 7. घोड़ों का प्रशिक्षक या ड्राइविंग सिखाने वाला। 8. अभिनेता 9. ज्योतिषी 10. यज्ञ

कर्त्ता 11. गुरु 12. दानी 13. लापरवाह, सब लुटाने वाला 14. मुखिया 15. दुःखदाता 16. बाग बगीचों से सम्बद्ध 17. फल विक्रेता या ज्ञाता 18. राजसेवक 19. वनस्पति या सैनिकों (गाड्र्स) का व्यवसाय करने वाला 20. नृत्य व गान कुशल 21. पान या फल विक्रेता 22. निषिद्ध व्यापार करने वाला 23. ग्रामों का पति 24. स्तुति पाठक 25. ज्योतिषी या भविष्य वक्ता 26. बुद्धिमान 27. खुशबू का व्यापारी 28. दवा निर्माता या विक्रेता या प्रयोक्ता 29.बहुरूपिया 30. भारवाहक 31. बर्तन व्यवसायी 32. कृषक 33. व्यवसायी 34. धातु या 35. चर्म का कारीगर 36. कृषि कर्ता 37. शास्त्रवेत्ता 38. विशिष्ट ज्ञानी 39. तेजस्वी 40. रंगने वाला आर्टिस्ट या रंगरेज 41. व्यापारी 42. वेदवेत्ता 43. शास्त्रवेत्ता 44. स्तुति पाठक 45. मुखिया 46. अधिकारी 47. गणितज्ञ 48. दण्डाधिकारी 49. हत्यारा या कसाई 50. ईंधन या लकड़ी कोयले का व्यापारी 51. फल या जड़ी बूटी का व्यवसायी 52. शान्ति पूर्ण कार्य करने वाला 53. सोने का व्यापारी 54. कृषक 55. मांस व्यवसायी 56. यज्ञकर्त्ता 57. अध्यापक 58. अध्यक्ष मुखिया या (Head) 59. दान देने वाला 60. सफल या फलादि का व्यापारी।

इसका उपयोग भी नाड्यंशों की तरह वास्तविक लग्नेष्ट शुद्धि में करना चाहिए अथवा व्यवसाय निर्णय में करें। अनुभव में यह फल ठीक घटता है।

महानिशालक्षण (राजयोग) :–

महानिशा तु विज्ञेया मध्यस्थं प्रहरद्वयम्।
नाडिका षट् च पंचाशत् प्रातस्त्वेकोऽधिकोरुणः।। 44।।
उषः कालोऽष्टपंचाशत् शेषः सूर्योदयः स्मृतः।।
महानिशायां यो जातः कश्चित्स्वोच्चगतः खगः।
वित्ते विशेषतो ज्ञेयं राजयोगः परं बुधैः।। 45।।

अर्धरात्रि से एक प्रहर 3 घंटे पहले व 3 घंटे बाद 'महानिशा' कहलाती है। 56 घड़ी इष्ट के बाद, सूर्योदय से 1.36 घंटे पहले प्रातः कालसंज्ञा, 57 घड़ी इष्ट पर अरुणोदय काल, 58. घड़ी पर उषःकाल व तदनन्तर सूर्योदय काल संज्ञा होती है।

महानिशा के समय (विशेषतया 48 मिनट पहले व 48 मिनट बाद) जन्म होने पर मनुष्य राजा होता है। यदि धन स्थान में (या किसी शुभ स्थान में) एक भी उच्चगत ग्रह हो तो उक्त योग का फल, धन–सम्पत्ति, यश, सुख, प्रतिष्ठा आदि श्रेष्ठ होता है।

अधिमासकर्म व्यवस्था :–

गर्भे वर्धापने भृत्ये प्रेतकर्मणि मासिके ।

सपिण्डीकरणे नित्ये नाधिमासं विवर्जयेत् ।। 46 ।।

गर्भाधान या गर्भसंस्कार, वर्धापन, सेवक नियुक्ति, शवदाह (पिण्डदान, श्राद्धादि, तर्पण), मासिक कार्य, दैनिक नित्य कृत्य अधिमास में भी किए जाते हैं ।

गोचर फल व्यवस्था :–

राशिप्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्रबृहस्पती ।

प्रान्त्यस्थौ शनिशीतांशू फलदः सर्वदा बुधः ।। 47 ।।

सूर्य मंगल राशि प्रवेश के प्रारमभ में, शुक्र गुरु मध्य, शनि व चन्द्रमा जाते जाते व बुध सदा (सम्पूर्ण राशि गोचर में) फल देता है ।

अतिचारी वक्री ग्रह का फल :–

भौमादीनां ग्रहाणां हि वीज्यानामपि नित्यशः ।

अतिचारे च वक्रे च पूर्वराशिफलं वदेत् ।। 48 ।।

जब मंगलादि ग्रह अतिचारी या वक्री होते हैं, तब वर्तमान राशि से पूर्वराशि का फल कहना चाहिए । यह सामान्य नियम है, लेकिन बृहस्पति पर यह नियम लागू नहीं होता, अर्थात् बृहस्पति उक्त स्थिति में वर्तमान राशि का ही फल देता है ।

रात्रि में दान का निषेध : –

खलयज्ञे विवाहे च संक्रान्तौ ग्रहणे तथा ।

शर्वर्यां दानमस्त्येव नान्यत्रतु विधीयते ।। 49 ।।

अभिचारादि दुष्ट यज्ञों में, विवाह में, संक्रान्ति काल में, ग्रहण में रात में दान किया जा सकता है, अन्य अवस्थाओं में रात में दान देना निषेध है ।

पांचभौतिक स्नान :–

आग्नेयं वारुणं ब्राह्मं वायव्यं दिव्यमेव च ।

आग्नेयं भस्मना स्नानं वारुण्यमवगाहनम् ।। 50 ।।

आपोहिष्टेति च ब्राह्मं वायव्यं गोरजः स्मृतम् ।

यत्तु सातपवर्षेण तत्स्नानं दिव्यमुच्यते ।। 51 ।।

आग्नेय, वारुण, ब्राह्म, वायव्य व दिव्य ये पाँच प्रकार के स्नान होते हैं। भस्म शरीर पर लगाना आग्नेय स्नान। नदी आदि में डुबकी लगाना (या जल स्नान) वारुण स्नान। 'आपोहिष्ठा' इत्यादि ऋचाओं से शरीर पर जल छिड़कना ब्राह्म स्नान। गायों द्वारा उड़ाई धूलि से लिप्त होना वायव्य स्नान व धूप या वर्षा आदि में स्नान करना दिव्य स्नान होता है।

जल स्नान करने की असामर्थ्य में अन्य प्रकार से स्नान करके यज्ञादि कार्य किए जा सकते हैं। मुहूर्त्तादि संहिता प्रकारण में इन विषयों का उल्लेख युक्त ही है।

लुप्त संवत्सर ज्ञान :–

दशमासानन्तरमहानि कतिचिद् गुरुर्यदाभुङ्क्ते।
यद्यनायाति पूर्वर्क्षे तदा लुप्तसंवत्सरः प्रोक्तः।। 52।।

जब बृहस्पति 10 मास से कुछ अधिक एकराशि में रहकर अतिचारी होने से दूसरी राशि में जाकर व पुनः वक्री होकर पूर्वराशि में न लौटे, तो 'लुप्त संवत्' होता है। इसमें विवाहादि गुरु बल प्रधान कार्य नहीं होते हैं। लेकिन 1.2.11.12 राशिस्थ गुरु को यह दोष नहीं लगता, अर्थात् तब विवाहादि होते हैं, ऐसा मतान्तर प्रचलित है।

तीन जेठ (ज्येष्ठत्रय) व्यवस्था :–

अज्येष्ठ कन्यका यत्र ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि।
व्यत्ययेऽपि तयोस्तत्र ज्येष्ठमासः शुभप्रदः।। 53।।

यदि वर कन्या दोनों पहली सन्तान (ज्येष्ठ) हों तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में वर्जित है। यदि कन्या या वर में से कोई एक ज्येष्ठ हो तथा दूसरा ज्येष्ठ न हो, तब उनका विवाह (ज्येष्ठ द्वय) ज्येष्ठ मास में हो सकता है।

सिंहस्थ गुरु व्यवस्था :–

गोदाभागीरथीमध्ये नोद्वाहः सिंहगे गुरौ।
मघास्थः सर्वदेशेषु तथा मीनगते गुरौ।। 54।।

गंगा व गोदावरी के मध्य देशों में सिंहस्थ गुरु में विवाह नहीं करना चाहिए। लेकिन अन्यत्र मघा नक्षत्रगत गुरु व मीन के सूर्य में कहीं भी विवाह नहीं करना चाहिए।

ऋतुमती शुद्धि व्यवस्था :-

रोगेण यद्रजः स्त्रीणामन्वहेतु प्रवर्तते ।

नाशुचिः स्यात्ततस्तेन तत्स्याद् वैकारिंक मलम् ।। 55 ।।

अष्टादश दिवा दर्वाक् स्नानमेव रजस्वला ।

अत ऊर्ध्वं त्रिरात्रं स्यादुशना मुनिरब्रवीत् ।। 56 ।।

यदि किसी रोग के कारण स्त्री को लगातार स्राव होता हो तो वह धार्मिक कार्यों में अशुद्ध नहीं होती ।

18 दिन के अन्तराल पर रजस्वला हो तो तुरन्त स्नान करने से ही शुद्ध होती है ।

यदि 18 दिन के बाद रजस्वला हो तो तीन दिन तक धार्मिक कार्यों के प्रसंग में अयोग्य रहती है । ऐसा भृगुजी ने कहा है ।

कन्या का विवाह वर्ष :-

युग्मेऽब्दे सम्पदः सौख्यं विद्याधर्मायुषः सदा ।

भर्तृदुष्टा भवत्योजे निषेकान्नात्र संशयः ।। 57 ।।

गर्भ के 9 मास सहित वर्तमान आयुवर्ष यदि विवाह के समय सम (EVEN) हों तो कन्या का विवाह करने से सुख, सम्पत्ति, धर्म विद्या व आयु की वृद्धि होती है । अर्थात् कन्या का विवाह समसंख्यक आयु वर्ष में करना चाहिए ।

विषम वर्ष में कन्या का विवाह करने से पति या विवाहित जीवन में अनिष्ट होता है ।

मेलापक में नाडीदोष परिहार :-

नवांशभेदादेकर्क्षराश्योरपि शुभावहः ।

नाडिवेधेऽपि दम्पत्त्योर्विवाहः शुभदः स्मृतः ।। 58 ।।

यदि वर कन्या का नक्षत्र एक हो तथा राशि भी एक हो, लेकिन नक्षत्र के चरण पृथक हों तो नाड़ी वेध दोष रहते हुए भी विवाह शुभ होता है ।

इसी आधार पर 'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्' रामदैवज्ञ ने कहा है । इस विषय का समर्थन बहुत से आचार्यो ने किया है ।

विवाह लग्न का एक नियम :–

संत्यजेन् नैधनं लग्नं दम्पत्त्योर्जन्मलग्नतः ।
निधनेशश्च यत्रास्ति तं राशिं वर्जयेत्सुधीः ।। 59 ।।

वर कन्या के जन्म लग्न से आठवीं राशि लग्न में व अष्टमेश की अधिष्ठित राशि लग्न में बुद्धिमानों को उनका विवाह नहीं करना चाहिए ।

शुक्र का अन्धत्व :–

पौष्णादिवह्निभाद्यंघ्रि यावत् तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे हितम् ।। 60 ।।

रेवती नक्षत्र से शुरू कर कृत्तिका के दूसरे चरण तक चन्द्रमा रहने पर 'शुक्रान्धत्व' होता है । अतः द्विरागमनादियात्रा में सम्मुख या दाहिने शुक्र रहने पर भी अन्धत्व में अशुभ नहीं होता है ।

'मुहूर्तचिन्तामणि' में कृत्तिका प्रथम चरण तक अन्धत्व कहा है ।

विवाहादि में गोचर :–

गोचरे निर्बलो जीवः सूर्ये चन्द्रे च निर्बले ।
विचार्याष्टकवर्गोत्थबलं कुर्याद् विवाहकम् ।। 61 ।।

यदि गोचर में सूर्य, चन्द्र व गुरु तीनों या कोई दो ग्रह निर्बल (अनिष्ट स्थान में) हों तो अष्टकवर्ग प्रकरणोक्त विधि से गोचर शुद्धि देखकर विवाह या यज्ञोपवीतादि करना चाहिए ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं० सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायां नाडीमुहूर्ताध्याय एकोत्तरशततमः ।।101 ।।

।। अथ उपसंहाराध्याय ।।

पराशर उवाच–

यच्छास्त्रं ब्रह्मणा प्रोक्तं नारदाय महात्मने ।
तदेव शौनकादिभ्यो नारदः प्राह सादरम् ।। 1 ।।
गर्गस्तस्मादिदं प्राह मया तस्माद्यथा तथा ।
श्रुतं मया यथा तुभ्यं तदुक्तं तव सुव्रत ! ।। 2 ।।
इदं शास्त्रं मया प्रोक्तमाद्यन्त तव धीमतः ।
नासूयकायदातव्यं परनिन्दारताय च ।। 3 ।।
जडाय दुर्विनीताय नाज्ञाताय कदाचन ।
नाशिष्याय प्रदातव्यं नापुत्राय कदाचन ।। 4 ।।

पराशर बोले–पूर्व काल में जो शास्त्र ब्रह्मा जी ने नारद जी को कहा था, नारद ने शौनकादि महर्षि को आदरपूर्वक बताया, उनसे गर्ग ने जी ने जाना तथा गर्ग जी से मैंने जैसा जाना व सुना, वैसा हे मैत्रेय ! तुम्हें कहा है। इसमें मैंने सारे विषय आद्योपान्त कहे हैं, कुछ भी नहीं छिपाया है ।

इस शास्त्र को ईर्ष्या, राग-द्वेष से युक्त व्यक्ति को, परनिन्दा करने वाले को, जड़, दुर्विनीत (हठी व स्वयं को अधिक बुद्धिमान् समझने वाले) अनजान को, जो शिष्य न हो, जिसका कोई पुत्र न हो, उसे न देना चाहिए ।

देयमेतत् सुशीलाय भक्ताय सत्यवादिने ।
मेधाविने विनीताय सम्यग् ज्ञातकुलाय च ।। 5 ।।
पुण्यदं ज्योतिषंशास्त्रमग्र्यं वेदांगमुत्तमम् ।

इसके विपरीत सुशील, भक्त, सत्यवादी, बुद्धिमान, विनीत, कुलीन, व्यक्ति (शिष्य) को यह शास्त्र ज्ञान देना चाहिए । यह ज्योतिष शास्त्र पुण्य कारक, अग्रगण्य वेदांग रूप है । अतः सच्ची भावना से इसे पढ़ना चाहिए ।

जानाति कालमानं यो ग्रहर्क्षाणां च संस्थितिम् ।। 6 ।।
होराशास्त्रमिदं सर्वं श्रद्धाविनयसंयुतः ।
श्रुत्वा गुरुमुखादेव बुद्धिमानवलोक्य च ।। 7 ।।

होराशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः सत्यवाग्विजितेन्द्रियः ।
शुभाशुभं फलं वक्ति सत्यं तद्वचनं भवेत् ।। 8 ।।
ये सुशास्त्रं पठन्तीदं ये वा श्रृण्वन्ति भक्तितः ।
तेषामायुर्बलं वित्तं वृद्धिमेति यशः सदा ।। 9 ।।

जो व्यक्ति काल विभाग जानता है, ग्रहों, नक्षत्रों व राशियों की विशेष गति आदि को जानता है तथा समस्त होराशास्त्र को श्रद्धा व विनयपूर्वक पढ़ चुका हो, गुरुमुख से जिसने अध्ययन किया हो, बुद्धिमान् हो, समस्त होराशास्त्र के रहस्यों को जानता हो, सत्यवचन व जितेन्द्रिय (जुबान व लंगोट का पक्का) हो, वही शुभाशुभ फल कहने में समर्थ होता है। उसी की वाणी सत्य होती है।

जो लोग श्रद्धा से इस शुभ शास्त्र को पढ़ते या सुनते हैं, उनकी आयु, विद्या, यश व बल बढ़ता है।

इत्थं पराशरेणोक्तं होराशास्त्रं चमत्कृतम् ।
शुभं सर्वजनप्रीत्यै विविधाध्यायसंयुतम् ।। 10 ।।
श्रेष्ठं जगद्धितायेदं मैत्रेयाय द्विजन्मने ।
ततः प्रचरितं पृथ्व्यामादृतं सादरं जनैः ।। 11 ।।

इस प्रकार पराशर महर्षि ने यह चमत्कारक होराशास्त्र सब लोगों की प्रसन्नता के लिए अनेक अध्यायों में बाँटकर, संसार के कल्याणार्थ द्विज श्रेष्ठ मैत्रेय को कहा। उन्हीं से यह भूमण्डल पर प्रसारित व समादृत हुआ है।

अध्याय क्रम कथन

सृष्टिक्रमोऽवताराश्च गुणाः खेटस्य भस्य च ।
विशेषलग्नं वर्गाश्च तद्विवेकश्च राशिदृक् ।। 1 ।।
अरिष्टं तद् विभंगश्च विवेको भावजस्ततः ।
भावानां च विलग्नादीनां विवेकश्च क्रमादिह ।। 2 ।।
भावेशोत्थफलं सम्यग् अप्रकाशग्रहोद्भवम् ।
पदं चोपपदं तद्वदर्गलाः सफलास्तव ।। 3 ।।
कारकाः कारकांशश्च योगकारकमेव च ।
नाभसाख्याः सुयोगाश्च योगाश्च विविधाः पुनः ।। 4 ।।
सूर्याचन्द्रमसोर्योगाः राजयोगा उदीरिताः ।।

विशेषधनयोगा ये ते दारिद्र्यप्रदाः पुनः ।।5।।
आयुर्दायभिदाः सम्यक् मारकाणां विभाजनम् ।
वृत्तिनिर्णयप्रख्यश्च ग्रहावस्थाः प्रकीर्तिताः ।।6।।
ग्रहभावबलाध्याय इष्टकष्टात्मकः पुनः ।
दशाध्यायस्ततः कालचक्र प्रख्यदशात्मकः ।।7।।
विविधानां दशानां च सभेदानां प्रदर्शनम् ।
दशास्वन्तर्दशाध्यायो दशानां फलितोक्तियुक् ।।8।।
भावेशानां दशामध्ये फलविवेकः प्रदर्शितः ।
कालचक्रफलं पूर्णं चरादीनां फले क्रमात् ।।9।।
दशाफलगुणाध्यायो भुक्तीनां च पृथक् फलम् ।
प्रत्यन्तराणां सूक्ष्माणां प्राणानां च दशाभिदाम् ।।10।।
फलं चक्रदशामध्ये भुक्तयः सफलाः पृथक् ।
कालचक्रनवांशादि्ध दशादीनां फलं मया ।।11।।
सूर्याद्यष्टकवर्गाश्च त्रिकोणे शोधनं ततः ।
एकाधिपत्यसंस्कारः पिण्डादीनां च साधनम् ।।12।।
अष्टकवर्गफलाध्याय आयुरष्टकवर्गजम् ।
समुदायाष्टवर्गोत्थं फलं सम्यगुदीरितम् ।।13।।
ग्रहरश्मिफलाध्यायः सुदर्शनफलं तथा ।
महापुरुषचिह्नानि महाभूतफलानि च ।।14।।
सत्त्वादीनां फलं प्रोक्तं नष्टजातकपद्धतिः ।।
नक्षत्रजातकाध्यायः प्रव्रज्यायोगसन्ततिः ।।15।।
स्त्रीजातकफलं सम्यग् अंग लक्षणकान्यथ ।
तिलादीनां फलं प्रोक्तं पूर्वशापविवेचनम् ।।16।।
ग्रहशान्ति विवेकश्चाशुभजन्म हि जन्मिनाम् ।
दर्शशान्तिश्च कृष्णायाश्चतुर्दश्याश्च शान्तिकः ।।17।।
भद्रादिदुर्योगानां संक्रान्तौ जननं तथा ।
एकनक्षत्रजातानां ग्रहणे जन्मिनां तथा ।।18।।
गण्डान्तजातशान्तिश्च मूलशान्तिरथ क्रमात् ।।19।।
ज्येष्ठादिगण्डशान्तिश्च त्रीतरजन्मशान्तिकः ।
प्रसवविकार शान्तिश्च प्रश्नविद्या ततः परम् ।।20।।

नाडीमुहूर्तकथनमिति ज्ञेयाः शताधिकाः ।
ग्रन्थेऽस्मिन् पृथगध्यायैर्विषया विनिवेशिताः । । 21 । ।
विज्ञाय विबुधास्त्वेतान् शास्त्रे भूरिपरिश्रमाः ।
फलितज्ञा यशःसौख्यं प्राप्नुवन्तु श्रियं तथा । । 22 । ।

इस प्रकार शताधिक अध्यायों में (शत शब्द अंसख्य का वाचक भी हैं ।) सम्पूर्ण होराशास्त्र को महर्षि पराशर ने मैत्रेय को कहा । जो लोग इस शास्त्र के तत्त्व को जानकर, प्रभूत परिश्रम करके फलित कहते हैं, वे लोग निश्चय से यश, सुख, शोभा व सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं । अनुक्रम से अध्यायों के नाम की सूची श्लोकों में दी गई हैं

ऋतुविधुनवचन्द्रे 1916 शालिवाहे सहस्ये
ऽसितदल बुधवारे चापगेऽर्के शरांशैः ।
ऋषिवरवचनानां मिश्रलक्ष्मा सुरेशः,
सकलवचनसारां राजधान्यामभाणीत् । । 1 । ।
गुरुवरदिनकरकृपया बुधजनतोषाय सुरेश मिश्रोऽयम् ।
पाराशरहोराख्ये ग्रन्थेऽग्रन्थीन्मुदा व्याख्याम् । । 2 । ।
आयुर्निर्णयभावमंजरिलघूपाराशरीजैमिनि–
सूत्रादीन्मुनिवादरायणकृतां प्रश्नादिविद्यां धिया ।
षट्पंचाशिकनामिकां सुविदितामष्टादिवर्गात्मकं
ग्रन्थं जातकतत्त्वभूषणयुगं व्याख्याय मिश्रस्ततः । । 3 । ।
संशयबहुलांल्लोकान् दृष्ट्वा शास्त्रे तु व्याकुलीभूय ।
उलझे प्रश्नेति नाम्नाऽकार्षीत् किंचिद्यथाशास्त्रम् । । 4 । ।
वराहहोरायाश्चाऽभिनवभाष्यमिह लोके सदा लभताम् ।
भूसुरसुरगुरु कृपया विख्यातं शाश्वतीं सुषमाम् । । 5 । ।
पाराशरटीकायां स्खलनं किमपि भवेद्वाप्यल्पकृत्तम् ।
कृपया परिहरणीयं न हि सर्वः सर्वं विजानीते । । 6 । ।
सत्पात्रेषूपहितं विबुधैर्वन्द्यमदः महाशास्त्रम् ।
ऋषिभिः प्रथितं जयति भद्रं कुर्यात्सदा पठताम् । । 7 । ।

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे पं. सुरेशमिश्रकृतायां हिन्दीव्याख्यायामुपसंहाराध्यायः । ।

। । समाप्तोऽयं ग्रन्थः । ।